شاتان تذبحان

दो बकरियां ज़िबह की जाएँगी

(इल्हाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

तज़्किरतुश्शहादतैन

(दो शहादतों का वर्णन)

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

तज़्किरतुश्शहादतैन

(दो शहादतों का वर्णन)

लेखक
हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक : तज़्किरतुश्शहादतैन
Name of book : Tazkiratush Shahadatain
लेखक : हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम
Writer : Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Masih Mou'ud Alaihissalam
अनुवादक : फ़रहत अहमद आचार्य
Translator : Farhat Ahmad Acharya
संस्करण : प्रथम संस्करण (हिन्दी) जुलाई 2018 ई०
Edition : 1st Edition (Hindi) July 2018
संख्या, Quantity: 1000
प्रकाशक : नज़ारत नश्र-व-इशाअत,
क़ादियान, 143516
ज़िला-गुरदासपुर, (पंजाब)
Publisher : Nazarat Nashr-o-Isha'at,
Qadian, 143516
Distt. Gurdaspur, (Punjab)
मुद्रक : फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस,
क़ादियान, 143516
ज़िला-गुरदासपुर, (पंजाब)
Printed at : Fazl-e-Umar Printing Press,
Qadian 143516
Distt. Gurdaspur, (Punjab)

पुस्तक परिचय

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की यह पुस्तक 1903 ई० की लिखी हुई है इसके दो भाग हैं। उर्दू का भाग हज़रत साहिबज़ादा अब्दुल लतीफ साहिब रईस-ए-आज़म खोस्त अफ़गनिस्तान और उनके आज्ञाकारी शिष्य हज़रत मियां अब्दुर्रहमान साहिब की शहादत की घटनाओं पर आधारित है। अरबी भाषा का भाग तीन पुस्तिकाओं पर आधारित है। पहली पुस्तिका الوقت وقت الدعا لا وقت الملاحم وقتل الاعداء'' दूसरी पुस्तिका ذکر حقيقة الوحی و ذرائع حصوله और तीसरी पुस्तिका علامات المقربين के नाम से सम्मिलित है।

तज़्किरतुश्शहादतैन का मूल विषय जमाअत के प्रथम दो शहीदों हज़रत मियां अब्दुर्रहमान और हज़रत साहिबज़ादा अब्दुल लतीफ रज़ि अल्लाह तआला अन्हुमा के अहमदियत स्वीकार करने तथा शहीद होने की घटनाओं का वर्णन है। शहादत की यह दोनों घटनाएं हुज़ूर अलैहिस्सलाम के इल्हामों जो कि बराहीन अहमदिया में वर्णित हैं- "शाताने तुज़्बहाने कुल्लु मन अलैहा फान" के अनुसार प्रकट हुईं। इस दृष्टिकोण से यह हुज़ूर अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक बहुत बड़ा निशान है। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने इस सम्बन्ध में इन समस्त दलीलों की व्याख्या भी वर्णन की है जो हज़रत साहिबज़ादा साहिब रज़ि० के अहमदियत स्वीकार करने का कारण बनी। विशेषत: हज़रत ईसा इब्न मरियम की सोलह विशेषताओं में अपनी समानता का व्याख्यात्मक रूप से वर्णन किया है।

शहादत के दिल दहला देने वाले वृतान्त का वर्णन करने के बाद हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने अपनी जमाअत को उपदेश देते हुए परलोक के जीवन की तैयारी करने और धर्म को दुनियादारी पर प्राथमिकता देने की नसीहत फ़रमाई है और साथ ही उन आस्थाओं का संक्षेप में वर्णन है जो जमाअत का विशेष निशान है।

हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने जहां अपनी सच्चाई की बहुत सारी दलीलें वर्णन की हैं वहाँ क़ुरआनी दलील -

فَقَدْ لَبِثْتُ فِيْكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهٖ ؕ

(यूनुस - 17)

के समर्थन में बड़ी तहद्दी के साथ फरमाया :-

"तुम कोई आरोप झूठ गढ़ने या झूठ बोलने या धोखे का मेरी गुज़री हुई ज़िन्दगी पर नहीं लगा सकते जिससे तुम यह विचार करो कि जो व्यक्ति पहले से झूठ बोलने और झूठ गढ़ने का आदी है यह भी उसने झूठ बोला होगा। तुम में से कौन है जो मेरे जीवन चरित्र पर कोई नुक्ता चीनी कर सकता है? अतः यह ख़ुदा का फज़्ल (कृपा) है कि जो उसने आरम्भ से मुझे तक्वा (संयम) पर क़ायम रखा और विचार करने वालों के लिए यह एक दलील है।

(तज़्किरतुश्शहादतैन, रूहानी ख़ज़ाइन भाग 20 पृ० 64)

फिर हुज़ूर अलैहिस्सलाम जमाअत अहमदिया के उज्जवल भविष्य के सम्बन्ध में भविष्यवाणी करते हुए फ़रमाते हैं-

"हे समस्त लोगो! सुन लो कि यह उसकी भविष्यवाणी है जिसने धरती और आकाश बनाया वह अपनी इस जमात को सम्पूर्ण विश्व में फैला देगा और समझाने के अन्तिम प्रयासों तथा दलीलों के दृष्टिकोण से उनको सब पर विजय करेगा। वह दिन आने वाले हैं बल्कि निकट हैं कि संसार में केवल यही एक धर्म होगा जो सम्मान के साथ याद किया जाएगा।"

(तज़्किरतुश्शहादतैन, रूहानी ख़ज़ाइन भाग - 20 पृष्ठ - 66)

"तज़्किरतुश्शहादतैन"का अरबी भाग तीन लघु पुस्तिकाओं पर आधारित है:-

(1) الوقت وقت الدعاء لا وقت الملاحم وقتل الاعداء

इस पुस्तिका में हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने इस मामले को प्रस्तुत फरमाया है कि इस्लाम का फैलना तलवार का मोहताज नहीं। विशेष रूप से इस युग में अल्लाह तआला ने मसीह मौऊद के लिए दुआ को आसमानी हथियार घोषित किया है और नबियों की भविष्यवाणियां भी हैं कि मसीह मौऊद दुआ से विजय पाएगा और उसके हथियार सबूत और दलीलें होंगी। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने इसके समर्थन में यह बात भी प्रस्तुत फ़रमाई है कि यदि ख़ुदा तआला की इच्छा यही

होती है कि इस युग में मुसलमान धार्मिक युद्ध करें तो वह हथियारों के निर्माण युद्ध के विशेष ज्ञान में मुसलमानों को अन्य कौमों पर श्रेष्ठता प्रदान करता।

हुज़ूर अलैहिस्सलाम फरमाते हैं -

انها ملحمة سلاحها قلم الحديد لا السيف والمدى

(तज़्किरतुश्शहादतैन, रूहानी खज़ाइन भाग 20 पृष्ठ - 88)

अर्थात शैतान से इस अन्तिम युद्ध का हथियार तलवार नहीं बल्कि क़लम है।

हुज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने इस पुस्तिका में अपने दावा मसीह मौऊद और दावा नुबुव्वत को भी प्रस्तुत फरमाया है। दावा-ए-नुबुव्वत के सम्बन्ध में हुज़ूर अलै० ने एक विशेष ऐतराज़ का वर्णन किया है। यह प्रश्न हज़रत साहिबज़ादा अब्दुल्लतीफ साहिब शहीद रज़ि०ने भी पूछा था कि क्या कारण है कि उम्मते मुहम्मदिया में मसीह मौऊद के अतिरिक्त ख़ुलफा-ए-राशिदीन★ आदि को नबी का नाम नहीं दिया गया।

हुज़ूर अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि ख़लीफाओं को नबी का नाम न दिए जाने का कारण यह था कि ख़त्मे नुबुव्वत की वास्तविकता लोगों के लिए संशय युक्त न हो जाए परन्तु जब हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहिस्सलाम की नुबुव्वत पर एक युग बीत गया तो अल्लाह तआला ने सिलसिला मुहम्मदिया को सिलसिला मूसविया से पूर्ण समानता देने के लिए मसीह मौऊद को नबी का नाम देकर अवतरित किया।

(तज़्किरतुश्शहादतैन, रूहानी खज़ायन भाग-20, पृष्ठ 87 अनुवाद)

2 दूसरी पुस्तिका ذكر حقيقة الوحى وذرائع حصوله (हकीकतुल वह्यी की चर्चा और उसको प्राप्त करने के माध्यम) के नाम से एक छोटी पुस्तिका है जिसमें हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने वह्यी की वास्तविकता और उसको प्राप्त करने के माध्यमों का वर्णन करते हुए उन विशेषताओं का विस्तार से वर्णन फरमाया है जो वह्यी व इल्हाम से सुशोभित व्यक्ति में पाई जानी आवश्यक हैं।

★ हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद होने वाले चार ख़लीफा-अनुवादक

3 तीसरी पुस्तिका علامات المقربين "अलामातुल मुक़र्रबीन" भी वास्तव में द्वितीय अरबी पुस्तिका का क्रम ही है इस में हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने अल्लाह के दरबार में सानिध्य प्राप्त व्यक्तियों की सम्पूर्ण विशेषताओं को अत्यन्त सरस एव सुबोध अरबी भाषा में विस्तार पूर्वक वर्णन फरमाया है। हुज़ूर ने इस पुस्तिका में भी मसीह मौऊद और ज़ुल्करनैन (दो सदियों वाला) होने का दावा प्रस्तुत किया है।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

समस्त प्रशंसाएं अल्लाह तआला के लिए और सलामती हो उन बन्दों पर जिन का उसने चयन किया

इस युग में यद्यपि आकाश के नीचे विभिन्न प्रकार के अत्याचार हो रहे हैं परन्तु जिस अत्याचार का अभी में आगे वर्णन करुंगा वह एक ऐसी दर्दनाक घटना है कि दिल को दहला देती है और शरीर कांप जाता है।

इस बात को क्रमानुसार वर्णन करने के लिए पहले यह बताना आवश्यक है कि जब ख़ुदा तआला ने ज़माने की वर्तमान हालत को देख कर और ज़मीन को विभिन्न प्रकार के दुराचार और गुनाह और गुमराही से भरा हुआ पाकर मुझे सत्य के प्रचार और सुधार के लिए अवतरित फरमाया और यह युग भी ऐसा था कि..... इस संसार के लोग तेरहवीं शताब्दी हिज्री को समाप्त करके चौदहवीं शताब्दी के आरम्भ में पहुँच गए थे। तब मैंने उस आदेश का पालन करते हुए सामान्य लोगों में लिखित विज्ञापनों और भाषणों के द्वारा यह ऐलान करना आरम्भ किया कि इस शताब्दी के आरम्भ में जो ख़ुदा तआला की ओर से धर्म के नवीनीकरण के लिए आने वाला था **वह मैं ही हूं** ताकि वह ईमान जो संसार से उठ गया है उस को पुनः स्थापित करूं और ख़ुदा से शक्ति पाकर उसी के हाथ के आकर्षण से दुनिया को सुधार, संयम और सत्यनिष्ठा की ओर खींचूं। और उन की आस्थिक एवं व्यावहारिक बुराइयों को दूर करूं। फिर जब इस पर कुछ वर्ष गुज़रे तो अल्लाह की वह्यी (ईशवाणी) के द्वारा मुझ पर विस्तार पूर्वक प्रकट किया गया कि वह मसीह जिस का इस उम्मत के लिए आरम्भ से वादा दिया गया था और वह आख़री महदी जो इस्लाम की अवनति के समय तथा गुमराही के फैलने के ज़माने में सीधे तौर पर ख़ुदा से हिदायत पाने वाला और उस आसमानी माइदा

(नेमत) को नवीनता के साथ फिर से मनुष्यों के सामने प्रस्तुत करने वाला, ख़ुदा की तक़दीर में नियुक्त किया गया था, जिस की ख़ुशख़बरी आज से तेरह सौ वर्ष पूर्व रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दि थी वह मैं ही हूं। अल्लाह तआला के वार्तालाप और रहमान ख़ुदा के सम्बोधन इस स्पष्टता और निरन्तरता से इस बारे में हुए कि संदेह का कोई स्थान न रहा। प्रत्येक वह्यी जो होती थी वह फौलादी कील के सामान दिल में धंसती थी और अल्लाह तआला के यह समस्त वार्तालाप ऐसी महान भविष्यवाणियों से भरे हुए थे कि प्रकाशमान दिन के सामान वह पूरे होते थे। उन की निरन्तरता, अधिकता तथा विलक्षण शक्तियों के चमत्कार ने मुझे इस बात के इक़रार के लिए विवश कर दिया कि यह उसी एक ख़ुदा का कलाम है जिस का कलाम क़ुरआन करीम है और मैं यहां तौरात और इंजील का नाम नहीं लेता क्योंकि तौरात और इंजील तहरीफ (धार्मिक पुस्तकों में परिवर्तन) करने वालों के हाथों से इतनी परिवर्तित हो चुकी हैं कि अब उन पुस्तकों को ख़ुदा का कलाम नहीं कह सकते। अतः ख़ुदा की वह वह्यी जो मुझ पर उतरी ऐसी विश्वसनीय और अकाट्य है कि जिस के द्वारा मैंने अपने ख़ुदा को पाया और वह वह्यी न केवल आसमानी निशानों के द्वारा विश्वास के स्तर तक पंहुची बल्कि उस का प्रत्येक भाग जब ख़ुदा तआला के कलाम क़ुरआन करीम के सम्मुख रखा गया तो उस के अनुसाार सिद्ध हुआ। और उस को साबित करने के लिए बारिश की तरह आसमानी निशान बरसे। उन्हीं दिनों में रमज़ान के महीने में सूरज और चाँद को ग्रहण भी लगा जैसा कि लिखा था कि उस महदी के समय में रमज़ान के महीने में सूरज और चाँद को ग्रहण होगा और उन्हीं दिनों पंजाब में बहुत ताऊन (प्लेग) फैली जैसा कि क़ुरआन करीम में यह ख़बर मौजूद है और पूर्व नबियों ने भी यह ख़बर दी है कि उन दिनों में बहुत मरी पड़ेगी। ऐसा होगा कि कोई गाँव और शहर उस मरी से बाहर नहीं रहेगा। अतः ऐसा ही हुआ और हो रहा है। ख़ुदा ने उस समय जबकि देश में ताऊन (प्लेग) का नाम व निशान भी नहीं था ताऊन के फैलने से लगभग 22 वर्ष पूर्व मुझे उसके पैदा होने की सूचना दी। फिर इस विषय में बारिश की तरह इल्हाम

हुए और विभिन्न शैलियों में इन वाक्यों को दुहराया गया है। अतः निम्नलिखित वह्यी में मुझे इस प्रकार सम्बोधित करके फरमाया:-

اتٰی امر اللہ فلا تستعجلوہ بشارۃ تلقاھا النبیون ان اللّٰہ مع الذین اتقوا والذین ھم محسنون انہ قوی عزیز وانہ غالب علی امرہ ولکن اکثر الناس لا یعلمون انما امرہ اذا اراد شیئًا ان یقول لہ کن فیکون اتفرّون منی وانا من المجرمین منتقمون یقولون ان ھذا الا قول البشر و اعانہ علیہ قوم اٰخرون جاھل او مجنون قل ان کنتم تحبون اللّٰہ فاتبعونی یحببکم اللّٰہ انا کفیناک المستھزئین انی مھین من اراد اھانتک وانی معین من اراد اعانتک وانی لا یخاف لدیّ المرسلون اذا جاء نصر اللّٰہ والفتح وتمت کلمۃ ربک ھذا الذی کنتم بہ تستعجلون واذا قیل لھم لا تفسدوا فی الارض قالوا انما نحن مصلحون الا انھم ھم المفسدون وان یتخذونک الا ھزوا اھٰذا الذی بعث اللّٰہ بل اتیناھم بالحق فھم للحق کارھون وسیعلم الذین ظلموا ایّ منقلبٍ ینقلبون سبحانہٗ وتعالٰی عما یصفون ویقولون لست مرسلا قل عندی شھادۃ من اللّٰہ فھل انتم تؤمنون انت وجیہٌ فی حضرتی اخترتک لنفسی اذا غضبتَ غضبتُ وکلما احببتَ احببتُ یحمدک اللّٰہ من عرشہ یحمدک اللّٰہ ویمشی الیک انت منی بمنزلۃ لَا یعلمھا الخلق انت منی بمنزلۃ توحیدی وتفریدی انت من ماء نا وھم من فشل الحمدللّٰہ الذی جعلک المسیح ابن مریم وعلمک مالم تعلم قالوا انّٰی لک ھٰذا قل ھواللّٰہ عجیب لارآدّ لفضلہٖ لایسئل عمایفعل وھم یسئلون ان ربک فعّال لما یرید خلق اٰدم فاکرمہ اردت ان استخلف فخلقت اٰدم وقالوا اتجعل فیھا من یفسد فیھا قال انی اعلم ما لا تعلمون یقولون ان ھذا الا اختلاق قل اللّٰہ ثم ذرھم فی خوضھم یلعبون وبالحق انزلناہ وبالحق نزل وماارسلناک الا رحمۃ للعالمین یا احمدی انت مرادی ومعی سرّک سرّی شانک عجیب واجرک قریب انی انرتک واخترتک یاتی علیک زمن کمثل

زمن موسٰی ولا تخاطبنی فی الّذین ظلموا انھم مغرقون ویمکرون
ویمکر اللّٰہ واللّٰہ خیر الماکرین انہ کریم تمشّی امامك وعادی لك من
عادی وسوف یعطیك ربّك فترضٰی انا نرث الارض ناکلھا من اطرافھا
لتنذر قومًا ما انذراٰباء ھم ولتستبین سبیل المجرمین قل انی امرت
وانا اوّل المومنین قل یوحٰی الیّ انما اِلٰھکم الٰہ واحد والخیر کلہ فی
القراٰن لایمسہ الا المطھرون فباّ حدیث بعدہ تؤمنون یریدون ان
لایتم امرك واللّٰہ یابی الاان یتم امرك وما کان اللّٰہ لیترکك حتّٰی یمیز
الخبیث من الطیب ھوالذی ارسل رسولہ بالھدیٰ ودین الحق لیظھرہ
علی الدین کلہ وکان وعداللّٰہ مفعولا انّ وعداللّٰہ اتی ورکل ورکی
یعصمك اللّٰہ من العدا ویسطو بکل من سطا حلّ غضبہ علی الارض ذٰلك
بما عصوا وکانوا یعتدون الامراض تشاع والنفوس تضاع امرمن
السماءِ امرمن اللّٰہ العزیز الاکرم ان اللّٰہ لایغیّر ما بقومٍ حتّٰی یغیروا
ما بانفسھم انہ اوی القریۃ لَاعَاصم الیوم الااللّٰہ اصنع الفلك باعیننا
ووحینا انہ معك ومع اھلك انی احافظ کل من فی الدار الاالذین علوا
من استکبار واحافظك خاصۃ سلام قولًا من رب رّحیم سلام علیکم
طبتم وامتازوا الیوم ایھاالمجرمون انی مع الرسول اقوم وافطر و
اصوم والوم من یلوم واعطیك مایدوم واجعل لك انوار القدوم
ولن ابرح الارض الی الوقت المعلوم انی انا الصاعقۃ وانی انا الرحمٰن
ذواللطف والندیٰ۔

अर्थात- ख़ुदा का आदेश आ रहा है। अतः तुम जल्दी मत करो। यह ख़ुशख़बरी है जो प्राचीन काल से नबियों को मिलती रही है। ख़ुदा उनके साथ है जो तक़्वा (संयम) बरतते हैं अर्थात सम्मान, लज्जा और ख़ुदा के भय की पाबन्दी करते हुए उन काल्पनिक मार्गों को भी छोड़ते हैं जिन में गुनाह और अवज्ञा का संशय हो सकता है। और दिलेरी से कोई कदम नहीं उठाते बल्कि डरते डरते किसी कार्य या कथन के करने का इरादा करते हैं। और ख़ुदा उनके साथ है जो

उसके साथ निष्कपट प्रेम रखते और उसके भक्तों से अच्छा बर्ताव करते हैं। वह शक्तिशाली और ग़ालिब है। वह प्रत्येक बात पर ग़ालिब है परन्तु अक्सर लोग नहीं जानते जब वह एक बात को चाहता है तो कहता है कि "हो", अतः वह बात हो जाती है। क्या तुम मुझसे भाग सकते हो। और हम मुजरिमों से बदला लेंगे। कहते हैं कि यह तो केवल मनुष्य का कथन है और इन बातों में दूसरों ने इस व्यक्ति की सहायता की है। यह तो मूर्ख है या पागल है। उनको कह दे कि यदि तुम ख़ुदा से मैत्रीभाव रखते हो तो आओ मेरा अनुसरण करो ताकि ख़ुदा भी तुमसे मैत्रीभाव रखे। और जो लोग तुझ से ठट्ठा करते हैं उनके लिए हम पर्याप्त हैं। मैं उस व्यक्ति को अपमानित करूंगा जो तेरे अपमान का प्रयत्न करेगा और मैं उस व्यक्ति की सहायता करूंगा जो तेरी सहायता करना चाहता है। मैं (वह) हूँ कि मेरे पास होते हुए मेरे रसूल भयभीत नहीं हुआ करते। जब ख़ुदा की सहायता और विजय आएगी और तेरे रब की बात पूरी हो जाएगी तो कहा जाएगा कि यह वही है जिसके लिए तुम जल्दी करते थे। और जब उनको कहा जाता है कि ज़मीन में फसाद मत करो तो कहते हैं कि हम तो सुधार करते हैं। सावधान रहो कि वही फसाद करने वाले हैं। और तुझे उन्होनें हंसी और ठठ्ठे का निशाना बना रखा है और ठठ्ठा मार कर कहते हैं कि क्या यह वही व्यक्ति है जिसे ख़ुदा ने अवतरित फरमाया। यह तो उनकी बातें हैं और असल बात यह है कि हमने उनके सामने सत्य प्रस्तुत किया। अतः वह सत्य को स्वीकार करने से घृणा कर रहें हैं। और जिन लोगों ने अत्याचार किया है वे शीघ्र जान लेंगे कि वे किस ओर फेरे जाएंगे। ख़ुदा उन आरोपों से पवित्र और श्रेष्ठ है जो उस पर लगा रहे हैं और कहते हैं कि तू ख़ुदा की ओर से भेजा हुआ नहीं। उनको कह दे कि मेरे पास ख़ुदा की गवाही मौजूद है तो क्या तुम ईमान लाते हो। तू मेरी दरगाह में सम्माननीय है मैंने तुझे अपने लिए चुन लिया। जब तू किसी पर नाराज़ हो तो मैं उस पर नाराज़ होता हूँ और प्रत्येक वस्तु जिससे तू प्यार करता है मैं भी उससे प्यार करता हूँ। ख़ुदा अपने अर्श से तेरी प्रशंसा करता है। ख़ुदा तेरी प्रशंसा करता है और तेरी ओर चला आता है। तू मुझसे ऐसा निकट है जिसे

संसार नहीं जानता। तू मेरे लिए ऐसा है जैसा कि मेरा एकेश्वरवाद और एक होना। तू हमारे पानी से है और वे लोग फशल से। उस ख़ुदा की प्रशंसा है जिसने तुझे मसीह इब्ने मरयम बनाया और तुझे वह बातें सिखाईं जिनकी तुझे ख़बर न थी। लोगों ने कहा कि यह दर्जा तुझे कहां से ओर कैसे मिल सकता है। उनको कह दे कि मेरा ख़ुदा विचित्र है उसके फज़्ल (कृपा) को कोई रोक नहीं सकता। जो काम वह करता है उससे पूछा नहीं जाता कि ऐसा क्यों किया परन्तु लोगों से अपने-अपने कामों के विषय में पूछा जाता है। तेरा रब्ब जो चाहता है करता है। उसने इस आदम को पैदा करके सम्मान दिया। मैंने इस युग में इरादा किया कि अपना एक ख़लीफा संसार में खड़ा करूं। अत: मैंने इस आदम को पैदा किया और लोगों ने कहा तू ऐसे व्यक्ति को अपना ख़लीफा बनाता है जो संसार में फसाद करता है अर्थात फूट डालता है तो ख़ुदा ने उन्हें कहा कि जिन बातों का मुझे ज्ञान है तुम्हें वह बातें ज्ञात नहीं। और कहते हैं कि यह एक बनावट है। कह दे (कि) ख़ुदा है जिसने यह सिलसिला क़ायम किया है। फिर यह कह कर उनको अपने खेल-कूद में छोड़ दे। और हमने सत्य के साथ उसको उतारा और वास्तविक आवश्यकता के अनुसार वह उतरा। और हमने तुझे समस्त संसार के लिए एक व्यापक रहमत (दया स्वरुप) बनाकर भेजा है। हे मेरे अहमद! तू मेरी मुराद (अभिलाषा) है और मेरे साथ है। तेरा भेद मेरा भेद है तेरी शान विचित्र है और बदला निकट है। मैंने तुझे प्रकाशमान किया और मैंने तेरा चयन किया। तुझ पर एक ऐसा समय आएगा जैसा समय मूसा पर आया था। और तू उन लोगों के बारे में मेरे समक्ष सिफारिश मत कर जो अत्याचारी हैं क्योंकि वे डुबो दिए जांएगे और यह लोग चालाकियां करेंगे और ख़ुदा भी उनकी चालाकियों का उत्तर देगा। और ख़ुदा तआला बेहतरीन उपाय करने वाला है। वह करीम है जो तेरे आगे आगे चलता है और उसको वह अपना शत्रु क़रार देता है जो तुझ से शत्रुता करता है और वह शीघ्र तुझे वह चीज़ें प्रदान करेगा जिन से तू प्रसन्न हो जाएगा। हम ज़मीन के वारिस होंगे और हम उसको उसके किनारों से खाते जाते हैं ताकि तू उस क़ौम को डराए जिन के बाप दादे डराए नहीं गए और

ताकि मुजरिमों का मार्ग स्पष्ट हो जाए। कह दे मैं मामूर (आदेशित किया हुआ) हूँ और में सबसे पहले ईमान लाने वाला हूँ। कह दे मुझ पर यह वह्यी उतरती है कि तुम्हारा ख़ुदा एक ख़ुदा है और सम्पूर्ण भलाइयां क़ुरआन में हैं। उसकी वास्तविकताओं और आध्यात्मिक ज्ञानों तक वही लोग पहुँचते हैं जो पवित्र किए जाते हैं। अतः तुम उसके बाद अर्थात उसको छोड़ कर किस हदीस (बात) पर ईमान लाओगे। यह लोग इरादा करते हैं कि कुछ ऐसा प्रयत्न करें कि तेरा काम अधूरा रह जाए परन्तु ख़ुदा तो यही चाहता है कि तेरी बात को पराकाष्ठा तक पहुँचाए और ख़ुदा ऐसा नहीं है कि इससे पूर्व तुझे छोड़ दे कि जब तक पवित्र और गन्दे में भेद करके न दिखा दे। ख़ुदा वह ख़ुदा है जिसने अपने रसूल को (अर्थात इस विनीत को) हिदायत और सच्चा धर्म देकर इस उद्देश्य से भेजा है ताकि वह इस धर्म को समस्त धर्मों पर विजयी करे और ख़ुदा का वादा एक दिन होना ही था। ख़ुदा का वादा आ गया और एक पाँव उसने धरती पर मारा और बाधाओं को दूर किया। ख़ुदा तुझे शत्रुओं से बचाएगा और उस व्यक्ति पर आक्रमण करेगा जो अत्याचार की दृष्टि से तुझ पर हमला करेगा। उसका क्रोध धरती पर उतर आया क्योंकि लोगों ने गुनाहों पर कमर बान्धी और सीमाओं से आगे निकल गए। बीमारियां देश में फैलाई जाएंगी और विभिन्न कारणों से मौतें होंगी। यह बात आसमान पर तय हो चुकी है यह उस ख़ुदा का आदेश है जो ग़ालिब और महान है। जो कुछ क़ौम पर उतरा ख़ुदा उसको नहीं बदलेगा। जब तक कि वे लोग अपने दिलों की हालतें न बदलें। वह उस गाँव को जो क़ादियान है कुछ कष्ट के बाद अपनी शरण में ले लेगा*। आज ख़ुदा के अतिरिक्त कोई बचाने वाला नहीं। हमारी आँखों के सामने और हमारी वह्यी से कश्ती (नौका)

---

*اٰوٰی (आवा) का शब्द अरबी भाषा में ऐसे अवसर पर प्रयोग होता है कि जब किसी व्यक्ति को कुछ मुसीबत या कष्ट के बाद अपनी शरण में लिया जाए और अधिक कष्टों और नष्ट होने से बचाया जाए जैसा कि अल्लाह तआला फरमाता है اَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيْمًا فَاٰوٰى (अज़्ज़ुहा 7) इसी प्रकार सम्पूर्ण क़ुरआन करीम में آوٰى (आवा) और اوَى (अवा) का शब्द ऐसे ही अवसरों पर प्रयोग हुआ है कि जहाँ किसी व्यक्ति या किसी क़ौम को किसी क़ष्ट के बाद फिर आराम दिया गया। इसी से

बना। वह सामर्थ्यवान ख़ुदा तेरे साथ और तेरे लोगों के साथ है। मैं प्रत्येक को जो तेरे घर के अन्दर है बचाऊंगा परन्तु वह लोग जो मेरे मुकाबले पर अहंकारवश स्वयं को अवज्ञाकारी और ऊँचा समझते हैं अर्थात पूर्णत: आज्ञापालन नहीं करते। और विशेष रूप से मेरी सुरक्षा तेरे साथ रहेगी। ख़ुदाए रहीम की ओर से सलामती है। तुम पर सलामती है। तुम पवित्र जान हो। हे मुजरिमो! आज तुम अलग हो जाओ मैं इस रसूल के साथ खड़ा हूँगा और इफ्तार करूंगा और रोज़ा भी रखूंगा और उसको लान-तान करूंगा जो लान-तान करता है और तुझे वह नेमत दूंगा जो हमेशा रहेगी और अपनी तजल्ली के प्रकाश तुझ में रख दूंगा और मैं इस ज़मीन से निर्धारित समय तक अलग नहीं हूँगा अर्थात मेरे क्रोधपूर्ण चमत्कार में अन्तर न आएगा। मैं बिजली हूँ और मैं रहमान हूँ दयावान और क्षमावान।

दो शहादतों की घटना का वर्णन

इन्हीं दिनों में जबकि बार-बार ख़ुदा की यह वह्यी मुझ पर हुई और बहुत ज़बरदस्त और शक्तिशाली निशान प्रकट हुए तथा मेरा मसीह मौऊद होने का दावा दलीलों के साथ संसार में प्रकाशित हुआ। क़ाबुल की सीमाओं के अन्तर्गत खोस्त इलाके में एक बुजुर्ग तक जिसका नाम अख़वन्द ज़ादा मौलवी अब्दुल्लतीफ है किसी इत्तेफाक़ से मेरी पुस्तकें पहुँची और वे समस्त दलीलें जो उदाहृत और बौद्धिक तथा आसमानी सहायता से मैंने अपनी पुस्तकों में लिखी थी वे समस्त दलीलें उनकी नज़र से गुज़रीं और क्योंकि वह बुज़ुर्ग आन्तरिक रूप से अत्यन्त पवित्र और ज्ञानी, विवेकी, ख़ुदा का भय रखने वाले और संयमी थे इसलिए उनके दिल पर उन दलीलों का गहरा असर हुआ और उनको इस दावे की प्रमाणिकता में कोई कठिनाई न हुई। और उनके पवित्र कान्शंस ने अविलम्ब मान लिया कि यह व्यक्ति अल्लाह की ओर से है और यह दावा सही है। तब उन्होनें मेरी पुस्तकों को अत्यन्त मुहब्बत से देखना आरम्भ किया और उनकी रूह (आत्मा) जो अत्यन्त साफ मुस्तइद (तत्पर) थी मेरी ओर खींची गई। यहाँ तक कि उनके लिए मुलाकात के बिना दूर बैठे रहना अत्यन्त दुर्लभ हो गया। अन्तत: इस जबरदस्त

आकर्षण और मुहब्बत और निष्कपट प्रेम का परिणाम यह हुआ कि उन्होंने इस उद्देश्य से कि काबुल सरकार से अनुमति प्राप्त हो जाए हज के लिए दृढ़संकल्प किया और काबुल के अमीर से इस यात्रा के लिए निवेदन किया। क्योंकि वह काबुल के अमीर की दृष्टि में एक सम्माननीय विद्वान थे और समस्त विद्वानों के सरदार समझे जाते थे इसलिए उनको न केवल अनुमति मिली बल्कि सहायता के रूप में कुछ रुपये भी दिए गए। अतः वह अनुमति प्राप्त करके क़ादियान में पहुँचे और जब मुझसे उनकी मुलाकात हुई तो उस ख़ुदा की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है मैंने उनको अपनी आज्ञापालन और अपने दावे की प्रामाणिकता में ऐसा फना पाया कि जिससे बढ़ कर मनुष्य के लिए संभव नहीं और जैसा कि एक शीशा इतर से भरा हुआ होता है ऐसा ही मैंने उनको अपनी मुहब्बत से भरा हुआ पाया। और जैसा कि उनका चेहरा प्रकाशमान था ऐसा ही उनका दिल मुझे ज्ञात हुआ था। इस बुज़ुर्ग मरहूम में अत्यन्त रश्क योग्य बात यह थी कि वास्तव में वह धर्म को दुनियादारी पर प्राथमिकता देता था। और वह वास्तव में उन सत्यनिष्ठों में से था जो ख़ुदा से डर कर अपने तक़्वा (संयम) और अल्लाह की आज्ञापालन को पराकाष्ठा तक पहुँचा देते हैं तथा ख़ुदा को ख़ुश करने के लिए और उसकी प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए अपनी जान, सम्मान और माल दौलत को एक बेकार कूड़ा कर्कट की तरह अपने हाथ से छोड़ देने को तैयार होते हैं। उसकी ईमानी शक्ति इतनी बढ़ी हुई थी कि यदि मैं उसकी एक अत्यन्त विशाल पर्वत से उपमा दूँ तो मैं डरता हूँ कि मेरी उपमा तुच्छ न हो। अधिकतर लोग बावजूद..... बैअत के और बावजूद मेरे दावे की प्रामाणिकता के फिर भी दुनियादारी को धर्म पर प्राथमिकता देने के ज़हरीले बीज से पूर्णतः मुक्ति नहीं पाते बल्कि कुछ मिलावट उनमें शेष रह जाती है। और एक छुपी हुई कन्जूसी चाहे वह प्राणों से सम्बन्धित हो, चाहे सम्मान से संबंधित, चाहे माल दौलत और चाहे आचरण की अवस्थाओं से सम्बन्धित उनके अपूर्ण नफ्सों (अस्तित्वों) में पाई जाती है। इसी कारण से उनके बारे में हमेशा मेरी यह हालत रहती है कि मैं हमेशा किसी धार्मिक सेवा के प्रस्तुत करने के समय डरता रहता हूँ कि

वे किसी संकट में न पड़ जाएँ और इस सेवा कार्य को अपने ऊपर एक बोझ समझ कर अपनी बैअत को अलविदा न कह दें। परन्तु मैं किन शब्दों से इस बुज़ुर्ग मरहूम की प्रशंसा करूँ जिसने अपने माल दौलत, सम्मान और जान को मेरी आज्ञापालन में यों फेंक दिया कि जिस तरह कोई रद्दी चीज़ फेंक दी जाती है। अधिकतर लोगों को मैं देखता हूँ कि उनका आरम्भ और अन्त समान नहीं होता और छोटी सी ठोकर या शैतानी वसवसा या बुरी सेहत से वे गिर जाते हैं। परन्तु इस जवांमर्द मरहूम की दृढ़ता की व्याख्या मैं किन शब्दों में वर्णन करूँ कि वह नूर-ए-यकीन में प्रत्येक क़दम पर उन्नति करता गया और जब वह मेरे पास पहुँचा तो मैंने उनसे पूछा कि किन दलीलों से आपने मुझे पहचाना। तो उन्होंने फरमाया कि सबसे पहले क़ुरआन है जिसने आपकी ओर मेरा मार्गदर्शन किया और फरमाया कि मैं एक ऐसे स्वभाव का आदमी था कि पहले से निर्णय कर चुका था कि यह युग जिसमें हम हैं इस युग के अधिकतर मुसलमान इस्लामी रूहानियत (आध्यात्मिकता) से बहुत दूर जा गिरे हैं। वे अपनी ज़बानों से कहते हैं कि हम ईमान लाए परन्तु उनके दिल मोमिन (ईमान लाने वाले) नहीं। उनके कथन और कर्म,बिदअत, शिर्क तथा विभिन्न प्रकार के गुनाहों से भरे हुए हैं। इसी प्रकार बाहरी आक्रमण भी अपनी पराकाष्ठा को पहुँच गए हैं। अधिकतर दिल अंधेरे पर्दों में ऐसे शांत पड़े हैं जैसे मर गए हैं। और वह धर्म और तक़्वा (संयम) जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वस्सलाम लाए थे जिसकी शिक्षा सहाबियों (रज़ि०) को दी गई थी तथा वह सच्चाई, विश्वास और ईमान जो उस पवित्र जमाअत को मिला था निस्सन्देह अब वह लापरवाही की अधिकता के कारण लुप्त हो गया है। कहीं-कहीं पाया जाना न होने के बराबर है ऐसा ही मैं देख रहा था कि इस्लाम एक मुर्दा की हालत में हो रहा है और अब वह समय आ गया है कि परोक्ष के पर्दे से कोई अल्लाह की ओर से मुजद्दिद-ए-दीन पैदा हो बल्कि मैं प्रतिदिन इस बेचैनी की अवस्था में था कि समय सीमित होता जाता है उन्हीं दिनों में यह आवाज़ मेरे कानों तक पहुँची कि एक व्यक्ति ने क़ादियान, पंजाब में मसीह मौऊद होने का दावा किया है और मैंने बड़ी कोशिश से कुछ पुस्तकें

आपकी प्राप्त कीं और इन्साफ की नज़र से उन पर विचार विमर्श करके फिर क़ुरआन करीम के आलोक में उनको देखा तो क़ुरआन करीम को उनके प्रत्येक कथन का समर्थक पाया। अतः वह बात जिसने सर्वप्रथम मुझे इस ओर हरकत दी वह यही थी कि मैंने देखा कि एक ओर तो क़ुरआन करीम कह रहा है कि ईसा अलैहिस्सलाम मृत्यु पा गए हैं और वापस नहीं आंएगे और दूसरी ओर वह मूसवी (मूसा के) सिलसिला के मुक़ाबले पर इस उम्मत को वादा देता है कि वह इस उम्मत की मुसीबत और गुमराही के दिनों में उन ख़लीफाओं की तरह ख़लीफे भेजता रहेगा जो मूसवी सिलसिला के क़ायम और सलामत रखने के लिए भेजे गए थे। अतः क्योंकि उनमें से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम एक ऐसे ख़लीफा थे जो मूसवी सलसिला के अन्त में पैदा हुए और साथ ही वह ऐसे ख़लीफा थे कि जो लड़ाई के लिए मामूर (आदेशित) नहीं हुए थे इसलिए ख़ुदा तआला के कलाम से अवश्य यह समझा जाता है कि उनके जैसा भी इस उम्मत में अन्तिम युग में कोई पैदा हो। इसी प्रकार बहुत से शब्द मारिफत और बुद्धिमत्ता के उन के मुंह से मैंने सुने जिन में से कुछ याद रहे और कुछ भूल गए और वह कुछ महीनों तक मेरे पास रहे। उन को मेरी बातों से इतनी दिलचस्पी हुई कि उन्होंने मेरी बातों को हज पर प्राथमिकता दी और कहा कि मैं इस ज्ञान का मुहताज हूं जिस से ईमान मज़बूत हो और ज्ञान कर्म से आगे है। अतः मैंने उन को जिज्ञासु पा कर जहां तक मेरे लिए सम्भव था अपने मारिफ (आध्यात्मिक ज्ञान) उन के दिल में डाले और इस प्रकार उन को समझाया कि देखो यह बात बहुत स्पष्ट है कि अल्लाह तआला क़ुरआन करीम में फरमाता है

إِنَّآ أَرْسَلْنَآ إِلَيْكُمْ رَسُولًا ۙ شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَآ أَرْسَلْنَآ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ رَسُولًا

(अलमुज़्ज़म्मिल - 16)

जिस के यह अर्थ हैं कि हम ने एक रसूल को जो तुम पर गवाह है अर्थात इस बात का गवाह कि तुम कैसी ख़राब हालत में हो, तुम्हारी ओर उसी रसूल के जैसा (रसूल) भेजा है जो फिरऔन की ओर भेजा गया था। अतः इस आयत में हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मसीले मूसा (मूसा का

समरूप) ठहराया है। फिर सूरह नूर में मुहम्मदी ख़िलाफत के सिलसिले को मूसवी ख़िलाफत के सिलसिले का समरूप ठहरा दिया है। इसलिए कम से कम समरूपता सिद्ध करने के लिए यह ज़रूरी है कि दोनों सिलसिलों के आरम्भ और अन्त में स्पष्ट समरूपता हो। अर्थात यह आवश्यक है कि इस सिलसिला के आरम्भ में मूसा का समरूप हो और इस सिलसिले के अन्त में ईसा का समरूप हो। हमारे विरोधी आलिम यह तो मानते हैं कि मिल्लते इस्लामिया का सिलसिला मूसा के समरूप से आरम्भ हुआ परन्तु वह पूर्ण हट धर्मी से इस बात को स्वीकार नहीं करते कि इस सिलसिले का अन्त ईसा के समरूप पर होगा। इस अवस्था में वे जान बूझ कर क़ुरआन करीम को छोड़ते हैं क्या यह सत्य नहीं है कि क़ुरआन करीम ने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हज़रत मूसा का समरूप करार दिया है और क्या यह सत्य नहीं है कि क़ुरआन करीम ने न केवल आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मूसा का समरूप करार दिया था। बल्कि आयत -

كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِم (अन्नूर - 56)

में सम्पूर्ण मुहम्मदी ख़िलाफत के सिलसिले को मूसवी ख़िलाफत के सिलसिले का समरूप क़रार दिया है। अतः इस अवस्था में नितान्त अनिवार्य है कि ख़िलाफते इस्लामियः के सिलसिले के अन्त में एक ईसा के समरूप पैदा हो क्योंकि आरम्भ और अन्त की समानता सिद्ध होने से समस्त सिलसिले की समानता सिद्ध हो जाती है इसलिए ख़ुदा तआला के पवित्र नबियों की किताबों में स्थान स्थान पर इन्हीं दोनों समानताओं पर ज़ोर दिया गया है बल्कि आरम्भ और अन्त के शत्रुओं में भी समानता सिद्ध की गई है जैसा कि अबू जहल को फिरऔन से समानता दी गई है और अन्तिम मसीह के विरोद्धियों को यहूदियों, जिन पर ख़ुदा का अज़ाब बरसा, और आयत كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِم में यह भी इशारा कर दिया गया है कि अन्तिम ख़लीफा इस उम्मत का आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद ऐसे युग में आएगा कि वह युग अपनी अवधि में उस युग के समान होगा जैसा हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बाद

आए थे अर्थात चौदहवीं शताब्दी क्योंकि كَمَا (जैसे) का शब्द जिस समानता को चाहता है उस में युग की समानता भी आती है। यहूदियों के समस्त फिर्के (समुदाय) इस बात पर एकमत हैं कि ईसा इब्ने मरयम ने जिस युग में नुबुव्वत का दावा किया वह युग हज़रत मूसा से चौदहवीं शताब्दी था। ईसाइयों में से प्रोटेस्टेंट धर्म वाले समझते हैं कि पन्द्रहवीं मूसवी शताब्दी के कुछ साल गुज़र चुके थे जब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने नुबुव्वत का दावा किया था और प्रोटेस्टेंट का कथन यहूदियों के सर्वसम्मत कथन के मुकाबलें पर कोई चीज़ नहीं। यदि इस को सच मान लें तो इतने थोड़े से अन्तर से समानता में कोई अन्तर नहीं आता। बल्कि समानता थोड़ा अन्तर चाहती है। ऐसा ही पवित्र क़ुरआन के अनुसार मुहम्मदी सिलसिला मूसवी सिलसिला से प्रत्येक अच्छाई और बुराई में समानता रखता है इसी की ओर इन आयतों में इशारा है कि एक स्थान पर यहूदियों के बारे में लिखा है-

فَيَنْظُرُ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ (अल आराफ-130)

दूसरे स्थान पर मुसलमानों के बारे में लिखा है-

لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ (यूनुस-15)

इन दोनों आयतों के ये अर्थ हैं कि ख़ुदा तुम्हें ख़िलाफत और हुकूमत प्रदान कर के फिर देखेगा कि तुम निष्ठा पर कायम रहते हो कि नहीं। इन आयतों में जो शब्द यहूदियों के लिए प्रयोग किए हैं वही मुसलमानों के लिए। अर्थात एक ही आयत के नीचे उन दोनों को रखा है। अतः इन आयतों से बढ़ कर इस बात के लिए और कौन सा सबूत (प्रमाण) हो सकता है कि ख़ुदा ने कुछ मुसलमानों को यहूद करार दे दिया है। और स्पष्ट इशारा कर दिया है कि जो बुराइयां यहूदियों ने की थीं अर्थात उन के उलमा ने, इस उम्मत के उलमा भी वहीं बुराइयां करेंगे और इसी भावार्थ की ओर आयत غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ (अल्फातिहा 7) में भी इशारा है। क्योंकि इस आयत में समस्त व्याख्याकारों के अनुसार مَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ से अभिप्राय वे यहूदी हैं जिन पर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के इंकार के कारण प्रकोप नाज़िल हुआ था और सहीह हदीसों

में مَغۡضُوۡبِ عَلَيۡهِمۡ से अभिप्राय वे यहूद हैं जो ख़ुदा के अज़ाब का निशाना दुनिया में ही बने थे। क़ुरआन शरीफ यह भी गवाही देता है कि यहूदियों को مَغۡضُوۡبِ عَلَيۡهِمۡ ठहराने के लिए हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की ज़बान पर लानत जारी हुई थी। अतः निस्सन्देह और पूर्ण तौर पर مَغۡضُوۡبِ عَلَيۡهِمۡ से अभिप्राय यहूदी हैं जिन्होंने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को सूली पर मारना चाहा था। अब ख़ुदा तआला का यह दुआ सिखाना कि ख़ुदाया ऐसा कर कि हम वही यहूदी न बन जाएं जिन्होंने ईसा अलैहिस्सलाम को क़त्ल करना चाहा था, स्पष्ट बता रहा है कि उम्मत-ए-मुहम्मदिया में भी एक ईसा पैदा होने वाला है अन्यथा इस दुआ की क्या आवश्यकता थी और साथ ही यह कि जबकि ऊपर वर्णित आयतों से यह सिद्ध होता है की किसी युग में कुछ मुसलमान विद्वान बिलकुल यहूदियों के समान हो जाएंगे और यहूदि बन जाएंगे। फिर यह कहना कि इन यहूदियों के सुधार के लिए इस्राईली ईसा आसमान से उतरेगा बिलकुल अनुचित बात है। क्योंकि पहली बात तो बाहर से एक नबी के आने से ख़त्मे नबुव्वत की मुहर टूटती है और क़ुरआन शरीफ स्पष्ट रूप से आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़ातमुल अम्बिया ठहराता है। इसके अतिरिक्त क़ुरआन शरीफ के अनुसार यह उम्मत "खैरूल उमम" (सर्वश्रेष्ठ उम्मत) कहलाती है। अतः इसका इससे अधिक अपमान और कोई नहीं हो सकता कि यहूदी बनने के लिए तो यह उम्मत हो परन्तु ईसा बाहर से आए। यदि यह सत्य है कि किसी समय में इस उम्मत के अधिकतर विद्वान (आलिम) यहूदी बन जाएंगे अर्थात यहूदी स्वभाव के हो जाएंगे तो फिर यह भी सत्य है कि उन यहूदियों का सुधार करने के लिए ईसा बाहर से नहीं आएगा बल्कि जैसा कि कुछ लोगों का नाम यहूद रखा गया है ऐसा ही उसके मुकाबले पर एक व्यक्ति का नाम ईसा भी रखा जाएगा. इस बात का इंकार नहीं हो सकता कि क़ुरआन और हदीस दोनों ने इस उम्मत के कुछ लोगों का नाम यहूद रखा है जैसा कि आयत غَيۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَيۡهِمۡ से भी स्पष्ट है। क्योंकि यदि इस उम्मत के कुछ लोग यहूदी बनने वाले न होते तो ऊपर वर्णित दुआ कदापि न सिखाई जाती। जब से संसार में ख़ुदा की किताबें

आई हैं, ख़ुदा तआला का उनमें यही मुहावरा है कि जब किसी क़ौम को एक बात से रोकता है कि उदाहरणतया तुम व्यभिचार न करो या चोरी न करो या यहूदी न बनो तो उस रोकने के अन्दर यह भविष्यवाणी छुपी होती है कि उनमें से कुछ लोग यह जुर्म करेंगे। संसार में कोई व्यक्ति ऐसा उदाहरण प्रस्तुत नहीं कर सकता कि एक जमाअत या एक क़ौम को ख़ुदा तआला ने किसी न करने योग्य काम से मना किया हो और फिर वे समस्त लोग उस काम से रुक गए हों बल्कि अवश्य कुछ लोग उस काम को करतें हैं। जैसा कि अल्लाह तआला ने यहूदियों को तौरात में यह आदेश दिया कि तुम तौरात में तह्रीफ★ न करना। अतः इस आदेश का परिणाम यह हुआ कि कुछ यहूदियों ने तौरात की तह्रीफ की। परन्तु क़ुरआन शरीफ में ख़ुदा तआला ने मुसलमानों को कहीं यह आदेश नहीं दिया कि तुम क़ुरआन शरीफ की तह्रीफ न करना बल्कि यह फरमाया कि-

اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّکۡرَ وَ اِنَّا لَہٗ لَحٰفِظُوۡنَ (अल्-हिज्र - 10)

अर्थात हम ने ही क़ुरआन शरीफ को उतारा है और हम ही इस की सुरक्षा करेंगे। इसी कारण क़ुरआन शरीफ तह्रीफ से सुरक्षित रहा। अतः यह पूर्णतः विश्वसनीय और सर्वसम्मत अल्लाह की सुन्नत है कि जब ख़ुदा तआला किसी किताब में किसी क़ौम या जमाअत को एक बुरे काम से रोकता है और एक अच्छे काम को करने का आदेश देता है तो उस के अनादि ज्ञान में यह होता है कि कुछ लोग उस के आदेश का विरोध भी करेंगे। अतः ख़ुदा तआला का सूरह फतिहा में यह फरमाना कि तुम दुआ किया करो कि तुम वह यहूदी न बन जाओ जिन्होंने ईसा अलैहिस्सलाम को सूली पर लटकाना चाहा जिसके कारण उन पर संसार में ही ख़ुदा के प्रकोप की मार पड़ी। इस से स्पष्ट समझा जाता है कि ख़ुदा तआला के ज्ञान में यह सुनिश्चित था कि कुछ लोग जो उम्मत के आलिम कहलांएगे अपनी शरारतों और समय के मसीह को झुठलाने के कारण यहूदियों का रूप धारण कर लेंगे। अन्यथा एक बेफायदा दुआ के सिखलाने की कोई आवश्यकता न थी। यह <u>तो स्पष्ट है कि इस उम्मत के आलिम इस प्रकार के यहूदी नहीं बन सकते कि वह</u>

★ शब्दों को परिवर्तित करके विषय को बदल देना -अनुवादक

इस्राईल के ख़ानदान में से बन जाएं और फिर उस ईसा इब्न मरयम को जो कि एक अवधि हुई संसार से गुज़र चुका है, सूली देना चाहें। क्योंकि अब इस युग में न तो वह यहूदी इस संसार में मौजूद हैं न वह ईसा मौजूद है। अतः स्पष्ट है कि इस आयत में भविष्य की ओर इशारा है और यह बताना उद्देश्य है कि इस उम्मत में ईसा मसीह अलैहिस्सलाम के रूप में अन्तिम युग में एक व्यक्ति अवतरित होगा और उस के समय के कुछ इस्लामी आलिम यहूदी आलिमों की तरह उस को कष्ट देंगे जो ईसा अलैहिस्सलाम को कष्ट देते थे। और उनकी शान में अपशब्द कहेंगे बल्कि सहीह हदीसों से यही समझा जाता है कि यहूदी बनने के यही अर्थ हैं कि यहूदियों के बुरे स्वभाव और बुरी आदतें इस्लाम के आलिमों में पैदा हो जाएंगी। यद्यपि बाह्य रूप से मुसलमान कहलाएंगे परन्तु उन के दिल बिगड़ कर उन यहूदियों के रंग में रंगीन हो जाएंगे जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को कष्ट देकर अल्लाह तआला के प्रकोप के भागी हुए थे। अतः जब कि यहूदी यही लोग बनेंगे जो मुसलमान कहलाते हैं तो क्या यह इस दयनीय उम्मत का अपमान नहीं है कि यहूदी बनने के लिए तो इन को नियुक्त किया जाए परन्तु मसीह जो इन यहूदियों का सुधार करेगा वह बाहर से आए। यह तो क़ुरआन शरीफ की इच्छा से सर्वथा विपरीत है। क़ुरआन शरीफ ने सिलसिला मुहम्मदिया को प्रत्येक अच्छाई और बुराई में सिलसिला मूसविया के मुकाबला पर रखा है न केवल बुराई में। इस के अतिरिक्त आयत غَيۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَيۡہِمۡ (सूरह अल- फातिहा 7) की स्पष्ट यह इच्छा है कि वे लोग यहूदी इसलिए कहलांएगे कि ख़ुदा के मामूर को जो उन के सुधार के लिए आएगा उस को अपमान और इन्कार की नज़र से देखेंगे और उस को झुठला देंगे तथा उसे क़त्ल करना चाहेंगे। और अपने क्रोध की इंद्रियों को उस के विरोध में भड़काएंगे इसलिए वह आसमान पर مَغۡضُوۡبِ عَلَيۡہِمۡ कहलाएंगे, उन यहूदियों की तरह जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को झुठलाने वाले थे जिस झुठलाने का अन्ततः परिणाम यह हुआ कि यहूदियों में भयंकर (ताऊन) प्लेग फैली थी और उस के पश्चात तैतूस रोमी के हाथों वे नष्ट हो गए थे। अतः आयत غَيۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَيۡہِمۡ से स्पष्ट है कि संसार में ही

उन पर कोई अज़ाब आएगा क्योंकि आख़िरत (परलोक) के अज़ाब में तो प्रत्येक काफिर सम्मिलित है और आख़िरत के दृष्टिकोण से समस्त काफिर مَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ हैं फिर क्या कारण है कि अल्लाह तआला ने इस आयत में विशेष रूप से यहूदियों का नाम مَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ रखा जिन्होंने हज़रत ईसा को सूली पर चढ़ाना चाहा था बल्कि अपनी जानकारी में सूली पर चढ़ा चुके थे। अतः याद रहे कि उन यहूदियों को مَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ की विशेषता इसलिए दी गई थी कि संसार में ही उन पर ख़ुदाई अज़ाब आया था और इसी आधार पर सूरह फातिहा में इस उम्मत को यह दुआ सिखाई गई है कि हे ख़ुदा! ऐसा कर कि वही यहूदी हम न बन जाएं। यह एक भविष्यवाणी थी जिस का यह अर्थ था कि जब इस उम्मत का मसीह अवतरित होगा तो उस के मुक़ाबले पर वे यहूदी भी पैदा हो जाएंगे जिन पर इसी संसार में ख़ुदा तआला का अज़ाब आएगा। अतः इस दुआ का यह अर्थ था कि यह सुनिश्चित है कि तुम में से भी एक मसीह पैदा होगा और उस के मुकाबले पर यहूदी पैदा होंगे जिन पर संसार में ही अज़ाब अएगा। इसलिए तुम दुआ करते रहो कि तुम ऐसे यहूदी न बन जाओ।

यह बात याद रखने योग्य है कि यों तो प्रत्येक काफिर क़यामत के दिन ख़ुदा के अज़ाब के आगे होगा परन्तु इस स्थान पर अज़ाब से अभिप्राय संसार का अज़ाब है जो मुजरिमों को सज़ा देने के लिए संसार में ही आता है और वे यहूदी......जिन्होंने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को कष्ट दिया था और क़ुरआन करीम की आयत के अनुसार उनकी ज़बान से लानती कहलाए थे। वे वही लोग थे जिन पर दुनिया में भी अज़ाब की मार पड़ी थी। अर्थात पहले भयंकर ताऊन (प्लेग) से वे नष्ट किए गए थे और जो शेष रह गए थे वे तैतूस रोमी के हाथ से कठोर अज़ाब के साथ देश से निकाल दिए गए थे। अतः غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ में भी यह महान भविष्यवाणी छुपी हुई थी कि वे लोग जो मुसलमानों में से यहूदी कहलाएंगे वे भी एक मसीह को झुठलाएंगे जो उस पूर्व मसीह के रूप में आएगा अर्थात न वह जिहाद करेगा और न तलवार उठाएगा बल्कि पवित्र शिक्षा और आसमानी निशानों के साथ धर्म को फैलाएगा। और इस अन्तिम मसीह को

झुठलाने के बाद भी संसार में ताऊन (प्लेग) फैलेगी और वे सब बातें पूरी होंगी जो आरम्भ से समस्त नबी कहते चले आए हैं। और यह भ्रम कि अन्तिम युग में वही इब्ने मरयम दोबारा संसार में आ जाएगा यह तो पवित्र क़ुरआन की इच्छा के पूर्णता: विपरीत है जो व्यक्ति पवित्र क़ुरआन शरीफ को एक तक्वा ईमान, इंसाफ और विचार विमर्श की दृष्टि से देखेगा उस पर प्रकाशमान दिन के समान स्पष्ट हो जाएगा कि शक्तिशाली और करीम ख़ुदा ने इस उम्मत मुहम्मदिया को पूर्णत: मूसवी उम्मत के मुकाबले पर पैदा किया है। उन की अच्छी बातों के मुकाबले पर अच्छी बातें दी हैं और उन की बुरी बातों के मुकाबले पर बुरी बातें। इस उम्मत में भी कुछ ऐसे हैं जो बनी इस्राईल के नबियों से समानता रखते हैं और कुछ इस प्रकार के हैं जो مَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ यहूदियों से समानता रखते हैं इस का ऐसा उदाहरण है कि मानो एक घर है जिस में अच्छे-अच्छे सजे हुए कमरे मौजूद हैं जो महान और सभ्य लोगों के बैठने का स्थान है और जिस के कुछ भागों में शौचालय भी हैं और नालियां भी। घर के मालिक ने चाहा है कि इस महल के मुक़ाबले पर एक और महल बना दे। ताकि जो सामान उस पहले महल में था इस में भी मौजूद हो। अत: यह दूसरा महल इस्लाम का महल है और वह पहला महल मूसवी सिलसिला का महल था। यह दूसरा महल पहले महल का किसी बात में भी मोहताज नहीं। क़ुरआन शरीफ तौरात का मुहताज नहीं और यह उम्मत किसी इस्राईली नबी की मोहताज नहीं। प्रत्येक पूर्ण जो इस उम्मत के लिए आता है वह आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फैज़ से परवरिश पाया हुआ है और उस की वह्यी (ईशवाणी) मुहम्मदी वह्यी की छाया है। यही एक बिन्दू है जो समझने के योग्य है। अफसोस! हमारे विरोधी हज़रत ईसा को दोबारा लाते हैं। नहीं समझते कि अर्थ तो यह है कि इस्लाम को समानता में गर्व प्राप्त हो न यह अपमान कि कोई इस्राईली नबी आए ताकि उम्मत का सुधार हो।

इसके अतिरिक्त यह अत्यन्त व्यर्थ विचार है कि ऐसी व्यर्थ आस्था पर ज़ोर दिया जाए जिसका ख़ुदा की किताब में कोई उदाहरण नहीं। आहँज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से आसमान पर चढ़ने का निवेदन किया गया जैसा कि क़ुरआन

शरीफ में वर्णित है परन्तु वह यह कह कर अस्वीकार की गई कि

قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيْ هَلْ كُنْتُ اِلَّا بَشَرًا رَّسُوْلًا

(बनी इस्राईल - 94)

(अर्थात तू कह दे पवित्र है मेरा रब्ब (इन बातों से) मैं तो एक मनुष्य रसूल के अतिरिक्त कुछ नहीं)

तो क्या ईसा अलैहिस्सलाम मनुष्य न था कि उसको बिना निवेदन के आसमान पर चढ़ाया गया। फिर क़ुरआन शरीफ से तो केवल अल्लाह की ओर रफा (आध्यात्मिक उन्नति) सिद्ध होता है जो कि एक रूहानी मामला है न कि आसमान की ओर रफा। यहूदियों का ऐतराज़ तो यह था कि जो व्यक्ति लकड़ी पर लटकाया जाए उसका रुहानी रफा अन्य नबियों की तरह ख़ुदा तआला की ओर नहीं होता और यही ऐतराज़ निवारण के योग्य था। अतः क़ुरआन शरीफ ने कहाँ इस ऐतराज़ का निवारण किया है अर्थात इस सम्पूर्ण झगड़े का आधार यह था कि यहूदी कहते थे कि ईसा सूली पर मर गए हैं और जो व्यक्ति सूली पर मर जाए उसका ख़ुदा तआला की ओर रफा नहीं होता इसलिए ईसा अलैहिस्सलाम का और अन्य नबियों की तरह ख़ुदा तआला की ओर रुहानी (आध्यात्मिक) रफा नहीं हुआ। इसलिए वह मोमिन नहीं है और न ही मुक्ति प्राप्त है। क्योंकि क़ुरआन इस बात का ज़िम्मेदार है कि पूर्व झगड़ों का फैसला कर दे इसलिए उसने यह फ़ैसला किया कि ईसा अलैहिस्सलाम का भी अन्य नबियों की तरह रफा हुआ है। ख़ुदा ने तो एक झगड़े का फैसला करना था। अतः यदि ख़ुदा तआला ने इन आयतों में यह फैसला नहीं किया तो फिर बताओ कि किस स्थान पर यह फैसला किया। क्या इस प्रकार की नासमझी ख़ुदा तआला की ओर मन्सूब हो सकती है (नऊज़ुबिल्लाह) कि झगड़ा तो यहूदियों की ओर से रूहानी रफा का था और ख़ुदा यह कहे कि ईसा शरीर के साथ दूसरे आसमान पर बैठा है। स्पष्ट है कि मुक्ति के लिए शरीर के साथ आसमान पर जाना शर्त नहीं केवल रूहानी रफा शर्त है।

अतः इस स्थान पर इस झगड़े के फैसले के लिए यह बताना था कि

(नऊज़ुबिल्लाह) ईसा लानती नहीं है बल्कि अवश्य रूहानी रफा उसको प्राप्त है। इसके अतिरिक्त क़ुरआन करीम में रफा से पहले تَوَفِّیْ (तवफ्फी) का शब्द लाया गया है यह स्पष्ट रूप से इस बात का "करीना" (सन्दर्भ) है कि यह वह रफा है जो प्रत्येक मोमिन को मौत के बाद प्राप्त होता है। تَوَفِّیْ (तवफ्फी) के यह अर्थ करना कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जीवित आसमान पर उठाए गए यह भी यहूदियों की तरह क़ुरआन शरीफ की तहरीफ है। क़ुरआन शरीफ और समस्त हदीसों में तवफ्फी का शब्द रूह कब्ज़ करने के लिए प्रयोग होता है। किसी स्थान पर इन अर्थो में प्रयोग नहीं हुआ कि कोई व्यक्ति शरीर के साथ आसमान पर उठाया गया।

इसके अतिरिक्त इन अर्थों से तो इक़रार करना पड़ता है कि क़ुरआन शरीफ में ईसा की मौत का कहीं वर्णन नहीं और उसने कभी मरना ही नहीं क्योंकि जहाँ कहीं भी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में तवफ्फी का शब्द होगा वहाँ यहीं अर्थ करने पड़ेंगे कि शरीर के साथ आसमान पर चला गया या जाएगा फिर मौत उसकी किस प्रकार सिद्ध होगी।

इसके अतिरिक्त यदि व्यक्ति संसार में दोबारा आ सकता है तो फिर ख़ुदा तआला ने हज़रत ईसा को यहूदियों के सामने अपमानित क्यों किया। क्योंकि जब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने मसीहियत का दावा किया तो यहूदियों ने यह बहस की थी कि तुझे हम सच्चा नबी नहीं मान सकते क्योंकि मलाकी नबी की पुस्तक में लिखा है कि वह सच्चा मसीह जिस के आने का वादा दिया गया है वह आएगा तो आवश्यक है कि उस के आने से पहले इल्यास नबी दुनिया में आए। परन्तु इल्यास नबी अब तक दुनिया में दोबारा नहीं आया इसलिए हम तुझे सच्चा नबी नहीं समझ सकते। तब हज़रत मसीह ने उन को यह उत्तर दिया कि वह इल्यास जो आने वाला था वह यूहन्ना नबी है जिस को मुसलमान यह्या नबी कह कर पुकारते हैं। इस उत्तर पर यहूदी अत्यन्त क्रोधित हो गए और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को अपनी तरफ से झूठी बातें बनाने वाला और झूठा करार दिया। और जैसा कि अब तक वे अपनी पुस्तकों में जिन में से कुछ अब तक

मेरे पास मौजूद हैं हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को झुठलाते हैं और अपनी पुस्तकों में लिखतें हैं कि यदि ख़ुदा तआला क़यामत के दिन हम लोगों से पूछेगा कि इस व्यक्ति को तुम ने स्वीकार नहीं किया तो हम मलाकी नबी की पुस्तक उस के सामने रख देंगे और निवेदन करेंगे कि हे अल्लाह! जब कि तूने स्पष्ट शब्दों में कह दिया था कि जब तक इल्यास नबी दोबारा दुनिया में न आए वह सच्चा मसीह जिस का बनी इस्राईल से वादा है अवतरित नहीं होगा। अतः इल्यास नबी दोबारा संसार में न आया इस लिए हम ने इस व्यक्ति को स्वीकार न किया। हमें यह नहीं कहा गया था कि जब तक इल्यास का समरूप न आए सच्चा मसीह नहीं आऐगा बल्कि हमें कहा गया था कि सच्चे मसीह से पहले सचमुच इल्यास का दोबारा आना आवश्यक है अतः वह बात पूरी न हुई।

फिर इस के बाद यह यहूदी विद्वान जिस की पुस्तक मेरे पास मौजूद है अपनी इस दलील पर बड़ा गर्व कर के पब्लिक के सामने अपील करता है कि क्या ऐसे झूठ गढ़ने वाले को कोई स्वीकार कर सकता है जो तावीलों (मूल अर्थ से हटकर अर्थ करना) से काम लेता है। और अपने गुरू यूहन्ना को अकारण इल्यास कहलाता है। फिर इस के बाद उस ने बड़ा जोश प्रकट किया है और ऐसे अपमान के शब्दों से हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम को याद किया है जिन का वर्णन हम यहां नहीं कर सकते। यदि क़ुरआन शरीफ न उतरा होता तो इस दलील में सामान्यता यहूदी सत्य पर मालूम होते थे। क्योंकि मलाकी नबी की पुस्तक में वास्तव में यह शब्द नहीं हैं कि सच्चे मसीह से पहले इल्यास का समरूप आऐगा बल्कि स्पष्ट लिखा है कि इस मसीह से पहले स्वयं इल्यास का दोबारा आना आवश्यक है। इस अवस्था में यद्यपि इसाई हज़रत मसीह की ख़ुदाई के लिए रोते हैं परन्तु नुबुव्वत भी सिद्ध नहीं हो सकती और यहूदी सच्चे मालूम होते हैं। अतः यह उपकार क़ुरआन शरीफ का इसाइयों पर है कि हज़रत मसीह की सच्चाई प्रकट कर दी।

इस स्थान पर एक प्रश्न शेष रहता है और वह यह कि जिस अवस्था में मलाकी नबी की पुस्तक में स्पष्ट शब्दों में यह लिखा है कि जब तक इल्यास

नबी दोबारा संसार में न आए तब तक वह सच्चा मसीह जिसका बनी इस्राईल को वादा दिया गया है संसार में नहीं आएगा तो फिर इस अवस्था में यहूदियों का क्या दोष था जो उन्होंने हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम को स्वीकार नहीं किया और उस को काफिर, मुर्तद (धर्म त्यागी) तथा मुलहिद (नास्तिक) करार दिया। क्या उन की नेक नीयत के लिए यह पर्याप्त नहीं है कि अल्लाह की पुस्तक के आदेश अनुसार उन्होंने पालन किया। हां यदि मलाकी नबी कि पुस्तक में इल्यास के समरूप का दोबारा आने का वर्णन होता तो इस अवस्था में यहूद दोषी हो सकते थे। क्योंकि यह मामला अधिक बहस के योग्य नहीं था कि यह्या नबी को इल्यास का समरूप करार दिया जाए।

इस प्रश्न का उत्तर यह है कि यहूद ख़ूब जानते थे कि ख़ुदा तआला की यह आदत नहीं है कि कोई व्यक्ति दोबारा संसार में आए और इस का उदाहरण पहले से मौजूद नहीं था। अतः यह केवल एक रूपक था जिस प्रकार और सैंकड़ों रूपक ख़ुदा तआला की पुस्तकों में प्रयोग होते हैं। और ऐसे रूपकों से यहूदी बेख़बर न थे। फिर इस के अतिरिक्त......हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के साथ अल्लाह तआला की सहायताएं भी सम्मिलति थीं और विवेकी के लिए पर्याप्त सामान था कि यहूद उन को पहचान लेते और उन पर ईमान ले आते परन्तु वह दिन प्रतिदिन शरारत में बढ़ते गए और वह नूर (प्रकाश) जो सच्चे लोगों में होता है उस को अवश्य उन्होंने हज़रत ईसा में दर्शन कर लिया था परन्तु पक्षपात, कंजूसी तथा शरारत ने उन को न छोड़ा। परन्तु याद रहे कि यह प्रश्न तो केवल यहूदियों के बारे में होता है जिन को सर्व प्रथम इस कठिन परीक्षा से गुज़रना पड़ा था परन्तु मुसलमान यदि संयम बरतते तो क़ुरआन शरीफ ने इस कठिन परीक्षा से उन को बचा लिया था। क्योंकि स्पष्ट शब्दों में कह दिया था कि ईसा मृत्यु पा चुका और न केवल यही बल्कि सूरह माइदः में स्पष्ट तौर पर समझा दिया था कि वह दोबारा नहीं आएगाा क्योंकि आयत فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِیْ (अल्माइदा- 118) में यही वर्णन है कि अल्लाह तआला क़यामत के दिन हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से पूछेगा कि क्या तूने ही कहा था कि मुझे और मेरी मां को ख़ुदा मानना तो

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम उत्तर देंगे कि हे अल्लाह! यदि मैंने ऐसा कहा होता तो तुझे मालूम होगा क्योंकि तेरे ज्ञान से कोई चीज़ बाहर नहीं। मैंने तो केवल वही कहा था जो तूने फरमाया। फिर जब कि तूने मुझे मृत्यु दे दी तो फिर केवल तू ही उन का निगरान था मुझे उन का क्या ज्ञान था।

अब स्पष्ट है कि यदि यह बात सत्य है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम क़यामत से पहले दोबारा संसार में आएंगे और चालीस वर्ष संसार में रहेंगे सलीब को तोड़ेंगे और ईसाइयों के साथ लड़ाइयां करेंगे तो वह क़यामत में ख़ुदा तआला के समक्ष कैसे कह सकते हैं कि जब तूने मृत्यु दे दी तो इस के बाद मुझे क्या ज्ञान है कि इसाइयों ने कौन सा मार्ग अपनाया। यदि वह यही बयान देंगे कि मुझे ख़बर नहीं तो उन से बढ़ कर संसार में कोई झूठा नहीं होगा क्योंकि जिस व्यक्ति को यह ज्ञान है कि वह संसार में दोबारा आया था और इसाइयों को देखा था कि उस को ख़ुदा समझ रहे हैं तथा उस की उपासना करते हैं और उन से लड़ाइयां कीं और फिर वह ख़ुदा के सामने इंकार करता है कि मुझे कुछ भी ख़बर नहीं कि मेरे बाद उन्होंने क्या किया। इस से बड़ा झूठा कौन ठहर सकता है। सही उत्तर तो यह था कि हां मेरे ख़ुदा मुझे ईसाइयों की गुमराही की ख़ूब ख़बर है क्योंकि मैं दोबारा संसार में जाकर चालीस वर्ष तक वहां रहा और सलीब को तोड़ा अतः मेरा कोई दोष नहीं है। जब मुझे मामूल हुआ कि वे मुश्रिक (अनेकेश्वरवादी) हैं तो मैं उसी समय उन का शत्रु हो गया बल्कि ऐसी अवस्था में जब कि क़यामत से पहले हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम संसार में रह चुके होंगे और उन सब को दण्ड दिए होंगे जो उन को ख़ुदा समझते थे, ख़ुदा तआला का उन से ऐसा प्रश्न एक व्यर्थ प्रश्न होगा क्योंकि जब ख़ुदा तआला को इस बात का ज्ञान है कि उस व्यक्ति ने अपने उपास्य बनाए जाने की सूचना पाकर ऐसे लोगों को ख़ूब दण्ड दिया तो फिर ऐसा प्रश्न करना उस की शान के विपरीत है। अतः मुसलमानों को जिस प्रकार स्पष्ट रूप से ख़ुदा तआला ने यह सुना दिया है कि ईसा मृत्यु पा चुका है और फिर संसार में नहीं आएगा हां उस का समरूप आना आवश्यक है। यदि इस प्रकार का स्पष्टीकरण मलाकी नबी की पुस्तक में होता तो यहूदी

नष्ट न होते। अतः निःसन्देह वे लोग यहूदियों से भी बुरे हैं कि जो ख़ुदा तआला की पुस्तक में इतना स्पष्टीकरण पाकर भी फिर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के दोबारा आने की प्रतीक्षा में हैं।

इसके अतिरिक्त हमारे विरोधी मौलवी लोगों को धोखा देकर यह कहा करते हैं कि यद्यपि क़ुरआन शरीफ से नहीं परन्तु हदीसों से सिद्ध होता है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम दोबारा संसार में आएंगे। परन्तु हमें मालूम नहीं कि हदीसों में कहाँ ओर किस स्थान पर लिखा है कि वही इस्राईली नबी जिसका नाम ईसा था जिस पर इन्जील उतरी थी बावजूद आहँज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़ातमुल अम्बिया होने के फिर संसार में आ जाएगा। यदि केवल ईसा या इब्ने मरयम के नाम पर धोखा खाना है तो क़ुरआन करीम की सूरह तहरीम में इस उम्मत के कुछ लोगों का नाम भा ईसा और इब्ने मरयम रख दिया गया है। ईमानदार के लिए इतना पर्याप्त है कि इस उम्मत के कुछ लोगों का नाम भी ईसा या इब्ने मरयम रखा गया है। क्योंकि जब ख़ुदा तआला ने वर्णित सूरत में उम्मत के कुछ लोगों को मरयम से समानता दी और फिर इस में रूह फूंके जाने का वर्णन किया तो स्पष्ट है कि वह रूह जो मरयम में फूंकी गई वह ईसा था। यह इस बात की तरफ इशारा है कि इस उम्मत का कोई व्यक्ति पहले अपने ख़ुदादाद (ख़ुदा के दिए हुए) संयम के कारण मरयम बनेगा और फिर ईसा हो जाएगा। जैसा कि बराहीने अहमदिया में ख़ुदा तआला ने पहले मेरा नाम मरयम रखा और फिर रूह फूंकने का वर्णन किया और फिर अन्त में मेरा नाम ईसा रख दिया।

और हदीसों में तो स्पष्ट लिखा है कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मेराज की रात में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को मुर्दा रूहों में ही देखा। आप अर्श तक पहुंच गए परन्तु कोई ईसा नाम ऐसा नज़र न आया जो पार्थिव शरीर के साथ अलग था। देखी तो वही रूह देखी जो मृत्यु प्राप्त यह्या के पास थी। स्पष्ट है कि जीवितों का मुर्दों के मकान में से गुज़रना नहीं हो सकता। अतः ख़ुदा ने अपने कथन से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु पर गवाही दी और रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने कर्म से अर्थात देख कर वही

गवाही दे दी। यदि अब भी कोई न समझे तो फिर उससे ख़ुदा समझेगा।

इस के अतिरिक्त उन को यहूदियों से अधिक अनुभव हो चुका है कि ख़ुदा तआला की आदत नहीं है कि लोगों को दोबारा संसार में भेजा करे अन्यथा हमें तो ईसा की अपेक्षा हज़रत सय्यदना **मुहम्मद मुस्तफा** सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दोबारा संसार में आने की अधिक आवश्यकता थी और इसी में हमारी ख़ुशी थी परन्तु ख़ुदा तआला ने اِنَّكَ مَيِّت (अज्ज़ुमर-31) (अर्थात निसन्देह तू मर चुका है) कह कर इस आशा से वंचित कर दिया। यह बात विचार करने योग्य है कि दोबारा दुनिया में आने का द्वार खुला था तो ख़ुदा तआला ने क्यों कुछ दिन के लिए इल्यास नबी को संसार में न भेज दिया इस प्रकार लाखों यहूदियों को नर्क का भागीदार बना दिया। अन्ततः हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम ने ख़ुद ही यह फैसला दिया कि दोबारा आने से किसी समरूप का आना अभिप्राय है। यह फैसला अब तक इंजीलों में लिखा हुआ मौजूद है फिर जिस बात के एक बार फैसला हो चुका है और जो भयानक सिद्ध हो चुका मार्ग उसी राह पर फिर से चलना बुद्धिमानों का काम नहीं है यहूदियों ने इस बात पर हठ करके कि इल्यास नबी दोबारा दुनिया में आएगा सिवाए कुफ्र और गुनाह (पाप) के क्या लाभ उठाया ताकि इस युग के मुसलमान उस लाभ की आशा रखें। जिस सूराख़ से एक बड़ा समूह एक बार काटा गया और नष्ट हो चुका फिर क्यों ये लोग उसी सुराख़ में हाथ डालते हैं। क्या हदीस-

لا يلدغ المؤمن من جحر واحد مرّتين

याद नहीं। इस से सिद्ध होता है कि उन्होंने मौत को भुला दिया है। वे लोग जिस सूरह को दिन में पांच बार अपनी नमाज़ों में पढ़ते हैं अर्थात-

غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَ لَا الضَّآلِّيْنَ (अल्- फातिहा 7)

क्यों इसके अर्थों पर विचार नहीं करते और क्यों यह नहीं सोचते कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के स्वर्गवास पर भी कुछ सहाबियों को यह विचार पैदा हुआ था कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दोबारा संसार में आएंगे परन्तु हज़रत अबू बकर ने यह आयत पढ़ कर-

مَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ

(आले इम्रान - 145)

इस विचार का निवारण कर दिया और इस आयत के यह अर्थ समझाए कि कोई नबी ऐसा नहीं जो मृत्यु न पा चुका हो। अत: यदि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी मृत्यु पा जाएं तो कोई अफसोस की बात नहीं यह मामला सब के लिए समान है।

स्पष्ट है कि यदि सहाबियों[रज़ि] के दिलों में यह विचार होता कि ईसा आसमान पर छ: सौ वर्ष से जीवित बैठा है तो वे अवश्य हज़रत अबू बकर के समक्ष यह विचार प्रस्तुत करते परन्तु उस दिन सब ने स्वीकार कर लिया के समस्त नबी मृत्यु पा चुके हैं। और यदि किसी के दिल में यह विचार भी था कि ईसा अलैहिस्सलाम जीवित हैं तो उस ने इस विचार को एक व्यर्थ वस्तु की तरह अपने दिल से बाहर फेंक दिया। यह मैंने इसलिए कहा है कि सम्भव है कि इसाई धर्म की निकटता के प्रभाव के कारण कोई ऐसा व्यक्ति जो मन्दबुद्धि हो और जिस की (दिरायत) बुद्धि सही न हो यह विचार करता हो कि सम्भवत: ईसा अभी तक जीवित ही है परन्तु इस में कोई सन्देह नहीं है कि इस सिद्दीक़ी उपदेश के बाद समस्त सहाबी इस बात पर एकमत हो गए कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पहले जितने नबी थे सब मृत्यु पा चुके हैं और यह प्रथम इज्मआ (किसी एक बात पर सर्व सहमति होना) था जो सहाबियों में हुआ। सहाबा रज़ि अल्लाह अन्हुम जो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत में डूबे हुए थे कैसे इस बात को स्वीकार कर सकते थे कि बावजूद इस के कि उन के बुज़ुर्ग नबी ने जो समस्त नबियों का सरदार है चौंसठ वर्ष की भी पूरी आयु न पाई परन्तु ईसा छ: सौ वर्षों से आसमान पर जीवित बैठा है। कदापि कदापि नबी की मुहब्बत फत्वा नहीं देती है कि वे ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में विशेषत: ऐसी प्रतिष्ठा स्थापित करते। लानत है ऐसे अक़ीदे (आस्था) पर जिस से आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अपमान अनिवार्य हो। वे लोग तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आशिक थे। वे तो इस बात को सुन कर जीवित

ही मर जाते कि उन का प्यारा रसूल मृत्यु पा चुका है। परन्तु ईसा आसमान पर जीवित बैठा है। वह रसूल न केवल उन को बल्कि ख़ुदा तआला को भी समस्त नबियों से अधिक प्रिय था। इसी कारण ईसाइयों ने जब अपने दुर्भाग्य से इस स्वीकार योग्य रसूल को स्वीकार न किया और उस को इतना उड़ाया कि ख़ुदा बना दिया तो ख़ुदा तआला के स्वाभिमान ने चाहा कि मुहम्मद स. के ग़ुलामों में से एक ग़ुलाम अर्थात इस विनीत★ को उस का समरूप बना कर इस उम्मत में पैदा कर दिया और उस की अपेक्षा इस को अपने फज़ल और पुरस्कार का अधिक भाग प्रदान किया ताकि इसाइयों को ज्ञात हो कि **सम्पूर्ण फज़ल ख़ुदा तआला के अधिकार में है।**

अत: ईसा इब्ने मरयम के समरूप के आने का एक उद्देश्य यह भी था कि उस की ख़ुदाई को टुकड़े टुकड़े कर दिया जाए। मनुष्य का आसमान पर जाकर पार्थिव शरीर के साथ बस जाना अल्लाह की सुन्नत (विधान) के ऐसे ही विपरीत है जैसे कि **फरिश्ते शरीर धारण कर के धरती पर बस जाएँ।**

وَ لَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا (अल- फतह 24)

फिर यह अज्ञानी क़ौम नहीं सोचती कि जिस हालत में सूली पर चढ़ाने के समय अभी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का प्रचार प्रसार अपूर्ण था और अभी दस क़ौमें यहूदियों की अन्य देशों में शेष थीं जो उन के नाम से भी अपरिचित थीं तो फिर हज़रत ईसा की क्या सूझी कि अपना वास्तविक काम **अधूरा छोड़ कर आसमान पर जा बैठे।** फिर आश्चर्य कि इस्लामी पुस्तकों में तो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को "नबी सय्याह" (पर्यटक) लिखा है परन्तु वह तो केवल साढ़े तीन वर्ष अपने ही गांव में रह कर असमान की ओर चले गए।

स्पष्ट है जबकि केवल व्यर्थ कथाओं पर विश्वास करके हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को ख़ुदा माना जाता है फिर यदि वह चमत्कार भी दिखा दें कि आसमान से फरिश्तों के साथ उतरें तो उस समय क्या हाल होगा। **याद रहे कि <u>जो व्यक्ति उतरने वाला था वह बिल्कुल समय पर उतर आया और आज</u>**

★ अर्थात स्वयं हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब - अनुवादक

सम्पूर्ण नविश्ते (पूर्व लिखित वचन) पूरे हो गए। समस्त नबियों की पुस्तकें इसी युग का प्रमाण देती हैं। ईसाइयों का भी यही अक़ीदा (आस्था) है कि इसी युग में मसीह मौऊद का आना आवश्यक था। उन पुस्तकों में स्पष्ट तौर पर लिखा था कि आदम से छटे हज़ार के अन्त पर **मसीह मौऊद आएगा।** अतः छठे हज़ार का अन्त हो गया और लिखा था कि उससे पहले **ज़ुस्सिनीन सितारा** निकलेगा तो वह भी निकल चुका। और लिखा था कि उसके **दिनों में सूर्य और चन्द्र** को एक ही महीना में जो रमज़ान का महीना होगा ग्रहण लगेगा तो एक अवधि हुई कि यह **भविष्यवाणी** भी पूर्ण हो चुकी और लिखा था कि उसके युग में बड़ी भयंकर **ताऊन** (प्लेग) पैदा होगी इसकी ख़बर इन्जील में भी मौजूद है। अतः देखता हूँ कि ताऊन में अब तक पीछा नहीं छोड़ा। और क़ुरआन शरीफ,हदीसों और पहली पुस्तकों में लिखा था कि उसके युग में एक नई सवारी पैगा होगी जो आग से चलेगी और उन्हीं दिनों में ऊंट बेकार हो जाएंगे और यह अन्तिम भाग की हदीस सहीह मुस्लिम में भी मौजूद है। अतः वह सवारी रेल है जो पैदा हो गई और लिखा था कि वह मसीह मौऊद सदी के आरम्भ में आएगा अतः सदी में से भी इक्कीस वर्ष गुज़र गए। अब इन समस्त निशानों के बाद जो व्यक्ति मुझे झुठलाता है वह केवल मुझे नहीं समस्त नबियों को झुठलाता है और ख़ुदा तआला से युद्ध करता है। यदि वह पैदा न होता तो उसके लिए अच्छा था। ख़ूब याद रखो कि समस्त ख़राबी और तबाही जो इस्लाम में पैदा हुई यहाँ तक कि इसी देश हिंदुस्तान में 29 लाख लोग मुर्तद होकर (इस्लाम धर्म त्याग कर) ईसाई हो गए। इसका कारण यही था कि मुसलमान हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में व्यर्थ एवं बढ़ा-चढ़ा कर आशाएं रख कर और उनको प्रत्येक सिफत में विशेषता देकर लगभग ईसाइयों के निकट ही हो गए। यहाँ तक कि जो कुछ मानवीय विशेषताएं वे हज़रत सय्यदना पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में प्रयोग करते हैं यदि किसी ऐतिहासिक पुस्तक में उसी प्रकार की विशेषताएं हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में लिखी हों तो तौबा तौबा कर उठते हैं। उदाहरणतया स्पष्ट है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कभी कभी

बीमार भी हो जाते थे और आप स० को बुख़ार भी आ जाता था और आप स० दवा भी करते थे और कभी कभी सींगिया पिछ के साथ लगवाते थे। परन्तु यदि इसी के समान हज़रत मसीह के बारे में लिखा हो कि वह बुखार या किसी अन्य बिमारी में गिरफ्तार हो गए और उनको उठाकर किसी डाक्टर के पास ले गए तो एक दम चौंक उठेंगे कि यह मसीह की शान के विपरीत है जबकि वह केवल एक कमज़ोर मनुष्य था और समस्त मानवीय कमज़ोरियाँ उसमें पाई जाती थीं। और उसके चार सगे भाई भी थे जिनमें से कुछ उसके विरोधी थे और उसकी सगी बहनें दो थीं। कमज़ोर सा मनुष्य था जो सलीब पर केवल दो कीलों के ठोकने से बेहोश हो गया। हाय अफसोस यदि मुसलमान हज़रत ईसा के बारे में क़ुरआन शरीफ के कथन अनुसार चलते और उनको मृत विश्वास कर लेते और जैसा कि क़ुरआन की इच्छा है उनका दोबारा आना वर्जित समझते तो इस्लाम में यह तबाही न आती जो आ गई और ईसाइयत का अति शीघ्र अन्त हो जाता। अल्लाह का धन्यवाद है कि इस समय उसने आसमान से इस्लाम का हाथ पकड़ लिया।

यह वे बातें थीं जो मैंने साहिबज़ादा मौलवी अब्दुल्लतीफ साहिब से कीं और वह मामला जो अन्त में उनको समझाया वह यह था कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम में धार्मिक दृष्टिकोण से सोलह विशेषताएं हैं (1) प्रथम यह कि वह बनी इस्राईल के लिए एक मौऊद (जिसका वादा दिया गया हो) नबी था जैसा कि इस पर इस्राईली नबियों की पुस्तकें गवाह हैं। (2) दूसरी यह कि मसीह ऐसे समय में आया था कि जबकि यहूदी अपना साम्राज्य खो चुके थे अर्थात उस देश में यहूदियों का कोई साम्राज्य नहीं रहा था। यद्यपि सम्भव था कि किसी और देश में जहाँ यहूदियों के कुछ फिर्के (समुदाय) चले गए थे कोई साम्राज्य उनका स्थापित हो गया हो जैसा कि समझा जाता है कि अफ़ग़ान और इसी प्रकार कश्मीरी भी यहूदियों में से हैं जिनका इस्लाम स्वीकार करने के बाद सुल्तानों में सम्मिलित होना एक ऐसा वृतान्त है जिससे इन्कार नहीं हो सकता। बहरहाल हज़रत मसीह के प्रकटन के समय देश के उस भाग से यहूदियों का साम्राज्य जाता रहा था और वे रोमी साम्राज्य के अधीन जीवन यापन करने करते थे और

रोमी साम्राज्य को अंग्रज़ी साम्राज्य से बहुत सी समानता थी।

(3) तीसरी यह है कि ऐसे वह समय में आया था जब कि यहूदि बहुत से समुदायों में बंट चुके थे और प्रत्येक समुदाय दूसरे समुदाय का विरोधी था और उन सब में परस्पर घोर शत्रुता और झगड़े पैदा हो गए थे। और तौरात के अधिकतर आदेश उन के अत्यधिक मतभेद के कारण भ्रमित हो गए थे। केवल एकेश्वर वाद में वे परस्पर एक मत रखने वाले थे बाकी अधितकर आंशिक मामलों में वे एक दूसरे के शत्रु थे। और कोई उपदेशक उन में परस्पर सन्धि नहीं करवा सकता था और न उस का फैसला कर सकता था। इस अवस्था में वे एक आसमानी निर्णायक के मोहताज थे जो ख़ुदा से नई वह्यी पाकर सच्चे लोगों की हिमायत करे और भाग्य से उन के समस्त समुदाय में ऐसी गुमराही की मिलावट हो गई थी कि शुद्ध रूप में उन में एक भी सच्चा नहीं कहला सकता था। प्रत्येक समुदाय में कुछ न कुछअत झूठ और कम तथा अधिक करने की मिलावट थी। अतः यही कारण था कि यहुदियों के समस्त समुदायों ने मसीह अलैहिस्सलाम को शत्रु मान लिया था और उन की जान लेने की तलाश में रहते थे क्योंकि प्रत्येक समुदाय चाहता था कि हज़रत मसीह पूर्णतः उन को सच्चा कहे और सत्यनिष्ठ और सच्चरित्र समझे और उन के विरोधी को झूठा कहे। ऐसा मुदाहिना (दिल में कुछ और मुंह से कुछ और कहना) ख़ुदा तआला के नबी से मुमकिन नहीं था।

(4) चौथी यह कि मसीह इब्ने मरयम के लिए जिहाद का आदेश न था और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का धर्म यूनानियों और रोमियों की दृष्टि में इस कारण बहुत बदनाम हो चुका था कि वह धर्म की उन्नति के लिए तलवार से काम लेता रहा है चाहे किसी बहाने से। जैसा कि अब तक उन की पुस्तकों में मूसा के धर्म पर बराबर ये ऐतराज़ हैं कि कई लाख दूध पीते बच्चे उस के आदेश से और उस के ख़लीफा यशूअ के आदेश से जो उस का उत्तराधिकारी था, कत्ल किए गए। फिर दाऊद अलैहिस्सलाम और अन्य नबियों की लड़ाइयां भी इस आरोप को चमकाती थीं। अतः इन्सानी की फितरतें इस कठोर आदेश को सहन न कर सकीं और जब यह विचार अन्य धर्म वालों के पराकाष्ठा को

पहुंच गए तो ख़ुदा तआला ने चाहा कि एक ऐसा नबी भेज कर जो केवल सन्धि और शान्ति से धर्म को फैलाए, तौरात के ऊपर से वह नुक्ताचीनी उठाए जो अन्य क़ौमों ने की थी। अत: वह सन्धि का नबी ईसा इब्ने मरयम अ। था।

(5) पांचवीं यह कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के समय में यहूदियों के उलेमा (विद्वानों) का चाल चलन बहुत बिगड़ चुका था। और उन की कथनी और करनी परस्पर एक समान न थी। उन की नमाज़ें और उन के रोज़े केवल दिखावे से भरे थे और माल व दौलत के इच्छुक विद्वान रोमी साम्राज्य के नीचे ऐसे संसारी कीड़े हो चुके थे कि उन की समस्त हिम्मतें इसी में व्यस्त हो गई थीं कि चालाकी से या ख़यानत से या धोखे से या झूठी गवाही से या झूठे फत्वों से दुनिया कमा लें। उन में सिवाय तपस्वियों जैसे वस्त्रों और बड़े बड़े जुब्बों (चोलों) के तनिक भी रूहानियत शेष न रही थी। वे रोमी साम्राज्य के मन्त्रियों से भी सम्मान पाने के इच्छुक थे। विभिन्न प्रकार की जोड़ तोड़ और झूठी ख़ुशामद द्वारा साम्राज्य से सम्मान और कुछ हुकूमत प्राप्त कर ली थी। और क्योंकि उन के लिए सांसारिक मोह माया ही सब कुछ थी इसलिए वे उस सम्मान से जो तौरात के अनुसार चलने से उन को आसमान पर मिल सकता था बिलकुल लापरवाह होकर दुनिया परस्ती के कीड़े बन गए थे और समस्त गर्व सांसारिक सम्मान में समझते थे और इसी कारण ज्ञात होता है कि उस देश के गवर्नर पर जो रोमी साम्राज्य की ओर से था उन का कुछ दबाव भी था क्योंकि उन के बड़े बड़े दुनिया परस्त (भौतिकवाद के उपासक) मौलवी दूर दराज़ की यात्रा कर के क़ैसर (रोम का बादशाह) से मुलाक़ात भी करते और सरकार से सम्बन्ध बना रखे थे और कई लोग उन में से सरकार की छात्रवृति भी खाते थे इसी कारण वे लोग ख़ुद को सरकार का बड़ा शुभचिन्तक दर्शाते थे इसलिए वे यद्यपि एक दृष्टिकोण से नज़रबन्द भी थे परन्तु चापलूसी करके उन्होंने कैसर और उसके दूसरे मन्त्रियों का..... अपने विषय में बहुत अच्छा विचार बना रखा था इन्हीं चालाकियों की वजह से विद्वान उन में से मन्त्रियों की नज़र में सम्माननीय समझे जाते थे और कुर्सियों पर बैठाए जाते थे। इसलिए वह ग़रीब गलील का रहने वाला जिस का

नाम यसूअ इब्न मरयम था उन दुष्ट लोगों के लिए बहुत कष्ट दिया गया। उस के मुंह पर न केवल थूका गया बल्कि गवर्नर के आदेश से उस को कोड़े भी मारे गए। वह चोरों और बदमाशों के साथ हवालात में बन्द किया गया जब कि उसका तनिक भी दोष न था केवल सरकार की ओर से यहूदियों की एक दिलजोई थी क्योंकि सरकार की पालिसी का यह सिद्धान्त है कि बड़े गिरोह के साथ रियायत की जाए। इस लिए इस ग़रीब को कौन पूछता है। यह अदालत थी जिस का परिणाम यह हुआ कि अन्ततः वह यहूदियों के मौलवियों के हवाले कर दिया गया और उन्होंने उसे सूली पर चढ़ा दिया। ऐसी अदालत पर ख़ुदा जो ज़मीन वा आसमान का मालिक है लाअनत करता है। परन्तु अफसोस उन सरकारों पर जिन की आसमान के ख़ुदा पर नज़र नहीं। यों तो कहा जाता है कि पिलातूस जो उस देश का गवर्नर था अपनी पत्नी समेत ईसा अलैहिस्सलाम का मुरीद था और चाहता था कि उसे छोड़ दे परन्तु जब यहूदियों के महान विद्वानों ने जो कैसर की ओर अपनी दुनियादारी के कारण कुछ सम्मान रखते थे उस को यह कह कर धमकाया कि यदि तू उस व्यक्ति को दण्ड नहीं देगा तो हम कैसर के दरबार में तेरे विरुद्ध शिकायत करेंगे। तब वह डर गया क्योंकि बुज़दिल था। अपने इरादा पर क़ायम न रह सका। उसे यह भय इसलिए हुआ कि यहूदियों के कुछ सम्माननीय विद्वानों ने कैसर तक अपनी पहुंच बना रखी थी और गुप्त रूप से यह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में यह मुख़बरी करते रहते थे कि यह उपद्रवी और सरकार का छुपा हुआ शत्रु है। तथा अपना एक गिरोह बना कर क़ैसर पर आक्रमण करना चाहता है। सामान्यतः यह कठिनाइयां भी सामने थीं कि इस सरल स्वभाव और ग़रीब इन्सान को क़ैसर और उन के मन्त्रियों से कोई सम्बन्ध न था और दिखावा करने वालों तथा भौतिकवादियों की तरह उन से कुछ परिचय न था और ख़ुदा पर भरोसा रखता था और अधिकतर यहूदी विद्वान अपनी दुनिया परस्ती, चालबाज़ी और ख़ुशामद वाले स्वभाव के कारण सरकार में धंस गए थे वे वास्तव में सरकार के मित्र ने थे परन्तु ज्ञात होता है कि सरकार इस धोखे में अवश्य आ गई थी कि वे मित्र हैं इसलिए उन के लिए एक

बेगाना ख़ुदा का नबी हर तरीके से अपमानित किया गया परन्तु वह जो आसमान से देखता और दिलों का मालिक है वे समस्त उपद्रवी उस की नज़र से छुपे हुए न थे। अन्ततः परिणाम यह हुआ कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को सूली पर चढ़ा दिए जाने के बाद ख़ुदा ने मरने से बचा लिया और उन की वह दुआ स्वीकार कर ली जो उन्होंने दर्दे दिल से बाग़ में की थी जैसा कि लिखा है कि जब मसीह को विशवास हो गया कि ये दुष्ट यहूदी मेरी जान के दुश्मन हैं और मुझे नहीं छोड़ते तब वह एक बाग़ में रात के समय जाकर बहुत रोया और दुआ की कि हे अल्लाह यदि तू यह प्याला मुझ से टाल दे तो तेरे लिए कठिन नहीं तू जो चाहता है करता है। इस स्थान पर अरबी इंजील में यह इबारत लिखी है

فبکٰی بدموع جاریۃ و عبرات متحدّرۃ فسُمِع لتقواہ

अर्थात ईसा मसीह इतना रोया कि दुआ करते करते उस के मुंह पर आंसू बहने लगे और वह आंसू पानी की तरह उस के गालों पर बहने लगे और वह बहुत रोया और अत्यन्त दुखी हुआ तब उसके संयम के कारण उस की दुआ सुनी गई तथा ख़ुदा के फज्ल ने कुछ कारण उत्पन्न कर दिए कि वह सूली से जीवित उतारा गया फिर गोपनीय रूप से बाग़बानों का रूप धारण कर के उस बाग़ से जहां वह कब्र में रखा गया था बाहर निकल आया और ख़ुदा के आदेश से दूसरे देश की ओर चला गया और साथ ही उस की मां गई जैसा कि अल्लाह तआला फरमाता है

وَّاٰوَیۡنٰہُمَاۤ اِلٰی رَبۡوَۃٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَّ مَعِیۡنٍ (अल्मोमिनून:51)

अर्थात उस मुसीबत के बाद जो सलीब की मुसीबत थी हम ने मसीह और उस की मां को ऐसे देश में पहुंचा दिया जिस की धरती बहुत ऊंची थी और स्वच्छ पानी था तथा अत्यन्त विश्राम का स्थान था। हदीसों में आया है कि इस घटना के बाद ईसा इब्न मरयम ने 120 वर्ष की आयु पाई। और फिर मृत्यु प्राप्त करके अपने ख़ुदा से जा मिला और परलोक में पहुंच कर यह्या अलैहिस्सलाम का हमनशीन हुआ। क्योंकि उस की घटना और हज़रत यह्या नबी की घटना में परस्पर समानता थी। इस में तनिक भी सन्देह नहीं है कि वह नेक इन्सान था

और नबी था परन्तु उसे ख़ुदा कहना कुफ्र है। लाखों इन्सान संसार में ऐसे गुज़र चुके हैं और भविष्य में भी होंगे। ख़ुदा किसी को सम्मानित करने में कभी नहीं थका और न थकेगा।

(6) छठी विशेषता यह है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम क़ैसर रोम के कार्यकाल में अवतिरत हुए थे।

(7) सातवीं विशेषता यह कि रोमी साम्राज्य इसाई धर्म के विरुद्ध था परन्तु अन्तिम परिणाम यह हुआ कि ईसाई धर्म कैसर क़ौम में प्रवेश कर गया यहां तक कि कुछ समय के बाद क़ैसर रोम ईसाई हो गया ।

(8) आठवीं विशेषता यह है कि यसूअ मसीह के समय में जिसको मुसलमान ईसा अलैहिस्सलाम कहते हैं, एक नया सितारा निकला था।

(9) नौंवी विशेषता यह है कि जब उस को सूली पर लटकाया गया था तो सूर्य को ग्रहण लगा था।

(10) दसवीं विशेषता यह है कि उस को कष्ट देने के बाद यहूदियों में भयंकर ताऊन (प्लेग) फैली थी।

(11) ग्यारहवीं विशेषता यह थी कि उस पर धार्मिक पक्षपात से मुदकमा बनाया गया और यह भी ज़ाहिर किया गया कि वह रोमी साम्राज्य का विरोधी और बग़ावत पर उतारू है।

(12) बारहवीं विशेषता यह है कि जब वह सलीब पर चढ़ाया गया तो उस के साथ एक चोर भी सलीब पर लटकाया गया।

(13) तेरहवीं विशेषता यह थी कि जब वह पिलातूस के सामने मृत्यु दण्ड के लिए प्रस्तुत किया गया तो पिलातूस ने कहा मैं उस का कोई गुनाह नहीं पाता।

(14)चौदहवी विशेषता यह है कि यद्यपि वह बाप के न होने के कारण बनी इस्राईल में से न था परन्तु उन के सिलसिला का अन्तिम पैग़म्बर था जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बाद चौदहवीं सदी में प्रकट हुआ।

(15) पन्द्रहवीं विशेषता यह कि ईसा इब्ने मरयम के समय में जो कैसर था उस के शासन काल में बहुत सी नई बातें जनता के आराम और उन के

सफर एवं पड़ाव की सहूलत के लिए निकल आईं थीं। सड़कें बनाई गई थीं और सराएं तैयार की गई थीं। तथा अदालत के नए नियम बनाए गए थे जो अंग्रेज़ी अदालत के समान थे।

(16) सोलहवीं विशेषता मसीह में यह थी कि बिन बाप पैदा होने में आदम से समानता रखता था।

ये सोलह विशेषताएं हैं जो मूसवी सिलसिला के हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम में रखी गई थीं। फिर जब कि ख़ुदा तआला ने मूसवी सिलसिला को नष्ट करके मुहम्मदी सिलसिला क़ायम किया जैसा कि नबियों की पुस्तकों में वादा दिया गया था तो उस हकीम व अलीम (ख़ुदा) ने चाहा कि इस सिलसिला के आरम्भ और अन्त दोनों में पूर्ण समानता पैदा करे तो पहले उस ने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अवतरित कर के मूसा का समरूप करार दिया। जैसा कि आयत-

اِنَّآ اَرۡسَلۡنَآ اِلَيۡكُمۡ رَسُوۡلًا ۙ شَاهِدًا عَلَيۡكُمۡ كَمَآ اَرۡسَلۡنَآ اِلٰى فِرۡعَوۡنَ رَسُوۡلًا

(अलमुज़्ज़म्मिल - 16)

से स्पष्ट है। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने काफिरों के मुकाबले पर तलवार उठाई थी। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी उस समय जबकि मक्का से निकाले गए और आप का पीछा किया गया, मुसलमानों की सुरक्षा के लिए तलवार उठाई। ऐसा ही हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की नज़र के सामने उन का परम शत्रु जो फिरऔन था वह डुबो दिया गया। उसी प्रकार आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने आपका परम शत्रु जो अबू जहल था तबाह किया गया। इसी प्रकार और बहुत सी समानताएं हैं जिन का वर्णन करने से बात लंबी हो जाएगी। यह तो सिलसिले के आरम्भ में समानताएं हैं परन्तु आवश्यक था कि मुहम्मदी सिलसिला का अन्तिम ख़लीफा में भी मूसवी सिलसिला के अन्तिम ख़लीफा से समानता हो, ताकि ख़ुदा तआला का यह फरमाना कि मुहम्मदी सिलसिला इमामों और ख़लीफाओं के सिलसिला की दृष्टि से मूसवी सिलसिला के समान है, ठीक हो तथा समानता सदैव आरम्भ और अन्त में देखी जाती है मध्यकाल जो एक लम्बा समय होता है गुन्जाइज़ नहीं रखता कि पूरी पूरी नज़र

से उसको जांचा जाए परन्तु आरम्भ और अन्त की समानता से यह अनुमान पैदा हो जाता है कि मध्य में भी अवश्य समानता होगी चाहे बौद्धिक दृष्टि उस की पूरी पड़ताल न कर सके। अभी हम लिख चुके हैं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम में धार्मिक दृष्टिकोण से सोलह विशेषताएं थीं जिन का इस्लाम के अन्तिम ख़लीफा में पाया जाना आवश्यक है ताकि उस में और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम में पूर्ण समानता सिद्ध हो। अत: पहली "मौऊद" (वादा दिया गया) होने की विशेषता है इस्लाम में यद्यपि हज़ारों "वली" और अल्लाह वाले गुज़रे हैं परन्तु उन में कोई मौऊद न था लेकिन वह जो मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के नाम पर आने वाला था वह मौऊद था। ऐसा ही हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के पूर्व कोई नबी मौऊद न था केवल मसीह अलैहिस्सलाम "मौऊद" नबी था। दूसरी विशेषता साम्राज्य के बरबाद हो चुकने की है। अत: इसमें क्या सन्देह है कि जैसा कि हज़रत ईसा बिन मरयम से कुछ दिन पहले उस देश से इस्राईली साम्राज्य समाप्त हो चुका था ऐसा ही इस अन्तिम मसीह के जन्म से पूर्व इस्लामी साम्राज्य विभिन्न प्रकार की बदचलनियों के कारण भारत देश से समाप्त हो गया था और उसके स्थान पर अंग्रेज़ी साम्राज्य स्थापित हो गया था। तीसरी विशेषता जो पहले मसीह में पाई गई वह यह है कि उसके समय में यहूदी लोग बहुत से समुदायों में विभाजित हो गए थे और स्वभाविक रूप से एक निर्णायक के मोहताज थे ताकि उनमें निर्णय करे ऐसा ही अन्तिम मसीह के समय में मुसलमानों में बहुत से फिर्के (समुदाय) फैल गए थे। चौथी विशेषता जो पहले मसीह में थी वह यह है कि वह जिहाद के लिए मामूर न था। ऐसा ही अन्तिम मसीह जिहाद के लिए मामूर (आदेशित) नहीं है और कैसे मामूर हो, ज़माने की रफ्तार ने क़ौम को चेतावनी दे दी है कि तलवार से कोई दिल सन्तुष्टि प्राप्त नहीं कर सकता और अब धार्मिक मामलों के लिए कोई सभ्य तलवार नहीं उठाता। और अब ज़माने की जो अवस्था है स्वयं गवाही दे रही है कि मुसलमानों के वे फ़िर्क़े (समुदाय) जो ख़ूनी महदी या ख़ूनी मसीह की प्रतीक्षा में हैं वे सब गलती पर हैं और उनके विचार ख़ुदा तआला की इच्छा के विपरीत हैं। और बुद्धि भी यही गवाही देती है क्योंकि यदि ख़ुदा

तआला की यह इच्छा होती कि मुसलमान धर्म के लिए युद्ध करें तो मौजूदा शैली की लड़ाईयों के लिए सबसे योग्य मुसलमान होते। वे ही तोपों का अविष्कार करते, वे ही नई नई बन्दूकों के अविष्कारकर्ता होते और उन्हीं को युद्ध की कलाओं में प्रत्येक पहलु से श्रेष्ठता प्रदान की जाती। यहाँ तक कि भविष्य के युद्धों के लिए उन्हीं को ग़ुबारा बनाने की सूझती और वही पन्डुब्बियां बनाते जो पानी के भीतर चोटें करती हैं और संसार को हैरान करते हालांकि ऐसा नहीं है बल्कि दिन प्रतिदिन ईसाई इन बातों में उन्नति कर रहें हैं इससे स्पष्ट है कि ख़ुदा तआला की यह इच्छा नहीं है कि लड़ाईयों के द्वारा इस्लाम फैले। हाँ ईसाई धर्म दलीलों की दृष्टि से दिनप्रति दिन सुस्त होता जाता है और बड़े बड़े अनुसन्धाता तस्लीस★ की आस्था को छोड़ते जाते हैं यहाँ तक कि जर्मनी के बादशाह ने भी इस आस्था को त्यागने की ओर संकेत कर दिया है। इससे सिद्ध होता है कि ख़ुदा तआला.... केवल दलीलों के हथियार से ईसाई तस्लीस की आस्था को ज़मीन से नष्ट करना चाहता है। यह नियम है कि जो पहलू होनहार होता है पहले से उसके लक्षण आरम्भ हो जाते हैं। अत: मुसलमानों के लिए आसमान से युद्ध सम्बंधी विजयों के कुछ लक्षण प्रकट नहीं हुए हां धार्मकि दलीलों के लक्षण प्रकट हुए हैं और ईसाई धर्म स्वयं ही पिघलता जाता है। और निकट है कि अति शीघ्र धरती से लुप्त हो जाए। पांचवी विशेषता जो पूर्व मसीह में थी वह यह है कि उसके ज़माने में यहूदियों का चाल चलन बिगड़ गया था विशेषत: अधिकतर उनके जो विद्वान कहलाते थे वे अत्यन्त मक्कार और संसार के मोह में लिप्त तथा सांसारिक लालचों और सांसारिक सम्मानों की अभिलाषाओं में डूब गए थे। ऐसी ही अन्तिम मसीह के समय में सामान्य लोगों और अधिकतर इस्लामी विद्वानों की हालत हो रही है विस्तारपूर्वक लिखने की कोई आवश्कता नहीं। छठी विशेषता अर्थात यह कि हज़रत मसीह क़ैसर रोम के अंतर्गत अवतरित हुए थे। अत: इस विशेषता में अन्तिम मसीह को भी समानता है क्योंकि मैं भी क़ैसर के कार्यकाल <u>के अंतर्गत अवतरित हुआ हूँ। यह क़ैसर उस क़ैसर से श्रेष्ट है जो हज़रत मसीह</u>

★ तीन ख़ुदाओं को मानने की आस्था - अनुवादक

के समय में था क्योंकि इतिहास में लिखा है कि जब क़ैसर रोम को पता चला कि उसके गवर्नर पिलातूस ने बहाने से मसीह को उस दण्ड से बचा लिया है कि वह सूली पर मारा जाए और चेहरा छुपा कर किसी ओर फरार कर दिया है। तो बह बहु नाराज़ हुआ और सिद्ध बात हैं कि यह मुख़बरी यहूदियों ने की तो इसी मुख़बरी के बात तत्काल क़ैसर के आदेश से पिलातूस जेल में डाला गया और अन्त में परिणाम यह हुआ कि जेल में ही उसका सर काटा गया और इस प्रकार पिलातूस मसीह की मुहब्बत में शहीद हुआ। इससे मालूम हुआ कि हुकूमत और साम्राज्य वाले प्राय: धर्म से वंचित रह जाते हैं। उस मूर्ख क़ैसर ने यहूदियों के विद्वानों को बहुत विश्वास योग्य समझा और उनका सम्मान किया तथा उनकी बातों के अनुसार कार्य किया और हज़रत मसीह के क़त्ल किए जाने को देशहित में क़रार दिया। परन्तु जहाँ तक मेरा विचार है अब ज़माना बहुत बदल गया है इसलिए हमारा क़ैसर उस क़ैसर की तुलना में श्रेष्ट है जो ऐसा मुर्ख और अत्याचारी था। (7) सातवीं विशेषता यह कि ईसाई धर्म अन्तत: क़ैसरी क़ौम में प्रवेश कर गया। अत: इस विशेषता में भी अन्तिम मसीह को समानता है क्योंकि में देखता हूँ कि यूरोप और अमरीका में मेरे दावे और दलीलों को बड़ी दिलचस्पी से देखा जाता है। उन लोगों ने स्वयं ही सैंकड़ों अख़बारों में मेरे दावे और दलीलों को प्रकाशित किया है और मेरे समर्थन तथा सत्यापन में ऐसे शब्द लिखे हैं कि एक ईसाई के क़लम से ऐसे शब्द निकलना कठिन है। यहाँ तक कि कुछ ने स्पष्ट शब्दों में लिख दिया है कि यह व्यक्ति सच्चा मालूम होता है और कुछ ने यह भी लिख दिया है कि वास्तव में यसू मसीह को ख़ुदा बताना एक भारी ग़लती है और कुछ ने यह भी लिखा है कि इस समय मसीह मौऊद का दावा बिलकुल समय पर है और समय ख़ुद एक दलील है। अत: उनके इन समस्त बयानों से स्पष्ट है कि वे मेरे दावे को स्वीकार करने के लिए तैयारी कर रहे हैं। और इन देशों में से दिन प्रति दिन ईसाई धर्म स्वयं ही बर्फ की तरह पिघलता जा रहा है। (8) आठवीं विशेषता मसीह में यह थी कि उसके समय में एक सितारा निकला था इस विशेषता में भी मैं आख़री मसीह बनने में शामिल किया गया हूं क्योंकि

वहीं सितारा जो मसीह के समय में निकला था दोबारा मेरे समय में निकला है। इस बात की अंग्रेज़ी अख़बारों ने भी पुष्टि की है और उससे यह परिणाम निकाला गया है कि मसीह के प्रकटन का समय निकट है। (9) नौवीं विशेषता यसूअ मसीह में यह थी कि जब उसको सूली पर चढ़ाया गया तो सूर्य को ग्रहण लगा था अतः इस घटना में भी ख़ुदा ने मुझे सम्मिलित किया है क्योंकि जब मुझे झुठलाया गया तो उस समय न केवल सूर्य को बल्कि चन्द्रमा को भी एक ही महीने में जो रमज़ान का महीना था ग्रहण लगा और न (केवल) एक बार बल्कि हदीस के अनुसार दो बार यह घटना हुई। इन दोनों ग्रहणों की इन्जील में भी ख़बर दी गई है और क़ुरआन शरीफ में भी यह ख़बर है और हदीसों में भी जैसा कि दार-ए-क़ुत्नी में। (10) दसवीं विशेषता यह है कि ईसा मसीह को दुःख देने के बाद यहूदियों में सख़्त ताऊन (प्लेग) फैली थी। अतः मेरे समय में भी सख़्त ताऊन फैल गई। (11) ग्यारहवीं विशेषता ईसा मसीह में यह थी कि यहूदियों के विद्वानों ने कोशिश की कि वह बाग़ी घोषित हो जाए और उस पर मुकदमा बनाया गया और ज़ोर लगाया गया कि उस को मृत्यु दण्ड दिया जाए। अतः इस प्रकार के मुक़दमा में भी ख़ुदा की तक़दीर ने मुझे साझीदार कर दिया कि एक हत्या का मुकदमा मुझ पर बनाया गया। और उसी सिलसिले में मुझे बाग़ी बनाने की कोशिश की गई। यह वही मुक़दमा है जिस में विपक्षियों की ओर से मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी गवाह बन कर आए थे। (12) बारहवीं विशेषता यसूअ मसीह में यह थी कि जब वह सूली पर चढ़ाया गया तो उस के साथ एक चोर भी सलीब पर लटकाया गया अतः इन घटनाओं में भी मैं साझीदार किया गया क्योंकि जिस दिन ख़ुदा तआला ने मुझे ख़ून के मुक़दमा से बरी किया और उस भविष्यवाणी के अनुसार जिस को मैं ख़ुदा से विश्वसनीय वह्यी पाकर सैंकड़ों लोगों में प्रकाशित कर चुका था, मुझ को बरी फरमाया उस दिन मेरे साथ एक ईसाई चोर भी अदालत में प्रस्तुत किया गया था। यह चोर इसाइयों की पवित्र जमाअत मुक्ति फौज में से था जिस ने कुछ रुपए चुरा लिए थे इस चोर को केवल तीन महीने का दण्ड मिला। पहले मसीह के साथी चोर की तरह उस को

मृत्यु दण्ड नहीं मिला।

(13) तेरहवीं विशेषता मसीह में यह थी कि जब वह पिलातूस गवर्नर के सामने प्रस्तुत किया गया और मृत्युदण्ड का निवेदन किया गया तो पिलातूस ने कहा कि मैं उस का कोई दोष नहीं पाता जिस से यह दण्ड दूं। ऐसा ही कप्तान डग्लस साहिब ज़िला मजिस्ट्रेट ने मेरे एक सवाल के उत्तर में मुझ से कहा कि मैं आप पर कोई आरोप नहीं लगाता।

मेरा विचार है कि कप्तान डग्लस अपने दृढ़ संकल्प और न्यायिक बहादुरी में पिलातूस से बहुत बढ़ कर था क्योंकि पिलातूस ने अन्ततः कायरता दिखाई और यहुदियों के उपद्रवी मौलवियों से डर गया परन्तु डग्लस हरगिज़ नहीं डरा। मौलवी मुहम्मद हुसैन ने उस से कुर्सी मांग कर कहा कि मेरे पास लैफ्टिनैन्ट गवर्नर बहादुर साहिब के पत्र हैं परन्तु कप्तान डग्लस ने उस की कुछ भी परवाह न की और मैं बावजूद इस कि मुलज़िम था मुझे कुर्सी दी गई। और उस को कुर्सी के निवेदन पर झिड़क दिया और कुर्सी न दी। यद्यपि आसमान पर कुर्सी पाने वाले ज़मीन पर कुर्सी पाने के बिल्कुल मोहताज नहीं हैं परन्तु यह अच्छे व्यवहार इस हमारे समय के पिलातूस के हमेशा हमें और हमारी जमाअत को याद रहेंगे और संसार के अन्त तक उस का नाम सम्मान के साथ लिया जाएगा।

(14) चौदहवीं विशेषता यसूअ मसीह में यह थी कि वह बाप के न होने की वजह से बनी इस्राईल में से न थे परन्तु फिर भी मूसवी सिलसिला के आख़री नबी थे। जो मूसा अलैहिस्सलाम के बाद चौदहवीं सदी में पैदा हुआ। ऐसा ही मैं भी कुरैश ख़ानदान में से नहीं हूं और चौदहवीं सदी में अवतरित हुआ हूं और सब से अन्तिम हूं।

(15) परन्द्रहवीं विशेषता हज़रत मसीहा में यह थी कि उस समय में संसार की रंगत नई हो गई थी। सड़कों का अविष्कार हो गया था। डाक का अच्छा प्रबन्ध हो चुका था। फौजी प्रबन्ध की बहुत योग्यता पैदा हो गई थी और यात्रियों के विश्राम के लिए बहुत सी बातों का आविष्कार हो गया था तथा पहले की तुलना में कानून व्यवस्था बहुत साफ हो गई थी। ऐसा ही मेरे समय में संसार के

विश्राम के संसाधन बहुत उन्नति कर गए हैं। यहां तक कि रेल की सवारी पैदा हो गई जिस की ख़बर क़ुरआन शरीफ में पाई जाती है। बाकी बातों के पढ़ने वाला स्वयं समझ ले।

(16) सोलहवीं विशेषता हज़रत मसीह में यह थी कि बिन बाप होने के कारण वह हज़रत आदम से समानता रखते थे ऐसा ही मैं भी जुड़वां पैदा होने के कारण हज़रत आदम के समान हूं और उस कथन के अनुसार जो हज़रत मुह्युद्दीन इब्ने अरबी लिखते हैं कि अन्तिम ख़लीफा सीनीउल-असल होगा। अर्थात मुग़लों में से और वह जुड़वां पैदा होगा। पहले लड़की निकलेगी उस के बाद वह पैदा होगा। एक ही समय में इसी प्रकार मेरा जन्म हुआ कि जुम्अः की सुबह को मैं जुड़वा पैदा हुआ। पहले लड़की और उसके बाद मैं पैदा हुआ। न जाने कि यह भविष्यवाणी इब्ने अरबी साहिब ने कहां से ली थी जो पूरी हो गई। उन की पुस्तकों में अब तक यह भविष्यवाणी मौजूद है।

ये सोलह समानताएं हैं जो मुझ में और मसीह में हैं। अब स्पष्ट है कि यदि यह कारोबार मनुष्य का होता तो मुझ में और मसीह इब्ने मरयम में इतनी समानताएं कदापि न होतीं। यों तो झुठलाना प्राचीन काल से उन लोगों का काम है जिन के हिस्से मैं सौभाग्य नहीं। परन्तु इस युग में मौलवियों का झुठलाना विचित्र है। मैं वह व्यक्ति हूं जो बिल्कुल समय पर प्रकट हुआ जिस के लिए आसमान पर रमज़ान के महीने में चन्द्रमा और सूर्य को क़ुरआन हदीस और इन्जील तथा अन्य नबियों की ख़बरों के अनुसार ग्रहण लगा। और मैं वह व्यक्ति हूं जिस के युग में समस्त नबियों की ख़बर और क़ुरआन शरीफ की ख़बर के अनुसार इस देश में आदत से हट कर ताऊन फैल गई। और मैं वह व्यक्ति हूं जो हदीस सहीह के अनुसार उस के युग में हज रोका गया और मैं वह व्यक्ति हूं जिस के समय में वह सितारा निकला जो मसीह इब्ने मरयम के समय में निकला था। और मैं वह व्यक्ति हूं जिस के समय में इस देश में रेल का आविष्कार होकर ऊंट बेकार किए गए और शीघ्र ही वह समय आता है बल्कि बहुत निकट है जब कि मक्का और मदीना के बीच रेल जारी हो कर वे समस्त ऊंट बेकार हो जाएंगे

जो तेरह सौ वर्षों से यह मुबारक यात्रा करते थे। तब उस समय उन उंटों के सम्बन्ध में यह हदीस जो सहीह मुस्लिम में मौजूद है चरितार्थ होगी अर्थात यह कि ليترکنّ القلاص فلا يُسْعٰى عليها अर्थात मसीह के समय में ऊंट बेकार किए जाएंगे और कोई उन पर यात्रा नहीं करेगा। ऐसा ही मैं वह व्यक्ति हूं जिस के हाथ पर सैंकड़ों निशान प्रकट हुए। क्या धरती पर कोई ऐसा व्यक्ति जीवित है कि जो निशान दिखाने में मेरा मुकाबला कर के मुझ पर विजय पा सके। मुझे उस ख़ुदा की क़सम है जिस के हाथ पर मेरी जान है कि अब तक दो लाख से अधिक निशान मेरे हाथ पर प्रकट हो चुके हैं और सम्भवतः दस हज़ार से अधिक लोगों ने पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को स्वप्न में देखा और आप ने मेरी पुष्टि की और इस देश में जो प्रसिद्ध अहले कश्फ थे जिन के तीन तीन चार चार लाख मुरीद थे उन को स्वप्न में दिखलाया गया कि यह व्यक्ति ख़ुदा की ओर से है। और कुछ उन में से ऐसे थे कि मेरे प्रकटन से तीस वर्ष पूर्व संसार से गुज़र चुके थे। जैसा कि एक बुज़ुर्ग ग़ुलाब शाह नाम का ज़िला लुधियाना में था जिस ने मियां करीम बख़्श साहिब मरहूम निवासी जमालपुर को ख़बर दी थी कि ईसा क़ादियान में पैदा हो गया और वह लुधियाना में आएगा। मियां करीम बख़्श एक बहुत नेक एकेश्वरवादी बूढ़ा आदमी था उस ने मुझ से लुधियाना में भेंट की और यह सम्पूर्ण भविष्यवाणी मुझ को सुनाई। इस लिए मौलवियों ने उस का बहुत कष्ट दिया परन्तु उस ने कुछ परवाह न की उस ने मुझे कहा कि गुलाब शाह मुझे कहता था कि ईसा इब्ने मरयम जीवित नहीं वह मर गया है। वह संसार में वापस नहीं आएगा। इस उम्मत के लिए मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद ईसा है जिस को ख़ुदा की कुदरत और युक्ति ने पहले ईसा के समान बनाया है और आसमान पर उस का नाम ईसा रखा है और फरमाया कि हे करीम बख़्श ! जब वह ईसा प्रकट होगा तो तू देखेगा कि मौलवी लोग उस का कितना विरोध करेंगे वे सख़्त विरोद्ध करेंगे परन्तु नामुराद रहेंगे। वह इसलिए संसार में प्रकट होगा ताकि वे झूठे हाशिए जो क़ुरआन पर चढ़ाए गए हैं उन को दूर करे और क़ुरआन का वास्तविक चेहरा संसार को दिखलाए। इस भविष्यवाणी

में उस बुज़ुर्ग ने स्पष्ट तौर से यह इशारा किया है कि तू इतनी आयु पाएगा कि ईसा को देख सके।

अब बावजूद इन समस्त गवाहियों और चमत्कारों और ज़बरदस्त निशानों के मौलवी लोग मुझे झुठलाते हैं और आवश्यक था कि ऐसा ही करते ताकि आयत غَيۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَيۡهِمۡ की भविष्यवाणी पूरी हो जाती। याद रहे कि इस विरोध की मूल जड़ एक मुर्खता है और वह यह कि मौलवी लोग यह चाहते हैं कि जो कुछ उन के पास सच्ची झूठी बातों के ढेर हैं, वे सब निशानियां मसीह मौऊद में सिद्ध होनी चाहिएं। और ऐसे मसीहियत और महदविय्यत के दावेदार को हरगज़ि नहीं मानना चाहिए कि उन की समस्त हदीसों में से चाहे एक हदीस उस पर सिद्ध न हो। हालांकि अनादि काल से यह बात असंभव चली आई है। यहुदियों ने जो जो निशानियां हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के लिए अपनी किताबों में गढ़ रखी थीं वह पूरी न हुईं। फिर उन्हीं अभागे लोगों ने हमारे सय्यद व मौला मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए जो-जो निशानियां गढ़ी थीं और प्रसिद्ध कर रखी थीं वे भी बहुत ही कम पूरी हुईं। और उन का विचार था कि यह अन्तिम नबी बनी इस्राईल से होगा। परन्तु..... आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बनी इस्माईल से पैदा हुए। यदि ख़ुदा तआला चाहता तो तौरात में लिख देता कि उस नबी का नाम मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम होगा और बाप का नाम अब्दुल्लाह और दादा का नाम अब्दुल मुतलिब और मक्का में पैदा होगा और मदीना उस का प्रवास स्थल होगा। परन्तु ख़ुदा तआला ने यह न लिखा क्योंकि एसी भविष्यवाणियों में कुछ परीक्षा भी अभीष्ट होती है। वास्तविकता यह है कि मसीह मौऊद के लिए पहले से ख़बर दी गई है कि वह इस्लाम के विभिन्न फिर्कों के लिए बतौर निर्णायक के आएगा। अब स्पष्ट है कि प्रत्येक फिर्के की अलग अलग हदीसे हैं। अत: यह कैसे संभव हो कि सब के विचारों की वह पुष्टि करे। यदि अहले हदीस की पुष्टि करे तो हनफी नाराज़ होंगे। यदि हनफियों की पुष्टि करे तो शाफई बिगड़ जाऐंगे और शीया अलग ये सिद्धान्त ठहराएंगे कि उन की आस्था के अनुसार वह प्रकट हो। इस अवस्था

में वह कैसे सब को प्रसन्न कर सकता है। इस के अतिरिक्त "निर्णायक" का शब्द स्वयं यह चाहता है कि वह ऐसे समय में आएगा कि जब समस्त फिर्के कुछ न कुछ सच्चाई से दूर जा पड़े होंगे। इस अवस्था में अपनी अपनी हदीसों के साथ उस की परीक्षा करना सख़्त ग़लती है बल्कि नियम तो यह होना चाहिए कि जो निशान और प्रस्तावित निशानियां उस के समय में प्रकट हो जाएं उन से लाभान्वित हों और अन्य को कमज़ोर और मानवीय बनावट समझें। यही नियम उन सौभाग्यशाली यहूदियों ने अपनाया जो मुसलमान हो गए थे। क्योंकि जो जो बातें यहूदियों की निर्धारित हदीसों के अनुसार प्रकट हो गईं और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर सिद्ध हो गईं उन हदीसों को उन्होंने सही समझा और जो पूरी न हुईं उन को कमज़ोर करार दिया। यदि ऐसे न किया जाता तो फिर न हज़रत ईसा की नुबुव्वत यहूदियों की दृष्टि में सिद्ध हो सकती, न हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नुबुव्वत। जो लोग मुसलमान हुए थे उन्हें यहूदियों की सैंकड़ों झूठी हदीसों को छोड़ना पड़ा। जब उन्होंने देखा कि एक ओर कुछ निर्धारित निशानियां पूरी हो गईं और एक ओर कुछ निर्धारित सहायताओं का ख़ुदा के रसूल में एक दरिया जारी है तो उन्होंने उन हदीसों से लाभ उठाया जो पूरी हो गईं। यदि ऐसा न करते तो एक व्यक्ति भी उन में से मुसलमान न हो सकता।

ये वे समस्त बातें हैं कि कई बार और विभिन्न शैलियों में मैंने मौलवी अब्दुल लतीफ साहिब को सुनाई थीं और आश्चर्य कि उन्होंने मुझ से बयान किया कि ये बातें पहले से मुझे ज्ञात हैं और बहुत सी ऐसी विचित्र दलीलें हज़रत मसीह की मृत्यु की और इस बात पर सुनाईं कि इसी युग में और इसी उम्मत में मसीह मौऊद होना चाहिए। जिस से मुझे बहुत आश्चर्य हुआ और उस समय यह शे'र "हसन ज़बसरा बिलाल अज़ हबश"★ याद आया। और प्राय उन का विवेचन क़ुरआन शरीफ से था और वे बार बार कहते थे कि वह लोग कैसे मूर्ख हैं कि जिन का विचार है कि मसीह मौऊद की भविष्यवाणी केवल हदीसों में है।

★ अर्थात - हसन बसरा से और बिलाल हबशा से - अनुवादक

हालांकि जितना क़ुरआन शरीफ से यह सिद्ध होता है कि ईसा मृत्यु पा गए और मसीह मौऊद इसी उम्मत में से आने वाला है उतना प्रमाण हदीसों से नहीं मिलता। अतः ख़ुदा तआला ने उन के दिल को दृढ़ विश्वास से भर दिया था और वह पूर्ण मारिफत (आध्यात्मिक ज्ञान) से मुझे इस प्रकार पहचानते थे जिस प्रकार एक व्यक्ति को आसमान से उतरता हुआ देखा जाता है। उस समय से मुझे यह विचार आया है कि हदीसों में जो मसीह मौऊद के उतरने का वर्णन है यद्यपि यह शब्द सम्मान और प्रतिष्ठा के लिए अरब के मुहावरा में आता है जैसा कि कहते हैं कि अमुक लश्कर अमुक स्थान पर उतरा और जैसा कि किसी शहर में नए आए हुए को कहा जाता है कि आप कहां उतरे हैं और जैसा कि क़ुरआन शरीफ में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में अल्लाह तआला फरमाता है कि मैंने ही इस रसूल को उतारा है और जैसा कि इंजील में आया है कि ईसा और यह्या आसमान से उतरे परन्तु इसके साथ ही यह नुज़ूल (उतरने) का शब्द इस बात की ओर भी इशारा करता है कि मसीह की सच्चाई पर इतनी दलीलें एकत्र हो जाएंगी कि विवेकियों को उस के मसीह मौऊद होने का पूर्ण विश्वास हो जाएगा। मानो वह उन के सामने आसमान से ही उतरा है। अतः ऐसे पूर्ण विश्वास का नमूना शहज़ादा मौलवी अब्दुल लतीफ शहीद ने दिखा दिया। जान देने से बढ़ कर कोई बात नहीं और ऐसी दृढ़ता से जान देना स्पष्ट बतला रहा है कि उन्होंने मुझे आसमान से उतरते हुए देख लिया और अन्य लोगों के लिए भी यह मामला साफ है मेरे दावे के समस्त पहलू सूर्य के समान चमक रहे हैं। पहले क़ुरआन शरीफ ने यह निर्णय कर दिया है कि ईसा इब्ने मरयम मृत्यु पा चुका है और फिर दुनिया में नहीं आएगा और यदि अनुमान के तौर पर क़ुरआन शरीफ के विरुद्ध एक लाख हदीसें भी हों वे सब ग़लत झूठ और किसी असत्य के उपासक की बनावट है। सत्य वही है जो क़ुरआन शरीफ ने फरमाया और हदीसें वे मानने योग्य हैं जो अपने किस्सों में क़ुरआन के बयान किए हुए किस्सों के विरुद्ध न हों। फिर उस के बाद यह फैसला भी क़ुरआन शरीफ ने ही सूरह नूर में "मिन्कुम" (अर्थात तुम में से) शब्द के साथ ही कर दिया है कि इस धर्म

के समस्त ख़लीफे इसी उम्मत में से पैदा होंगे और वे ख़लीफे सिलसिला मूसवी के समरूप होंगे और उन में से केवल एक सिलसिला के अन्त में मौऊद होगा जो ईसा बिन मरयम के समान होगा बाकी मौऊद नहीं होंगे अर्थात नाम लेकर उन के लिए कोई भविष्यवाणी न होगी और यह "मिन्कुम" (अर्थात तुम में से) का शब्द बुख़ारी में भी मौजूद है और मुस्लिम में भी जिस के यही अर्थ हैं कि वह मसीह मौऊद इसी उम्मत में से पैदा होगा। अतः यदि एक चिन्तन करने वाला यहां पूर्ण चिन्तन करे और ख़यानत का मार्ग न अपनाए तो उसको उन तीन "मिन्कुम" के शब्दों पर दृष्टि डालने से विश्वास हो जाएगा कि यह मामला निर्णय तक पहुंच चुका है कि मसीह मौऊद इसी उम्मत में से पैदा होगा। अब रहा मेरा दावा तो मेरे दावे के साथ इतनी दलीलें हैं कि कोई व्यक्ति पूर्णतः निर्लज न हो तो उस के लिए इस से चारा नहीं है कि मेरे दावे को इसी प्रकार मान ले जैसा कि उस ने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नुबुव्वत को माना है। क्या ये दलीलें मेरे दावा के सबूत के लिए कम हैं कि मेरे बारे में क़ुरआन करीम ने इतने प्रसंगों और निशानियों के साथ वर्णन किया है कि एक प्रकार से मेरा नाम बतला दिया है और हदीसों में "कदअ" के शब्द से मेरे गांव का नाम मौजूद है और हदीसों से सिद्ध होता है कि उस मसीह मौऊद का तेरहवीं शताब्दी में जन्म होगा और चौदहवीं शताब्दी में उस का प्रादुर्भाव होगा और सहीह बुख़ारी में मेरा समस्त हुलिया लिखा है और पहले मसीह की अपेक्षा जो मेरे हुलिया में अंतर है वह स्पष्ट कर दिया है और एक हदीस में स्पष्ट यह इशारा है कि वह मसीह मौऊद हिन्द में होगा क्योंकि दज्जाल का बड़ा केन्द्र पूर्व अर्थात हिन्द क़रार दिया है और यह भी लिखा है कि मसीह मौऊद दमिश्क से पूर्व की ओर प्रकट होगा। अतः क़ादियान दमिश्क से पूर्व की ओर है और फिर दावे के समय में और लोगों को झुठलाने के समय में आसमान पर रमज़ान के महीने में सूर्य और चन्द्र को ग्रहण लगना, ज़मीन पर ताऊन का फैलना, हदीस और क़ुरआन के अनुसार रेल की सवारी का आविष्कार हो जाना, ऊंट बेकार हो जाने, हज रोका जाना, सलीब अर्थात ईसाइयत की विजय का समय होना, मेरे हाथ पर सैंकड़ों

निशानों का प्रकट होना, नबियों द्वारा निर्धारित मसीह मौऊद का समय यही होना, शताब्दी के आरम्भ में मेरा अवतरित होना, हज़ारों नेक लोगों का मेरी सच्चाई सिद्ध करने के लिए स्वप्न देखना और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और क़ुरआन शरीफ का वह फरमाना कि यह मसीह मौऊद मेरी उम्मत में से पैदा होगा और ख़ुदा तआला की सहायताओं का मेरे साथ होना और हज़ारों लोगों का दो लाख के लगभग मेरे हाथ पर बैअत करके सत्यनिष्ठा और हार्दिक पवित्रता को अपनाना और मेरे समय में ईसाई धर्म में एक सामान्य गिरावट (पतन) का आना यहां तक कि तस्लीस (तीन ख़ुदाओं की आस्था) के जादू का बर्फ के समान पिघलना आरम्भ हो जाना और मेरे समय में मुसलमानों का बहुत से फिर्कों में विभाजित हो कर पतन की अवस्था में होना और विभिन्न प्रकार की बिदअतों, शिर्क, शराबख़ोरी, हराम कारी, ख़यानत और झूठ संसार में व्याप्त हो कर एक साधारण बदलाव दुनिया में पैदा हो जाना और प्रत्येक पहलू से महान इन्किलाब इस संसार में पैदा हो जाना। और प्रत्येक बुद्धिमान की गवाही से दुनिया का एक सुधारक का मोहताज होना और मेरे मुकाबले से चाहे एजाज़ी कलाम में और चाहे आसमानी निशानों में समस्त लोगों का पराजित हो जाना और मेरी सहायता में ख़ुदा तआला की लाखों भविष्यवाणियां पूरी होना। ये समस्त निशान और अलामतें और प्रसंग एक ख़ुदा से डरने वाले के लिए मुझे स्वीकार करने हेतु पर्याप्त हैं। कुछ मूर्ख इस स्थान पर ऐतराज़ करते हैं कि कुछ भविष्यवाणियां पूरी नहीं हुईं जैसा कि आथम के मरने की और अहमद बेग के दामाद की भविष्यवाणी परन्तु उनको ख़ुदा तआला से शर्म करनी चाहिए क्योंकि जिस हालत में कई लाख भविष्यवाणियां प्रकाशमान दिन के समान पूर्ण हो चुकी हैं और दिन प्रतिदिन नये नये निशान प्रकट होते जाते हैं तो इस अवस्था में यदि एक दो भविष्यवाणियां यदि उनकी समझ में नहीं आईं तो यह उनकी सर्वथा बदबख़्ती है कि इस नासमझी के करण जिसमें स्वयं उनका दोष है ख़ुदा तआला के हज़ारों निशानों और दलीलों और चमत्कारों से इन्कार कर दें और यदि इसी प्रकार इन्कार हो सकता है तो फिर हमें किसी पैग़म्बर का पता बतलाएं जिसकी कुछ भविष्यवाणियों के पूरा

होने के सम्बन्ध में इन्कार नहीं किया गया। अतः मलाकी नबी की भविष्यवाणी अपने ज़ाहरी अर्थों की दृष्टि से अब तक पूरी नहीं हुई। कहाँ इल्यास नबी दुनिया में आया जिसकी यहूदियों को अब तक प्रतीक्षा है। हालाँकि मसीह आ चुका है जिससे पहले उसका आना आवश्यक था। कहाँ मसीह की यह भविष्यवाणी पूरी हुई कि इस युग के लोग अभी जीवित ही होंगे कि मैं वापस आ जाऊंगा। कहाँ उसकी यह भविष्यवाणी पूरी हुई कि पितरस के हाथ में आसमान की चाबियां हैं। कहाँ उसकी यह भविष्यवाणी पूरी हुई कि वह दाऊद का सिहांसन कायम करेगा और कब यह भविष्यवाणी प्रकट हुई कि उसके 12 हवारी 12 सिंहासनों पर बैठेंगे। क्योंकि यहूदी इस्क्रयूती मुर्तद (धर्म से विमुख) हो गया और जहन्नुम में जा पड़ा और उसके स्थान पर जिसके लिए सिहांसन का वादा था एक नया हवारी तराशा गया जो मसीह की कल्पनाओं में भी नहीं था। ऐसा ही हदीसों में लिखा है। अतः दुर्रे मन्सूर में भी है कि यूनुस नबी ने यह भविष्यवाणी निश्चित तौर पर बिना किसी शर्त के की थी कि नेनवा के रहने वालों पर चालीस दिन के अन्दर अज़ाब आएगा जो उनको इस समय सीमा के अन्दर तबाह कर देगा। परन्तु कोई अज़ाब न आया और न वे तबाह हुए। अन्ततः यूनुस को लज्जित होकर उस स्थान से भागना पड़ा। यह भविष्यवाणियां बाइबल में यूना नबी की पुस्तक में मौजूद हैं जिसको ईसाई ख़ुदा तआला की ओर से समझते हैं। फिर बावजूद इन सब बातों के मुसलमान इन पैग़म्बरों पर ईमान भी लाते हैं और इन कुछ ऐतराज़ों की कोई परवाह नहीं करते और वे दो ऊपर वर्णित भविष्यवाणियाँ जिनके बारे में उनका ऐतराज़ है अर्थात आथम से संबंधित और अहमद बेग के दामाद से संबंधित। उन के बारे में हम बार-बार लिख चुके हैं कि आथम की मौत की भविष्यवाणी पूर्ण सफाई से पूरी हो गई है। अब तलाश करो आथम कहां है क्या वह जीवित है या मर गया। भविष्यवाणी का अभिप्राय यह था कि हम दोनों पक्षों में से जो झूठा है वह सच्चे से पहले मरेगा। अतः एक अवधि हुई कि आथम मर गया और यह वाक्य जो इस भविष्यवाणी में मौजूद था कि आथम 15 महीने के अन्दर मरेगा उस के साथ यह शर्त भी प्रकाशित की गई थी कि

वह सत्य की ओर न मुड़े परन्तु आथम ने उसी बहस वाली जगह पर अपनी असभ्यता से रुजूअ (तौबा) कर लिया था क्योंकि जब मैंने उस को कहा कि यह भविष्यवाणी इसलिए की गई है कि तुम ने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपनी किताब में दज्जाल लिखा है तो सुनते ही उस का चेहरा पीला पड़ गया और अत्यन्त गिड़गड़िहट के साथ उस ने अपनी जीभ मुंह से बाहर निकाली और दोनों हाथ कानों पर रख कर कहा कि मैंने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शान में कदापि ऐसा नहीं कहा और बड़ी विनम्रता और गिड़गड़ाहट प्रकट की। उस समय साठ से अधिक मुसलमान और ईसाई इत्यादि मौजूद थे। क्या यह ऐसा शब्द नहीं था जिसको अशिष्टता और असभ्यता से रूजूअ समझा जाए। फिर वह 15 महीने तक विरोध से बिलकुल चुप रहा और अधिकतर रोने धोने में लगा रहा और अपनी हालत उस ने बिलकुल बदल ली। अत: एक नेक दिल ईमानदार के लिए इतना पर्याप्त है कि उस ने 15 महीनों के अन्दर किसी सीमा तक स्वयं में परिवर्तन कर लिया था और चूंकि उस ने अल्लाह तआला से डर कर विनम्रता और गिड़गिड़ाहट अपनाई थी और पूर्णत: असभ्यता और अशिष्टता को त्याग दिया था बल्कि अमृतसर में जो ऐसे लोगों की संगति उसे उपलब्ध थी उसे त्याग कर और वह स्थान छोड़ कर फिरोज़पुर में जाकर रहने लगा। अत: आवश्यक था कि वह इस कदर डर से लाभ प्राप्त करता। अत: यद्यपि इस बात से सुरक्षित न रहा कि मुझ से पहले बहुत जल्दी इन्हीं दिनों में मर गया। परन्तु कुछ न कुछ शर्त के पूरा करने से लाभ प्राप्त कर लिया। उस के मुकाबले में लेखराम था जिस ने भविष्यवाणी की सीमा में किसी प्रकार की कोई गड़िगड़िाहट और भय प्रकट न किया अपितु पहले से भी अशष्टि हो कर, गलियों, शहरों और देहातों में इस्लाम का अपमान करने लगा। सब वह सीमा के अन्दर ही अपने बुरे काम के कारण पकड़ा गया और उस की वह ज़ुबान जो गाली और अपशब्दों में छुरी की तरह चलती थी उसी छुरी ने उस का काम तमाम कर दिया।

रहा अहमद बेग का दामाद तो प्रत्येक व्यक्ति को मालूम हुआ कि यह

भविष्यवाणी दो व्यक्तियों के बारे में थी एक अहमद बेग के बारे में और दूसरे उस के दामाद के बारे में। अत: एक भाग इस भविष्यवाणी का निर्धारित सीमा के अन्दर ही पूरा हो गया अर्थात अहमद बेग निर्धारित सीमा के अन्दर मर गया और इस प्रकार भविष्यवाणी का एक टांग पूरी हो गई अब दूसरी टांग जो शेष है उस के बारे में जो ऐतराज़ है अफसोस कि वह ईमानदारी के साथ प्रस्तुत नहीं किया जाता और आज तक किसी ऐतराज़ करने वाले के मुंह से मैंने यह नहीं सुना कि वह इस प्रकार ऐतराज़ करे कि यद्यपि इस भविष्यवाणी का एक भाग पूरा हो चुका है और हम सच्चे दिल से स्वीकार करते हैं कि वह पूरा हुआ परन्तु दूसरा भाग अभी तक पूरा नहीं हुआ। बल्कि यहूदियों की तरह पूरा होने वाला भाग बिल्कुल झुपा कर ऐतराज़ करते हैं। क्या ऐसा तरीका ईमान, लज्जा और सत्यनिष्ठता के अनुसार है? अब उन की ख़यानत से पूर्ण भाषणशैली को छोड़ते हुए उत्तर यह है कि यह भविष्यवाणी भी आथम की भविष्यवाणी की तरह शर्त पर आधारित है अर्थात यह लिखा गया था कि इस शर्त से वह निर्धारित सीमा के अन्दर पूरी होगी कि उन दोनों में से कोई व्यक्ति भय प्रकट न करे। अत: अहमद बेग ने इस भयानक अवस्था को न पाया और वह इसे झूठ ही समझता रहा। परन्तु अहमद बेग के दामाद और उसके प्रियजनों को यह भयानक अवस्था प्राप्त हुई क्योंकि अहमद बेग की मौत ने उनके दिलों में घबराहट पैदा कर दी थी जैसा कि इन्सानी फितरत कि कठोर से कठोर व्यक्ति भी नमूना देखने के बाद अवश्य भयभीत हो जाता है। इसलिए आवश्यक था कि उसको भी मोहलत दी जाती। अत: यह समस्त ऐतराज़ मूर्खता, अन्धेपन और पक्षपात के कारण है न कि ईमानदारी और सत्यप्राप्ति की इच्छा से। जिस व्यक्ति के हाथ से अब तक दस लाख से अधिक निशान प्रकट हो चुके हैं और हो रहे हैं क्या यदि उसकी एक या दो भविष्यवाणियां किसी मूर्ख, नासमझ और मंदबुद्धि को समझ में न आएं तो इससे यह परिणाम निकाल सकते हैं कि वे समस्त भविष्यवाणियां सही नहीं। मैं यह बात पक्के वादे से लिखता हूँ कि यदि कोई विरोधी चाहे ईसाई हो चाहे नाम का मुसलमान, मेरी भविष्यवाणियों के मुक़ाबले पर उस व्यक्ति की भविष्यवाणियों

को जिसका आसमान से उतरना विचार करते हैं सफाई, और विश्वसनीयता स्पष्टता के मर्तबे पर अधिक सिद्ध कर सके तो मैं उसको नकद एक हज़ार रुपए देने को तैयार हूँ। परन्तु सिद्ध करने का यह तरीका नहीं होगा कि वह क़ुरआन शरीफ को प्रस्तुत करे कि क़ुरआन शरीफ ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को नबी मान लिया है और या उसको नबी करार दे दिया है क्योंकि इस प्रकार तो मैं भी ज़ोर से दावा करता हूँ कि क़ुरआन शरीफ मेरी सच्चाई का भी गवाह है। सम्पूर्ण क़ुरआन शरीफ में कहीं यसूअ का शब्द नहीं है परन्तु मेरे बारे में "मिन्कुम" (तुम में से) का शब्द मौजूद है और दूसरी बहुत सी निशानियां मौजूद हैं बल्कि इस स्थान पर मेरा केवल यह मतलब है कि क़ुरआन शरीफ के अतिरिक्त केवल मेरी भविष्यवाणियों और यसू की भविष्यवाणियों पर अदालतों की सामान्य जांच पड़ताल के रूप में नज़र डाली जाए और देखा जाए कि इन दोनों में से कौन सी भविष्यवाणियां या अधिकतर भाग उनका बौद्धिक तौर पर पूर्ण स्पष्टता से पूरा हो गया और कौन सा इस दर्जे पर नहीं अर्थात यह जांच पड़ताल और मुकाबला ऐसे तौर पर होना चाहिए कि यदि कोई व्यक्ति क़ुरआन शरीफ से इन्कारी हो तो वह भी मत प्रकट कर सके कि सबूत का पहलू किस ओर है।

इसके अतिरिक्त यहाँ मुझे अफसोस होता है कि हमारे विरोधी मुसलमान तो कहलाते हैं परन्तु इस्लाम के सिद्धान्त से अनभिज्ञ हैं। इस्लाम में यह प्रमाणित बात है कि जो भविष्यवाणी अज़ाब के बारे में हो उसके संबंध में आवश्यक नहीं कि ख़ुदा उसको पूरा करे अर्थात जिस भविष्यवाणी का यह विषय हो कि किसी व्यक्ति या समूह पर कोई मुसीबत पड़ेगी उस में यह भी सम्भव है कि ख़ुदा तआला उस मुसीबत को टाल दे जैसा कि यूनुस की भविष्यवाणी को जो चालीस दिन तक सीमित थी, टाल दिया। परन्तु जिस भविष्यवाणी में वादा हो अर्थात किसी पुरस्कार सम्मान से संबंधित भविष्यवाणी हो वह किसी प्रकार टल नहीं सकती। ख़ुदा तआला ने यह फरमाया है कि -

إِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ (आले इमरान - 10)

परन्तु किसी स्थान पर यह नहीं फरमाया कि إِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْوَعِيد

अतः इस में रहस्य यही है कि अज़ाब की भविष्यवाणी भय, दुआ और सदक़ा खैरात (दान-दक्षिणा) से टल सकती है। समस्त पैग़म्बरों का इस पर एकमत है कि दान दक्षिणा, दुआ, भय और विनम्रता से वह मुसीबत जो ख़ुदा के संज्ञान में है जो किसी व्यक्ति पर आएगी वह टल सकती है। अब सोच लो कि प्रत्येक मुसीबत जो ख़ुदा के संज्ञान में है यदि किसी नबी या वली (अल्लाह के भक्त) को उसकी सूचना दी जाए तो उसका नाम उस समय भविष्यवाणी होगा जब वह नबी या वली दूसरों को उस मुसीबत की सूचना दे और यह प्रमाणित बात है कि मुसीबत टल सकती है। अतः निश्चित रूप से यह परिणाम निकला कि ऐसी भविष्यवाणी के प्रकटन में विलम्ब हो सकता है जो किसी मुसीबत की पहले से सूचना दे।

फिर हम अपने विषय की ओर लौट कर लिखते हैं कि मौलवी साहिबज़ादा अब्दुल लतीफ साहिब जब क़ादियान आए तो केवल उन को यही लाभ हुआ कि उन्होंने विस्तारपूर्वक मेरे दावों की दलीलें सुनीं बल्कि उन कुछ महीनों के दौरान जो वह क़ादियान में मेरे पास रहे और एक यात्रा भी जहलुम तक भी मेरे साथ की। कुछ आसमानी निशान भी मेरे समर्थन में उन्होंने देखे। उन समस्त सबूतों, नूरों और विलक्षण निशानों को देखने के कारण वह असाधारण विश्वास से भर गए थे और ऊपरी शक्ति (अर्थात ख़ुदाई ताक़त) उनको खींच कर ले गई। मैंने एक अवसर पर एक ऐतराज़ का उत्तर भी उनको समझाया था जिससे वह बहुत प्रसन्न हुए थे और वह यह कि जिस हालत में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मूसा के समरूप हैं और आपके ख़लीफा बनी इस्राईल के नबियों के समरूप हैं तो फिर क्या कारण है कि मसीह मौऊद का नाम हदीसों में नबी पुकारा गया है परन्तु दूसरे समस्त ख़लीफाओं को यह नाम नहीं दिया गया। तो मैंने उनको यह उत्तर दिया कि जबकि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ातमुल अंबिया थे और आपके बाद कोई नबी नहीं था इसलिए यदि समस्त ख़लीफाओं को नबी के नाम से पुकारा जाता तो ख़त्मे नबुव्वत का मामला अस्पष्ट हो जाता और यदि किसी एक व्यक्ति को भी नबी के नाम से पुकारा जाता तो

असमानता का ऐतराज़ शेष रह जाता क्योंकि मूसा के ख़लीफा नबी हैं। इसलिए अल्लाह की हिकमत (युक्ति) ने यह माँग की कि पहले बहुत से ख़लीफाओं को ख़त्मे नबुव्वत की रियायत के साथ भेजा जाए और उनका नाम नबी न रखा जाए और यह मर्तबा उनको न दिया जाए ताकि ख़त्मे नबुव्वत पर यह निशान हो। फिर अन्तिम ख़लीफा अर्थात मसीह मौऊद को नबी के नाम से पुकारा जाए ताकि ख़िलाफत के मामले में दोनों सिलसिलों की समानता सिद्ध हो जाए और हम कई बार बयान कर चुके हैं मसीह मौऊद की नबुव्वत ज़िल्ली (प्रतिच्छाया रूपी) है क्योंकि वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पूर्ण समरूप होने के कारण नबी के अस्तित्व से लाभान्वित होकर नबी कहलाने का अधिकारी हो गया है। जैसा कि एक वह्यी में ख़ुदा तआला ने मुझे संबोधित करके फरमाया था يا احمدُ جُعِلت مرسلاً हे अहमद तू रसूल बनाया गया अर्थात जैसे कि तू प्रतिच्छाया रूप में अहमद के नाम का अधिकारी हुआ। हालांकि तेरा नाम गुलाम अहमद था। अतः इसी प्रकार प्रतिच्छाया रूप में नबी के नाम का अधिकारी है क्योंकि अहमद नबी है नबुव्वत इससे अलग नहीं हो सकती। और एक बार यह चर्चा हुई कि हदीसों में है कि मसीह मौऊद दो पीले रंग की चादरों में उतरेगा। एक चादर शरीर के ऊपर वाले भाग में होगी और दूसरी चादर शरीर के नीचे के हिस्से में। अतः मैंने कहा कि यह इस ओर इशारा था कि मसीह मौऊद दो बीमारियों के साथ प्रकट होगा क्योंकि ताबीर में पीले कपड़े से अभिप्राय बीमारी है और वे दोनों बीमारियां मुझ में हैं अर्थात एक सिर की बीमारी और दूसरी अत्यधिक पेशाब और दस्तों की बीमारी। अभी वह इसी स्थान पर थे कि बहुत से विश्वास और भारी परिवर्तन के कारण उन पर इल्हाम और वह्यी का द्वार खोला गया और ख़ुदा तआला की ओर से स्पष्ट शब्दों में मेरे सत्यापन के बारे में उन्होंने गवाहियां पाईं जिस की वजह से अन्ततः उन्होंने इस शहादत का शरबत अपने लिए स्वीकार किया जिसके विस्तारपूर्वक लिखने का अब समय आ गया है। निःसन्देह याद रखो कि जिस ढंग से उन्होंने मेरे सत्यापन की राह में मरना स्वीकार किया इस प्रकार की मौत इस्लाम के 1300 वर्ष के सिलसिले में सिवाए

सहाबा रज़ि अल्लाह अन्हुम के नमूना (आदर्श) के और कहीं नहीं पाओगे। अतः निःसन्देह इस प्रकार उनका मरना और मेरे सत्यापन में नगद जान ख़ुदा तआला के हवाले करना, यह मेरी सच्चाई पर एक महान निशान है। परन्तु उनके लिए जो समझ रखते हैं। सन्देह की अवस्था में व्यक्ति कब चाहता है कि अपनी जान दे दे और अपनी पत्नी तथा बच्चों को तबाही में डाले। फिर विचित्र यह कि यह बुज़ुर्ग कोई सामान्य व्यक्ति नहीं था बल्कि काबुल की रियासत में कई लाख की उनकी अपनी जागीर थी और अंग्रेज़ी कार्यकाल में भी बहुत सी भूमि थी। और ज्ञान की शक्ति इतनी थी कि रियासत ने समस्त मौलवियों का उनको सरदार क़रार दिया था। वह क़ुरआन, हदीस और फ़िक़ः के ज्ञान में सबसे अधिक ज्ञानी समझे जाते थे और नए अमीर की पगड़ी बांधने की रस्म भी उन्हीं के हाथ से होती थी और यदि अमीर मृत्यु पा जाए तो उसका जनाज़ः पढ़ने के लिए भी वही नियुक्त थे। यह वे बातें हैं जो हमें विश्वसनीय माध्यमों से पहुंची हैं और स्वयं उनकी ज़बान से मैंने सुना था कि काबुल की रियासत में पचास हज़ार के लगभग उनके श्रद्धावान और मुरीद हैं जिनमें से कुछ सरकारी पदाधिकारी भी थे। अतः यह बुज़ुर्ग काबुल देश में एक व्यक्ति था और क्या ज्ञान की दृष्टि से और क्या संयम की दृष्टि से और क्या मालो दौलत तथा मर्तबे की दृष्टि से और क्या ख़ानदान की दृष्टि से उस देश में अपना उदाहरण नहीं रखता था। मौलवी की उपाधि के अतिरिक्त साहिबज़ादा, अख़वान ज़ादा और शहज़ादा के लक़ब से उस देश में प्रसिद्ध थे और शहीद मरहूम हदीस,तफ्सीर (क़ुरआन की व्याख्या) फ़िक़ः और इतिहास का एक विशाल पुस्तकालय अपने पास रखते थे और नई पुस्तकों के ख़रीदने के लिए हमेशा उत्सुक थे और हमेशा पढ़ने पढ़ाने का काम जारी था और सैंकड़ों व्यक्ति उनके शिष्य होने का गौरव प्राप्त करके मौलवियत की उपाधि पाते थे। परन्तु इसके बावजूद कमाल यह था कि विनीत और विनम्रता में इस मर्तबे तक पहुँच गए थे कि जब तक मनुष्य अल्लाह के लिए फना न हो, यह मर्तबा नहीं पा सकता। प्रत्येक व्यक्ति कुछ शोहरत और ज्ञान से पर्दे में हो जाता है और स्वयं को कुछ समझने लगता है और वही ज्ञान और शोहरत सत्य

को स्वीकार करने में उस की राह में रुकावट बन जाता है परन्तु यह व्यक्ति ऐसा विनीत था कि बावजूद इस के कि समस्त विशेषताओं से युक्त था परन्तु तब भी किसी वास्तविक सच्चाई को स्वीकार करने में उस का अपना ज्ञान और कर्म और ख़ानदानी हैसियत रोक नहीं बन सकती थी और अन्ततः सच्चाई पर अपनी जान क़ुर्बान की और हमारी जमाअत के लिए एक ऐसा आदर्श छोड़ गया जिस का पालन करना ख़ुदा की वास्तविक इच्छा है।

अब हम निम्न में उस बुज़ुर्ग की शहादत की घटना को लिखते हैं कि किस दर्दनाक तरीके से वह क़त्ल किया गया और इस मार्ग में उस ने क्या दृढ़ संकल्प प्रदर्शित किया कि सिवाए ईमान की पूर्ण शक्ति के इस अहंकार के घर (अर्थात संसार) में कोई नहीं दिखा सकता और अन्त में हम यह भी लिखेंगे कि आवश्यक था कि ऐसा ही होता क्योंकि आज से तेईस वर्ष पूर्व उन की शहादत और उन के एक शिष्य की शहादत से संबंधित ख़ुदा तआला ने मुझे सूचना दी थी जिस को उसी समय मैंने अपनी पुस्तक बराहीने अहमदिया में प्रकाशित किया था। अतः इस बुज़ुर्ग मरहूम ने न केवल वह निशान दिखलाया जो पूर्ण दृढ़ संकल्प के रंग में उस से प्रकट हुआ। बल्कि यह दूसरा निशान भी उसके द्वारा प्रकट हो गया जो एक लम्बी अवधि की भविष्यवाणी उस की शहादत से पूरी हो गई जैसे कि हम इन्शा अल्लाह अन्त में इस भविष्यवाणी को वर्णन करेंगे।

स्पष्ट रहे कि बराहीन अहमदिया की भविष्यवाणी में दो शहादतों का वर्णन है और पहली शहादत मियाँ अब्दुर्रहमान, वर्णित मौलवी साहिब के शिष्य की थी जो अमीर अब्दुर्रहमान अर्थात इस अमीर के बाप के द्वारा पूरी हुई। इसलिए हम समय क्रम के दृष्टिकोण से पहले मियां अब्दुर्रहमान मरहूम की शहादत का वर्णन करते हैं।

मियां अब्दुर्रहमान मरहूम की शहादत का वर्णन जो मौलवी साहिबज़ादा अब्दुल लतीफ साहिब रईस-ए--आज़म ख़ोस्त, देश अफ़ग़ानिस्तान के शिष्य थे

मौलवी साहिबज़ादा अब्दुल लतीफ साहिब मरहूम की शहादत से लगभग दो वर्ष पूर्व उनकी इच्छा और हिदायत पर उनके सन्मार्ग प्राप्त शिष्य मियां अब्दुर्रहमान क़ादियान में सम्भवत: दो या तीन बार आए और हर बार कई-कई महीने तक रहे और लगातार साथ रहने, शिक्षाओं और दलीलों के सुनने से उनका ईमान शहीदों का रंग पकड़ गया और अन्तिम बार जब काबुल वपिस गए तो वह मेरी शिक्षा से पूरा हिस्सा ले चुके थे और संयोग से उनकी उपस्थिति के दिनों में मेरी ओर से कुछ पुस्तकें जिहाद के वर्जित होने के संबंध में प्रकाशित हुई थीं जिनसे उनको विश्वास हो गया था कि यह सिलसिला (अहमदिया जमाअत) जिहाद का विरोधी है। फिर ऐसा संयोग हुआ कि जब वह मुझसे विदा होकर पेशावर में पहुँचे तो संयोगवश ख़्वाजा कमालुद्दीन साहिब वकील से जो पेशावर में थे और मेरे मुरीद हैं, मुलाकात हुई और उन्हीं दिनों में ख़्वाजा कमालुद्दीन साहिब ने एक पुस्तक जिहाद के निषेद में प्रकाशित की थी। उसकी उनको भी सूचना मिली और वह विषय ऐसा उनके दिल में बैठ गया कि काबुल में जाकर जगह जगह उन्होंने यह चर्चा आरम्भ कर दी कि अंग्रेज़ों से जिहाद करना ठीक नहीं क्योंकि वे मुसलमानों के एक बड़े समूह के सहायक हैं और कई करोड़ मुसलमान उनके अधीन शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत करते हैं। तब यह ख़बर धीरे-धीरे अमीर अब्दुर्रहमान को पहुँच गई और यह भी कुछ उपद्रवी पंजाबियों ने किया जो उसके साथ नौकरी करते हैं उस पर प्रकट किया कि यह एक पंजाबी व्यक्ति का मुरीद है जो स्वयं को मसीह मौऊद कहता है और उसकी यह भी शिक्षा है कि अंग्रेज़ों से जिहाद ठीक नहीं, बल्कि इस युग में जिहाद का पूर्णत: विरोधी है। तब अमीर यह बात सुन कर बहुत क्रोधित हो गया और उसको बन्दी बनाने का आदेश दिया ताकि अधिक खोज से कुछ अधिक हाल मालूम हो। अन्तत: यह

बात सबूतों से सिद्ध हो गई कि अवश्य यह व्यक्ति मसीह क़ादियानी का मुरीद और जिहाद के विषय का विरोधी है। तब उस पीड़ित को गर्दन में कपड़ा डाल कर और सांस बन्द करके शहीद किया गया। कहते हैं कि उसकी शहादत के समय कुछ आसमानी निशान प्रकट हुए।

यह तो मियाँ अब्दुर्रहमान शहीद का वर्णन है। अब हम मौलवी साहिबज़ादा अब्दुल लतीफ की शहादत का दर्दनाक वर्णन करते हैं और अपनी जमाअत को उपदेश करते हैं कि इस प्रकार का ईमान प्राप्त करने के लिए दुआ करते रहें क्योंकि जब तक मनुष्य कुछ ख़ुदा का और कुछ दुनिया का है तब तक आसमान पर उसका नाम मोमिन नहीं।

मौलवी साहिबज़ादा अब्दुल लतीफ साहिब मरहूम रईस--ए-आज़म ख़ोस्त, स्थान काबुल (अल्लाह उनको क्षमा करे) की शहादत के भयानक वृतान्त का वर्णन

हम पहले बयान कर चुके हैं कि मौलवी साहिब ख़ोस्त इलाक़ा काबुल से क़ादियान में आकर कई महीने मेरे पास और मेरी संगति में रहे फिर उसके बाद जब आसमान पर इस मामले का पूर्णत: निर्णय हो गया कि वह शहादत का दर्जा पाएं तो उसके लिए यह कारण पैदा हुआ कि वह मुझ से विदा होकर अपने देश की ओर वापस प्रस्थान कर गए। अब जैसा कि विश्वसनीय माध्यमों से और विशेष देखने वालों के द्वारा मुझे मालूम हुआ है कज़ा व कदर (भाग्य) से ऐसा घटित हुआ कि मौलवी साहिब रियासत काबुल के निकट पहुँचे तो अंग्रेज़ी क्षेत्र में ठहर कर ब्रिगेडियर मुहम्मद हुसैन कोतवाल को जो उनका शिष्य था एक पत्र लिखा कि यदि आप अमीर साहिब से मेरे आने की अनुमति प्राप्त करके मुझे सूचना दें तो मैं अमीर साहिब के पास काबुल में उपस्थित हो जाऊं। बिना अनुमति इसलिए न गए कि यात्रा के समय अमीर साहिब को यह सुचना दी थी कि मैं हज को जाता हुँ परन्तु क़ादियान में बहुत देर तक ठहरने से वह इरादा पूरा न हो सका और समय हाथ से जाता रहा और चूंकि वह मेरे बारे में पहचान

कर चुके थे कि यही व्यक्ति मसीह मौऊद है इसलिए मेरी संगति में रहना उनको श्रेष्ठ मालूम हुआ और क़ुरआनी आयत-

(अन्निसा-60) اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ

के अनुसार हज का इरादा उन्होंने किसी दूसरे साल पर डाल दिया और प्रत्येक दिल इस बात को महसूस कर सकता है कि एक हज का इरादा करने वाले के लिए यदि यह बात सामने आ जाए कि वह उस मसीह मौऊद को देख ले जिसकी 1300 वर्ष से मुसलमानों में प्रतीक्षा है तो क़ुरआन व हदीस के आदेशानुसार वह बिना उसकी आज्ञा के हज को नहीं जा सकता। हाँ उसकी आज्ञा के साथ दूसरे समय में जा सकता है। अतः चूंकि वह मरहूम शहीदों का सरदार अपनी इच्छा से हज न कर सका और क़ादियान में ही दिन गुज़र गए तो इससे पहले कि वह काबुल जाए और रियासत की सीमाओं के अन्दर क़दम रखें अहतियात के तौर पर सावधानी के रूप में उचित समझा कि अंग्रज़ी सीमा के अन्दर रह कर अमीर काबुल को अपनी आपबीती स्पष्ट कर दी जाए कि इस प्रकार हज करने से असमर्थता रहा। उन्होंने उचित समझा कि ब्रिगेडियर मुहम्मद हुसैन को पत्र लिखा ताकि वह उचित अवसर पर उचित शब्दों में असल वास्तविकता अमीर के सम्मुख रख दें और इस पत्र में यह लिखा कि यद्यपि मैंने हज करने का लिए प्रस्थान किया था परन्तु मसीह मौऊद के मुझे दर्शन हो गए और चूंकि मसीह के मिलने के लिए और उसकी आज्ञापालन को प्राथमिकता देने के लिए ख़ुदा और रसूल का आदेश है। इस मजबूरी से मुझे क़ादियान में ठहरना पड़ा और अपनी ओर से यह काम न किया बल्कि क़ुरआन और हदीस के अनुसार इसी बात को आवश्यक समझा। अतः जब यह पत्र ब्रिगेडियर मुहम्मद हुसैन कोतवाल को पहुँचा तो उस ने वह पत्र अपने जांग के नीचे रख लिया और उस समय प्रस्तुत न किया परन्तु उस के नायब को जो विरोधी और सज्जन व्यक्ति था किसी प्रकार पता चला कि यह मौलवी साहिबज़ादा अब्दुल लतीफ साहिब का पत्र है और वह क़ादियान में ठहरे रहे तब उसने वह पत्र किसी उपाय के द्वारा निकाल लिया और अमीर साहिब के आगे प्रस्तुत कर दिया। अमीर साहिब ने ब्रिगेडिर मुहम्मद

हुसैन कोतवाल से पूछा कि क्या यह पत्र आप के नाम आया है उस ने अमीर के मौजूदा ग़ुस्सा से भयभीत होकर इन्कार कर दिया। फिर ऐसा संयोग हुआ कि मौलवी साहिब शहीद ने कई दिन पहले पत्र के उत्तर की प्रतीक्षा कर के एक और पत्र डाक द्वारा मुहम्मद हुसैन कोतवाल को लिखा। वह ख़त डाकखाना के अफसर ने खोल लिया और अमीर साहिब को पहुंचा दिया। चूंकि कज़ा व कदर (भाग्य) से मौलवी साहिब की शहादत निश्चित थी और आसमान में वह बुज़ुर्ग शहीदों के समूह में सम्मिलित हो चुका था इसलिए अमीर साहिब ने उन को बुलाने के लिए युक्ति से काम लिया और उन की ओर पत्र लिखा कि आप बिना ख़तरे के चले आओ। यदि यह दावा सच्चा हुआ तो मैं भी मुरीद हो जाऊंगा। बयान करने वाले कहते हैं कि हमें यह मालूम नहीं कि यह पत्र अमीर साहिब ने डाक से भेजा था या किसी के हाथ से भेजा था। बहरहाल उस पत्र को देखकर मौलवी साहिब काबुल की ओर रवाना हो गए और कज़ा व कदर (भाग्य) ने उतरना आरम्भ कर दिया। सूचना देने वालों ने बयान किया है कि जब शहीद मरहूम काबुल के बाज़ार से गुज़रे तो घोड़े पर सवार थे पीछे आठ सरकारी सवार थे और उनके आने से पहले सामान्य तौर पर काबुल में प्रसिद्ध था कि अमीर साहिब ने साहिबज़ादा साहिब को धोखा दे कर बुलाया है। अब उस के बाद देखने वालों का यह बयान है कि जब अख़वन्द ज़ादा साहिब बाज़ार से गुज़रे तो हम और दूसरे बहुत से बाज़ारी लोग साथ चले गए और यह भी बयान हुआ कि आठ सरकारी सवार खोस्त से ही उन के साथ गए थे क्योंकि उन के खोस्त पहुंचने से पहले ही सरकारी आदेश उन के गिरफ्तार करने का पहुंच चुका था। अतः जब अमीर साहिब के सामने प्रस्तुत किए गए तो विरोधियों ने पहले से ही उन के स्वभाव को बहुत कुछ भड़का रखा था इसलिए उन्होंने बहुत अत्याचारी व्यवहार किया और आदेश दिया कि मुझे उन से दुर्गन्ध आती है उनको दूर खड़ा करो। फिर थोड़ी देर बाद आदेश दिया कि उन को उस किला में बन्द कर दो जिस में स्वयं अमीर साहिब रहते हैं और ज़ंजीरें ग़राग़राब लगा दो। इस ज़ंजीर का वज़न अंग्रेज़ी के एक मन चौबीस सेर होता है। गर्दन से कमर तक घेर लेती

है और उस में हथकड़ी भी सम्मिलित है और साथ ही आदेश दिया कि पैरों में अंग्रेज़ी के आठ सेर भार की बेड़ियां डाल दो। फिर उस के बाद मौलवी साहिब मरहूम चार महीने क़ैद में रहे इस बीच कई बार उन को अमीर की ओर से पूछा गया कि अगर तुम इस विचार से तोबा कर लो कि क़ादियानी वास्तव में मसीह मौऊद है। तो तुम्हें रिहाई दी जाएगी परन्तु प्रत्येक बार उन्होंने यही उत्तर दिया कि मैं मुझे भली भांति ज्ञात है और सत्य और असत्य को पहचानने का ख़ुदा ने मुझे सामर्थ्य प्रदान किया है। मैंने पूरी छान-बीन से ज्ञात कर लिया है कि यह व्यक्ति वास्तव में मसीह मौऊद है। यद्यपि मैं जनता हूँ कि मेरे इस बात के कहने से मेरी जान नहीं बचेगी और मेरे परिवार की बर्बादी है परन्तु मैं इस समय अपने ईमान को अपनी जान और प्रत्येक सांसारिक सुविधा पर प्राथमिकता देता हूँ। शहीद मरहूम ने न केवल एक बार बल्कि क़ैद होने की अवस्था में बार बार यही उत्तर दिया और यह क़ैद अंग्रेज़ी क़ैद के समान न थी जिसमें मानवीय कमज़ोरी का कुछ लिहाज़ रखा जाता है बल्कि एक सख़्त क़ैद थी जिसको इन्सान मौत से भी बुरा समझता है। इसलिए लोगों ने शहीद महोदय के इस धैर्य और दृढ़ता को अत्यंत आश्चर्य से देखा और वास्तव में आश्चर्य का स्थान भी था कि ऐसा महान व्यक्ति कि जो काबुल की रियासत में कई लाख रुपये की जागीर रखता था और अपने ज्ञान तथा संयम के कारण मानो समस्त काबुल का पेशवा था। और लगभग 50 वर्ष की आयु तक ऐश व आराम में जीवन व्यतीत किया था और एक बड़ा परिवार और प्रिय संतान रखता था फिर यकायक वह ऐसी सख़्त क़ैद में डाला गया जो मौत से बुरी थी और जिसकी कल्पना से भी मनुष्य का शरीर काँप जाता है ऐसा सुकोमल और आराम में पला बढ़ा मनुष्य वह उस रूह को पिघला देने वाली क़ैद में सब्र कर सके और जान को ईमान पर क़ुर्बान करे। विशेषत: जिस अवस्था में काबुल के अमीर की ओर से बार बार उनको पैग़ाम पहुँचता था कि उस क़ादियानी व्यक्ति के दावे से इन्कार कर दो तो तुम अभी सम्मान के साथ रिहा कर दिए जाओगे। परन्तु उस मज़बूत ईमान वाले बुज़ुर्ग ने इस बार बार के वादे की कुछ भी परवाह न की और बार बार यही

उत्तर दिया कि मुझ से यह आशा मत रखो कि मैं ईमान पर संसार को प्राथमिकता दूं और कैसे संभव है कि जिसको मैंने अच्छी तरह पहचान लिया। और हर प्रकार से संतुष्टि कर ली। अपनी मौत के खौफ से उसका इनकार कर दूँ यह इन्कार तो मुझसे नहीं होगा। मैं देख रहा हूँ कि मैंने सत्य को पा लिया इसलिए कुछ दिन के जीवन के लिए मुझसे बेईमानी नहीं होगी कि मैं उस प्रमाणित सत्य को छोड़ दूँ। मैं जांच छोड़ने के लिए तैयार हूँ और फ़ैसला कर चुका हूँ परन्तु सत्य मेरे साथ जाएगा। उस बुज़ुर्ग के बार बार के ये उत्तर ऐसे थे कि काबुल की भूमि उनको कभी भूलेगी नहीं और काबुल के लोगों ने अपनी समस्त आयु में ईमानदारी और दृढ़ता का ऐसा आदर्श नहीं देखा होगा। इस स्थान पर यह भी वर्णन करने योग्य है कि काबुल के अमीरों का यह तरीका नहीं है कि इस प्रकार बार बार माफ़ करने का वादा देकर अपनी आस्था को छुड़ाने के लिए ध्यान आकर्षित करवाएं लेकिन मौलवी अब्दुल लतीफ़ साहिब मरहूम के साथ यह विशेष व्यवहार इसलिए था कि कि वह काबुल कि रियासत का मानो एक बाज़ू था और हज़ारों लोग उसके आस्थावान थे और जैसा कि हम ऊपर लिख चुके हैं कि वह अमीर काबुल की दृष्टि में इतना चयनित विद्वान था कि समस्त विद्वानों में सूर्य के समान समझा जाता था। अतः संभव है कि अमीर को स्वयं भी यह दुःख हो कि ऐसा सम्माननीय व्यक्ति विद्वानों की सर्वसहमति से अवश्य मारा जाएगा। और यह तो स्पष्ट है कि आजकल एक प्रकार से काबुल की हुकूमत की बागडोर मौलवियों के हाथ में है और जिस बात पर मौलवी लोग एकमत हो जाएं फिर संभव नहीं कि अमीर उसके विरुद्ध कुछ कर सके। अतः यह मामला अनुमानित है कि एक ओर उस अमीर को मौलवियों का भय था और दूसरी ओर शहीद मरहूम को निर्दोष देखता था। अतः यही कारण है कि वह क़ैद के समस्त दिनों में यही उपदेश करता रहा कि आप उस क़ादियानी व्यक्ति को मसीह मौऊद न मानें और इस आस्था से तौबा करें तब आप सम्मान के साथ रिहा कर दिए जाओगे और इसी इरादे से उसने शहीद मरहूम को उस किले में क़ैद किया था जिस किले में वह स्वयं रहता था ताकि निरंतर उपदेश का अवसर मिलता रहे

और यहाँ एक और बात लिखने योग्य है और वास्तव में वही एक बात है जो इस मुसीबत का कारण हुई और वह यह है कि अब्दुर रहमान शहीद के समय से यह बात अमीरों और मौलवियों को अच्छी तरह मालूम थी कि क़ादियानी जो मसीह मौऊद का दावा करता है जिहाद का कट्टर विरोधी है और अपनी पुस्तकों में बार बार इस बात पर ज़ोर देता है कि इस युग में तलवार का जिहाद उचित नहीं और संयोग से इस अमीर के पिता ने जिहाद की अनिवार्यता के विषय में एक पुस्तक लिखी थी जो मेरी प्रकाशित पुस्तकों की सर्वथा विरोधी है। और पंजाब के कुछ उपद्रवी लोग जो अपने आपको एकेश्वरवादी या अहले हदीस के नाम से नामित करते थे, अमीर के पास पहुँच गए थे। सम्भवतः उनके द्वारा अमीर अब्दुर रहमान ने जो वर्तमान अमीर का पिता था मेरी उन पुस्तकों का विषय सुन लिया होगा और अब्दुर रहमान शहीद की मृत्यु का भी यही कारण था कि अमीर अब्दुर रहमान ने विचार किया था कि यह उस समूह का व्यक्ति है जो लोग जिहाद को हराम (वर्जित) समझते हैं और यह बात विश्वसनीय है कि क़ज़ा व क़दर (भाग्य) के आकर्षण से मौलवी अब्दुल लतीफ़ मरहूम से भी यही गलती हुई कि उस क़ैद की हालत में भी स्पष्ट कर दिया कि अब यह युग जिहाद का नहीं और वह मसीह मौऊद जो वास्तव में मसीह है उसकी यही शिक्षा है कि अब यह युग दलीलें प्रस्तुत करने का है तलवार के द्वारा धर्म को फैलाना उचित नहीं और अब इस प्रकार का पौधा कदापि फलदार नहीं होगा बल्कि जल्दी ही सूख जाएगा चूंकि शहीद मरहूम सत्य को बयान करने में किसी की परवाह नहीं करते थे और वास्तव में उनको सत्य को फ़ैलाने के समय अपनी मौत का भी भय न था इसलिए ऐसे शब्द उनके मुँह से निकल गए। और विचित्र बात यह है कि उनके कुछ शिष्य वर्णन करते हैं कि जब उन्होंने देश की ओर प्रस्थान किया तो बार-बार कहते थे कि काबुल की ज़मीन अपने सुधार के लिए मेरे ख़ून की मोहताज है और वास्तव में वह सच कहते थे क्योंकि काबुल की ज़मीन में यदि एक करोड़ इश्तिहार प्रकाशित किया जाता और मज़बूत दलीलों से उनमें मेरा मसीह मौऊद होना सिद्ध किया जाता तो उन इश्तिहारों का कदापि ऐसा असर

न होता जैसा कि इस शहीद के ख़ून का असर हुआ। काबुल की ज़मीन पर यह ख़ून उस बीज की भांति पड़ा है जो थोड़े समय में बड़ा वृक्ष बन जाता है और हज़ारों पक्षी उस पर अपना बसेरा लेते हैं। अब हम दर्दनाक घटना का शेष भाग अपनी जमाअत के लिए लिखकर इस विषय को समाप्त करते हैं और वह यह है कि जब चार महीने क़ैद के बीत गए तब अमीर ने अपने सामने शहीद मरहूम को बुला कर फिर अपनी सामान्य कचहरी में तौबा करने का उपदेश दिया और बड़े ज़ोर से रुचि दिलाई कि यदि तुम अब भी क़ादियानी के सत्यापन और उसके उसूलों के सत्यापन से मेरे सामने इन्कार करो तो तुम्हारी जान बख़्श दी जाएगी और तुम सम्मान के साथ छोड़े जाओगे। शहीद मरहूम ने उत्तर दिया कि यह तो असंभव है कि मैं सत्य से तौबा करूँ। इस संसार के शासकों का अज़ाब तो मौत तक ख़तम हो जाता है परन्तु मैं उससे डरता हूँ जिसका अज़ाब कभी समाप्त नहीं हो सकता। हाँ चूंकि मैं सत्य पर हूँ इसलिए चाहता हूँ कि इन मौलवियों से जो मेरे अक़ीदे (आस्था) के विरोधी हैं, मेरा शास्त्रार्थ कराया जाए। यदि मैं दलीलों की दृष्टि से झूठा निकला तो मुझे दंड दिया जाए। इस घटना के वर्णनकर्ता कहते हैं कि हम उस वार्तालाप के समय उपस्थित थे। अमीर ने इस बात को पसंद किया और मस्जिद शाही में ख़ान मुल्ला ख़ान और आठ मुफ़्ती बहस के लिए नियुक्त किए गए और एक लाहोरी डाक्टर जो स्वयं पंजाबी होने के कारण घोर विरोधी था, मध्यस्त के तौर पर नियुक्त करके भेजा गया। बहस के समय विशाल जन समूह था और देखने वाले कहते हैं कि हम उस बहस के समय उपस्थित थे। शास्त्रार्थ लिखित था केवल लिखा जाता था और कोई बात उपस्थित लोगों को सुनाई नहीं जाती थी इसलिए उस शास्त्रार्थ का कुछ हाल मालूम नहीं हुआ। सुबह सात बजे से त्रिपहर तीन बजे तक शास्त्रार्थ जारी रहा फिर जब असर का अंतिम समय हुआ तो कुफ्र का फतवा लगाया गया और अंतिम समय में शहीद मरहूम से यह भी पूछा गया कि यदि मसीह मौऊद यही क़ादियानी व्यक्ति है तो फिर तुम ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में क्या कहते हो। क्या वह वापस संसार में आयेंगे या नहीं? तो उन्होंने बड़ी दृढ़ता से उत्तर दिया कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम

मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं अब वह कदापि वापस नहीं आएंगे। क़ुरआन करीम उनके मरने और वापस न आने का गवाह है। तब तो वे लोग उन मौलवियों की तरह जिन्होंने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की बात को सुन कर अपने कपड़े फाड़ दिए थे, गालियां देने लगे और कहा अब इस व्यक्ति के कुफ्र में क्या संदेह रहा और बड़े क्रोध की हालत में यह फ़त्वा लिखा गया। फिर उसके बाद अख्वंदज़ादा हज़रत शहीद मरहूम के पैरों में बेड़ियाँ होने की हालत में क़ैदखाना में भेजे गए और यहाँ यह बात वर्णन करने से रह गई है कि जब शहज़ादा मरहूम की उन दुर्भाग्यशाली मौलवियों से बहस हो रही थी तब आठ आदमी नंगी तलवारें लेकर शहीद मरहूम के सिर पर खड़े थे। फिर उसके बाद में वह कुफ्र का फतवा रात के समय अमीर साहिब की सेवा में भेजा गया और यह चालाकी की गई कि शात्रार्थ के कागज़ जानबूझ कर उनकी सेवा में न भेजे गए और न जनता पर उनका विषय प्रकट किया गया। यह स्पष्ट इस बात की दलील थी कि विरोधी मौलवी शहीद मरहूम के प्रस्तुत किए हुए सबूतों का कोई रद्द न कर सके परन्तु अफ़सोस अमीर पर कि उसने कुफ्र के फ़त्वे पर ही आदेश दे दिया और शास्त्रार्थ के कागज़ न मंगवाए। हालाँकि उसको चाहिए तो यह था कि उस वास्तविक न्यायकर्ता (अल्लाह तआला) से डर कर जिसकी ओर शीघ्र समस्त संपत्ति और साम्राज्य को छोड़ कर वापस जाएगा स्वयं शास्त्रार्थ के समय उपस्थित होता। विशेषत: जबकि वह ख़ूब जानता था कि इस शास्त्रार्थ का परिणाम एक मासूम निर्दोष की जान व्यर्थ में हलाक़ करना है तो इस अवस्था में ख़ुदा के भय की यह मांग थी कि बहरहाल गिरता पड़ता उस सभा में जाता। और साथ ही चाहिए था कि किसी जुर्म के सबूत से पहले उस शहीद पीड़ित पर यह सख्ती न करता कि अकारण एक अवधि तक क़ैद की यातना में उनको रखता और बेड़ियों और हथकड़ियों की जकड़ में उसको दबाया जाता और आठ सिपाही नंगी तलवारों के साथ उसके सिर पर खड़े किए जाते और इस प्रकार एक अज़ाब और रौब में डालकर उसको सबूत देने से रोका जाता। फिर अगर उसने ऐसा न किया तो न्यायपूर्ण आदेश देने के लिए यह तो उसका कर्तव्य था कि शास्त्रार्थ के कागज़ों

को अपने पास मंगवाता बल्कि पहले से यह निर्देश दे देता कि शास्त्रार्थ के कागज़ मेरे पास भेज दिए जाएं। और न केवल इस बात पर संतुष्टि करता कि स्वयं उन कागज़ों को देखता बल्कि चाहिए था कि सरकारी तौर पर उन कागज़ों को छपवा देता कि देखो कैसे यह व्यक्ति हमारे मौलवियों के मुक़ाबले पर पराजित हो गया और क़ादियानी के मसीह मौऊद होने के बारे में और जिहाद के वर्जित होने के बारे में तथा हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की मृत्यु के बारे में कुछ सबूत न दे सका। हाय वह मासूम उसकी नज़र के सामने एक बकरे की तरह ज़िबह (क़त्ल) किया गया और सच्चा होने के बावजूद और पूरे सबूत देने के बावजूद और ऐसी दृढ़ता के बावजूद जो केवल वालियों को दी जाती है फिर भी उसका पवित्र शरीर पत्थरों से टुकड़े-टुकड़े कर दिया गया और उसकी पत्नी और उसके अनाथ बच्चों को खोस्त से गिरफ्तार करके बड़े अपमान और यातना के साथ किसी अन्य स्थान पर क़ैद में भेजा गया। हे नासमझ! क्या मुसलमानों में धर्म और राय के मतभेद की यही सज़ा हुआ करती है। तूने क्या सोच कर यह ख़ून कर दिया। अंग्रेज़ी साम्राज्य जो उस अमीर की निगाह में और साथ ही उसके मौलवियों के विचार में एक काफ़िर का साम्राज्य है कितने विभिन्न फिरके उस साम्राज्य के साये में रहते हैं। क्या अब तक उस साम्राज्य ने किसी मुसलमान या हिन्दू को इस दोष के आधार पर फांसी दे दी कि उसकी राय पादरियों की राय के विपरीत है। हाय अफ़सोस आसमान के नीचे यह बड़ा अत्याचार हुआ कि एक निर्दोष मासूम बावजूद सच्चा होने के, बावजूद अहले हक़ होने के और बावजूद इसके कि हज़ारों सम्माननीय लोगों की गवाही से संयम और स्वच्छता के पवित्र आभूषणों से सुसज्जित था इस प्रकार निर्दयता से केवल धर्म के मतभेद के कारण मारा गया। इस अमीर से वह गवर्नर हज़ारों गुणा अच्छा था जिसने एक मुखबरी पर हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम को गिरफ्तार कर लिया था अर्थात पिलातुस, जिसका आज तक इन्जीलों में वर्णन मौजूद है क्योंकि उसने यहूदियों के मौलवियों को जबकि उन्होंने हज़रत मसीह पर कुफ्र का फ़त्वा लिख कर यह निवेदन किया कि उसको सलीब दी जाए यह उत्तर दिया कि इस व्यक्ति का में कोई दोष नहीं पाता। अफ़सोस इस अमीर को कम से

कम अपने मौलवियों से यह तो पूछना चाहिए था कि यह संगसारी★ का फ़त्वा किस प्रकार के कुफ्र पर दिया गया और इस मतभेद को क्यों कुफ्र में सम्मिलित किया गया और क्यों उन्हें यह न कहा गया कि तुम्हारे फिर्कों में स्वयं मतभेद बहुत है। क्या एक फ़िर्के को छोड़ कर दूसरों को संगसार करना चाहिए था। जिस अमीर का यह तरीका और यह काम है न जाने वह ख़ुदा को क्या उत्तर देगा।

इसके बाद कुफ्र का फ़त्वा लगा कर शहीद मरहूम क़ैदखाना भेजा गया सुबह सोमवार के दिन शहीद मरहूम को सलामखाना अर्थात अमीर साहिब के विशेष दरबार में बुलाया गया। उस समय भी बहुत लोग थे। अमीर साहिब जब अर्क अर्थात किले से निकले तो मार्ग में शहीद मरहूम एक स्थान पर बैठे थे उनके निकट से होकर गुज़रे और पूछा कि अखवंदज़ादा साहिब क्या फ़ैसला हुआ। शहीद मरहूम कुछ न बोले क्योंकि वह जानते थे इन लोगों ने अत्याचार पर कमर बांधी है। परन्तु सिपाहियों में से किसी ने कहा कि मलामत हो गया अर्थात कुफ्र का फ़त्वा लग गया। फिर अमीर साहिब जब अपने इज्लास पर आए तो इज्लास में बैठते ही पहले अख्वंदज़ादा साहिब मरहूम को बुलाया और कहा आप पर कुफ्र का फ़त्वा लग गया है अब कहो कि तौबा करोगे या सज़ा पाओगे तो उन्होंने स्पष्ट शब्दों में इन्कार किया और कहा कि मैं सत्य से तौबा नहीं कर सकता। क्या में प्राणों के भय से असत्य को स्वीकार कर लूँ, यह मुझसे नहीं होगा। अमीर ने पुनः तौबा के लिए कहा और तौबा की हालत में बहुत उम्मीद दी और क्षमा का वादा दिया परन्तु शहीद मरहूम ने बड़े ज़ोर से इन्कार किया और कहा कि मुझसे यह आशा मत रखो कि में सच्चाई से तौबा करूँ। इन बातों को वर्णन करने वाले कहते हैं कि ये सुनी सुनाई बातें नहीं बल्कि हम स्वयं इस भीड़ में मौजूद थे और भीड़ बहुत थी। शहीद मरहूम प्रत्येक उपदेश का ज़ोर से इन्कार करता था और वह अपने लिए निर्णय कर चुका था कि निश्चित है कि मैं इसी मार्ग में जान दूँ। तब उसने यह भी कहा कि मैं क़त्ल के बाद छः दिन

★ **संगसारी** - एक सज़ा है जो बड़े अपराधियों को दी जाती थी जिसमें दोषी को पत्थरों से मार-मार कर मार डाला जाता था - अनुवादक

तक जीवित हो जाऊंगा। यह लेखक कहता है कि यह कथन वह्यी के आधार पर होगा जो उस समय हुई होगी। क्योंकि उस समय शहीद मरहूम संसार से विरक्त लोगों में सम्मिलित हो चुका था और फ़रिश्ते उससे हाथ मिलाते थे। तब फरिश्तों से यह सूचना पाकर उसने ऐसा कहा और उस कथन के यह अर्थ थे कि वह जीवन जो वलियों और अब्दाल को दिया जाता है, छः दिन तक मुझे मिल जाएगी और इससे पहले कि ख़ुदा का दिन आए अर्थात सातवां दिन, मैं जीवित हो जाऊंगा और स्मरण रहे कि औलिया-उल्लाह (अल्लाह के परम भक्त) और वे विशेष लोग जो अल्लाह के मार्ग में शहीद होते हैं वे कुछ दिनों के बाद फिर जीवित किए जाते हैं जैसा कि अल्लाह तआला फरमाता है-

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا بَلْ اَحْيَآءٌ

(आले-इमरान - 170)

अर्थात तुम उनको मुर्दे मत समझो जो अल्लाह के मार्ग में क़त्ल किए जाते हैं वे तो जीवित हैं अतः शहीद मरहूम का इसी मुक़ाम की ओर इशारा था और मैंने एक कश्फी दृश्य में देखा कि एक सरू के वृक्ष की बड़ी लम्बी शाखा....... जो अत्यंत सुन्दर और हरी भरी थी हमारे बाग़ में से काटी गई है और वह एक व्यक्ति के हाथ में है तो किसी ने कहा कि इस शाखा को उस भूमि में जो मेरे मकान के निकट है, उस बेरी के पास लगा दो जो इस से पहले काटी गई थी और फिर पुनः उगेगी और साथ ही मुझे यह वह्यी हुई कि काबुल से कटा गया सीधा हमारी ओर आया। इसकी मैंने यह ताबीर की कि बीज की भांति शहीद मरहूम का ख़ून ज़मीन पर पड़ा है और वह बहुत फलित होकर हमारी जमाअत को बढ़ा देगा। यहाँ मैंने यह स्वप्न देखा और वहां शहीद मरहूम ने कहा कि छः दिन तक मैं जीवित किया जाऊंगा। मेरे स्वप्न और शहीद मरहूम के इस कथन का निष्कर्ष एक ही है। शहीद मरहूम ने मर कर मेरी जमाअत को एक आदर्श दिया है और वास्तव में मेरी जमाअत एक बड़े आदर्श की मोहताज थी। अब तक उनमें ऐसे भी पाए जाते हैं कि जो व्यक्ति उनमें से मामूली सेवा करता है वह विचार करता है कि बड़ा काम किया है और निकट है कि वह मेरे पर अहसान

रखे। हालांकि ख़ुदा का उस पर अहसान है कि इस सेवा के लिए उसने इसको सामर्थ्य दिया। कुछ ऐसे हैं कि पूरे ज़ोर और पूरी सच्चाई के साथ इस ओर नहीं आए और जिस ईमान की शक्ति तथा अथाह सत्य और स्वच्छता का वे दावा करते हैं अंत तक उस पर स्थिर नहीं रह सकते और दुनिया की मुहब्बत के लिए धर्म को खो देते हैं और किसी तुच्छ परीक्षा को भी सहन नहीं कर सकते। ख़ुदा के सिलसिले में सम्मिलित होकर भी उनकी दुनियादारी कम नहीं होती लेकिन खुदा तआला का हज़ार-हज़ार धन्यवाद है कि ऐसे भी हैं कि वे सच्चे दिल से ईमान लाए इस दिशा को अपनाया। और इस मार्ग के लिए हर एक दुःख उठाने के लिए तैयार हैं परन्तु जिस आदर्श को इस जवांमर्द ने प्रकट कर दिया अब तक वे शक्तियां इस जमाअत की छुपी हुई हैं। ख़ुदा सबको वह ईमान सिखाए और वह दृढ़ता प्रदान करे जिसका इस शाहीद मरहूम ने आदर्शप्रस्तुत किया है। यह सांसारिक जीवन जो शैतानी आक्रमणों से मिला हुआ है पूर्ण मनुष्य बनने से रोकता है। इस सिलसिले में बहुत सम्मिलित होंगे परन्तु अफ़सोस कि थोड़े हैं जो यह आदर्श दिखाएंगे।

फिर हम मूल घटना की ओर लौट कर लिखते हैं कि जब शहीद मरहूम ने हर बार तौबा करने के उपदेश पर तौबा करने से इन्कार किया तो अमीर ने उनसे मायूस होकर अपने हाथ से एक लम्बा चौड़ा कागज़ लिखा और उसमें मौलवियों का फ़त्वा दर्ज किया और उसमें यह लिखा कि ऐसे काफ़िर की संगसार करना सज़ा है तब वह फ़त्वा अख्वंदज़ादा मरहूम के गले में लटका दिया गया और फिर अमीर ने आदेश दिया कि शहीद मरहूम की नाक में छेद करके उसमें रस्सी डाल दी जाए और उसी रस्सी से शहीद मरहूम को खींच कर वधभूमि (क़त्ल करने का स्थान) अर्थात संगसार किए जाने के स्थान तक पहुँचाया जाए। अतः इस अत्याचारी अमीर के आदेश से ऐसा ही किया गया और नाक को छेद कर घोर यातना के साथ उसमें रस्सी डाली गई तब उस रस्सी के द्वारा शहीद मरहूम अत्यंत हसी-ठट्ठे और गालियों और लानत के साथ वधभूमि तक ले गए और अमीर अपने समस्त साथियों, क़ाज़ियों, मुफ्तियों और अन्य कर्मचारियों के साथ

यह दर्दनाक दृश्य देखता हुआ वधभूमि तक पहुंचा और शहर के हज़ारों लोग जिनकी गणना करना कठिन है, इस तमाशे को देखने के लिए गई। जब वधभूमि पर पहुंचे तो शहज़ादा मरहूम को कमर तक ज़मीन में गाड़ दिया और फिर इस हालत में जबकि वह कमर तक ज़मीन में गाड़ दिए गए थे अमीर उनके पास गया और कहा कि अगर तू क़ादियानी से जो स्वयं को मसीह मौऊद होने का दावा करता है, इन्कार करे तो अब भी मैं तुझे बचा लेता हूँ। अब तेरा अंतिम समय है और यह अंतिम अवसर है जो तुझे दिया जाता है और अपनी जान और अपने परिवार पर दया कर। तब शहीद मरहूम ने उत्तर दिया कि नऊज़ुबिल्लाह सत्य से क्योंकर इन्कार हो सकता है और जान की क्या वास्तविकता है और परिवार तथा बच्चे क्या चीज़ हैं जिनके लिए मैं ईमान को छोड़ दूँ। मुझसे ऐसा कदापि नहीं होगा और मैं सत्य के लिए मरूँगा। तब क़ाज़ियों और आलिमों ने शोर मचाया कि काफ़िर है काफ़िर है इसको शीघ्र संगसार करो। उस समय अमीर और उसका भाई नसरुल्लाह खान और क़ाज़ी और अब्दुल अहद कमीदान यह लोग सवार थे और अन्य समस्त लोग पैदल थे। जब ऐसी नाज़ुक हालत में शहीद मरहूम ने बार बार कह दिया कि मैं ईमान को जान पर प्राथमिकता देता हूँ तब अमीर ने अपने क़ाज़ी को आदेश दिया कि प्रथम पत्थर तुम चलाओ क्योंकि तुमने कुफ़्र का फ़त्वा लगाया है। क़ाज़ी ने कहा कि आप समय के बादशाह हैं आप चलाएं। तब अमीर ने उत्तर दिया कि शरीअत के तुम ही बादशाह हो और तुम्हारा ही फ़त्वा है इस में मेरी कोई भागीदारी नहीं। तब क़ाज़ी ने घोड़े से उतर कर एक पत्थर चलाया जिस पत्थर से शहीद मरहूम को गम्भीर घाव लगा और गर्दन झुक गई। फिर इसके बाद दुर्भाग्यशाली अमीर ने अपने हाथ से पत्थर चलाया। फिर क्या था उसके अनुसरण से हज़ारों पत्थर उस शहीद पर पड़ने लगे और उपस्थित लोगों में से कोई ऐसा न था जिसने इस शहीद मरहूम की ओर पत्थर न फेंका हो यहाँ तक कि पत्थरों की अधिकता से शहीद मरहूम के सर पर एक ढेर पत्थरों का एकत्र हो गया। फिर अमीर ने वापस लौटने के समय कहा कि यह व्यक्ति कहता था कि मैं छः दिन तक जीवित हो जाऊंगा। इस पर छः

दिन तक पहरा रहना चाहिए। बयान किया गया कि यह अत्याचार अर्थात संगसार करना 14 जुलाई को हुआ। इस बयान में अधिकतर भाग उन लोगों का है जो इस सिलसिला के विरोधी थे। जिन्होंने यह भी इक़रार किया कि हमने भी पत्थर मारे थे और कुछ ऐसे लोग भी इस बयान में सम्मिलित हैं कि शहीद मरहूम के गुप्त शिष्य थे। ज्ञात होता है कि यह घटना उससे अधिक दर्दनाक है जैसा कि वर्णन किया गया है क्योंकि अमीर के अत्याचार को पूर्णत: प्रकट करना किसी ने उचित नहीं समझा और जो कुछ हमने लिखा है बहुत से पत्रों के सामूहिक अर्थों से सारांश के रूप में लिखा है। प्रत्येक किस्सा में अधिकतर अतिशयोक्ति होती है परन्तु यह किस्सा है कि लोगों ने अमीर से डर कर उसका अत्याचार पूरा पूरा वर्णन नहीं किया और बहुत कुछ छुपाना चाहा। शहज़ादाअब्दुल लतीफ़ के लिए जो शहादत मुक़द्दर थी वह हो चुकी अब अत्याचारी का बदला शेष है-
اِنَّهٗ مَنۡ یَّاۡتِ رَبَّهٗ مُجۡرِمًا فَاِنَّ لَهٗ جَهَنَّمَ لَا یَمُوۡتُ فِیۡهَا وَلَا یَحۡیٰی (ताहा - 75)

अफ़सोस कि यह अमीर इस आयत-

وَمَنۡ یَّقۡتُلۡ مُؤۡمِنًا مُّتَعَمِّدًا (अन्निसा : 94)

के नीचे आ गया और तनिक भी ख़ुदा तआला से न डरा और मोमिन भी ऐसा मोमिन कि यदि काबुल की समस्त भूमि में उसका उदाहरण तलाश किया जाए तो तलाश करना बे-फ़ायदा है। ऐसे लोग सुर्ख़ अक्सीर (ऐसी वस्तु जो ताम्बे को सोना और रांगे को चांदी बना दे) के समान होते हैं जो दिल की सच्चाई से ईमान और सत्य के लिए जान भी फ़िदा करते हैं और पत्नी तथा बच्चे की कुछ भी परवाह नहीं करते। **हे अब्दुल लतीफ़! तुझ पर हज़ारों रहमतें कि तूने मेरे जीवन में ही सिद्क़ (सच्चाई) का आदर्श दिखाया** और जो लोग मेरी जमाअत में से मेरी मौत के बाद रहेंगे मैं नहीं जानता कि वे क्या काम करेंगे।

آں جواں مرد و حبیبِ کردگار   جوہر خود کرد آخر آشکار

अनुवादक- उस बहादुर और ख़ुदा के प्यारे ने अन्ततः अपना जौहर प्रकट कर दिया।

نقدِ جاں از بہر جاناں باختہ دل ازیں فانی سرا پرداختہ

अनुवादक- प्रियतम के लिए नकद जान लुटा दी और इस नश्वर (फ़ानी) घर से दिल को हटा लिया।

پُر خطر ہست ایں بیابانِ حیات صد ہزاراں اژدہائش در جہات

अनुवादक-यह जीवन का मैदान बहुत अधिक खतरों से भरा है,इसमें हर और लाखों अजगर मौजूद हैं।

صد ہزاراں آتشے تا آسماں صدہزاراں سیل خوں خوار و دماں

अनुवादक- लाखों शोले आकाश तक बुलन्द हैं और लाखों ख़ून पीने वाले और तीव्र सैलाब आ रहें हैं।

صدہزاراں فرسخے تا کوئے یار دشت پُرخار و بلائش صد ہزار

अनुवादक- यार के कूचे में लाखों कोस तक कांटों के जंगल हैं और उनमें लाखों विपत्तियां मौजूद हैं।

بنگر ایں شوخی ازاں شیخ عجم ایں بیاباں کرد طے از یک قدم

अनुवादक- उस अजम के शेख की यह धृष्टता (गुस्ताखी) देख कि उसने जंगल को एक ही कदम में तय कर लिया।

ایں چنیں باید خدا را بندۂ سرپئے دلدار خود افگندۂ

अनुवादक- ख़ुदा का बन्दा ऐसा ही होना चाहिए जो प्रियतम के लिए अपना सर झुका दे।

اوپئے دلدار از خود مردہ بود ازپئے تریاق زہرے خوردہ بود

अनुवादक-वह अपने प्रियतम के लिए अपने अहंकार को मिटा चुका था। विषनाशक प्राप्त करने के लिए उसने (ज़हर) खाया था।

تا نہ نوشد جام ایں زہرے کسے کے رہائی یابد از مرگ آں خسے

अनुवादक- जब तक कोई उस ज़हर का प्याला नहीं पीता तब तक तुच्छ मनुष्य मौत से कैसे मुक्ति प्राप्त कर सकता है।

زیر ایں موت است پنہاں صدحیات زندگی خواہی بخور جام ممات

अनुवादक-इस मौत के नीचे सैकड़ों जीवन छुपे हुए हैं। यदि तू जीवन चाहता है तो मौत का प्याला पी।

توکہ گشتی بندۂ حرص و ہَوا ایں طلب در نفسِ دونِ تو کجا

अनुवादक- तू चूंकि लालच और इच्छा का दास बना हुआ है इसलिए तेरे नीच दिल में यह अभिलाषा कहां?

دل بدیں دنیائے دوں آویختی آبرو از بہرِ عصیاں ریختی

अनुवादक- तूने इस नीच दुनिया से अपना दिल लगाया और गुनाह के लिए अपना सम्मान नष्ट कर दिया।

صد ہزاراں فوج شیطاں در پَسَت تا بسوزد در جہنم چوں خست

अनुवादक-शैतान कि लाखों की सेना तेरे पीछे लगी हुई है ताकि तुझे घास-फूस की तरह नर्क में जला दे।

ازپئے امید یا بہرِ خطر مے شود ایمان تو زیر و زبر

अनुवादक- किसी आशा या भय के कारण तेरा ईमान उथल-पुथल हो जाता है।

از برائے ایں سرائے بے وفا مے نہی دینِ خدا را زیر پا

अनुवादक- इस बेवफा दुनिया के लिए तू ख़ुदा के धर्म को पैरों के नीचे मसलता है।

دیں بود دینِ فدائے آں نگار اے سیہ باطن ترا با دیں چہ کار

अनुवादक- धर्म तो वह धर्म है जो उस प्रियतम पर फिदा (न्योछावर)होने का धर्म है। हे बुरी प्रकृति वाले मनुष्य तुझे धर्म से क्या संबंध?

پست ہستی لاف اِستعلا مزن وز گلیم خویش بیروں پا مزن

अनुवादक- तू नीच है बहुत शोख़ियां न बांधा कर और अपनी गुदड़ी से बाहर पांव न फैला।

خویشتن را نیک اندیشیدۂ اے ہداک اللہ چہ بد فہمیدۂ

तू स्वयं को नेक समझता है ख़ुदा तुझे हिदायत दे तेरा विचार कैसा ग़लत है

خوش نہ گردد دلستاں از قیل و قال تا نمیری زندگی باشد محال

अनुवादक- वह प्रियतम केवल बातों से प्रसन्न नहीं होता तब तक तू मौत स्वीकार नहीं करेगा जीवन मिलना असम्भव है।

کبر و کیں را ترک کن اے بدخصال تا بتابد بر تو نورِ ذوالجلال

अनुवादक- हे बुरे स्वभाव वाले मनुष्य अंहकार और दुश्मनी को छोड़ ताकि तुम पर प्रतापी ख़ुदा का प्रताप पड़े।

ایں چنیں بالا ز بالا چوں پری یا مگر زاں ذات بے چوں منکری

अनुवादक- तू इतना ऊंचा ऊंचा क्यों उड़ता है शायद कि तू उस अद्धितीय हस्ती का इन्कारी है।

کاخ دنیا را چہ دیداستی بنا کت خوشت افتاد ایں فانی سرا

अनुवादक- तूने दुनिया के महल की क्या (सुदृढ़) बुनियाद देख ली कि तुझे यह फानी सराय अच्छी लगने लगी।

دل چرا عاقل بہ بندد اندریں ناگہاں باید شدن بیروں ازیں

अनुवादक- बुद्धिमान उस में दिल क्यों लगाए जब कि सहसा किसी दिन उस से बाहर निकल जाना पड़ेगा।

ازپئے دنیا بریدن از خدا بس ہمیں باشد نشانِ اشقیا

अनुवादक- दुनिया के लिए ख़ुदा से संबंध तोड़ लिया यही दुर्भाग्यशाली लोगों की निशानी है।

چوں شود بخشائش حق بر کسے دل نمے ماند بدنیائش بسے

अनुवादक-जब किसी पर दुआओं की मेहरबानी होती है तो फिर उस का दिल दुनिया में नहीं लगता।

خوشترش آید بیابانِ تپاں تا در و نالد زِ بہر دلستاں

अनुवादक-उस को तपता हुआ रेगिस्तान पसन्द आता है ताकि वहां अपने प्रियतम के सामने रोना और चिल्लाना करे।

پیش از مردن بمیرد حق شناس زینکہ محکم نیست دنیا را اساس

अनुवादक- आरिफ (आध्यात्मिक ज्ञानी) मुनष्य मरने से पहले ही मर जाता है क्योंकि दुनिया की बुनियाद सुदृढ़ नहीं है।

ہوش کُن ایں جائیگہ جائے فناست باخدامے باش چوں آخر خداست

अनुवादक-सावधान यह मकाम फना होने वाला है क्योंकि अन्ततः ख़ुदा से ही वास्ता पड़ता है।

زہر قاتل گر بدستِ خود خوری من چساں دانم کہ تو دانشوری

अनुवादक- यदि तो स्वयं ही घातक ज़हर खा ले मैं कैसे सोचों कि तू बुद्धिमान है।

بیں کہ ایں عبداللطیفِ پاک مرد چوں پئے حق خویشتن برباد کرد

अनुवादक- देख कि उस पवित्र इंसान अब्दुल लतीफ ने किस प्रकार से ख़ुदा के लिए स्वयं को पुनः कर दिया है।

جاں بصدق آں دلستان را دادہ است تاکنوں درسنگہا افتادہ است

अनुवादक- उस ने कफिरों के साथ अपनी जान अपने प्रियतम को दे दी और अब तक वह पत्थरों के नीचे दबा पड़ा हुआ है।

ایں بود رسم و رہِ صدق و وفا ایں بود مردانِ حق را انتہا

अनुवादक- सच्चाई और वफादारी के मार्ग का यही तौर तरीका है और यही ख़ुदा के बहादुरों की अन्तिम श्रेणी है।

ازپئے آں زندہ از خود فانی اند جاں فشاں برمسلکِ ربّانی اند

अनुवादक- उस जीवित ख़ुदा के लिए उन्होंने अपने अंहकार को समाप्त कर दिया और ख़ुदा के तरीके पर जान न्योछावर करने वाले बन गए।

فارغ اُفتادہ زِ نام و عزّ و جاہ دِل ز کف وز فرق افتادہ کلاہ

अनुवादक- मर्यादा और प्रतिष्ठा और सम्मान से लापरवाह हो गए दिल हाथ से जाता रहा और टोपी हाथ से गिर गई।

دُور تر از خود بہ یار آمیختہ آبرو از بہرِ روئے ریختہ

अनुवादक- अंहकार से दूर और यार से सम्बद्ध हो गए किसी (सुन्दर) चेहरे के लिए सम्मान को कुर्बान कर दिया।

ذکرِ شاں ہم مے دہد یاد از خدا صدق ورزاں درجنابِ کبریا

अनुवादक- उस की चर्चा भी ख़ुदा की याद दिलाती है। वे ख़ुदा के दरबार में वफादार है।

گر بجوئی ایں چنیں ایمان بود کار بر جوئندگاں آسان بود

अनुवादक- यदि तू तलाश करता है तो याद रख कि ईमान ऐसा हुआ करता है कि तलाश करने वालों के लिए काम आसान हो जाता है।

لیک تو افتادہ در دنیا اسیر تانمیری کے رہی زیں داروگیر

अनुवादक- परन्तु तू दुनिया के प्रेम में गिरफ्तार है जब तक ऐसा न मरेगा इस झगड़े से किस प्रकार मुक्ति पाएगा।

تانمیری اے سگِ دنیا پرست دامنِ آں یار کے آید بدست

अनुवादक- हे दुनिया के पुजारी कुत्ते! जब तक तुझ पर मौत न आ जाएगी तब तक उस यार का दामन किस प्रकार हाथ आएगा।

نیست شو تا بر تو فیضانے رسد جاں بیفشاں تا دِگر جانے رسد

अनुवादक-अपनी हस्ती को फना कर दे ताकि तुझ पर ख़ुदा का वरदान उतरे। जान कुर्बान कर ताकि तुझे दूसरा जीवन मिले।

تو گذاری عمر خود در کبر و کیں چشم بستہ از رہ صدق و یقیں

अनुवादक- तू तो अपनी उमर अंहकार और वैर में व्यतीत कर रहा है तथा सच्चाई एवं विश्वास के मार्ग से आंख बन्द कर रखी है।

نیک دل با نیکواں دارد سرے بدگہر تف مے زند بر گوہرے

अनुवादक- नेक दिल मनुष्य नेक लोगों के साथ संबंध रखना है परन्तु अकुलीन व्यक्ति मोती पर भी थूकता है।

ہست دیں تخمِ فنا را کاشتن وز سر ہستی قدم برداشتن

अनुवादक-धर्म क्या है फना का बीज बोना है और जीवन का त्याग कर देना ।

چوں بیفتی با دوصد دردو نفیر کس ہے خیزد کہ گردد دستگیر

अनुवादक- जब तू सैंकड़ों दर्दों और चीख़ों के साथ गिर पड़ता है तो अवश्य कोई खड़ा हो जाता है कि तेरा सहायक हो जाए।

باخبر را دل تپد بر بے خبر رحم بر کورے کند اہلِ بصر

अनुवादक- नादान के लिए बुद्धिमान का दिल तड़पता है और आंखों वाले अन्धे पर अवश्य दया करते हैं।

ہمچنیں قانونِ قدرت اوفتاد مر ضعیفاں را قوی آرد بیاد

अनुवादक- इसी प्रकार ख़ुदा का कानून भी बना है कि शक्तिशाली कमज़ोर को अवश्य याद करता है।

अपनी जमाअत के लिए कुछ उपदेश

हे मेरी जमाअत! ख़ुदा तआला आप लोगों के साथ हो। वह शक्तिशाली दयालु आप लोगों को परलोक की यात्रा के लिए ऐसा तैयार करे जैसा कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबी तैयार किए गए थे। खूब याद रखो कि दुनिया कुछ चीज़ नहीं है। लानती है वह जीवन जो केवल संसार के लिए है और अभागा है वह जिसकी समस्त चिंताएं संसार के लिए हैं। ऐसा व्यक्ति यदि मेरी जमाअत में है तो वह व्यर्थ में स्वयं को मेरी जमाअत में सम्मिलित करता है क्योंकि वह उस सूखी शाख की भांति है जो फल नहीं लाएगी।

हे भाग्यशाली लोगो! तुम ज़ोर के साथ इस शिक्षा के अंतर्गत आ जाओ जो तुम्हारी नजात (मोक्ष) के लिए मुझे दी गई है। तुम ख़ुदा को एक अद्वितीय समझो और उसके साथ किसी वस्तु को मत जोड़ो, न आकाश में से न पृथ्वी में से, ख़ुदा माध्यमों के प्रयोग से तुम्हें मना नहीं करता परन्तु जो व्यक्ति ख़ुदा को छोड़ कर केवल माध्यमों पर ही भरोसा करता है वह मुश्रिक है। अनादिकाल से ख़ुदा कहता चला आया है कि पवित्र दिल होने के सिवाए नजात (मोक्ष) नहीं। अतः पवित्र दिल बन जाओ और आन्तरिक द्वेषों और क्रोधों से अलग हो जाओ। मनुष्य के नफ्से अम्मारः (तमो वृत्ति) में कई प्रकार की गंदगियाँ होती हैं परन्तु सबसे अधिक अहंकार की गन्दगी है। यदि अहंकार न होता तो कोई व्यक्ति काफिर न रहता। अतः तुम दिल के विनम्र बन जाओ। सामान्यतः मानवजाति की हमदर्दी करो जबकि तुम उन्हें स्वर्ग दिलाने के लिए उपदेश करते हो। अतः यह उपदेश तुम्हारा कब सही हो सकता है यदि तुम इस अस्थाई संसार में उनका बुरा चाहो। ख़ुदा तआला के कर्तव्यों को भय पूर्वक पूर्ण करो कि तुमसे उनके बारे में पूछा जाएगा। नमाज़ों में बहुत दुआ करो कि ताकि ख़ुदा तुम्हें अपनी ओर खींचे और तुम्हारे दिलों को साफ़ करे क्योंकि मनुष्य कमज़ोर है प्रत्येक बुराई जो दूर होती है वह ख़ुदा के सामर्थ्य से दूर होती है और जब तक मनुष्य ख़ुदा

से सामर्थ्य न पाए किसी बुराई को दूर करने पर समर्थ नहीं हो सकता। इस्लाम केवल यह नहीं है कि रस्म के तौर पर स्वयं को कलिमा पढ़ने वाला कहलाओ बल्कि इस्लाम की वास्तविकता यह है कि तुम्हारी रूहें ख़ुदा तआला के चौखट पर गिर जाएं और ख़ुदा तथा उसके आदेश प्रत्येक दृष्टिकोण से तुम्हारे संसार पर प्राथमिकता पा जाएं।

हे मेरी प्रिय जमाअत! निस्संदेह समझो कि युग अपने अंत को पहुँच गया है और एक स्पष्ट इन्कलाब प्रकट हो गया है इसलिए अपने प्राणों को धोखा मत दो और अति शीघ्र सच्चाई में पूर्ण हो जाओ। क़ुरआन करीम को अपना मार्गदर्शक बनाओ और प्रत्येक बात में उससे प्रकाश प्राप्त करो और हदीसों को भी रद्दी की भांति मत फेंको कि वे बड़ी काम की हैं और बड़ी मेहनत से उनका ज़ख़ीरा (एकत्रीकरण) तैयार हुआ है परन्तु जब क़ुरआन के क़िस्सों से हदीस का कोई क़िस्सा विपरीत हो तो ऐसी हदीस को छोड़ दो गुमराही में न पड़ो। क़ुरआन शरीफ को बहुत सुरक्षापूर्वक ख़ुदा तआला ने तुम तक पहुँचाया है। अतः तुम इस पवित्र कलाम की क़दर करो। किसी वस्तु को इससे बढ़कर न समझो कि समस्त धर्मनिष्ठा और सच्चाई इसी पर निर्भर है। किसी व्यक्ति की बातें लोगों के दिलों में उसी सीमा तक प्रभाव डालती हैं जिस सीमा तक उस व्यक्ति की मारिफ़त (आध्यात्मिक ज्ञान) और संयम पर लोगों को विश्वास होता है।

अब देखो ख़ुदा ने अपनी हुज्जत को तुम पर इस प्रकार पूरा कर दिया है कि मेरे दावे पर हज़ारों दलीलें क़ायम करके तुम्हें यह अवसर दिया है कि ताकि तुम विचार करो कि वह व्यक्ति जो तुम्हें इस सिलसिला की ओर बुलाता है वह किस स्तर की मारिफ़त (आध्यात्मिक ज्ञान) का व्यक्ति है, और कितनी दलीलें प्रस्तुत करता है और तुम असत्य या झूठ या धोखे का कोई आरोप मेरे पूर्व जीवन* पर नहीं लगा सकते ताकि तुम यह विचार करो कि जो व्यक्ति पहले से झूठ और असत्य गढ़ने का आदी है यह भी उसने झूठ बोला होगा। तुम में कौन है जो मेरी जीवनी पर आरोप लगा सकता है। अतः यह **ख़ुदा का फज़ल**

* दावे से पूर्व का जीवन - अनुवादक

है कि उसने आरम्भ से मुझे तक़्वा (संयम) पर क़ायम रखा और विचार करने वालों के लिए यह एक दलील है।

फिर इसके अतिरिक्त मेरे ख़ुदा ने बिल्कुल सदी के आरम्भ में मुझे मामूर (आदेशित) किया और जितनी दलीलें मेरे सच्चा मानने के लिए आवश्यक थीं वे समस्त दलीलें तुम्हारे लिए उपलब्ध कर दीं और असमान से लेकर ज़मीन तक मेरे लिए निशान प्रकट किए और समस्त **नबियों** ने आरम्भ से आज तक मेरे लिए ख़बरें दी हैं। अतः यदि यह कारोबार **मनुष्य** का होता तो इतनी दलीलें इसमें कभी **एकत्र** न हो सकतीं। इसके अतिरिक्त ख़ुदा तआला की समस्त **पुस्तकें** इस बात पर गवाह हैं कि झूठे को ख़ुदा शीघ्र पकड़ता है और अत्यंत अपमानपूर्वक तबाह करता है। परन्तु तुम देखते हो कि मेरा अल्लाह की ओर से होने का दावा तेईस वर्ष से भी अधिक का है जैसा कि बराहीन अहमदिया के पूर्व भाग पर दृष्टि डालकर तुम समझ सकते हो। अतः प्रत्येक बुद्धिमान सोच सकता है कि क्या कभी ख़ुदा की यह आदत हुई और जब से मनुष्य को उसने पैदा किया है क्या कभी उसने ऐसा काम किया कि जो व्यक्ति ऐसा बुरे स्वभाव वाला और चालाक और अशिष्ट और झूठा है कि तेईस वर्ष तक प्रतिदिन नए दिन और नई रात में ख़ुदा तआला पर झूठ गढ़ करके एक नई वह्यी और नया इल्हाम अपने दिल से रचता है। और फिर लोगों को यह कहता है कि ख़ुदा तआला की ओर से यह वह्यी उतरी है। और ख़ुदा तआला बजाए इसके कि ऐसे व्यक्ति को नष्ट करे अपने ज़बरदस्त निशानों से उसकी सहायता करे। उसके दावे के सबूत के लिए आसमान पर चाँद और सूरज को भविष्यवाणी के अनुसार ग्रहण में डाले और इस प्रकार वह भविष्यवाणी जो पूर्व पुस्तकों में और क़ुरआन करीम और हदीसों में और स्वयं उसकी पुस्तक बराहीन अहमदिया में थी पूरी करके दुनिया में दिखा दे और सच्चों की भांति बिल्कुल सदी के आरम्भ में उसको **अवतरित** करे और बिल्कुल **सलीब के प्रभुत्व** के समय में जिसके लिए **सलीब को तोड़ने वाला** मसीह मौऊद आना चाहिए था उसको उस दावे के साथ खड़ा कर दे और प्रत्येक क़दम में उसकी सहायता करे और दस लाख से अधिक उसकी

सहायता में निशान दिखाए और उसको दुनिया में सम्मान दे और धरती पर उसकी क़ुबूलियत फैला दे और सैंकड़ों भविष्यवाणियाँ उसके समर्थन में पूर्ण करे और नबियों के निर्धारित किए हुए दिनों में जो मसीह मौऊद के अवतरण के लिए निर्धारित हैं उसको पैदा करे। और उसकी दुआएं स्वीकार करे तथा उसके कथन में तासीर (प्रभाव) डाल दे और ऐसा ही प्रत्येक दृष्टिकोण से उसका समर्थन करे हालाँकि जानता है कि वह झूठा है और अकारण जान-बूझ कर उसपर झूठ बांध रहा है। क्या बता सकते हो कि यह करम और फज़ल का मामला मुझसे पहले ख़ुदा तआला ने किसी झूठ गढ़ने वाले से किया।

अतः हे ख़ुदा के बन्दो! लापरवाह मत हो और शैतान तुम्हें भ्रमों में न डाले। निस्संदेह समझो कि यह वही वादा पूरा हुआ है जो प्राचीन काल से ख़ुदा के पवित्र नबी करते आए हैं। आज ख़ुदा के भेजे हुए और शैतान की अंतिम जंग है और यह वही समय और वही युग है जैसा कि दानियाल नबी ने भी इसकी ओर इशारा किया था। मैं एक फज़ल की भांति सच्चों के लिए आया परन्तु मुझसे ठट्ठा किया गया और मुझे काफ़िर और दज्जाल ठहराया गया और बेईमानों में से मुझे समझा गया और आवश्यक था कि ऐसा ही होता ताकि वह भविष्यवाणी पूरी होती जो आयत غير المغضوب عليهم (सूरः फातिहा- 7) के अन्दर छुपी हुई है। क्योंकि ख़ुदा ने منعم عليهم का वादा करके इस आयत में बता दिया है कि इस उम्मत में वे यहूदी भी होंगे जो यहूदियों के उलमा के समरूप होंगे जिन्होंने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को सूली देना चाहा और जिन्होंने ईसा अलैहिस्सलाम को काफिर, दज्जाल और नास्तिक क़रार दिया था। अब सोचो कि यह किस बात की ओर इशारा था। इसी बात की ओर इशारा था कि मसीह मौऊद इस उम्मत में से आने वाला है इसलिए उसके समय में यहूदियों जैसे लोग भी पैदा किए जाएँगे जो अपने विचार में उलमा कहलाएँगे। अतः आज तुम्हारे देश में वह भविष्यवाणी पूरी हो गई। यदि यह उलेमा मौजूद न होते तो अब तक इस देश के समस्त निवासी जो मुसलमान कहलाते हैं मुझे स्वीकार कर लेते। अतः समस्त इन्कार करने वालों का गुनाह उन लोगों की गर्दन पर है। ये लोग सच्चाई

के महल में न स्वयं प्रवेश करते हैं न अल्पज्ञ लोगों को प्रवेश करने देते हैं। क्या क्या चालें हैं जो चल रहे हैं और क्या-क्या मंसूबे हैं जो अंदर ही अंदर उनके घरों में हो रहे हैं परन्तु क्या वे ख़ुदा पर विजय प्राप्त कर लेंगे और क्या वे उस सर्वशक्तिमान के इरादे को रोक देंगे जो समस्त नबियों के मुख से प्रकट किया गया। वे इस देश के अशिष्ट अमीरों और अभाग्यशाली धनवान दुनियादारों पर विश्वास करते हैं परन्तु ख़ुदा की दृष्टि में वे क्या हैं, केवल एक **मरे हुए कीड़े।**

हे समस्त लोगो! सुन लो कि यह उसकी भविष्यवाणी है जिसने धरती और आकाश बनाया। वह अपनी इस जमाअत को समस्त देशों में फैला देगा और हुज्जत तथा दलीलों कि दृष्टि से सब पर उनको विजयी करेगा। वह दिन आते हैं बल्कि निकट हैं कि दुनिया में केवल यही एक मज़हब होगा जो सम्मान के साथ याद किया जाएगा। ख़ुदा इस मज़हब और इस सिलसिला में बहुत अधिक तथा विलक्षण बरकत डालेगा और प्रत्येक को जो इसको नष्ट करने की चिंता करता है, असफल रखेगा और यह प्रभुत्व हमेशा रहेगा यहाँ तक कि क़यामत आ जाएगी। यदि अब मुझसे ठठ्ठा करते हैं तो इस ठठ्ठे से क्या हानि क्योंकि कोई नबी नहीं जिससे ठठ्ठा नहीं किया गया। अतः आवश्यक था कि मसीह मौऊद से भी ठठ्ठा किया जाता जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है -

يٰحَسْرَةً عَلَى الْعِبَادِ مَا يَأْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ

(या सीन - 31)

अतः ख़ुदा की ओर से यह निशानी है कि प्रत्येक नबी से ठठ्ठा किया जाता है परन्तु ऐसा व्यक्ति जो समस्त लोगों के समक्ष आसमान से उतरे और फ़रिश्ते भी उसके साथ हों उससे कौन ठठ्ठा करेगा। अतः इस दलील से भी बुद्धिमान समझ सकता है कि मसीह मौऊद का आसमान से उतरना केवल झूठा विचार है। याद रखो कि कोई आसमान से नहीं उतरेगा। हमारे समस्त विरोधी जो अब जीवित मौजूद हैं वे सब मरेंगे और कोई उनमें से ईसा[अ] बिन मरयम को आसमान से उतरते नहीं देखेगा और फिर उनकी औलाद जो बाकी रहेगी वह भी

मरेगी और उनमें से भी कोई आदमी ईसा[अ] बिन मरयम को आसमान से उतरते नहीं देखेगा और फिर औलाद की औलाद मरेगी और वह भी मरयम के बेटे को आसमान से उतरते नहीं देखेगी तब ख़ुदा उनके दिलों में घबराहट डालेगा कि सलीब की विजय का युग भी बीत गया और दुनिया दूसरे रंग में आ गई परन्तु मरयम का बेटा ईसा अलैहिस्सलाम अब तक आसमान से न उतरा तब बुद्धिमान एकदम इस अक़ीदे (आस्था) से विमुख हो जाएँगे और अभी आज के दिन से तीसरी शताब्दी पूर्ण नहीं होगी कि **ईसा की प्रतीक्षा करने वाले** क्या मुसलमान और क्या ईसाई पूर्णतः निराश और बदगुमान होकर इस झूठी आस्था को छोड़ेंगे और दुनिया में एक ही धर्म होगा और एक ही पेशवा। मैं तो एक बीज बोने आया हूँ अतः मेरे हाथ से वह बीज बोया गया और अब वह बढ़ेगा और फूलेगा और कोई नहीं जो **उसको रोक सके**।

और ये विचार मत करो कि आर्य अर्थात हिन्दू दयानंदी धर्म वाले कोई चीज़ हैं वे केवल उस भिड़ की भांति हैं जिसमे सिवाए डंक मारने के और कुछ नहीं। वे नहीं जानते कि एकेश्वरवाद क्या चीज़ है और वे रूहानियत (आध्यात्मिकता) से **पूर्णतः वंचित** हैं। आरोप लगाना और ख़ुदा के पवित्र रसूलों को गालियाँ देना उनका काम है और बड़ा कमाल उनका यही है कि शैतानी भ्रमों से ऐतराज़ों के ज़खीरे जमा कर रहे हैं और संयम तथा पवित्रता की रूह उनमें नहीं। याद रखो की बिना रूहानियत के कोई धर्म चल नहीं सकता और धर्म बिना आध्यात्मिकता के कुछ भी चीज़ नहीं। जिस धर्म में आध्यात्मिकता नहीं और जिस धर्म में ख़ुदा के साथ वार्तालाप का सम्बन्ध नहीं और सच्चाई तथा स्वच्छता की रूह नहीं और आसमानी आकर्षण उसके साथ नहीं और प्रकृति के विरुद्ध परिवर्तन का नमूना उसके पास नहीं वह धर्म मुर्दा है। उससे भयभीत मत हो। अभी तुम में से लाखों और करोड़ों मनुष्य जीवित होंगे कि इस धर्म को समाप्त होते देख लोगे क्योंकि कि यह आर्य का धर्म धरती से है न कि आसमान से और धरती की बातें प्रस्तुत करता है न आसमान की। अतः तुम प्रसन्न हो जाओ और प्रसन्नता से उछलो कि ख़ुदा तुम्हारे साथ है। यदि तुम सच्चाई और ईमान पर क़ायम रहोगे तो फ़रिश्ते

तुम्हें शिक्षा देंगे और आसमानी संतुष्टि तुम पर उतरेगी और रूहुल क़ुदुस (हज़रत जिब्रील) के द्वारा सहायता दिए जाओगे और ख़ुदा प्रत्येक क़दम पर तुम्हारे साथ होगा और कोई तुम्हें पराजित नहीं कर सकेगा। धैर्यपूर्वक ख़ुदा के फज़्ल की प्रतीक्षा करो, गालियां सुनो और चुप रहो, मारें खाओ और सब्र करो और जहाँ तक संभव हो बुराई के मुक़ाबले से बचो ताकि आसमान पर तुम्हारी क़ुबूलियत लिखी जाए। निस्संदेह याद रखो कि जो लोग ख़ुदा से डरते हैं और उनके दिल ख़ुदा के भय से पिघल जाते हैं उन्हीं के साथ ख़ुदा होता है और वह उनके शत्रुओं का शत्रु हो जाता है। दुनिया सच्चे को नहीं देखती परन्तु ख़ुदा जो अलीम व ख़बीर (सब जानने वाला और हर बात की ख़बर रखने वाला) वह सच्चे को देख लेता है। अतः अपने हाथ से उसको बचाता है। क्या वह व्यक्ति जो सच्चे दिल से तुमसे प्यार करता है और वास्तव में तुम्हारे लिए मरने को भी तैयार होता है और तुम्हारी इच्छा के अनुसार तुम्हारी आज्ञा का पालन करता है और तुम्हारे लिए सब कुछ छोड़ता है क्या तुम उससे प्यार नहीं करते और क्या तुम उसको सबसे प्रिय नहीं समझते। अतः जबकि तुम मनुष्य होकर प्यार के बदले में प्यार करते हो फिर ख़ुदा क्यों नहीं करेगा। ख़ुदा भली-भांति जानता है कि वास्तव में उसका वफादार दोस्त कौन है और कौन ग़द्दार तथा दुनिया को प्राथमिकता देने वाला है। अतः तुम यदि ऐसे वफादार हो जाओगे तो तुम में और तुम्हारे अन्यों में ख़ुदा का हाथ एक अंतर करके दिखाएगा।

उस भविष्यवाणी का वर्णन जो बराहीन-ए-अहमदिया के पृष्ठ 511 में दर्ज है

उस भविष्यवाणी के साथ जो बराहीन के पृष्ठ 510 में दर्ज है अर्थात वह भविष्यवाणी जो साहिबज़ादा मौलवी मुहम्मद अब्दुल लतीफ़ साहिब मरहूम और मियां अब्दुर रहमान मरहूम की शहादत से सम्बंधित है और वह भविष्यवाणी जो मेरे सुरक्षित रहने के बारे में है

स्पष्ट हो कि बराहीन-ए-अहमदिया के पृष्ठ 510 और पृष्ठ 511 में ये भविष्यवाणियाँ हैं:-

وان لم يعصمك الناس يعصمك الله من عنده . يعصمك الله من عنده وان لم يعصمك الناس. شاتان تذبحان ۔و كل من عليها فان ولا تهنوا ولا تحزنوا. اليس الله بكاف عبده۔الم تعلم ان الله على كل شيءٍ قدير ۔وجئنابك على هٰولاءشهيدا۔ و فى الله اجرك۔ و يرضى عنك ربك۔ و يتم اسمك و عسے ان تحبوا شيأو هو شر لكم و عسى ان تكرهوا شيأو هو خير لكم و الله يعلم و انتم لا تعلمون۔

अर्थात- यद्यपि लोग तुझे क़त्ल होने से न बचाएं परन्तु ख़ुदा तुझे बचाएगा। ख़ुदा तुझे अवश्य क़त्ल होने से बचाएगा यद्यपि लोग न बचाएं। यह उस बात की ओर संकेत था कि लोग तेरे क़त्ल के लिए प्रयत्न करेंगे चाहे अपने तौर पर और चाहे सरकार को धोखा देकर परन्तु ख़ुदा उनको उनकी योजनाओं में असफल रखेगा। यह ख़ुदा का इरादा इस उद्देश्य से है कि यद्यपि क़त्ल होना मोमिन के लिए शहादत है परन्तु अल्लाह की नियति इसी तरह है कि दो प्रकार के अल्लाह की ओर से भेजे हुए क़त्ल नहीं हुआ करते (1) एक वह नबी जो सिलसिला के आरम्भ पर आते हैं जैसा कि सिलसिला मूसविया में हज़रत मूसा

और सिलसिला मुहम्मदिया में हमारे सय्यद व मौला आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम। (2) दूसरे वे नबी और मामूर मिनल्लाह जो सिलसिला के अंत में आते हैं जैसे कि सिलसिला मूसविया में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और सिलसिला मुहम्मदिया में यह विनीत। यही भेद है कि जैसे आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के बारे में क़ुरआन शरीफ में يعصمك الله की ख़ुशख़बरी है। ऐसा ही उस ख़ुदा की वह्यी में मेरे लिए يعصمك الله की ख़ुशख़बरी है और और सिलसिला के आरम्भ और अंत के अवतार को क़त्ल से सुरक्षित रखना अल्लाह की इस हिकमत के कारण है कि यदि सिलसिले का प्रथम अवतार जो सिलसिले का मुख्य है शहीद किया जाए तो लोगों को उस अवतार के संबंध में बहुत से संशय हो जाते हैं क्योंकि अभी तक वह उस सिलसिले की प्रथम ईंट होता है। अत: यदि सिलसिले की नीव पड़ते ही उस सिलसिले पर ये पत्थर पड़ें कि जो सिलसिले का संस्थापक है वही क़त्ल किया जाए तो यह संकट लोगों की सहनशीलता से अधिक होगा और अवश्य वे संशयों में पड़ेंगे तथा ऐसे संस्थापक को नऊज़ुबिल्लाह झूठ गढ़ने वाला क़रार देंगे। उदाहरणतया यदि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम फ़िरऔन के समक्ष जाकर उसी दिन क़त्ल किए जाते या हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस दिन जिस दिन क़त्ल के लिए मक्का में आपके घर का घेराव किया गया था काफिरों के हाथ से शहीद किए जाते तो शरीअत और सिलसिले का वहीं अंत हो जाता और उसके बाद कोई नाम भी न लेता। अत: यही हिकमत थी कि बावजूद हज़ारों जानी दुश्मनों के न हज़रत मूसा शहीद हो सके और न हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शहीद हो सके और यदि सिलसिले का अंतिम अवतार शहीद किया जाए तो लोगों कि दृष्टि में सिलसिले के अंत पर नाकामी और असफलता का दाग लगाया जाएगा और ख़ुदा तआला की इच्छा यह है कि सिलसिले का अंत विजय और सफलता के साथ हो क्योंकि आदेश अंत पर लागू होता है और ख़ुदा तआला की इच्छा कदापि नहीं है कि सिलसिले के अंत पर लानती शत्रु को कोई ख़ुशी पहुंचे जैसा कि उसकी इच्छा नहीं है कि सिलसिले के आरम्भ में ही पहली ईंट के टूटने से

लानती शत्रु बग़लें बजाएँ। अतः इसलिए अल्लाह कि हिकमत ने मूसवी सिलसिले के अंत में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को सलीब की मौत से बचा लिया और मुहम्मदी सिलसिले के अंत में भी इसी उद्देश्य से प्रयत्न किया गया अर्थात हत्या का दावा किया गया ताकि मुहम्मदी मसीह को सलीब पर खींचा जाए परन्तु ख़ुदा का फज़्ल पहले मसीह की अपेक्षा इस मसीह पर अधिक प्रकट हुआ और मृत्यु दंड से तथा प्रत्येक प्रकार के दंड से सुरक्षित रखा। अतः चूंकि सिलसिले का आरम्भ और अंत दो दीवारें हैं और दो आड़ें हैं इसलिए अल्लाह की आदत इसी प्रकार जारी है कि सिलसिला के प्रथम और सिलसिला के अंतिम नबी को क़त्ल से सुरक्षित रखता है। यद्यपि उपद्रवी और दुष्ट व्यक्ति बहुत प्रयत्न करते हैं कि क़त्ल कर दें। परन्तु ख़ुदा का हाथ उनके साथ होता है। कभी कभी मूर्ख शत्रु धोखे से यह विचार करता है कि क्या मैं नेक नहीं हूँ और क्या मैं नमाज़ और रोज़े का पालन करने वाला नहीं। जैसा कि यहूदियों के विद्वानों और फरीसियों का यही विचार था बल्कि कुछ उनमें से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के समय में मुल्हिम (जिसको ख़ुदा से इल्हाम होता हो) होने का भी दावा करते थे परन्तु ऐसा मूर्ख यह नहीं जनता कि जो ख़ुदा के सच्चे बंदे होते हैं और घनिष्ट संबंध उसके साथ रखते हैं वे उस सच्चाई और वफादारी और अल्लाह की मुहब्बत से रंगीन होते हैं कि ख़ुदा तआला को उनका साथ देना पड़ता है और उनके शत्रु को नष्ट करता है। जैसा कि बलअम ने अहंकार और घमण्ड से यह विचार किया कि क्या मूसा मुझसे श्रेष्ठ है परन्तु मूसा का ख़ुदा से एक संबंध था जिसको शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकते और जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता इसलिए अँधा बलअम इस संबंध से अनभिज्ञ रहा और जो स्वयं से बहुत बड़ा था उससे मुक़ाबला करके मारा गया। अतः हमेशा यह मामला होता है कि जो ख़ुदा के विशेष मित्र और वफादार बन्दे हैं। उनका सिद्क ख़ुदा के साथ इस उस सीमा तक पहुँच जाता है कि ये दुनियादार अंधे उसको देख नहीं सकते। इसलिए गद्दी नशीनों और मौलवियों में से प्रत्येक उनके मुक़ाबले के लिए उठता है और वह मुक़ाबला उससे नहीं बल्कि ख़ुदा से होता है। भला यह कैसे हो सके कि जिस

व्यक्ति को ख़ुदा ने एक महान उद्देश्य के लिए पैदा किया है और जिसके द्वारा ख़ुदा चाहता है कि एक बड़ा परिवर्तन संसार में प्रकट करे। ऐसे व्यक्ति को कुछ मूर्ख और बुज़दिल और अनुभवहीन और अपूर्ण और बेवफा संयमियों के लिए नष्ट कर दे। यदि दो नौकाओं का परस्पर टकराव हो जाए जिन में से एक ऐसी है कि उसमे समय का बादशाह जो न्याय करने वाला और दयालु स्वभाव और दाता और दिल का अच्छा है, अपने विशेष कार्यकर्ताओं के साथ सवार है और दूसरी नौका ऐसी है जिसमे कुछ असभ्य या अनपढ़ सांहसी दुष्ट, अशिष्ट बैठे हैं और ऐसा अवसर आ पड़ा है कि एक नौका का बचाओ इस में है कि दूसरी नौका अपने सवारों समेत तबाह की जाए तो अब बताओ कि उस समय कौन सी कार्रवाई उचित होगी। क्या उस न्यायकर्ता बादशाह की नौका नष्ट की जाएगी या उन अशिष्टों की नौका कि जो तुच्छ और भ्रष्ट हैं तबाह कर दी जाएगी। मैं तुम्हें सच सच कहता हूँ कि बादशाह की नौका बड़े ज़ोर और सहायता पूर्वक बचाई जाएगी और उन असभ्य और दुष्टों की नौका तबाह कर दी जाएगी और वे बिल्कुल लापरवाही से नष्ट कर दिए जाएँगे और उनके नष्ट होने में ख़ुशी होगी क्योंकि संसार को न्यायकर्ता बादशाह के अस्तित्व की अत्यंत आवश्यकता है और उसका मरना एक जगत का मरना है। यदि कुछ असभ्य और दुष्ट मर गए तो उनकी मौत से संसार की व्यवस्था में कोई बाधा नहीं आ सकती अतः ख़ुदा तआला की यही सुन्नत है कि जब उसके अवतारों के मुक़ाबले पर एक और समूह खड़ा हो जाता है तो यद्यपि वे अपने विचार में स्वयं को कैसे ही नेक क़रार दें उन्हीं को ख़ुदा तआला तबाह करता है और उन्हीं के नष्ट होने का समय आ जाता है क्योंकि वह नहीं चाहता कि जिस उदेश्य के लिए अपने किसी अवतार को भेजता है उसको व्यर्थ करे क्योंकि यदि ऐसा करे तो फिर वह स्वयं अपने उद्देश्य का शत्रु होगा और फिर धरती पर उसकी कौन उपासना करेगा। दुनिया अधिकता को देखती है और विचार करती है कि यह समूह बहुत बड़ा है अतः यह अच्छा है और नासमझ विचार करता है कि ये लोग हजारों लाखों मस्जिदों में एकत्र होते है क्या ये बुरे हैं। परन्तु ख़ुदा अधिकता को नहीं

देखता वह दिलों को देखता है। ख़ुदा के विशेष बन्दों में अल्लाह की मुहब्बत और सच्चाई और वफ़ा का एक ऐसा विशेष प्रकाश होता है कि यदि में वर्णन कर सकता तो वर्णन करता। परन्तु मैं क्या वर्णन करूँ जब से दुनिया हुई इस भेद को कोई नबी या रसूल वर्णन नहीं कर सका। ख़ुदा के वफादार बन्दों की रूह अल्लाह की चौखट पर ऐसे गिरती है कि हमारे पास कोई शब्द नहीं जो उस अवस्था को दिखा सके।

अब इसके बाद शेष अनुवाद करके इस विषय को समाप्त करता हूँ। ख़ुदा तआला फरमाता है यद्यपि मैं तुझे क़त्ल से बचाऊंगा परन्तु तेरी जमाअत में से दो बकरियां ज़िबह की जाएंगी और प्रत्येक जो धरती पर है अन्ततः नष्ट होगा अर्थात निर्दोष और मासूम होने की अवस्था में क़त्ल की जाएंगी। यह ख़ुदा तआला की पुस्तकों में मुहावरा है कि निर्दोष और मासूम को बकरे या बकरी से उपमा दी जाती है और कभी गायों से भी उपमा दी जाती है। अतः ख़ुदा तआला ने इस स्थान पर मनुष्य का शब्द छोड़ कर बकरी का शब्द प्रयोग किया है क्योंकि बकरी में दो हुनर हैं वह दूध भी देती है और फिर उसका मांस भी खाया जाता है और यह भविष्यवाणी शहीद मरहूम मौलवी अब्दुल लतीफ और उनके शिष्य अब्दुर रहमान के बारे में है कि जो बराहीन अहमदिया के लिखे जाने के बाद पूरे तेईस वर्ष बाद पूरी हुई। अब तक लाखों करोड़ों लोगों ने इस भविष्यवाणी को मेरी पुस्तक बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 511 में पढ़ा होगा और स्पष्ट है कि जैसा कि अभी मैंने लिखा है कि बकरी की विशेषताओं में से एक दूध देना है और एक उसका मांस है जो खाया जाता है। यह दोनों बकरी की विशेषताएँ मौलवी अब्दुल लतीफ साहिब मरहूम की शहादत से पूरी हुईं। क्योंकि मौलवी साहिब मरहूम ने शास्त्रार्थ के समय विभिन्न प्रकार के आध्यात्मिक ज्ञान और सच्चाईयां वर्णन करके विरोधियों को दूध दिया। यद्यपि दुर्भाग्यशाली विरोधियों ने वह दूध न पिया और फेंक दिया और फिर शहीद मरहूम ने अपनी जान की क़ुर्बानी से अपना मांस दिया और ख़ून बहाया ताकि विरोधी इस मांस को खाएँ और इस ख़ून को पिएँ अर्थात मुहब्बत के रंग में और इस प्रकार उस पवित्र क़ुर्बानी से

लाभ उठाएँ और सोच लें कि जिस धर्म और जिस आस्था पर वे क़ायम हैं और जिस पर उनके बाप दादे मर गए क्या ऐसी क़ुर्बानी कभी उन्होंने की। क्या ऐसी सच्चाई और ख़ुलूस किसी ने दिखाया। क्या संभव है कि जब तक मनुष्य विश्वास से भर कर ख़ुदा को न देखे वह ऐसी क़ुर्बानी दे सके। निस्संदेह ऐसा ख़ून और ऐसा मांस सदा सत्य के अभिलाषियों को अपनी ओर निमंत्रण देता रहेगा जब तक कि संसार नष्ट हो जाए। अतः चूंकि साहिबज़ादा मौलवी अब्दुल लतीफ साहिब को इन दो विशेषताओं के कारण बकरी से बहुत समानता थी। और मियां अब्दुर रहमान भी बकरी से बहुत समानता रखता था इसलिए उनको बकरी के नाम से याद किया गया और चूंकि ख़ुदा तआला जानता था कि इस लेखक और इसकी जमाअत पर इस अकारण वध से बहुत सदमा लगेगा इसलिए इस वह्यी के तुरंत बाद आने वाले वाक्यों में सांत्वना और शोक के रूप में कलाम उतारा जो अभी अरबी में लिख चुका हूँ जिसका यह अनुवाद है कि उस मुसीबत और उस सख़्त सदमे से तुम ग़मगीन (शोकग्रस्त) और उदास मत हो क्योंकि यदि दो व्यक्ति तुम में से मारे गए तो ख़ुदा तुम्हारे साथ है वह दो के बदले एक क़ौम तुम्हारे पास लाएगा और वह अपने बन्दे के लिए पर्याप्त है। क्या तुम नहीं जानते कि ख़ुदा हर एक चीज़ पर समर्थ है और यह लोग जो इन दो पीड़ितों को शहीद करेंगे हम तुझको उन पर क़यामत में गवाह बनाकर लाएंगे कि किस गुनाह से उन्होंने शहीद किया था और ख़ुदा तेरा बदला देगा और तुझ से राज़ी होगा और तेरे नाम को पूरा करेगा अर्थात अहमद के नाम को जिसके यह अर्थ हैं कि ख़ुदा की बहुत प्रसंशा करने वाला और वही व्यक्ति ख़ुदा की बहुत प्रसंशा करता है जिस पर ख़ुदा के इनाम और कृपा बहुत उतरती हैं। अतः अर्थ यह है ख़ुदा तुझ पर इनाम और कृपा की बारिश करेगा इसलिए तू सबसे अधिक उसका प्रशंसक होगा। तब तेरा नाम जो अहमद है पूरा हो जाएगा । फिर इसके बाद फरमाया कि उन शहीदों के मारे जाने से ग़म मत करो उनकी शहादत में अल्लाह की हिकमत है और बहुत बातें हैं जो तुम चाहते हो कि वे घटित हों हालांकि उनका घटित होना तुम्हारे लिए अच्छा नहीं होता और बहुत मामले हैं जो तुम चाहते हो कि

घटित न हों हालांकि उनका घटित होना तुम्हारे लिए अच्छा होता है और ख़ुदा ख़ूब जानता है कि तुम्हारे लिए क्या उचित है परन्तु तुम नहीं जानते। अल्लाह की इस समस्त वह्यी में यह समझाया गया है कि साहिबज़ादा मौलवी अब्दुल लतीफ़ मरहूम का इस निर्दयता से मारा जाना यद्यपि ऐसा मामला है कि इसके सुनने से कलेजा मुँह को आता है (وما رأينا ظلمًا اغيظ من هذا) परन्तु इस ख़ून में बहुत बरकतें हैं जो बाद में प्रकट होंगी और काबुल की भूमि देख लेगी कि यह ख़ून कैसे-कैसे फल लाएगा। यह ख़ून कभी व्यर्थ नहीं जाएगा। इससे पहले ग़रीब अब्दुर रहमान मेरी जमाअत का अत्याचार पूर्वक मारा गया और ख़ुदा चुप रहा परन्तु इस ख़ून पर अब वह चुप नहीं रहेगा और बड़े बड़े परिणाम प्रकट होंगे। अतः सुना गया है कि जब शहीद मरहूम को हज़ारों पत्थरों से क़त्ल किया गया तो उन्हीं दिनों में सख़्त हैज़ा क़ाबुल में फूट पड़ा और रियासत के बड़े बड़े नामी उसके शिकार हो गए और कुछ अमीर के संबंधी और प्रियजन भी इस संसार से चले गए। परन्तु अभी क्या है यह ख़ून बड़ी निर्दयता के साथ किया गया है और आसमान के नीचे ऐसे ख़ून का इस युग में उदाहरण नहीं मिलेगा। हाय इस मूर्ख अमीर ने क्या किया कि ऐसे मासूम व्यक्ति को अत्यंत निर्दयता से क़त्ल करके स्वयं को तबाह कर लिया। हे क़ाबुल की ज़मीन तू गवाह रह कि तेरे ऊपर घोर अपराध किया गया। हे दुर्भाग्यशाली ज़मीन तू ख़ुदा की नज़र से गिर गई कि तू इस घोर अत्याचार का स्थान है।

मौलवी अब्दुल लतीफ़ साहिब मरहूम का एक नया चमत्कार

जब मैंने इस पुस्तक को लिखना आरम्भ किया तो मेरा इरादा था कि पूर्व इसके कि 16 अक्तूबर 1903 ई० को गुरदासपुर एक मुक़द्दमा पर जाऊं जो कि एक विरोधी की ओर से फ़ौजदारी में मेरे ऊपर दायर है, पुस्तक लिख लूँ और उसको साथ ले जाऊं तो ऐसा संयोग हुआ कि मुझे गुर्दे में अत्यंत पीड़ा होने लगी। मैंने विचार किया कि यह कार्य अधूरा रह गया। केवल दो- चार दिन हैं यदि मैं

इसी प्रकार गुर्दे के दर्द से पीड़ित रहा जो कि एक जानलेवा बीमारी है तो यह सम्पादन नहीं हो सकेगा। तब ख़ुदा तआला ने मुझे दुआ की ओर ध्यान दिलाया। मैंने रात के समय में जबकि बारह बजे के बाद लगभग तीन घंटे रात बीत चुकी थी अपने घर के लोगों से कहा कि अब मैं दुआ करता हूँ तुम आमीन कहो। अतः मैंने उसी दर्दनाक हालत में साहिबज़ादा मौलवी अब्दुल लतीफ के तसव्वुर से दुआ की कि हे अल्लाह! इस मरहूम के लिए मैं इसको लिखना चाहता था तो साथ ही मुझे तन्द्रावस्था हुई और इल्हाम हुआ سلامٌ قولاً من ربّ رحیم अर्थात सलामती और सुरक्षा है। यह रहीम ख़ुदा का कथन है। अतः क़सम है मुझे उस हस्ती की जिसके हाथ में मेरी जान है कि अभी सुबह के छः नहीं बजे थे कि मैं बिल्कुल स्वस्थ हो गया और उसी दिन पुस्तक को लगभग आधा लिख लिया। **अतः इस पर अल्लाह की अपार प्रशंसा।**

एक आवश्यक बात अपनी जमाअत के ध्यान देने हेतु

यद्यपि मैं भली-भांति जानता हूँ कि जमाअत के कुछ लोग अभी तक अपनी आध्यात्मिक कमज़ोरी की हालत मैं हैं यहाँ तक कि कुछ को अपने वादों पर भी अटल रहना कठिन है परन्तु जब मैं इस दृढ़ता और बहादुरी को देखता हूँ जो साहिबज़ादा मौलवी मुहम्मद अब्दुल लतीफ मरहूम से प्रकट हुई तो मेरी अपनी जमाअत के बारे में बहुत उम्मीद बढ़ जाती है क्योंकि जिस ख़ुदा ने इस जमाअत के कुछ लोगों को यह सामर्थ्य दिया कि न केवल माल बल्कि जान भी इस मार्ग पर क़ुर्बान कर गए उस ख़ुदा की स्पष्ट यह इच्छा ज्ञात होती है कि वह बहुत से ऐसे लोग इस जमाअत में पैदा करे जो साहिबज़ादा मौलवी अब्दुल लतीफ़ की रूह रखते हों और उनकी रूहानियत का एक नया पौधा हों। जैसा कि मैंने कश्फ़ (तन्द्रावस्था) में मौलवी साहिब की शहादत की घटना के निकट ही देखा कि हमारे बाग़ में से सरू की एक ऊंची शाख काटी गई।★ और मैंने कहा कि इस

★हाशिया :- इससे पूर्व साहिबज़ादा मौलवी अब्दुल लतीफ़ साहिब मरहूम के बारे में एक स्पष्ट वह्यी हुई थी जबकि वह जीवित थे बल्कि क़ादियान में ही मौजूद थे और अल्लाह की

शाख को ज़मीन में पुनः गाड़ दो वह बढ़े और फूले। अतः मैंने उसके यही अर्थ किए कि ख़ुदा उनके बहुत से क़ाइम मुक़ाम (स्थानापन्न) पैदा कर देगा इसलिए मैं विश्वास रखता हूँ कि किसी समय मेरे इस कश्फ़ के अर्थ प्रकट हो जाएँगे। परन्तु अभी तक यह हाल है यदि मैं एक थोड़ी सी बात भी इस सिलसिला के क़ायम रखने के लिए जमाअत के समक्ष प्रस्तुत करता हूँ तो साथ ही मेरे दिल में विचार आता है कि कहीं ऐसा न हो कि इस बात से कोई संकट में पड़ जाए। अब एक आवश्यक बात जो अपनी जमाअत के समक्ष प्रस्तुत करना चाहता हूँ यह है कि मैं देखता हूँ लंगर खाना के लिए जितना मेरी जमाअत समय-समय पर सहायता करती रहती है वह प्रशंसनीय है। हाँ इस सहायता में पंजाब ने बहुत भाग लिया हुआ है। इसका कारण यह है कि पंजाब के लोग अधिकतर मेरे पास आते जाते हैं और यदि दिलों में लापरवाही के कारण कोई सख़्ती आ जाए तो संगति और बार-बार मुलाकात के प्रभाव से वह सख़्ती बहुत जल्दी दूर होती रहती है। इसलिए पंजाब के लोग विशेषतः कुछ लोग अपनी मुहब्बत, सच्चाई और ख़ुलूस में बढ़ते जाते हैं। इसी कारण प्रत्येक आवश्यकता के समय वे बहुत उत्साह दिखाते हैं और सच्चे आज्ञापालन के लक्षण उनसे प्रकट होते हैं और यह राज्य.....दूसरे राज्यों की तुलना में कुछ नर्म दिल भी है। इन सब बातों के बावजूद न्याय से दूर होगा यदि मैं दौर के मुरीदों को ऐसे ही समझ लूँ कि वे अभी ख़ुलूस और उत्साह से कुछ सम्बन्ध नहीं रखते क्योंकि साहिबज़ादा मौलवी अब्दुल लतीफ़ जिसने जान क़ुर्बान करने का यह आदर्श प्रस्तुत किया वह भी तो दूर की ज़मीन का रहने वाला था जिसकी सच्चाई और वफादारी और ख़ुलूस और दृढ़ता के समक्ष पंजाब के बड़े बड़े ख़ुलूस वालों को भी लज्जित होना

यह वह्यी अंग्रेज़ी मैगज़ीन 9 फरवरी 1903 ई। में और अल-हकम 17 जनवरी 1903 ई. और अल-बद्र 16 जनवरी 1903 कॉलम 2 में प्रकाशित हो चुकी है जो मौलवी साहिब के मारे जाने के बारे में है और वह यह है कि قُتِلَ خیبۃً وَ زِیْدَ ھیبۃً अर्थात ऐसी हालत में मारा गया कि उसकी बात को किसी ने न सुना और उसका मारा जना एक भयानक मामला था अर्थात लोगों को बहुत भयानक मालूम हुआ और दिलों पर उसका बड़ा प्रभाव पड़ा। (इसी से)

पड़ता है और कहना पड़ता है कि वह एक आदमी था जो हम सबसे पीछे आया और सबसे आगे बढ़ गया। इसी प्रकार कुछ दूर देशों के मुख्लिस बड़ी बड़ी आर्थिक सहायता कर चुके हैं और उनकी सच्चाई तथा वफ़ादारी में कभी कमी न आई जैसा कि भाई सेठ अब्दुर रहमान व्यापारी मद्रास तथा कुछ ऐसे अन्य मित्र। परन्तु संख्या की अधिकता के कारण पंजाब को प्राथमिकता दी गई है। क्योंकि पंजाब में प्रत्येक स्तर के लोग धार्मिक सेवा में बहुत भाग लेते जाते हैं और दूर के अधिकतर लोग यद्यपि हमारे सिलसिले में सम्मिलित तो हैं परन्तु संगति कम मिलने के कारण.....उनके दिल पूर्णत: दुनिया की गंदगी से साफ़ नहीं हैं। मामला यह मालूम होता है कि या तो अन्तत: वे गन्दगी से साफ़ हो जाएँगे और या ख़ुदा तआला उनको इस पवित्र सिलसिले से काट देगा और एक मुर्दे की भांति मरेंगे। मनुष्य की बड़ी गलती दुनिया परस्ती है। यह बदनसीब और मन्हूस दुनिया कभी भय से और कभी उम्मीद से अधिकतर लोगों को अपने जाल में ले लेती है और ये उसी में मरते हैं। नादान कहता है कि क्या हम दुनिया को छोड़ दें और यह गलती मनुष्य को नहीं छोड़ती जब तक कि उसको बेईमान करके नष्ट न करे। हे नादान! कौन कहता है कि तू माध्यमों का उपयोग छोड़ दे परन्तु दिल को दुनिया और दुनिया के धोखों से अलग कर अन्यथा तू नष्ट है और जिस परिवार के लिए तू हद से ज़्यादा बढ़ता जाता है यहाँ तक कि ख़ुदा के कर्तव्यों को भी छोड़ता है और विभिन्न प्रकार की चालाकियों से एक शैतान बन जाता है। इस परिवार के लिए तू गुनाह का बीज बोता है और उनको तबाह करता है इसलिए कि ख़ुदा तेरी पनाह में नहीं क्योंकि तू संयमी नहीं। ख़ुदा तेरे दिल की जड़ को देख रहा है अत: तू असमय मरेगा और परिवार को तबाही में डालेगा परन्तु वह जो ख़ुदा की ओर झुका हुआ है उसके सौभाग्य से उसकी पत्नी और बच्चों को भी हिस्सा मिलेगा और उसके मरने के बाद कभी वे तबाह नहीं होंगे। जो लोग मुझसे सच्चा संबंध रखते हैं वे यद्यपि हज़ार कोस की दूरी पर भी हैं फिर भी हमेशा मुझे लिखते रहते हैं और दुआएं करते रहते हैं कि ख़ुदा तआला उन्हें अवसर दे ताकि वे संगति से लाभान्वित हों। परन्तु अफ़सोस कि कुछ ऐसे हैं कि

मैं देखता हूँ कि मुलाक़ात करना तो दूर रहा सालों बीत जाते हैं और एक कार्ड भी उनकी ओर से नहीं आता। इससे मैं समझता हूँ कि उनके दिल मर गए हैं और उनकी अंतरात्मा पर कोई कोढ़ का दाग़ है। मैं तो बहुत दुआ करता हूँ कि मेरी सब जमाअत उन लोगों में से हो जाए जो ख़ुदा से डरते हैं और नमाज़ पर क़ायम रहते हैं और रात को उठ कर ज़मीन पर गिरते हैं और रोते हैं और ख़ुदा के कर्तव्यों को व्यर्थ नहीं करते और कंजूस और रोकने वाले और लापरवाह और दुनिया के कीड़े नहीं हैं और मैं आशा रखता हूँ कि ये मेरी दुआएं ख़ुदा तआला स्वीकार करेगा और मुझे दिखाएगा कि अपने पीछे मैं ऐसे लोगों को छोड़ता हूँ। परन्तु वे लोग जिनकी आँखें ज़िना (व्यभिचार) करती हैं और जिनके दिल मल-मूत्र से बदतर हैं और जिनको मरना बिल्कुल याद नहीं है मैं और मेरा ख़ुदा उनसे विमुख हैं। मैं बहुत प्रसन्न हुंगा यदि ऐसे लोग इस संबंध को तोड़ लें। क्योंकि ख़ुदा इस जमाअत को एक ऐसी क़ौम बनाना चाहता है जिसके नमूने से लोगों को ख़ुदा याद आए और जो संयम और पवित्रता के प्रथम स्थान पर क़ायम हों और जिन्होंने वास्तव में धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता दी हो। परन्तु वे उपद्रवी लोग जो मेरे हाथ के नीचे हाथ रख कर और यह कह कर कि हमने धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता दी फिर वे अपने घरों में जाकर ऐसे उपद्रवों में लिप्त हो जाएं कि केवल दुनिया ही दुनिया उनके दिलों में होती है। न उनकी दृष्टि पवित्र है न उनका दिल पवित्र है और न उनके हाथों से कोई नेकी होती है और न उनके पैर किसी काम के लिए हरकत करते हैं और वे उस चूहे की भांति हैं जो अँधेरे में ही पोषित होता है और उसी में रहता है और उसी में मरता है। वे आसमान पर हमारे सिलसिले में से काटे गए हैं। वे व्यर्थ कहते हैं कि हम इस जमाअत में सम्मिलित हैं क्योंकि आसमान पर वे सम्मिलित नहीं समझे जाते। जो व्यक्ति मेरी इस वसिय्यत को नहीं मानता कि वास्तव में वह दीन को दुनिया पर प्राथमिकता दे और वास्तव में एक पवित्र परवर्तन उसकी हस्ती पर आ जाए और वास्तव में वह पवित्र दिल और पवित्र इच्छा वाला हो जाए तथा गन्दगी और हरामकारी का समस्त चोला अपने शरीर से फेंक दे और मानवजाति

का हमदर्द और ख़ुदा का सच्चा आज्ञाकारी हो जाए और अपने समस्त अहंकार को त्याग कर मेरे पीछे चले। मैं उस व्यक्ति को उस कुत्ते से समानता देता हूँ जो ऐसे स्थान से अलग नहीं होता जहाँ मुर्दे फेंके जाते हैं और जहाँ सड़े गले मुर्दों की लाशें होती हैं। क्या मैं इस बात का मोहताज हूँ कि वे लोग ज़बान से मेरे साथ हों और इस प्रकार देखने के लिए एक जमाअत हो। मैं सच-सच कहता हूँ कि यदि समस्त लोग मुझे छोड़ दें और एक भी मेरे साथ न रहे तो मेरा ख़ुदा मेरे लिए एक और क़ौम पैदा करेगा जो सच्चाई और वफादारी में उनसे बेहतर होगी। यह आसमानी आकर्षण काम कर रहा है कि नेक दिल लोग मेरी ओर दोड़ते हैं। कोई नहीं जो आसमानी आकर्षण को रोक सके। कुछ लोग ख़ुदा से अधिक अपनी चालाकियों और धोखों पर विश्वास रखते हैं। शायद उनके दिलों में यह बात छुपी हो नुबुव्वतें और रिसालतें सब इंसानी चालाकियां हैं और संयोग से प्रसिद्धियाँ और कुबूलियतें हो जाती हैं इस विचार से अधिक गन्दा कोई विचार नहीं और ऐसे व्यक्ति को उस ख़ुदा पर विश्वास नहीं जिसके इरादे के बिना एक पत्ता भी गिर नहीं सकता। लानती हैं ऐसे दिल और लानती हैं ऐसे स्वभाव ख़ुदा उनको अपमान द्वारा मारेगा क्योंकि वे ख़ुदा के कारखाना के शत्रु हैं। ऐसे लोग वास्तव में नास्तिक और गंदे दिल के होते हैं जो जहन्नुमी (नारकीय) जीवन के दिन व्यतीत करते हैं और मरने के बाद सिवाए जहन्नुम की आग के उनके हिस्से में कुछ नहीं।

अब सारांश यह है कि लंगर खाना और मैगज़ीन के अतिरिक्त जो अंग्रेज़ी और उर्दू में निकलता है जिसके लिए अधिकतर दोस्तों ने उत्साह प्रकट किया है, एक मदरसा भी क़ादियान में खोला गया है। इससे यह लाभ है कि नई आयु के बच्चे एक ओर तो शिक्षा प्राप्त करते हैं और दूसरी ओर हमारे सिलसिले के सिद्धांतों से परिचय प्राप्त करते जाते हैं। इस प्रकार बड़ी सरलता से एक जमाअत तैयार होती जाती है। बल्कि कभी कभी तो उनके माँ- बाप भी इस सिलसिले में सम्मिलित हो जाते हैं परन्तु इन दिनों में हमारा यह मदरसा बड़ी कठिनाई में पड़ा हुआ है और बावजूद इसके कि मेरे प्रिय भाई नवाब मुहम्मद अली खां साहिब

रईस मलेरकोटला अपने पास से अस्सी रूपए प्रति माह इस मदरसा की मदद करते हैं। परन्तु फिर भी अध्यापकों के वेतन प्रति माह अदा नहीं हो सकते। सैंकड़ों रुपये कर्ज़ा सर पर रहता है इसके अतिरिक्त मदरसा से संबंधित कई इमारतें आवश्यक हैं जो अब तक तैयार नहीं हो सकीं। अन्य चिंताओं के अतिरिक्त यह चिंता मेरी जान को खा रही है। इसके बारे में मैंने बहुत विचार किया कि क्या करूँ अन्ततः यह उपाय मेरे विचार में आया कि मैं इस समय अपनी जमाअत के मुख्लिसों को बड़े ज़ोर के साथ इस बात की ओर ध्यान दिलाऊं कि वे यदि इस बात पर समर्थ हों कि पूरे ध्यान से इस मदरसा के लिए भी कोई मासिक चंदा निर्धारित करें तो चाहिए कि प्रत्येक उनमे से एक पक्के वादे के साथ कुछ न कुछ निर्धारित करे जिसके लिए वह कदापि देरी न करे सिवाए किसी मजबूरीए जो भाग्य से घटित हो और जो साहिब साहिब ऐसा न कर सकें उनके लिए आवश्यकता अनुसार यह प्रस्ताव सोचा गया है कि जो कुछ वे लंगर खाना के लिए भेजते हैं उसके चौथा हिस्सा सीधे तौर पर मदरसा के लिए नवाब साहिब के नाम भेज दें। लंगर खाना में सम्मिलित करके कदापि न भेजें बल्कि अलग से मनी आर्डर करवा कर भेजें। यद्यपि लंगर खाना की चिंता प्रतिदिन मुझे करनी पड़ती है और इसका ग़म सीधे तौर पर मेरी ओर आता है और मेरी औक़ात को परेशान करता है लेकिन यह ग़म भी मुझसे देखा नहीं जाता इसलिए मैं लिखता हूँ कि इस सिलसिले के जवां मर्द लोग जिनसे मैं हर प्रकार आशा रखता हूँ कि वे मेरी इस प्रार्थना को रद्दी की भांति न फेंक दें और पूरे ध्यान से इस पर पाबन्द हों। मैं अपनी ओर से कुछ नहीं कहता बल्कि वही कहता हूँ जो ख़ुदा तआला मेरे दिल में डालता है। मैंने खूब विचार किया है और बार-बार चिंतन किया है मेरी समझ में यदि ये मदरसा क़ादियान का क़ायम रह जाए तो बड़ी बरकतों का कारण होगा। और उसके द्वारा एक फ़ौज नए शिक्षा प्राप्तों की हमारी ओर आ सकती है। यद्यपि मैं यह भी जनता हूँ कि अधिकतर विद्यार्थी धर्म के लिए नहीं बल्कि दुनिया के लिए पढ़ते हैं और उनके माता पिता के विचार भी इसी हद तक सीमित होते हैं परन्तु फिर भी प्रतिदिन की संगति का अवश्य प्रभाव पड़ता है। यदि

20 विद्यार्थियों में से एक भी ऐसा निकले जिसका स्वभाव धार्मिक मामलों की ओर प्रेरित हो जाए और वह हमारे सिलसिले और हमारी शिक्षाओं का अनुसरण करना आरम्भ कर दे तब भी मैं ख्याल करूँगा कि हमने इस मदरसा की बुनियाद से अपने उद्देश्य को प्राप्त कर लिया। अंत में यह भी याद रहे कि यह मदरसा सदा इस बीमारी और कमज़ोरी की हालत में नहीं रहेगा बल्कि विश्वास है कि पढ़ने वालों की फीस से बहुत कुछ सहायता मिल जाएगी या वह पर्याप्त हो जाएगी। अत: उस समय आवश्यक नहीं होगा कि लंगर खाना की आवश्यक राशि काट कर मदरसा को दी जाएं। अत: इस विस्तार के पूर्ण हो जाने पर हमारा यह निर्देश रद्द हो जाएगा और लंगर खाना जो कि वह भी वास्तव में एक मदरसा है अपने चौथे हिस्से की राशि को पुन: प्राप्त कर लेगा और यह कठिन मार्ग जिससे लंगर खाना को नुक्सान पहुंचेगा मैंने केवल इसलिए अपनाया है कि बज़ाहिर मुझे मालूम होता है कि जितनी सहायत की आवश्यकता है शायद नए चंदे में वह आवश्यकता पूर्ण न हो सके परन्तु यदि ख़ुदा के फज़्ल से पूरी हो जाए तो फिर इस कांट-छांट की आवश्यकता नहीं और मैंने यह जो कहा कि लंगर खाना भी एक मदरसा है यह इसलिए कहा है कि जो मेहमान मेरे पास आते जाते हैं जिनके लिए लंगर खाना जारी है वे मेरी शिक्षाओं को सुनते रहते हैं और मैं विश्वास रखता हूँ कि जो लोग हर समय मेरी शिक्षाओं को सुनते हैं ख़ुदा तआला उनको हिदायत देगा और उनके दिलों को खोल देगा। अब मैं इतने पर ही समाप्त करता हूँ और ख़ुदा तआला से चाहता हूँ कि जो उद्देश मैंने प्रस्तुत किया है मेरी जमाअत को उसके पूरा करने की तौफ़ीक़ दे और उनके धन में बरकत डाले और इस भलाई के काम के लिए उनके दिलों को खोल दे, आमीन सुम्मा आमीन।

والسلام علی من اتبع الهدی

(सलामती हो उस पर जो हिदायत की पैरवी करे)

16 अक्तूबर 1903 ई०

بسم الله الرحمن الرحيم
نحمده و نصلی علی رسوله الکریم

اَلوقتُ وقتُ الدّعاءِ لَا وقت الملاحِمِ وقتل الاعداء

——— * ———

اعلموا أرشدکم الله أن الامر قد خرج من أن یتھیّأ القوم للجھاد، ویُھلّوا له أھل الاستعداد، ویستحضروا الغزو، من الحضر والبدو، ویفوزوا فی استنجاد الجنود، واستحشاد الحشود، وإصحار الاسود۔ فإنّا نری المسلمین أضعف الاقوام، فی مُلکِنا ھذا والعرب والروم والشام، ما بقیت فیھم قوة الحرب، ولا عِلْمُ الطعن والضرب، وأمّا الکفّار فقد استبصروا فی فنون القتال، وأعدّوا للمسلمین کلّ عدّة لِلْاِستیصال، ونریٰ أن العِدا من کل

بسم الله الرحمن الرحیم
نحمده و نصلی علی رسوله الکریم

यह समय दुआ का समय है न कि जंग करने और शत्रुओं को क़तल करने का समय

——— * ———

अल्लाह तआला तुम्हें हिदायत दे, जान लो कि मामला इससे बढ़ चुका है कि क़ौम जिहाद के लिए तैयारी करे और इसके लिए योग्यता वालों को बुलाए तथा शहरी एवं देहाती लोगों को युद्ध के लिए उपस्थित करे और वह फ़ौज की सहायता प्राप्त करने तथा लोगों को एकत्र करने और शेरों को मैदान में लाने के लिए सफल हो जाए क्योंकि हम मुसलमानों को देखते हैं कि हमारे इस देश में और अरब, रोम और शाम (सीरिया) में भी वे सबसे कमज़ोर क़ौम हैं। उनमें न युद्ध करने की शक्ति शेष रही और न ही वे भाला चलाना जानते हैं और न तलवार चलाना जबकि काफिर युद्ध की कलाओं में बहुत निपुण हैं और उन्होंने मुसलमानों के उन्मूलन के लिए हर प्रकार की तैयारी कर रखी है और हमें नज़र

حـدَبٍ ينسـلون، ومـا يلتقـى جمعـان إلا وهـم يغلبـون۔ فظهـر ممّـا ظَهَـرَ أن الوقـت وقـت الدعـاء، والتضـرّع فى حضـرة الكبريـاء لا وقـت الملاحـم وقتل الإعـداء، ومـن لا يعـرف الوقـت فيُلقِـى نفسـه إلى التهلكـة، ولا يـرى إلّا أنـواع النّكبـة والذلّة۔ وقـد نُكّسـت أعـلام حـروب المسـلمين ألا تـرىٰ؟

وأيـن رجـال الطعـن والسـيف والمُـدىٰ؟ السـيوف أُغمِـدَت، وَالرّمـاح كُسّـرت، وأُلقِـىَ الرعـب فى قلـوب المسـلمين، فتراهـم فى كل موطـنٍ فارّين مدبريـن۔ وإنّ الحـرب نهبـت أعمارهـم، وأضاعت عسـجدهم وعقارهم، وما صلـح بهـا أمـر الديـن إلىٰ هـذا الحـين، بـل الفتـن تموّجـت وزادت، وصراصـر الفسـاد أهلكـت المـلّة وأبـادت، وتـرون قصـر الإسـلام قـد خـرّت شَـعفاته وعُفّـرت شَـرَفاته، فـأى فائـدة ترتّبـت مـن تقـلّد السـيف والسـنان، وأى مُنية

आ रहा है कि शत्रु हर ऊँचाई को फलांगते हुए चले आ रहे हैं और जब कभी दो सेनाओं में मुठभेड़ होती है तो वही विजयी होते हैं इस अवलोकन से यह बात प्रकट हो गई कि यह समय दुआ और ख़ुदा तआला के समक्ष विनम्रता से गिड़गिड़ाने का समय है न कि युद्धों और शत्रुओं को क़तल करने का समय और जो समय की गति को नहीं समझेगा वह स्वयं को तबाही में डालेगा और हर प्रकार की दरिद्रता और अपमान देखेगा। क्या तुम नहीं देखते कि मुसलमानों की जंगों के परचम नीचे कर दिए गए हैं।

कहाँ हैं भाला और तलवार और हाथों को चलाने वाले? तलवारें मियानों में रख दी गईं और भाले तोड़ दिए गए हैं और मुसलमानों के दिलों में रौब डाल दिया गया। अत: तू उन्हें हर मैदान में पीठ फेर कर भागते हुए देखता है। जंग ने उनके जीवन छीन लिए हैं और उनके सोने चाँदी तथा संपत्तियों को तबाह कर दिया है। इन जंगों के द्वारा धर्म का कोई मामला अब तक सुलझ न सका बल्कि फित्ने लहरों की भांति उठे और बढ़ते चले गए और फ़साद की तेज़ आँधी ने क़ौम को तबाह व बर्बाद कर दिया। तुम देख रहे हो कि इस्लामी किले के किन्गरे गिर गए और उसकी महानताएं मिट्टी में मिल गईं फिर तलवारें और भाले लटकाने का क्या लाभ हुआ और अब तक कौन सी इच्छा पूरी हुई सिवाए इसके कि ख़ून

حصلت إلٰى هـذا الاوان، مـن غـير أنّ الدّمـاء سُـفكت، و الاموال أُنفِـدَت، و الاوقـات ضُيّعت، و الحسرات أُضعفت. ما نفعكم الخميس، ووُطِئتم إذا حمى الوطيس.

فاعلموا أن الدعـاء حَرْبَةٌ أُعطيت مـن السـماء لِفتح هـذا الزمـان، ولـن تغلبوا إلّا بهـذه الحربـة يـا معشـر الخلّان، وقـد أخبر النبيّون مـن أوّلـهم إلى آخرهـم بهذه الحربة، وقالوا إنّ المسـيح الموعود ينـال الفتح بالدعاء والتضرع فى الحضـرة، لا بالملاحم وسفك دماء الامّة. و إنّ حقيقة الدعاء الإقبال على الله بجميع الهمّة، والصدق والصبر لدفع الضـرّاء، و إن أوليـاء الله إذا توجّهـوا إلٰى ربّهم لدفع موذٍ بالتضرّع والابتهال، جرت عادة الله أنه يسمع دعـاءهم ولـو بعـد حـين أو فى الحـال، وتوجّهت العنايـة الصمديـة ليدفـع مـا نـزل بـهم مـن البـلاء والوبـال، بعـد مـا أقبلـوا عـلى الله كل

बहाए गए और संपत्तियां तबाह की गईं, समय नष्ट हुए और हसरतें बढ़ गईं और सेना ने तुम्हें कोई लाभ न पहुँचाया बल्कि जब जंग हुई तो तुम रौन्द दिए गए।

अत: तुम जान लो कि दुआ वह भाला है जो इस युग कि विजय के लिए मुझे आसमान से प्रदान किया गया है। हे मित्रो! इस शस्त्र के बिना तुम कदापि विजयी नहीं हो सकते और समस्त अवतारों ने आरम्भ से अंत तक इसी हथियार की खबर दी है और उन सब ने यही कहा कि मसीह मौऊद दुआ और अल्लाह के समक्ष गिड़गिड़ाने के द्वारा विजय प्राप्त करेगा न कि लड़ाई झगड़े और क़ौम का खून बहा कर और दुआ की वास्तविकता यह है कि कष्ट को दूर करने के लिए पूरी हिम्मत सच्चाई और सब्र के साथ अल्लाह की ओर झुकना। वलीउल्लाह जब किसी हानिकारक चीज़ को दूर करने के लिए रोने और गिड़गिड़ाने के साथ अपने पालनहार की ओर ध्यान लगाते हैं तो अल्लाह की तक़दीर इसी प्रकार से जारी है कि कि वह उनकी दुआ को अवश्य सुनता है चाहे कुछ समय के बाद या उसी क्षण, और उनके पूर्णत: अल्लाह की ओर झुकने के बाद बेनियाज़ ख़ुदा की कृपा उन पर आने वाली परीक्षा और कष्ट को दूर करने के लिए ध्यान देती है। मुसीबतों के आने के समय निस्संदेह दुआ की क़ुबूलियत सबसे बड़ा

الاقبال، و إنّ أعظم الکرامات استجابة الدّعوات، عند حلول الآفات۔

فکذالك قُدِّرَ لآخر الزمان، أعني زمن المسیح الموعود المرسل من الرّحمان، إن صفّ المصاف یُطوٰی، و تُفتح القلوب بالکَلِمِ و تُشرَح الصّدُورُ بالهُدیٰ، أو یُنقل النّاس إلی المقابر من الطاعون أو قارعةٍ أخریٰ ، و کذالك اللّٰہ قضٰی، لیجعل الهزیمة علی الکفر و یُعلی فی الارض دینًا ھو فی السّماء علا ، و إن قدمی ھذہ علی مصارع المنکرین ، و سأُنصَرُ من ربّی و یُقْضی الامر و یتمّ قول ربّ العالمین۔ و ھذہ ھی حقیقة نزولی من السّماء ، فإنّی لا أغلب بالعساکر الارضیة بل بملائکة من حضرة الکبریاء۔ قیل ما معنی الدعاء بعد قدرٍ لا یُردّ، و قضاءٍ لا یُصَدّ؟ فاعلم أنّ

चमत्कार है।

फिर इसी प्रकार अंतिम युग अर्थात रहमान ख़ुदा के भेजे हुए मसीह मौऊद के युग के लिए यही मुक़द्दर किया गया है कि युद्धक्षेत्र को समाप्त कर दिया जाएगा और कलाम के द्वारा दिलों को खोल दिया जाएगा और हिदायत के द्वारा सीने खोल कर दिए जाएँगे। या प्लेग या किसी अन्य बड़ी संकट के द्वारा लोगों को क़ब्रों की ओर ले जाया जाएगा और अल्लाह ने इसी प्रकार निर्णय किया है कि वह अपमान को कुफ्र का मुक़द्दर बना दे। उस धर्म को जो आसमान पर सर्बुलंद है उसे ज़मीन पर भी कामयाबी प्रदान करे। निस्संदेह मेरा यह पैर इन्कार करने वालों की वधभूमियों पर है। मुझे मेरे पालनहार की ओर से अवश्य सहायता प्राप्त होगी और अल्लाह का आदेश लागू होगा और अल्लाह तआला की बात पूरी होगी और यही मेरे आसमान से अवतरित होने की वास्तविकता है मैं सांसारिक फ़ौजों द्वारा नहीं बल्कि बुज़ुर्ग व श्रेष्ठ ख़ुदा के फ़रिश्तों के द्वारा विजयी हूँगा। कहा जाता है रद्द न होने वाली तक़दीर और अटल भाग्य के बाद दुआ के क्या अर्थ ? अत: याद रहे कि यह भेद एक ऐसा मार्ग है जिसमें बुद्धियाँ भटक जाती हैं और जंगली सेनाएँ जिनके साथ सेनापति हों नष्ट हो जाती हैं। इस (भेद) को केवल तौबा

هـذا السـرّ مَـوْرٌ تضـلّ بـه العقول، و يغتـال فيه الغـول، ولا يبلغـه إلّا مـن يتـوب، ومـن التّوبـة يـذوب، فـلا تزيـدوا الخصـام أيّها اللّئـام، و تلقّفـوا منّي مـا أقول، فـإنّي عليـم و مـن الفحـول، و ليس لكم حـظّ من الإسـلام إلّا مِيْسـمه، أو لبوسـه ورسـمه، فمـن أرهـف أُذنه لسـمع هـذه الحقائـق، و حفد إلينا كاللّهيف الشـائق ،فسـأخفره بمـا يَسُـرُوْ رِيْبَتـه و يَمْلاءِ عيبتـه، وهـو أنّ الله جعـل بعض الاشـياء معلّقًـا ببعضهـا مـن القديـم، و كذالك علّق قـدرَه بدعوة المضطـر الاليم. فمن نهـض مُهَـرْوَلًا إلىٰ حضـرة العـزّة، بعـبرات متحـدّرة و دمـوع جاريـة مـن المقـلة ،وقلـب يضجـر كأنـه وُضـع علـى الجمرة، تحـرك له مـوج القبـول مـن الحضـرة، ونُجّيَ مـن كـرب بلّـغ أمـره إلى الهلـكة، بيـد أن هـذا المقام، لا يحصـل إلا لمن فـنٰي في الله و آثـر الحبيـب العـلّام، و تـرك كُلّمـا يُشـابه الاصنـام، ولـبّى نـداء

करने वाला ही पाता है, तौबा से वह पिघल जाता है इसलिए हे कमीनो! तुम झगड़े को मत बढ़ाओ और जो मैं कहता हूँ उसे याद कर लो क्योंकि मैं ज्ञानवान और नाब्गा-ए-रोज़गार हूँ और तुम्हारा इस्लाम से संबंध केवल पहचान हेतु, दिखावटी और रस्मी है इसलिए जो व्यक्ति मेरी इन सच्चाइयों को ध्यानपूर्वक सुनेगा और एक रुचि रखने वाले व्याकुल मनुष्य की भांति हमारी ओर तेज़ी से दौड़ता हुआ आएगा तो मैं उसको ऐसी सुरक्षा दूंगा जो उसके समस्त संदेहों को दूर कर देगी और उसकी ज़म्बील (दिल के घर) को भर देगी, और वह भेद यह है कि अल्लाह ने अनादिकाल से कुछ वस्तुओं को कुछ के साथ संबंधित किया हुआ है इसी प्रकार उसने भाग्य को भी एक दर्दमंद और व्याकुल मनुष्य की दुआ के साथ संबंधित किया हुआ है। फिर जो व्यक्ति सीधा होकर बहते आंसुओं और गीली आँखों और ऐसे दिल के साथ अल्लाह तआला की ओर भागता हुआ आता है जो इस प्रकार बेचैन हो कि मानो उसे अंगीठी पर रख दिया गया हो तो अल्लाह की ओर से भी उसके लिए दुआ के स्वीकार होने की मौज क्रिया करती है और वह व्यक्ति प्राण घातक व्याकुलता से मुक्त किया जाता है। परन्तु याद रहे कि यह स्थान केवल उसी को प्राप्त हो सकता है जो अल्लाह के अस्तित्व में लीन हो। अपने हबीब सर्वज्ञानी ख़ुदा के अस्तित्व को प्राथमिकता दे। मूर्तियों से मिलती-जुलती हर चीज़ को त्याग दे और क़ुरआन की आवाज़ पर ''मैं उपस्थित हूँ''

القـرآن، وحضـر حريـم السـلطان. وأطـاع المـولىٰ حـتّى فـنٰى ، ونهـى النفـس عـن الهـوٰى ، وتيقّـظ فى زمـن نعـس النّـاس، وعـاث الوسـواس ، ورضـى عـن ربّـه ومـا قضٰـى، وألقٰـى إليـه العُـرَى ، ومـا دَنَّس نفسـه بالذنـوب ، بعـد مـا أُدخِـلَ فى ديـار المحبـوب، بقلـبٍ نقـىّ، وعـزمٍ قـوىّ، وصـدقٍ جلىّ، أولئـك لا تُضـاع دعواتـهم، ولا تُـردّ كلماتـهم، ومـن آثـر المـوت لِرَبّـه يُـرَدّ إليـه الحيـاةُ، ومـن رضـى له ببخـسٍ ترجـع إليـه الـبركات، فـلا تتمنّـوه وأنتـم تقومـون خـارج البـاب، ولا يُعطـى هـذا العلـم إلّا لمـن دخـل حضـرة ربّ الارباب، ثـم يُؤخـذ هـذا اليقـين عـن التجاريـب والتجربـة شيء يفتـح عـلى النـاس بـاب الاعاجيـب، والذى لا يقتحـم تنوفـة السـلوك، ولا يجـوب موامـى الغربـة

कहे और अपने सुल्तान की चौखट पर उपस्थित हो जाए और अपने मौला का ऐसा आज्ञापालन करे कि बस उसी में खो जाए और हर प्रकार की नफसानी इच्छाओं से स्वयं को बचा के रखे और लोगों के ऊंघने के ज़माने में स्वयं को जगा के रखे और भ्रम पैदा करने वाले को दूर रखे और अपने रब्ब तथा उसके भाग्य से से राज़ी हो जाए और ख़ुदा के घर में प्रवेश कराए जाने के बाद वह अपने नंगेपन और गुनाह की उस समस्त गंदगियों को जो नफ्स की प्रेरणाओं से पैदा होती हैं, उन्हें पवित्र दिल, दृढ़ संकल्प और स्पष्ट सच्चाई के साथ उसके समक्ष प्रस्तुत कर दे। यही लोग हैं जिनकी दुआएं व्यर्थ नहीं जातीं और न ही उनकी बातें रद्द की जाती हैं और जिसने अपने ख़ुदा की खातिर मौत को प्राथमिकता दी तो उसको जीवन दिया जाएगा और जो उसकी खातिर घाटे पर राज़ी हुआ तो उसकी ओर बरकतें लोटाई जाएँगी। तुम द्वार से बाहर खड़े होकर उसकी इच्छा न करो यह ज्ञान उसी को दिया जाता है जो रब्बुल अरबाब (रबों का रब्ब) के समक्ष प्रस्तुत होता है और यह विश्वास अनुभवों से भी प्राप्त किया जाता है और अनुभव वह चीज़ है जिससे लोगों पर चमत्कारों के द्वार खोले जाते हैं और वह व्यक्ति जो व्यवहार के बयान में नहीं घुसता और बादशाहों के बादशाह ख़ुदा के दर्शन के लिए परदेस

لرؤية ملك الملوك، فكيف تُكشَف عليه أسرار الحضرة ، مع عدم العلم وعدم التجربة؟ وأمّا من سلك مسلك العارفين، فسوف يرى كل أطروفة من ربّ العالمين. و مِنْ أحسنِ ما يُلمِحُ السالكُ هو قبولُ الدعاء، فسبحان الذى يُجيبُ دعوات الاولياء، ويكلمّهم ككلام بعضكم بعضًا بل أصفٰى منه بالقوّة الروحانية، ويجذبهم إلىٰ نفسه بالكلمات اللذيذة البهيّة، فيرتحلون عن عرسهم وغرسهم إلىٰ ربهم الوحيد، راكبين على طِرْفٍ لا يشمس ولا يحيد. إنّهم قوم عاهدوا الله بِحَلفَةٍ أن لا يؤثروا إلّا ذاته، وأن لا يطلبوا إلّا آياته، وأن لا يتّبعوا إلّا آياته، فإذ أرى الله أنّهم وفق شرطه فى كتابه

के मरूस्थलों को पार नहीं करता फिर ऐसे व्यक्ति पर ज्ञान और अनुभव के अभाव के बावजूद ख़ुदा के भेद कैसे खुलें। परन्तु हाँ वह जो अध्यात्मज्ञानियों के मार्ग पर चला वह समस्त ब्रह्माण्ड के रब्ब के श्रेष्ठ अद्‌भुत कलाम से अवश्य हिस्सा पाएगा। सबसे सुन्दर दर्शन जो एक साधक करता है वह दुआ का क़ुबूल होना है। अत: पवित्र है वह जो वालियों की दुआएँ स्वीकार करता है और उनसे ऐसे वार्तालाप करता है जिस प्रकार तुम एक दूसरे से वार्तालाप करते हो बल्कि उसका वह कलाम रूहानी शक्ति के कारण तुम्हारे कलाम से बहुत बढ़ कर पवित्र और साफ़ होता है और वह उन्हें अपने रौशन मज़ेदार कलाम के द्वारा अपनी ओर खींचता है जिसके परिणाम स्वरूप वे (वलीउल्लाह) अपने समस्त परिवार और संपत्ति को त्यागते हुए अपने एक ख़ुदा की ओर प्रस्थान करते हैं। ऐसे उत्तम नस्ल के घोड़े पर सवार होकर जो न बेलगाम है न अद्वितीय। यह वह क़ौम है जिन्होंने क़सम खाकर अल्लाह से वादा किया हुआ है कि वे केवल उसी को प्राथमिकता देंगे और केवल उसी के निशानों के इच्छुक होंगे और उसी की आयतों का अनुसरण करेंगे। फिर जब अल्लाह देखता है कि वे उसकी पुस्तक में वर्णित शर्तों के अनुसार हैं तो वह उनके लिए अपने अध्यात्म ज्ञान के समस्त द्वार

الفرقان، كشف عليهم كل بابٍ من أبواب العرفان۔ثم اعلم أنّ أعظم ما يزيد المعرفة هو من العبد باب الدعاء، ومن الربّ باب الإيحاء، فإن العيون لا تنفتح إلا برؤية الله بإجابته عند الدعاء، وعند التضرّع والبكاء، ومن لم يُكشف عليه هذه الباب فليس هو إلّا مغترّا بالاباطيل، ولا يعلم ما وجه الرب الجليل۔ فلذالك يترك ربّه ويعطف إلىٰ مراتب الدنيا الدنيّة، ويشغف قلبه بالامتعة الفانية، ولا يتنبّه على انقراض العمر وعلى الحسرات عند ترك الامانى، والرحلة من البيت الفانى، ولا يذكر هادِمًا يجعل رَبعه دار الحرمان والحسرة، وأوهن مِن بيت العنكبوت وأبعد من أسباب الراحة۔ وإذا أراد الله لعبدٍ خيرا يهتف فى قلبه داعى الفلاح، فإذا

खोल देता है। फिर तू जान ले कि सबसे बड़ी बात जिससे मारिफ़त में और अधिक बढ़ोतरी होती है वह बन्दे की ओर से दुआ का द्वार है और अल्लाह तआला की ओर से वह्यी है क्योंकि बिना ख़ुदा को देखे आंखे नहीं खुलतीं जो दुआ और तड़प के समय ख़ुदा के उत्तर से होती है और जिस पर ख़ुदा तआला यह द्वार न खोले वह केवल झूठी बातों के द्वारा धोखा खाया हुआ है और प्रतापवान ख़ुदा के चहरे से अनभिज्ञ है इसलिए वह अपनी रब्ब को छोड़ देता है और इस कमीनी दुनिया के मर्तबों की ओर झुक जाता है और उसका दिल नश्वर वस्तुओं का दीवाना हो जाता है और वह जीवन के अंत और इच्छाओं को त्यागने के समय हसरतों और अस्थाई संसार से प्रस्थान करने से बेख़बर है, और मौत को याद नहीं करता जो उसके रहने के स्थान को हसरत और निराशा का घर और मकड़ी के जाल से अधिक कमज़ोर और आराम से सामानों से अधिक दूर कर देगा और जब अल्लाह अपने किसी बन्दे से भलाई का इरादा करता है तो सफ़लता की ओर बुलाने वाला (फ़रिश्ता) उसके दिल में आवाज़ देता है तो अचानक अँधेरी रात सुबह से भी अधिक प्रकाशमान हो जाती है और हर और हर नफ्स जो पवित्र किया जाता है वह रब्बे करीम के उपकार की

الليل أبرق من الصباح، و كل نفسٍ طُهّرَت هى صنيعة إحسان الربّ الكريم، وليس الإنسان إلّا كدودة من غير تربية الخلّاق الرّحيم۔ وأوّل ما يبدأ فى قلوب الصالحين، هو التبرّى من الدنيا و الانقطاع إلىٰ ربّ العالمين۔ و إن هذا هو مرادٌ أنقض ظهر السالكين، و أمطر عليهم مطر الحزن و البكاء و الأنين، فإن النفس الامّارة ثعبان تبسط شَرك الهوٰى، و يهلك الناس كلّهم إلّا من رحم ربُّه و بسط عليه جناحه باللُّطف و الهُدٰى۔ و إن الدعاء بذرٌ ينميه الله عند الزراعة بِالضراعة، وليس عند العبد بضاعة من دون هذه البضاعة، و إنه من أعظم دواعى تُرجّٰى منها النجاة و تُدفعُ الآفات۔ و من كان زيرًا للابدال، و أذنًا لاهل الحال، تُفتح عينه لرؤية هذا النور، و يُشاهد ما فيه من السرّ

कारीगरी होती है और ख़ल्लाक़ (महान स्रष्टा), रहीम ख़ुदा की परवरिश के बिना मनुष्य केवल एक कीड़े की भांति है। सदाचारियों के दिलों में सबसे पहले जिस बात का आरम्भ होता है वह संसार से विमुखता और समस्त ब्रह्माण्ड के पालनहार की ओर जाना है और यही वह महान उद्देश्य है जो साधकों की कमर तोड़ देता है और वह उन पर ग़म, आंसू बहाना और विलाप की वर्षा करता है क्योंकि नफ्स-ए-अम्मार: (तमो वृत्ति) एक अजगर है जोप भौतिक इच्छाओं के जाल को फैलाता और समस्त लोगों को नष्ट कर देता है सिवाए उनके जिन पर उनका रब्ब रहम करे और जिन पर अपने प्रेम और हिदायत के पर फैला दे। दुआ एक बीज है जिसे अल्लाह खेती के समय गिड़गिड़ाहट से बढ़ाता है और बन्दे के पास इस संपत्ति के सिवा और कोई संपत्ति नहीं है और यह सबसे बड़ा कारण है जिससे मुक्ति की आशा रखी जाती और आपदाओं को दूर किया जाता है और जो व्यक्ति अब्दाल (सदाचारियों) का साथी और साहिबे हाल की बातें सुनने वाला हो तो उसकी आँख उस नूर को देखने के लिए खोल दी जाती है और वह उसमें मौजूद गुप्त भेद को देख लेगा। अल्लाह के वलियों का साथी कभी असफ़ल नहीं होता यद्यपि वह जानवरों जैसा ही हो, या वह पूर्ण यौवन की मस्ती में हो

المستور۔ ولا يشقى جليس أولياء الجناب، ولو كان كالدواب۔ أو فى غلواء الشباب، بل يُبَدّلُ و يُجعَلُ كالشيخ المذاب۔ فطوبىٰ للّذين لا يبرحون أرض المقبولين، ويحفظون كلمهم كخلاصة النضّ ويجمعونها كالممسكين۔و الذين يُشجّعون قلوبهم لتحقير عباد الرّحمان، ويقولون كل ما يخطر فى قلوبهم من السبّ والشتم والهذيان، إنهم قوم أهلكوا أنفسهم وأزواجهم وذراريهم بهٰذه الجرأة، ويموتون ولا يتركون خلفهم إلا قلادة اللعنة۔ يُريدون أن يُطفئوا نور الله و كيف شمس الحق تجبّ؟ و كيف ضياء الله يُحتجب؟ يسعون لكتمان الحق وهل لنور الله كتمٌ؟ أكذب هٰذا بل علىٰ قلوبهم ختم؟ وإنّ الذين لا يقبلوننى ويقولون إنّا نحن

बल्कि वह बदल दिया जाता है और उसे उस अत्यंत बूढ़े की भांति कर दिया जाता है जिसकी जवानी ढल चुकी हो। अत: ख़ुश ख़बरी है उन लोगों के लिए जो ख़ुदा के प्रियजनों के स्थान पर धूनी रमाए बैठे रहते हैं और जो उनकी बातों को खरे दिरहम व दीनार की भांति सुरक्षित रखते हैं और उसे कंजूसों की भांति एकत्र करते हैं और जो अल्लाह के बन्दों के अपमान पर अपने दिलों दिलेर करते हैं और जो भी दिल में आए उसे गाली गलौज और अभद्रता के रूप में बक देत हैं। निस्संदेह यही वह क़ौम है जो ऐसा साहस दिखाने के कारण स्वयं को, अपनी पत्नियों को और अपने वंश को तबाह करते हैं। वे स्वयं मर जाते हैं परन्तु अपने पीछे लानत की बौछार छोड़ जाते हैं। वे चाहते हैं कि अल्लाह के नूर (प्रकाश) को बुझा दें परन्तु सत्य के सूर्य को कैसे रोका जा सकता है और अल्लाह के नूर पर किस प्रकार पर्दा डाला जा सकता है? वे सत्य को छुपाने के लिए प्रयत्न करते हैं क्या अल्लाह के नूर को भी छुपाया जा सकता है? क्या यह झूठ है बल्कि उनके दिलों पर मुहर है और जो लोग मुझे स्वीकार नहीं करते और अपने बारे में कहते हैं कि हम इस युग के उलमा हैं वे वास्तव में रहमान ख़ुदा के शत्रु हैं और महाकोपी ख़ुदा के प्रकोप के निकट जा रहे है। वे अपने मुँह से सौ बातें

علماء هذا الزمان، إن هم إلّا أعداء الرَّحمان، لا يقربون إلا سُخط الديّان. يتفوّهون بمائة كلمة ما أُسّس أحدٌ منها على التقوٰى، هذه سيرة قوم يقولون إنّا نحن العلماء ويُعادون الحق والهدٰى، ولا ينتهجون إلا سُبُل الردٰى. فما أدراهم أنهم لا يموتون، وإلى الله لا يُرجعون، وعن الاعمال لا يُسألون، وسيعلم الذين ظلموا أيّ منقلبٍ ينقلبون. فقوموا أيها العباد قبل يومٍ يسوقكم إلى المعاد، فادعوا ربّكم بصوت رقيق، وزفير وشهيق، وأبرزوا بالتوبة إلى الربّ الغفور، قبل أن تبرزوا إلى القبور، ولا تلقوا عصا التسيار فى أرض الاشرار، ولا تقعدوا إلّا مع الابرار، وكونوا مع الصادقين، وتوبوا مع التوّابين. ولا تيأسوا من رَوْحِ الله، ولا تمدّوا ظنونكم كالكافرين، ولا تُعرضوا إعراض المتكبّرين، ولا تُصرّوا

निकालते हैं परन्तु उनमें से एक बात भी संयम पर आधारित नहीं होता। यह है चरित्र उन लोगों का जो कहते हैं कि हम उलेमा हैं। हालांकि वे सत्य और हिदायत से शत्रुता कर रहे हैं और तबाही के मार्ग पर चल रहे हैं। किसने उन्हें बता दिया कि वे मरेंगे नहीं और अल्लाह की ओर लौट कर नहीं जाएँगे और उनसे उनके कर्मों के विषय में पूछ-ताछ नहीं की जाएगी? अत्याचारियों को बहुत शीघ्र यह ज्ञात हो जाएगा कि वे किस ओर लौटाए जाएँगे। अत: हे बंदो! खड़े हो जाओ उस दिन से पहले कि वह तुम्हें हांक कर परलोक की ओर ले जाए। इसलिए इसलिए तुम्हें चाहिए कि अपने रब्ब को दर्द भरी आवाज़ सोर सिसकियों और हिचकियों से पुकारो। क़ब्रों की ओर प्रस्थान करने से पूर्व अपने क्षमा करने वाले रब्ब के समक्ष तौबा करते हुए उपस्थित हो जाओ। दुष्टों के देश में यात्रा मत करो केवल सज्जन लोगों से उठक बैठक रखो और सच्चों की संगत अपनाओ और तौबा करने वालों के साथ तौबा करो। अल्लाह की रहमत से निराश न हो और काफिरों की भांति अपने वहमी विचारों को बढ़ावा न दो और अहंकारी लोगों की भांति विमुख न हो और नीच लोगों की भांति झूठ पर हठ न करो। क्या तुम नहीं देखते कि यदि मैं सत्य पर हुआ और तुमने मुझे स्वीकार न किया तो फिर इन्कार करने वालों का

علی الکذب کالارذلین۔ اَلَا ترون إن کنتُ علی الحق ولا تقبلوننی فکیف مآل المنکرین؟ وإنی أفوّض أمری إلی اللّٰہ۔ہو یعلم ما فی قلبی وما فی قلوبکم۔وإنّا أو إیّاکم لعلی ہُدًی أو فی ضلال مبین۔

وإنی أری أن العِدا لا ینکروننی إلّا علوّا وفسادًا ، وإنّہم رأوا آیات ربّی فما زادوا إلّا عنادًا، ألا یرون الحالۃ الموجودۃ، والبرکات المفقودۃ؟ أفلا یدعو الزمان بأیدیہ مصلحًا یُصلح حالہ ویدفع ما نالہ؟ أما ظہرت البیّنات وتجلّت الآیات، وحان أن یُؤتٰی ما فات؟ بل قلوبہم مظلمۃ وصدورہم ضیّقۃ، قوم فظاظ غلاظ ، خُلُقُہم نار یسعر فی الإلفاظ ، وکلِمُہُم تتطایر کالشواظ ، ما بقی فیہم أثر رقّۃ،

क्या परिणाम होगा? मैं अपना मामला अल्लाह के हवाले करता हूँ वह मेरे और तुम्हारे दिल का हाल भली भांति जानता है। बहरहाल हम या तुम में से कोई एक अवश्य या तो स्पष्ट हिदायत पर क़ायम है या खुली गुमराही में पड़ा हुआ है।

और मैं निस्संदेह देखता हूँ कि शत्रु केवल अहंकार और फसाद के कारण मेरा इन्कार कर रहे हैं। निस्संदेह इन्होंने मेरे रब्ब के निशान देखे फिर भी वे दुश्मनी में ही बढ़ते चले गए। क्या वे वर्तमान अवस्था और खोई हुई बरकतें नहीं देखते? क्या ज़माना अपने हाल से एक सुधारक को नहीं पुकार रहा जो उसकी हालत का सुधार करे और जो उस पर (संकट) आया है उसे दूर करे। क्या खुली निशानियां प्रकट नहीं हो चुकीं और स्पष्ट निशान प्रकाशित नहीं हुए और अब वह समय आ पहुंचा है कि जो कुछ खो गया था वह दिया जाए। वास्तविकता यह है कि उनके दिल अंधेरे में हैं और सीने तंग। यह क़ौम अत्यंत अशिष्ट और कठोर स्वभाव है। उनके व्यवहार ऐसी आग हैं जो शब्दों के रूप में भड़कती है और उनकी बातें शोलों की भांति उड़ती हैं उनके अंदर नर्मदिली का कोई निशान शेष नहीं रहा और विनम्रता के आंसुओं ने उनके कपोलों को छुआ तक नहीं वे मुझे काफिर घोषित करते हैं और मैं नहीं जानता कि किस आधार पर मुझे काफिर कह रहे हैं और

وما مسّ خدودهم غروب مسكنة ، يُكفّرونني وما أدرى علىٰ ما يُكفّرونني؟ وما قلتُ إلّا ما قيل فى القرآن، وما قرأت عليهم إلا آيات الرحمان، وما كان حديث يُفترى، بل واقعة جلّاها الله لاوانها، ويعرفها من يعرف رحمة الربّ مع شأنها۔ و كان الله قد وعد فى البراهين، الذى هو تأليف هذا المسكين، أن الناس يأتونني أفواجًا وعليّ يجمعون، وإليّ الهدايا يُرسلون، ولا أُترَكُ فردًا بل يسعى إليّ فوج من بعد فوج ويقبلون، وتُفتح عليّ خزائن من أيدى الناس ومما لا يعلمون، وأُعصَم من شر الاعداء وما يمكرون، وأُعطىٰ عمرًا أُكَمِّلُ فيه كلّ ما أراد الله ولو يستنكف العدا ويكرهون ، ويُوضَع لى قبولٌ فى الارض

मैंने तो केवल वही कहा है जो क़ुरआन में कहा गया है और मैंने तो उनके समक्ष केवल रहमान ख़ुदा कि आयतें पढ़ कर सुनाई हैं। यह बात गढ़ी हुई नहीं बल्कि सच्चाई है जिसे अल्लाह ने अपने समय पर प्रकट कर दिया और उसकी मारिफ़त उसी व्यक्ति को प्राप्त होगी जो अल्लाह की रहमत को उसके वास्तविक मुक़ाम के साथ समझता है। अल्लाह तआला ने बराहीन अहमदिया में, जो इस विनीत की लिखित है, यह वादा फरमाया है कि लोग फ़ौजों के रूप में मेरी ओर आएँगे और मेरे पास एकत्र होंगे और मुहे उपहार भेजेंगे और मैं अकेला नहीं छोड़ा जाऊंगा बल्कि लोग फ़ौजों के रूप में मेरी ओर दौड़ते हुए आएँगे और मुझे स्वीकार करेंगे और लोगों की ओर से तथा ऐसे माध्यमों से जिन्हें लोग नहीं जानते मेरे लिए ख़ज़ाने खोले जाएँगे और मैं शत्रुओं के उपद्रव तथा उनके गुप्त उपायों से बचाया जाऊंगा। और मुझे इतनी आयु दी जाएगी जिसमे मैं वह सब कुछ पूर्ण कर लूँगा जिसका अल्लाह ने इरादा किया है चाहे शत्रु इस पर नाक-भों चढ़ाएँ और इसे नापसंद करें और मुझे संसार में क़ुबूलियत प्रदान की जाएगी और हिदायत पाने वाले लोग मुझ पर मुग्ध होंगे जैसा कि तुम देख रहे हो, मेरे ख़ुदा ने जो कुछ कहा था वह सब पूर्ण हुआ, क्या यह जादू है या तुम

ويُفديني قوم يهتدون، فتمّ كلّ ما قال ربّي كما أنتم تنظرون۔ أفسحر هذا أم أنتم لا تبصرون؟ ولو كان هذا الامر من عند غير الله لما تمّ هذه الانباء ولهلَكْتُ كما يهلك المفترون۔

وترون أن جماعتي في كل عام يتزايدون، وما ترك الاعداء دقيقة في إطفاء نور الله فتمّ نور الله وهم يفزعون، فانسابوا إلى جحورهم وما تركوا الغلّ وهم يعلمون۔ أهذا من عند غير الله۔ ما لكم لا تستحيون ولا تتأمّلون؟ أتحاربون الله بأسلحةٍ منكسرة وأيدٍ مغلولة؟ ويلٌ لكم ولما تفعلون۔ أهٰذا فعل مفترى كذّاب؟ أو مثل ذالك أُيّد الكاذبون؟ أهذه الكلم من كذّاب ما لكم لا تتقون۔ اَلَا تُردّون إلى الله أو تُتركون فيما تشتهون؟ و كلّما أوقدوا نارًا أطفأها

नहीं देखते। यदि यह कारोबार अल्लाह के अतिरिक्त किसी की ओर से होता तो यह भविष्यवाणियाँ पूर्ण न होतीं और अवश्य मैं झूठों की भांति तबाह हो जाता।

और तुम देखते हो कि मेरी जमाअत प्रति वर्ष बढ़ रही है और शत्रुओं ने तो अल्लाह के नूर को बुझाने में कोई कसर नहीं छोड़ी फिर भी अल्लाह का नूर पूर्ण हुआ और वे घबरा रहे हैं। अत: वे अपने बिलों में पुन: घुस गए हैं और जानते बूझते हुए भी उन्होंने द्वेष नहीं त्यागा। क्या यह अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य की ओर से है? तुम्हें क्या हो गया है कि तुम लज्जा नहीं करते और तनिक भी विचार नहीं करते। क्या पराजित हथियारों से और बंधे हाथों से ख़ुदा से लड़ते हो? तुम पर तबाही है और तुम्हारे कर्मों पर। क्या यह एक झूठ गढ़ने वाले महा झूठे का काम हो सकता है? क्या कभी झूठे की यों सहायता हुई है। क्या यह एक महा झूठे का कलाम है तुम्हें क्या हो गया है कि तुम संयम धारण नहीं करते। क्या तुम अल्लाह की ओर लौटाए नहीं जाओगे? या तुम अपनी इच्छाओं में छोड़ दिए जाओगे। और जब भी उन्होंने आग जलाई तो अल्लाह ने उसे बुझा दिया फिर भी वे चिन्तन मनन नहीं करते। वे कहते हैं कि क्यों हमारे नबी (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के खलीफ़ाओं का नाम नबी नहीं रखा

الله ثم لا يتدبّرون۔ وقالوا لولا سُمّی خلفاء نبیّنا أنبیاء کما أنتم تزعمون، کذالك لئلّا یشتبه علی الناس حقیقة ختم النبوة۔ ولعلّهم یتأدّبون، ثم لمّا مرّ علی ذالك دهرٌ أراد الله أن یُظهر مشابهة السلسلتین فی نبوّة الخلفاء لئلّا یعترض المعترضون، ولیزیل الله وساوس قوم یریدون أن یّروا مشابهةً فی النبوة و کذالك یُصرّون، فأرسلنی وسمّانی نبیّا بمعنًی فصّلته من قبل۔ لا بمعنی یظن المفسدون، ودفع الاعتراضین ورعَی جنب هذا وذالك۔ إنّ فی هذه لهدًی لقومٍ یتفکّرون۔ وإنی نبی من معنی، وفرد من الامّة بمعنی، و کذالك ورد فی أمری أفلا یقرء ون؟ ألا یقرء ون فیما عندهم أنّه "منکم" وإنه "نبیّ"؟ أهاتان صفتان توجدان فی عیسٰی أو ذُکرتا له

गया? जैसा कि तुम अनुमान करते हो ऐसा इसलिए हुआ कि ताकि ख़त्मे नुबुव्वत की वास्तविकता लोगों पर संदिग्ध न हो और ताकि वे सम्मान करें। फिर जब उस पर एक युग बीत गया तो अल्लाह ने इरादा फ़रमाया कि वह ख़लीफाओं की नुबुव्वत के बारे में इन दो सिलसिलों कि समानता प्रकट करे ताकि ऐतराज़ करने वाले ऐतराज़ न कर सकें, और ताकि अल्लाह उन लोगों के भ्रमों को दूर करे जो नुबुव्वत में समानता देखना चाहते हैं और इस पर हठ करते हैं। अत: अल्लाह ने मुझे भेजा और मेरा नाम इन अर्थों में नबी रखा जिसे मैं पहले विस्तार पूर्वक वर्णन कर चूका हूँ, न कि उन अर्थों में जो उपद्रवी ख्याल करते हैं और दोनों ऐतराज़ों को दूर कर दिया और इस पहलू और उस पहलू (दोनों) का ध्यान रखा इस में विचार करने वालों के लिए हिदायत है। मैं एक दृष्टि से नबी और एक दृष्टि से उम्मती हूँ मेरे संबंध में इसी प्रकार आया है क्या वे पढ़ते नहीं? क्या वे उन (रिवायतों) में जो उनके पास हैं, यह नहीं पढ़ते कि वह तुम में से है और वह नबी है। क्या यह दो विशेषताएँ ईसा में पाई जाती हैं? क्या क़ुरआन में यह दोनों उसके संबंध में वर्णित हैं? यदि तुम सत्य कहते हो तो हमें दिखाओ परन्तु वास्तविकता यह है कि तुमने कुफ्र को ईमान पर प्राथमिकता दी। फिर मैं

فی القرآن؟ فأرونا إن كنتم تَصُدُقون۔ بل آثرتم الكفر على الإيمان، فكيف أهدى قومًا نبذوا الفرقان وراء ظهرهم ولا يُبالون؟ و كان الله قد قدّر كسر الصليب علٰی ید المسیح فقد ظهرت آثارها فالعجب أنّ المعترضین لا یتنبّھون۔ ألا یرون أنّ النصرانیة تذوب فی كلّ یوم و یتر۔ كما قوم بعد قومٍ؟ ألا یأتیهم الاخبار أو لا یسمعون؟ إنّ العلماء هم یُقوّضون بأیدیهم خیامهم، وتهدی إلی التوحید كرامهم، ویذوب مذهبهم كلّ یوم وتنكسر سهامهم، حتّی إنّا سمعنا أن قیصر جرمن ترك هذه العقیدة، وأری الفطرة السعیدة، و كذالك علماؤهم المحقّقون، یُخربون بیوتهم بأیدیهم و كما دخلوا یخرجون، فوَیْل لعیون لا تُبصر وآذان لا تَسمع۔ و

ऐसे लोगों को कैसे हिदायत दे सकता हूँ जिन्होंने क़ुरआन को पीछे डाल दिया और वे परवाह नहीं करते। अल्लाह ने मसीह के हाथों से सलीब को तोड़ने का कार्य मुक़द्दर कर रखा था और उसके लक्षण प्रकट हो गए। अत: आश्चर्य की बात यह है की ऐतराज़ करने वाले विचार नहीं करते। क्या वे नहीं देखते कि ईसाइयत प्रतिदिन पिघलती जा रही है और एक क़ौम के बाद दूसरी क़ौम उसे छोड़ रही है। क्या उन्हें सूचनाएँ नहीं मिलतीं या यह सुनते नहीं? इन (ईसाइयों) के उलमा स्वयं अपने हाथों से अपने तम्बू गिरा रहे हैं और उनके सम्माननीय एकेश्वरवाद की ओर हिदायत पा रहे हैं। उनका धर्म प्रतिदिन पिघलता जा रहा है और उनके तीर टूट रहे हैं। यहाँ तक कि हमने सुना है जर्मनी के बादशाह ने इस आस्था को त्याग दिया है और नेक फितरत का प्रकटीकरण कर दिया है। इसी प्रकार उनके अनुसंधानकर्ता विद्वान अपने घरों को स्वयं अपने हाथों से वीरान कर रहे हैं और जिस प्रकार उन्होंने प्रवेश किया था निकल रहे हैं। बुरा हो उन आँखों का जो देखती नहीं और उन कानों का जो सुनते नहीं और बुरा हो उनका जो अल्लाह की किताब पढ़ते तो हैं लेकिन समझते नहीं।

क्या ईसा आसमान से उतरेंगे जबकि क़ुरआन ने उन्हें रोका हुआ है जो तुम

وَ يْلٌ للذين يقرءون كتاب الله ثم لا يفهمون۔

أينزل عيسٰى من السّماء وقد حبسه القرآن؟ هيهات هيهات لما تزعمون، إنّ حبس القرآن أشدّ من حبس الحديد، فويلٌ للعُمى الذين لا يتدبّرون كتاب الله ولا يخشعون، وإنّ موته خير لهم ولدينهم لو كانوا يعلمون۔ قد جاء كم رسول الله صلى الله عليه و سلم بعد عيسٰى فى مائةٍ سابعةٍ، وجئتكم فى مائة هى ضِعفها إنّ فى ذالك لبشرٰى لقوم يتفقّهون، فاعلموا أن الله إذ بعث الحَكَمَ الكبير۔ أعنى نبيّنا صلى الله عليه و سلم فى مائةٍ سابعةٍ بعد عيسٰى، فأى استبعاد يأخذكم أن يُرسل فى ضعفها هذا الحَكَمَ ليصلح فسادًا عمّ الورَى، ففكروا يا أولى النُّهٰى۔ وتعلم أن فساد هذا العصر عمّ

अनुमान करते हो वह बुद्धि से दूर, बहुत ही दूर है। क़ुरआन की क़ैद लोहे की क़ैद से अधिक कठोर है। अत: तबाही हो उन अंधों पर जो अल्लाह की पुस्तक पर विचार नहीं करते और न ही विनम्रता अपनाते हैं। काश वे जानते कि (ईसा[अ.]) की मौत इन (मुसलमानों) के और इनके धर्म के लिए बेहतर है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ईसा अलैहिस्सलाम के बाद सातवीं शताब्दी में तुम्हारे पास पधारे और मैं तुम्हारे पास उस शताब्दी में आया हूँ जो उस (सात) का दुग्ना (अर्थात चौदवीं शताब्दी) है। निस्संदेह उसमे विचार करने वाली क़ौम के लिए बड़ी ख़ुशख़बरी है। अत: जान लो कि अल्लाह ने जब सबसे बड़ा निर्णायक (अर्थात हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को ईसा[अ.] के बाद सातवीं शताब्दी में अवतरित किया तो इसमें तुम्हारे लिए बुद्धि से परे क्या बात है कि वह इससे दुग्नी अवधि में (चौदवीं शताब्दी में) इस निर्णायक को उस फ़साद के सुधार के लिए भेज दे जो सृष्टि में फैल गया है। इसलिए हे बुद्धिमानो! विचार करो। तुम जानते हो कि इस युग का फसाद मुस्लिम और गैर मुस्लिम समस्त उम्मतों में फैला हुआ है जैसा कि तुम देख रहे हो और वह (फ़साद) उस फ़साद से बहुत बढ़ कर है जो उन ईसाइयों में प्रकट हुआ जो कि हमारे नबी

جمیع الامم مسلمًا وغیر مسلمٍ کما ترٰی، فھو أکبر من فسادٍ ظھر فی النصاری الذین ضلّوا قبل نبیّنا المجتبٰی، بل تجدھم الیوم أضلّ وأخبث ممّا مضٰی، فإن زماننا ھذا زمان طوفان کل بدعة وشرك وضلالة کما لا یخفٰی۔ وإنّی ما أرسلتُ بالسیف ومع ذالك أُمِرتُ لملحمةٍ عُظمٰی۔ و ما ادراك ما ملحمة عظمٰی، إنھا ملحمة سلاحھا قلم الحدید لا السیف ولا المُدٰی، فتقلّدنا ھذا السلاح وجئنا العدا، فلا تنکروا من جاء کم علٰی وقته من الله ذی الجبروت والعزة والعُلٰی۔ أَأفتریتُ علی الله؟ وقد خاب من افترٰی۔ أَتلوموننی بترك الجهاد بالکفّار وترك قتلهم بالسیف البتّار ؟ ما لکم لا ترون الوقت وتنطقون کمن ھَذَی؟ ثم أنتم عند الله أوّل

मुज्तबा (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) से पूर्व गुमराह हुए थे बल्कि तुम आज उनको पहले से बहुत बढ़ कर गुमराह और अपवित्र पाओगे। यह बात छुपी हुई नहीं कि हमारा यह युग प्रत्येक बिदअत, अनेकेश्वरवाद और गुमराही का तूफ़ानी युग है। मुझे तलवार देकर नहीं भेजा गया लेकिन फिर भी मुझे एक महायुद्ध का आदेश दिया गया है और तुम्हें क्या मालूम कि वह महायुद्ध क्या है? उस युद्ध का हथियार लोहे का क़लम है न कि तलवार एवं भाल। हम इसी हथियार से लैस होकर शत्रु का सामना करने आए हैं। इसलिए तुम उसका इन्कार मत करो जो शक्तिशाली और परम सम्माननीय अल्लाह की ओर से बिल्कुल समय पर तुम्हारे पास आया है। क्या मैंने अल्लाह पर झूठ गढ़ा है और झूठ गढ़ने वाला सदा असफल रहता है। क्या तुम कुफ्फर से जिहाद न करने और काफिरों को धारदार तलवार से क़तल न करने पर मुझे धिक्कारते हो। तुम्हें क्या हो गया है कि तुम समय की मांग को नहीं समझते और बहकी-बहकी बातें करने वाले की भांति बातें करते हो। इसके अतिरिक्त तुम अल्लाह के नज़्दीक प्रथम श्रेणी के काफ़िर हो, तुमने अल्लाह की किताब को छोड़ दिया और दूसरे मार्ग अपना लिए। अत: हे लड़ने मरने पर राज़ी होने वालो! यदि तुम्हारे विचार के अनुसार

كفـرة۔ تركتـم كتـاب الله و آثرتـم سـبلا أُخـرٰى، فـإن كان الجهـاد واجبًـا كمـا هـو زعمكـم يـا أيّهـا الرّاضـون بالضّـرٰى، فأنتـم أحـقّ أن تُقتلـوا بمـا عصيتـم نـبی الله وليـس عنـد كـم حجّـة مـن كتـاب الله الاجـلٰی۔ و أی شـیئٍ بقـی فيكـم مـن دينكـم يـا أهـل الهـوٰی؟ و أی شیء تركتمـوه مـن الدنيـا ومـن هٰـذه الجيفـة الكـبرٰی؟ إنّكـم تسـتَقْرُون حِيَـلًا لتقرّبكـم إلى الحـكام زُلفٰـی، ونسـيتم مليككـم الذی خلـق الارض و السّـماوات العُلٰی، فكيـف تقربـون رضـا الحضـرة الاحديّـة وقـد قدّمتـم علی المـلّة هذه الحيـاة الدنيـا؟ ومـا بقـی فيكـم إلّا رسـم المشـاعر الإسـلامية، و نسـيتم ما أمـر الله ونهٰـی، وهدّمتـم بأيديكـم بنيـان الإسـلام و المـلّة الحنيفيـة، بما خالفتـم طـرق المسـكنة و الانـزواء و الغربـة، وقصدتـم عُلُـوًّا عنـد الناس

जिहाद अनिवार्य है तो फिर स्वयं तुम क़तल किए जाने के अधिक योग्य हो इसलिए कि तुमने अल्लाह के नबी की अवज्ञा की और तुम्हारे पास अल्लाह की स्पष्ट पुस्तक से कोई दलील मौजूद नहीं। हे हवस के पूजारियो! तुम्हारे पास धर्म की कौन सी चीज़ शेष रह गई है और तुमने दुनिया और उसके बड़े मुर्दों में से क्या चीज़ छोड़ी है। अफसरों का सामीप्य पाने के लिए तुम प्रत्येक उपाय करते हो और अपने उस मालिक ख़ुदा को भूल गए हो जिसने ज़मीन और ऊंचे आसमान पैदा किए। तुम एक ख़ुदा की प्रसन्नता के निकट भी कैसे फटक सकते हो जबकि तुमने इस सांसारिक जीवन को धर्म पर प्राथमिकता दी हुई है और तुम्हारे अंदर इस्लामी निशानियों की ज़ाहिरी शक्ल के सिवा कुछ शेष नहीं रहा और तुमने अल्लाह के आदेशों और निषेधों को पूर्णत: भुला दिया है और स्वयं अपने हाथों से इस्लाम और सच्चे धर्म की इमारत को गिरा दिया है। क्योंकि तुमने विनम्रता, गुमनामी और विनम्रता के मार्गों को छोड़ दिया और तुमने लोगों में सम्मान प्राप्त करने का इरादा किया और तुमने इस दुनिया का ज़हर खाया और लालच एवं हवस, दिखावा तथा अहंकार की ओर प्रेरित हुए और बादशाहों का सामीप्य और उनसे दर्जे और मर्तबे प्राप्त करने में तुम ख़ुशी

وأكلتم سمّ هذه الدنيا، وتمايلتم على الأهواء والرياء والنخوة ،وسَرّكم قُرب الملوك وطلب الدرجات منهم والمرتبة، وما تركتم عادة من عادات اليهود وقد رأيتم مآلهم ياأولى الفطنة، أتحاربون الكفار مع هذه العِفّة؟ فلا تفرحوا إنّ الله يرىٰ.ولو كانت إرادة الله أن تحاربوا الكفّار لأعطاكم أزيَدَ ممّا أعطاهم ولغلبتم كل من بارزكم وبارا، وترون أن فنون الحرب كلّها أُعطيتها الكفرة من الحكمة الإلٰهية، ففاقوكم فى مصافّ البحر والبرّ ، ولستم فى أعينهم إلا كالذرّة فليس لكم أن تسدّوا ما كشف الله أو تفتحوا ما أغلق، فادخلوا رحمة الله من أبوابها ولا تكونوا كمن أغضب ربّه وأحنق ، ولا تكونوا كمن حارب

पाते हो और तुमने यहूदियों की आदतों में से कोई आदत शेष न छोड़ी और तुमने उनका परिणाम देख लिया है। हे बुद्धिमानो! क्या तुम ऐसी पवित्रता के साथ काफिरों से लड़ोगे? तुम प्रसन्न न हो निस्संदेह अल्लाह तआला देखता है। यदि अल्लाह का यह उद्देश्य होता कि तुम काफिरों से युद्ध करो तो अवश्य वह तुम्हें उनसे कहीं बढ़कर देता और तुम प्रत्येक व्यक्ति पर विजय प्राप्त कर लेते जो तुम्हारे समक्ष आता और तुम्हारा मुक़ाबला करता। तुम देखते हो कि अल्लाह की हिकमत से समस्त युद्ध कलाएँ काफिरों को दे दिए गए हैं और वे इस कारण जल और थल के युद्धक्षेत्र में तुम पर प्रधानता रखते हैं और उनकी दृष्टि में तुम केवल कण की भांति हो। अत: यह तुम्हारे अधिकार में नहीं कि तुम उस चीज़ को जिसे अल्लाह ने खोल दिया है बंद कर सको और जिसे उसने बंद क्र दिया हिया उसे खोल सको। अत: तुम अल्लाह की रहमत में उसके द्वारों से प्रवेश कर जाओ। और तुम उस व्यक्ति की भांति मत बनो जिसने अपने रब्ब को रुष्ट किया और क्रोध दिलाया और न उस व्यक्ति की भांति बनो जिसने अल्लाह से युद्ध किया और उसकी अवज्ञा की और तुम ऐसे मसीह की प्रतीक्षा न करो जो आसमान से उतरेगा और सृष्टि का खून बहाएगा और तुम्हें विभिन्न विजयों में

اللّٰہ و عصی، و لا تنتظروا مسیحًا ینزل من السماء و یسفک دماء الورٰی، و یُعطیکم غنائم من فتوحات شَتّٰی۔ أ تضاھئون الذین ظنّوا کمثل ذالک قبلکم؟ و مِنْ خُلُق المؤمن أن یعتبر بغیرہ و ینتفع ممّا رأی، و لا یقتحم تنوفةً ھلک فیھا نفس أُخرٰی۔ ألم یکفِکم أن اللّٰہ بعث فیکم و منکم مسیحکم فی الأیام المنتظرة؟ و کنتم علٰی شفا حفرة فأراد أن یُنجیکم من الحفرة، و أدرککم بمنّة عُظمٰی۔ ألا تنظرون کیف نزلت الآیات و جُمعت العلامات؟ أتزدری أعینکم آیات اللّٰہ أو تعرضون من الحق إذا أتٰی؟ أعجبتم أن جاء کم منذر منکم و کفرتم و ما شکرتم لربّکم الأعلٰی؟ و ما آمنتم بحجج اللّٰہ و کذالک سلکھا اللّٰہ فی قلوب قوم آثروا الشقا۔

शत्रुओं से छीना हुआ माल प्रदान करेगा। क्या तुम उन लोगों से समानता करते हो जो तुमसे पहले इसी प्रकार के विचारों में ग्रस्त हुए। मोमिन का स्वभाव तो यह है कि वह दूसरों से सीख ले और जो देखे उससे लाभ उठाए और उस जंगल में न घुसे जिसमें कोई दूसरा मर चुका हो, क्या तुम्हारे लिए यह पर्याप्त नहीं कि अल्लाह ने इस युग में जिसकी प्रतीक्षा की जा रही थी तुम्हीं में से तुम्हारा मसीह भेजा और तुम गड्ढे के किनारे खड़े थे तो अल्लाह ने तुम्हें उस गड्ढे से मुक्ति देनी चाही और अपने महान उपकार से तुम्हें पकड़ लिया। क्या तुम इस बात पर विचार नहीं करते कि किस प्रकार निशानियाँ उतरीं और प्रमाण एकत्र कर दिए गए। क्या तुम्हारी आंखे अल्लाह के निशानों को तुच्छ समझती हैं या तुम सत्य के आ जाने पर उससे विमुख बरत रहे हो। क्या तुम इस बात पर आश्चर्य करते हो कि तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक होशियार करने वाला आ गया और तुमने उसका इन्कार कर दिया और अपने महान एवं श्रेष्ठ ख़ुदा का धन्यवाद न किया और तुम अल्लाह की दलीलों पर ईमान न लाए और इसी प्रकार अल्लाह ने उन लोगों के दिलों में यही आचरण जारी कर दिया जिन्होंने अभागेपन को अपनाया। तुम्हारी राय आने वाले इमाम के बारे में भटक गई और तुमने विचार किया कि वह यहूदियों में से होगा और यह विश्वास

و كنتم ضلّ رأيكم فى إمامٍ أتىٰ، وخِلْتُم أنّه من اليهود وما ظننتم أنّه منكم فما أرداكم إلا هذا العمٰى، و كذالك هَلَكَت أحزابٌ من قبلكم وجاء تكم الاخبار فنسيتموها وسلكتم مسلكهم ليتمّ قول ربّنا فيكم كمن مضٰى، وما منع الناس أن يؤمنوا إذ جاء هم الهدٰى محدَثًا إلّا أنْ قالوا إنّا لا نجد فيه كُلّما بلغنا من الاوّلين، فلن نؤمن إلا بمن يأتى وفق ما أوتينا ولا نتّبع المبتدعين، هذه هى عادة السابقين واللّاحقين أتواصوا به؟ بل هم قوم لا يؤمنون بالمرسلين۔

و إذا قيل لهم آمنوا بمن بعث الله و بما أعطاه من العلم قالوا أنؤمن بما خالف علماؤنا من قبل؟ ولو

न किया कि वह तुम्हीं में से होगा इसी अंधेपन ने तुम्हें तबाह किया और इसी प्रकार तुमसे पहले गिरोह तबाह हुए। उनकी ख़बरें युम्हारे पास आईं लेकिन तुमने उन्हें भुला दिया और तुम उन्हीं के मार्ग पर चलने लगे ताकि तुम्हारे बारे में हमारे रब्ब की बात उन लोगों की भांति जो गुज़र गए, पूरी हो। जब भी हिदायत उनके पास एक नए रूप में आती तो लोगों के लिए उस पर ईमान लाने में कोई बात रोक न बनी सिवाए इसके कि उन्होंने यह कहा कि जो बातें हमारे पूर्वजों की ओर से हम तक पहुंची हैं वे सारी की सारी बातें हम इस व्यक्ति में नहीं पाते इसलिए हम केवल उसी व्यक्ति पर ईमान लाएंगे जो उन ख़बरों के अनुसार आएगा जो हमें दी गई और हम नई बातें करने वालों का अनुकरण नहीं करेंगे। अगलों पिछलों की यही आदत रही है। क्या उन लोगों ने एक दूसरे को ऐसी पद्धति अपनाने की वसिय्यत कर रखी? नहीं बल्कि वे ऐसे लोग हैं जो अवतारों पर ईमान नहीं लाते।

और जब उनसे कहा जाता है कि उस व्यक्ति पर जिसे अल्लाह ने अवतरित किया है ईमान लाओ और उसके ज्ञान पर भी ईमान लाओ जो उस ख़ुदा ने उसे प्रदान किया है तो वे कहते हैं क्या हम उस पर ईमान लाएँ जो इससे पहले हमारे उलमा का विरोध करता रहा है चाहे उनके उलमा दोषी ही

كان علماؤهم من الخاطئين؟ إنّهم قوم اطمئنوا بالحياة الدنيا وما كانوا خائفين۔ وقالوا لستَ مرسلًا ؕ وسيعلم الذين ظلموا يوم يُردّون إلى اللّٰه كيف كان عاقبة الظالمين۔ وقالوا إنّ هذا إلّا اختلاق، كَلّا بل ران علىٰ قلوبهم ما كسبوا فزادوا فى شقاق، وما كانوا مستبصرين ۔ وإنّ علاجهم أن يقوموا فى آناء الليالى لصلواتهم، و يخلّوا لهم فناء حجراتهم، ويُغلّقوا الابواب ويُرسلوا عبراتهم، ويضجروا لنجاتهم ويصلّوا صلاة الخاشعين، ويسجدوا سجدة المتضرّعين، لعلّ اللّٰه يرحمهم وهو أرحم الراحمين۔

وأنّٰى لهم ذالك وإنّهم يؤثرون الضحك والاستهزاء على الخشية والبكاء ، وكذّبوا كِذّابًا، ويُنادون من بعيدٍ فلا

हों। वास्तव में ये ऐसे लोग हैं जो सांसारिक जीवन पर संतुष्ट हो चुके हैं और उन्हें (परलोक) का भय नहीं । वे कहते हैं कि तू ख़ुदा का भेजा हुआ नहीं परन्तु जिस दिन ये अत्याचारी अल्लाह की ओर लौटाए जाएँगे तब उन्हें ज्ञात होगा कि अत्याचारियों का कैसा परिणाम होता है। वे यह भी कहते हैं कि यह मामला मनगढ़त है। कदापि ऐसी बात नहीं जबकि उनके (बुरे) कर्मों ने उनके दिलों पर ज़ंग लगा दिया है अत: वे विरोध में बढ़ गए हैं और वे ध्यानपूर्वक देखने वाले नहीं। वास्तव में उनका उपचार यह है कि वे रात के समय नमाज़ों के लिए उठें, और अपने कमरों में एकांतवासी हो जाएं, और द्वार बंद कर लें और आंसू बहाएँ और अपनी मुक्ति के लिए व्याकुल हों और विनम्र लोगों की भांति नमाज़ पढ़ें और गिड़गिड़ाने वालों की भांति सज्द: करें, शायद अल्लाह उन पर दया करे और वही सबसे बढ़कर दया करने वाला है।

यह अवस्था उन्हें कहाँ मिल सकती है जबकि वे भय और गिड़गिड़ाने की बजाए हंसी और ठट्ठे को अपनाते हैं और घोर विरोध करते हैं। उनको दूर से पुकारा जाता है जिसके कारण पुकार का एक अक्षर भी उनके कानों से नहीं

يقرع أذنهم حرف من النداء، لا يرون إلى مصائب صُبّت على الملّة، وإلى جروحٍ نالت الدين من الكفرة، وإن مَثَل الإسلام فی هذه الایام كمثل رجلٍ كان أجمل الرجال وأقواهم، وأحسن النّاس وأبهاهم، فرمى تقلّب الزمان جفنه بالعمش، وخدّه بالنّمش، وأزالت شنب أسنانه قلوحة عِلّتها، وعِلّةٌ قبّحتها، فأراد الله أن يمنّ على هذا الزّمان، بردّ جمال الإسلام إليه والحُسن واللّمعان. وكان النّاس ما بقى فيهم روح المخلصين، ولا صدق الصالحين، ولا محبّة المنقطعين، وأفرطوا وفرّطوا وصاروا كالدهريّين، وما كان إسلامهم إلا رسومٌ أخذوها عن الآباء، من غير بصيرة ومعرفة وسكينة تنزل من السماء.

فبعثنى ربّى ليجعلنى دليلًا على وجوده، وليُصيّرنى أزهر الزهر

टकराता और वे उन मुसीबतों को नही देखते जो क़ौम पर आई हैं और न उन घावों को जो जो धर्म को काफिरों के हाथों पहुंचे हैं। इन दिनों में इस्लाम की हालत उस व्यक्ति की भांति है जो सब मर्दों से अधिक सुन्दर, शक्तिशाली, हसीन और अच्छी सूरत वाला था फिर युग के परिवर्तन ने बहुत अधक रोने के कारण उसकी आँखों को कमज़ोर कर दिया और उसके गालों पर झाइयाँ डाल दीं और दांतों पे जमा हुआ पीलापन तथा दांतों को बदनुमा बना देने वाली बीमारी ने उसके दांतों की सफेदी को समाप्त कर दिया। अत: अल्लाह ने इरादा किया कि वह इस युग पर इस प्रकार अपनी कृपा करे कि इस्लाम का सौन्दर्य और उसकी चमक दमक उसके पास पुन: लौट आए और लोगों में मुख्लिसों की रूह शेष न रही थी न नेक लोगों की सच्चाई और न ही पूर्णत: अल्लाह के हो जाने वालों जैसी मुहब्बत। उन्होंने न्यूनाधिकता से काम लिया और नास्तिकों की भांति हो गए और उनका इस्लाम केवल कुछ रस्में हैं जिनको उन्होंने विवेक, मारिफ़त और आसमान से उतरने वाली संतुष्टि के बिना अपने पूर्वजों से लिया है।

अत: मेरे रब्ब ने मुझे अवतरित किया ताकि वह अपने अस्तित्व पर मुझे दलील ठहराए और मुझे अपनी करुणा और दानशीलता के बाग़ का एक खिला

من رياض لطفه وجوده، فجئتُ وقد ظهر بى سبيله، و اتّضح دليله، وعلمتُ مجاهله، و وردت مناهله۔ إنّ السماوات والارض كانتا رتقًا ففُتقتا بقدومى، وعُلّم الطلباء بعلومى، فأنا الباب للدخول فى الهُدٰى، وأنا النور الذى يُرِى ولا يُرٰى، وإنّى من أكبر نعماء الرّحمان، وأعظم آلاء الديّان ۔ رُزقتُ من ظواهر الملّة وخوافيها ، وأُعطيتُ علم الصحف المطَهّرة وما فيها، وليس أحدٌ أشقى من الذى يجهل مقامى، ويُعرض عن دعوتى وطعامى۔ وما جئتُ من نفسى بل أرسلنى ربّى لِاُمَوّن الإسلام ، و أُراعى شؤونه والاحكام، وأُنزِلتُ وقد تقوّضت الآراء ، وتشتّت الاهواء ، واُختير الظلام وتُرِك الضياءُ ، وترى الشيوخ

हुआ सुंदर फूल बनाए। अत: मैं आया और मेरे द्वारा उसका मार्ग प्रकट हो गया और उसका मार्गदर्शन स्पष्ट हो गया और मुझे उसके गुमनाम गोशे ज्ञात हो गए और मैंने उसके घाटों में प्रवेश किया। निस्संदेह आसमान और ज़मीन बंद थे परन्तु मेरे आने से वे खोल दिए गए और विद्यार्थियों को मेरे ज्ञानों द्वारा सिखाया गया। अत: मैं हिदायत में प्रवेश करने का द्वार हूँ और मैं वह प्रकाश हूँ जो मार्ग दिखाता है और स्वयं दिखाई नहीं देता। मैं रहमान की सबसे बड़ी नेमतों में से एक हूँ और प्रदान करने वाले ख़ुदा की महानतम नेमतों में से एक हूँ। मुझे धर्म के बाह्य एवं आन्तरिक ज्ञान दिए गए हैं और मुझे सुहुफे मुतह्हर (पवित्र धर्मग्रन्थ) और जो कुछ उनमें है, का ज्ञान दिया गया है। उस व्यक्ति से अधिक अभागा अन्य कोई नहीं जो मेरे मुक़ाम (पद) से अनभिज्ञ है और मेरे निमंत्रण तथा मेरे भोजन से मुँह मोड़ता है। मैं स्वयं नहीं आया बल्कि मेरे रब्ब ने मुझे भेजा ताकि मैं इस्लाम की सुरक्षा करूँ और उसके मामलों और आदेशों का निरीक्षण करूँ। मुझे उस समय अवतरित किया गया जब सोचें समाप्त हो चुकी थीं और इच्छाएँ बिखर चुकी थीं और अँधेरे को अपना लिया गया था और प्रकाश को त्याग दिया गया था। और तू गद्दीनशीनों तथा उलमा को नंगे शरीर

والعلماء كرجل عارى الجلدة، بادى الجردة، وليس عندهم إلا قشرٌ من القرآن، وفتيلٌ من الفرقان۔ غاض دَرّهم، وضاع دُرّهم، ومع ذالك أعجبنى شدّة استكبارهم مع جهلهم ونتن عُوارهم، يؤذون الصادق بسبٍّ وتكذيب وبهتان عظيم، ويحسبون أنّ أجره جنّة النعيم، مع انّه جاء هم لينجّيهم من الخنّاس، ويخلّص الناس من النعاس ۔ يتُوقون إلٰى مناصب، ويتركون العليم المُحاسب، يُعرضون عن الذى جاء من الله الرحيم، وقد جاء كالإساةِ إلى السقيم، يلعنونه بالقلب القاسى، ذالك أجرهم للمواسى۔ يُحبّون أن يُكرموا عند الملوك بالمدارج العلية، وقد أُمِروا أن يرفضوا علائق الدنيا الدنيّة، وينفضوا عوائق

वाले व्यक्ति की भांति देखता है। उनके पास क़ुरआन के छिलके और फ़ुरक़ान के एक सूक्ष्म रेशे (तंतु) के अतिरिक्त कुछ नहीं। उनका दध सूख चुका है और उनका बहुमूल्य मोती व्यर्थ हो गया है इसके बावजूद उनकी मूर्खता और दोषों की दुर्गन्ध के साथ अहंकार की अधिकता मुझे आश्चर्यचकित करती है। वे सच्चे को गाली देकर और झुठलाकर तथा बड़े आरोप लगाकर कष्ट देते हैं और विचार करते हैं कि इस (कष्ट) का बदला शाश्वत जन्नत है हालांकि वह (सच्चा) उनकी ओर इसलिए आया था कि वह उन्हें खन्नास से बचाए और लोगों को ऊंघ से छुटकारा दे। वे पदों के लोभी हैं और सर्वज्ञाता तथा हिसाब लेने वाले (ख़ुदा) को छोड़ रहे हैं। रहीम ख़ुदा की ओर से आने वाले से मुँह फेर रहे हैं हालांकि वह उनके पास रहीम ख़ुदा की ओर से आया है और वह इस प्रकार आया है जैसे हमदर्दी करने वाले बीमार के पास आते हैं। वे उस (सच्चे) पर अत्यंत निर्दयता से लानत भेजते हैं। यह वह बदला है जो वे उस हमदर्दी करने वाले को दे रहे हैं। वे चाहते हैं कि बादशाहों के यहाँ बड़े बड़े पदों के द्वारा सम्मानित किए जाएँ, हालांकि उनको यह आदेश दिया गया था कि वे इस कमीनी दुनिया के संबंधों को रद्द कर दें और प्रकाशित धर्म के मार्ग में आने वाली रोकों को दूर कर दें।

الملّة البهيّة ـ يجفلون نحو الاماني إجفال النعامة، وألقوا فيها عصا الإقامة۔قد أُمِروا أن يمرّوا على الدنيا كعابر سبيل، ويجعلوا أنفسهم كغريب ذليل، فاليوم تراهم يبتغون العزّة عند الحكّام، وما العزّة إلّا من الله العلّام، وبينما نحن نُذكّر الناس أيام الرحمان، ونجذبهم إلى الله من الشيطان، إذ رأيناهم يصولون علينا كصول السرحان، ويُخوّفوننا بفحيحهم كالثعبان، وما حضروا قطّ نادينا بصحّة النيّة وصدق الطويّة ـثم مع ذالك يعترضون كاعتراض العليم الخبير، فلا نعلم ما بالهم وأى شيء أصبرهم على السعير؟ لا يشبعون من الدنيا وفي قلبهم لها أسيس، مع أنّ حظّهم من الدين خسيس۔ يقرءون غير المغضوب عليهم ثم يسلكون

वे इच्छाओं की ओर शुतुरमुर्ग जैसी तीव्रता से दौड़ते हैं और उन (इच्छाओं) को उन्होंने अपना घर बन लिया है। उन्हें आदेश तो यह दिया गया था कि वे दुनिया से मुसाफिर की भांति गुज़रें और स्वयं को एक परदेसी विनीत की भांति रखें, परन्तु तू आज उन्हें देखता है कि वे राजनेताओं के दरबार में सम्मान के इच्छुक हैं हालांकि वास्तविक सम्मान तो सर्वज्ञाता ख़ुदा की ओर से मिलता है और जब हम लोगों को रहमान के दिन (अल्लाह की नेमतों और प्रकोप के दिन) याद दिलाते हैं और उन्हें शैतान से अल्लाह की ओर खींचते हैं तो सहसा हम देखते हैं कि वे भेड़िए की भांति हम पर हमला कर देते हैं और सांप की भांति हमें अपनी फुंकार से भयभीत करते हैं। वे कभी भी हमारी सभा में सही निय्यत और सच्चे इरादे से नहीं आए। फिर भी वे सूचित विद्वान के ऐतराज़ करने की भांति ऐतराज़ करते हैं। हम नहीं जानते कि उनका क्या हाल है? और किस चीज़ ने उनको भड़कने वाली आग सहन करने की शक्ति दी। वे दुनिया से संतुष्ट नहीं होते और उनके दिल में उसकी मुहब्बत बसी हुई है और उसके साथ ही उनका धर्म से बहुत कम भाग है। वह غير المغضوب عليهم (अल्फातिहा-7) पढ़ते हैं परन्तु रहमान (ख़ुदा) की नाराज़गी के मार्ग पर चलते हैं मानो उन्होंने यह क़सम खा

مسلك سخط الرَّحمان، كأنّهم آلوا أن لا يطيعوا من جاء هم من الديّان۔ ولم أزل أتأوّه لكفرهم بالحق الذى أتٰى، ثم يُكفّرونى من العمٰى، فيا للعجب! ما هذا النّهٰى؟ والله هو القاضى وهو يرٰى امتعاضى وحرّار تماضى۔ يدعون ربهم لاستيصالى، وما يعلمون ما فى قلبى وبالى، وما دعاؤهم إلا كخبط عشواء، فيُرَدُّ عليهم ما يبغون علىّ من دائرة و من بلاء۔ أيُستجابُ دعاؤهم فى أمر شجرة طيّبة غُرست بأيدى الرّحمٰن ليأوى إليها كلّ طائر يريد ظلها وثمرتها كالجوعان، ويريد الامن من كل صقر مثيل الشيطان؟ أيؤمنون بالقرآن؟ كلّا إنّهم قوم رضوا بخضرة الدنيا ونضرتها واللمعان، وصعدوا إليها وغفلوا ممّا يصيبهم من هذا الثعبان۔

रखी है कि वे बदला देने वाले (ख़ुदा) की ओर से आने वाले का आज्ञापालन नहीं करेंगे और मैं उनके पास आने वाली सच्चाई के इन्कार पर आँहें भरता हूँ और वे अंधेपन के कारण मुझे काफिर घोषित करते हैं। आश्चर्य कि यह कैसी बुद्धि है? अल्लाह ही निर्णय करने वाला है और मेरे दु:ख तथा गम की जलन कू भली भांति जानता है। वे अपने रब्ब से मेरी तबाही की दुआ मांगते हैं और जो मेरे दिल में है उसे उसे वे नहीं जानते और उनकी दुआ अंधी ऊँटनी के पैर मारने के जैसा है। अत: वे जो मेरे लिए आपत्ति और मुसीबत चाहते हैं उन्हें वह लौटा दी जाएगी। क्या उनकी दुआ एक ऐसे पवित्र वृक्ष के संबंध में स्वीकार हो सकती है जो रहमान के हाथ से लगाया गया है ताकि हर पक्षी जो उसकी छाया चाहता है उस पर शरण ले और एक भूखे की भांति उसका फल चाहता है और शैतानी स्वभाव वाले शिकरे से सुरक्षा चाहता है। क्या वे क़ुरआन पर ईमान रखते हैं? कदापि नहीं। ये तो वे लोग हैं जो दुनिया की हरियाली और चमक दमक पर राज़ी हो चुके हैं और उसकी ओर तीव्रता से बढ़ रहे हैं और इस अजगर से जो मुसीबत उन पर आएगी उससे वे असावधान हैं। वे सांसारिक इच्छाओं की प्राप्ति के अवसर पर खुशियाँ मनाते हैं

يجـرّون ذيـل الطـرب عنـد حصـول الامـانى الدنيويـة، ويذكرونهـا بالخيـلاء والكلـم الفخريـة، ولا يتألّمـون عـلى ذهـاب العمـر و فـوت المـدارج الاخرويـة، وإن الدنيـا ملعونـة وملعـون مـا فيهـا، وحُلُـوّ ظواهرهـا وسـمّ خوافيهـا.

فياحسـرة عليهم! إنهم يبيعون الرُّطب بالحطب، وينسـون فى البيوت مـا يقـرءون واعظـين فى الْخُطـب، ويقولـون مـا لا يفعلـون، ويؤتـون النّـاس مـا لا يمسّـون، ويهـدون إلى سُـبل لا يسـلكونها، وإلى مهجّـةٍ لا يعرفونهـا ،ويعظـون لإيثـار الحـق ولا يؤثـرون، يسـقطون عـلى الدنيـا كالـكلاب عـلى الجيفـة، ويحبّـون أن يُحمـدوا بمالـم يفعلـوا مـن الاهـواء الخسيسـة، ويريـدون أن يُقـال أنّـهم مـن الابـدال وأهـل التقـوٰى والعفّـة، ولـن

और उसका वर्णन अहंकार तथा गर्व के शब्दों में करते हैं। परन्तु जीवन के चले जाने और परलोकीय पदों से वंचित होने पर वे कोई दर्द अनुभव नहीं करते। निस्संदेह दुनिया लानती है और जो उसमें है वह भी लानती है। उसका बाह्य रूप मधुर और आन्तरिक भाग विष है।

अत: अफ़सोस उन लोगों पर कि ताज़ा खजूरों के बदले ईंधन की लकड़ी खरीदते हैं वे उन बातों को घरों में भूल जाते हैं जो वे प्रवचनकर्ता बन कर अपने भाषणों में पढ़ते हैं और वह कुछ कहते हैं जो वे करते नहीं और जो लोगों को (शिक्षा) देते हैं उसे स्वयं छूते तक नहीं और ऐसे मार्गों की ओर मार्गदर्शन करते हैं जिन पर स्वयं नहीं चलते और ऐसे मार्गों की ओर दिशा निर्देश करते हैं जिन्हें वे जानते नहीं और सत्य को प्राथमिकता देने का उपदेश देते हैं और स्वयं उससे प्राथमिकता नहीं देते। वे दुनिया पर इस प्रकार गिरते हैं जिस प्रकार कुत्ते मुर्दा पर और अपनी कमीनी इच्छाओं के आधार पर चाहते हैं कि उनकी प्रशंसा उन कार्यों पर की जाए जो उन्होंने नहीं किए। उनकी इच्छा होती है कि उन्हें अब्दाल (वलीउल्लाह), संयमी और पवित्र लोगों में सम्मिलित किया जाए हालांकि दुनिया धर्म के साथ एकत्र नहीं किया जा सकता और

يُجمعُ الدنيا مع الدين ولا الملائكة مع الشياطين۔

ومن آخر وصايا أردتُها للمخالفين، وقصدتُها لدعوة المنكرين، هو إظهار أمرٍ ابتلى اللّٰه بهٖ من قبل اليهود، فضلّوا وسوّدوا القلب المردود، فإن اللّٰه وعدهم لإرجاع إلياس إليهم من السماء، فما جاء هم قبل عيسٰى فكذّبوا عيسٰى لهٰذا الابتلاء، فلو فرضنا أن معنى النزول من السّماء هو النزول فى الحقيقة، فما كان عيسٰى إلّا كاذبًا ونعوذ باللّٰه من هذه التُّهمة۔ فأعجبنى أن أعداءنا من العلماء، لِمَ يسلكون مسلك اليهود، وكيف نسوا قصّة تلك القوم ونزول الغضب عليهم من اللّٰه الودود؟ أيريدون أن يُلعَنوا على لسانى كما لُعن اليهود على لسان عيسٰى؟ أَوَجَب عندهم نزول

फ़रिश्तों को शैतान के साथ।

और अंतिम वसिय्यत जो मैंने विरोधियों को करनी चाही और मैंने इन्कार करने वालों को बुलाने के लिए जिसका दृढ़ संकल्प किया वह इस बात का प्रकटन है जिस के द्वारा अल्लाह ने इससे पहले यहूदियों को परीक्षा में डाला था। अत: वे भटक गए और उन्होंने बहिष्कृत दिल को काला कर दिया क्योंकि अल्लाह ने उनसे इल्यास के आसमान से पुन: भेजने का वादा किया था, परन्तु वह उनके पास ईसा से पहले न आया तो उन्होंने इस आज़माइश के कारण ईसा को झुठलाया। यदि हम अनुमान करें कि आसमान से उतरने का अर्थ वास्तविक तौर पर उतरना है तो इस अवस्था में ईसा झूठा ही ठहरेगा और हम इस आरोप से अल्लाह की शरण मांगते हैं। अत: मुझे आश्चर्य होता है कि उलमा में से हमारे शत्रु यहूदियों जैसा ढंग क्यों अपनाए हुए हैं और उन्होंने इस यहूदी क़ौम के क़िस्से और बहुत प्यार करने वाले अल्लाह के क्रोध को जिसे उसने उन पर उतारा कैसे भुला दिया। क्या वे चाहते हैं कि उन पर मेरी ज़बान से उसी प्रकार लानत की जाए जिस प्रकार ईसा की ज़बान से यहूदियों पर लानत की गई। क्या उनके नज़दीक ईसा का उतरना वास्तव में अनिवार्य

عیسٰی حقیقةً وما وجب نزول إلیاس فیما مضٰی؟ تِلك إذًا قِسْمَةٌ ضِیْزٰی۔

أَلَا یقرءون القرآن کیف قال حکایة عن نبیّنا المصطفٰی۔ ﷺ، فما زعمکم ألم یکن عیسٰی بشرًا فصعد إلی السّماء ومُنِع نبیّنا المُجتبٰی؟ وکلّ من عارض خبر نزول المسیح بخبر نزول إلیاس فلم یبق له فی اتّحاد معناهما شكّ والتباس، فاسألوا أهل الکتاب: أَأُنزِل إلیاس فی زمان المسیح؟ واتقوا اللّٰه ولا تُصرّوا علی الکذب الصریح۔ لیس فی عادة اللّٰه اختلاف، فالمعنی واضح لیس فیه خلاف، وما نزل من بدو آدم إلی هذا الزمان أحدٌ من السماء، وما نزل إلیاس مع شدة حاجةِ نزوله لرفع الشك وظن الافتراء۔

है जबकि इल्यास का उतरना भूतकाल में अनिवार्य न था? यह तो एक बड़ी तुच्छ विभाजन है।

क्या वे क़ुरआन नहीं पढ़ते कि किस प्रकार उसने हमारे नबी मुस्तफ़ा[स.] की ओर से वृतांत के तौर पर फ़रमाया गया है ''हे मुहम्मद! (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) तू कह दे, मेरा रब्ब पवित्र है मैं तो केवल एक मनुष्य रसूल हूँ'' तुम्हारा क्या विचार है क्या ईसा मनुष्य न था। अत: वह आसमान पर चढ़ गया और हमारे नबी मुज्तबा रोक दिए गए। प्रत्येक वह व्यक्ति जो मसीह के उतरने और इल्यास के उतरने की ख़बर की तुलना करेगा तो उसके लिए इस बात में कोई संदेह नहीं रहेगा कि दोनों भविष्यवाणियों का एक ही अर्थ है। अहले किताब (यहूदियों) से पूछ कर देखो क्या इल्यास मसीह के युग में उतारा गया था? अल्लाह से डरो! और नितांत झूठ पर हठ न करो। अल्लाह की सुन्नत में कभी मतभेद नहीं हुआ। अत: अर्थ स्पष्ट है इसमें कोई विरोध नहीं। आदम के अवतरण से लेकर आज तक कोई व्यक्ति भी आसमान से नहीं उतरा और बावजूद इसके कि संदेह और झूठ की धारणा को दूर करने के लिए इल्यास के उतरने की अत्यंत आवश्यकता थी परन्तु फिर भी वह न उतरा।

وإن فَرّقنا بين هذا النزول وذالك النزول، وسلكنا فى موضعٍ مسلك قبول الاستعارة وفى آخر مسلك عدم القبول، فهذا ظلم لا يرضى به العقل السليم، ولا يُصدّقه الطبع المستقيم۔ و كيف يُنسب إلى الله أنه أضلّ الناس بأفعالٍ شتّى، وأراد فى مقامٍ أمرًا وفى مقامٍ سُنّةً أخرٰى؟ ففكّر إن كنتَ تطلب الحقّ وما أخال أن تتفكّر إن كنتَ من العِدا، وما لك تقدم بين يدى الله ورسوله من غير علم نالك، أَوَ كان عندك من يقين أجلٰى؟ أهٰذا طريق التّقوٰى؟ والهزيمة خير لك من فتحٍ تريده إن كنتَ من أهل التّقٰى۔ وما فى يديك من غير آثار معدودة ليس عليها ختم الله ولا ختم رسوله، وإن هى إلّا قراطيس أُملئت بعد قرونٍ من سيّد الورٰى۔ ولا نؤمن بقِصصها

और यदि हम इस उतरने और उस उतरने में भेद करें और एक स्थान पर तो रूपक की मान्यता को अपनाएं और और दूसरे (स्थान पर) रूपक की अस्वीकारिता का मार्ग अपनाएं तो यह एक ऐसा अत्याचार है जिस पर कोई सद्बुद्धि सहमत नहीं होती और न ही न्यायप्रिय स्वभाव इसका सत्यापन करता है और यह बात अल्लाह की ओर किस प्रकार मंसूब की जा सकती है कि उसने लोगों को विभिन्न कार्यों से गुमराह किया और एक स्थान पर एक तरीका अपनाया और दूसरे स्थान पर दूसरा। यदि तू सत्य का अभिलाषी है तो भली भांति विचार कर। यदि तू शत्रु है तो मेरा ख्याल है कि तू विचार नहीं करेगा और तुझे क्या (हो गया) है कि तू बिना किसी ज्ञान के ख़ुदा और उसके रसूल के सामने बढ़ बढ़ कर बातें करता है, या तेरे पास कोई स्पष्ट विश्वास मौजूद है? क्या यह संयम का तरीका है? यदि तू संयमी लोगों में से है तो पराजय तेरे लिए अधिक बेहतर है इस विजय से जिसका तू इच्छुक है तेरे पास कुछ रिवायतों के सिवा जिन पर अल्लाह और उसके रसूल के सत्यापन की मुहर नहीं लगी, कुछ भी नहीं और ये केवल ऐसे पृष्ठ हैं जिन्हें सृष्टि के सरदार (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) से कई शताब्दियों बाद लिखा गया और हम

التی لم توافق بقصص کتاب ربّنا الاعلٰی۔وقد ضلّت الیھود بھذہ العقیدۃ من قبل، فلا تضعوا أقدامکم علی أقدامھم ولا تتبعوا طرق الھوٰی، واتّقوا أن یحلّ علیکم غضب اللّٰہ ومن حلّ علیہ غضبہ فقد ھوٰی۔

ولا شک أن الیھود کان عندھم کتابٌ من اللّٰہ ذی العزّۃ فاتّبعوہ بزعمھم واتّبعوا ما فھموا من الآیۃ۔ وقالوا لن نصرف آیات اللّٰہ من ظواھرھا من غیر القرینۃ، فقد نحتوا لإنفسھم معذرۃ ھی خیر من معاذیرکم بالبداھۃ، فإنّھم وجدوا کلّما وجدوا من کتاب اللّٰہ بالصراحۃ۔ ولیس عندکم کتاب بل کتاب اللّٰہ یُکذّبکم ویلطم وجوھکم بالمخالفۃ، ولذالک تتخذونہ مھجورًا وتنبذونہ وراء

उन किस्सों पर ईमान नहीं लाते जो हमारे ख़ुदा तआला की पुस्तक के किस्सों से समानता नहीं रखते, इससे पहले ऐसी आस्था रखने के कारण यहूदी गुमराह हुए इसलिए तुम उनके पदचिन्हों पर न चलो और उन इच्छाओं के मार्गों का अनुसरण न करो और इससे डरो कि अल्लाह का प्रकोप तुम पर आए और जिस पर अल्लाह का प्रकोप आया वह निस्संदेह तबाह हुआ।

इस में कोई संदेह नहीं कि यहूदियों के पास अल्लाह तआला की पुस्तक मौजूद थी और उन्होंने अपने ख्याल के अनुसार उसका अनुसरण किया और उन्होंने इस आयाआअत का जो अर्थ समझाउसका अनुसरण किया और कहा कि हम बिना किसी रूपक के अल्लाह की आयतों को स्पष्ट अर्थ से नहीं फेरेंगे। अत: उन्होंने अपने लिए एक बहाना गढ़ लिया जो स्पष्ट रूप से तम्हारे बहानों से कहीं बेहतर है, उन्होंने जो कुछ भी पाया वह सब अल्लाह की किताब में स्पष्ट तौर पर मौजूद पाया और तुम्हारे पास कोई पुस्तक नहीं सिवाए अल्लाह की पुस्तक के जो विरोध के कारण तुम्हें झुठला रही है और तुम्हारे मुँह पर थप्पड़ मार रही है। इसी कारण तुम अल्लाह कि पुस्तक को एक त्यागी हुई चीज़ बना रहे हो और दुर्भाग्यवश उसे पीठ पीछे फेंक रहे हो।

ظہورکم من الشقوۃ، وإن الیہود لم ینبذوا الکتاب ظہریّا ولم یأتوا فیما دوّنوہ أمرًا فریًّا، ولذالك صدّق قولھم عیسٰی بید أنہ أوّل قولھم وقال النازل قد نزل وھو یحیٰی، وأمّا أنتم فتصرّون علٰی قول یخالف کتاب اللّٰہ الودود، فلا شكّ أنّکم شرّ مکانًا من الیہود۔ وأقلّ ما یُستفاد من تلك القصّۃ ھو معرفۃ سُنّۃ اللّٰہ فی ھذہ الامور المتنازعۃ۔ فما لکم لا تخافون ربًّا جلیلًا؟ أَوجدتم فی سُنّۃ اللّٰہ تبدیلا؟ وما لکم لا تبکون فی حجراتکم ولا تُکثرون عویلا، لیرحمکم اللّٰہ ویُریکم سبیلا؟ وإن اللّٰہ سیفتح بینی وبینکم فلا تستعجلوہ واصبروا صبرًا جمیلًا۔ أیہا الناس ما لکم لا تتّقون ولا تُعالجون داءً ا دخیلا؟ أتظنون انّی افتریتُ علی اللّٰہ؟ ما لکم لا

यहूदियों ने तो अपनी पुस्तक को पीठ पीछे नहीं डाला था और न ही उन्होंने अपनी पुस्तकों में कोई मनगढ़त बात लिखी इसलिए ईसा ने उनके कथन का सत्यापन किया बावजूद इसके यह उनका प्रथम कथन था परन्तु उसका अर्थ लगाया और कहा कि आने वाला आ चूका और वह याह्या है परन्तु तुम हो कि उस कथन पर हाथ कर रहे हो जो अत्यंत प्रेम करने वाले अल्लाह कि पुस्तक के विपरीत है। अत: निस्संदेह तुम मुक़ाम की दृष्टि से यहूदियों से अधिक बुरे हो। इस किस्से से जो कम से कम लाभ उठाया जा सकता है वह इस मतभेदीय विषयों में अल्लाह की सुन्नत की पहचान है, तुम्हें क्या हो गया है कि तुम तेजस्वी ख़ुदा से नहीं डरते। क्या तुम्हें अल्लाह की सुन्नत में कोई परिवर्तन दिखाई देता है और क्या कारण है कि तुम अपने घरों में जाकर नहीं रोते और गिड़गिड़ाते नहीं ताकि अल्लाह तुम पर रहम करे और तुम्हारा मार्गदर्शन करे। अल्लाह अवश्य मेरे और तुम्हारे मध्य निर्णय करेगा। अत: इस विषय में जल्दी न करो और धैर्य से काम लो। हे लोगो! तुम्हें क्या हो गया है कि संयम से काम नहीं लेते और अपने आन्तरिक रोग का उपचार नहीं करते। क्या तुम समझते हो कि मैं अल्लाह पर झूठ गढ़ रहा हूँ? क्या

تخافون یومًا ثقیلا ؟

إن الذین یفترون علی اللّٰہ لا یکون لھم خیر العاقبۃ، و یُعادیھم اللّٰہ فیُقَتَّلون تقتیلًا، و یُطوَی أمرُھم بأسرع حین فلا تسمع ذکرھم إلّا قلیلا، و أمّا الذین صدقوا وجاء وا من ربّھم فمن ذا الذی یقتلھم أو یجعلھم ذلیلا؟ إن ربھم معھم فی صباحھم وضحاھم وھجیرھم و إذا دخلوا أصیلا ، و أمّا الذین کذّبوا رسل اللّٰہ و عادوا عبدًا اتخذہ اللّٰہ خلیلا ، أولئک الذین لیس لھم فی الآخرۃ إلّا النار ولا یرون ظلّا ظلیلًا، و إذا دخلوا جھنّم یقولون ما لنا لا نرٰی رجالًا کُنّا نعدّھم من الاشرار فیُفصّل لھم الامر تفصیلا۔

ثم نرجع إلی الامر الاول ونقول إن قصّۃ نزول إلیاس، ثم قصۃ تأویل

कारण है कि तुम अत्यंत भरी दिन से नहीं डरते।

निस्संदेह जो अल्लाह पर झूठ गढ़ते हैं उनका अंत अच्छा नहीं होता। अल्लाह उनका शत्रु हो जाता है और उन्हें टुकड़े टुकड़े कर दिया जाता है और शीघ्र ही उनके मिशन की नष्ट कर दिया जाता है, फिर उनकी चर्चा बहुत कम सुनी जाती है। हाँ परन्तु जो सच्चे हैं और अपने रब्ब की ओर से आए हैं ऐसे लोगों को कौन तबाह या अपमानित कर सकता है। उनका रब्ब प्रात:काल, दिन चढ़े, दोपहर और संध्या के समय उनके साथ होता है। हाँ ओर वे लोग जिन्होंने अल्लाह के रसूलों को झुठलाया और उस बन्दे से शत्रुता की जिसे अल्लाह ने अपना मित्र बना रखा है तो ऐसे लोगों के लिए परलोक में केवल आग है और वे घनी छाँव नहीं पाएँगे और जब वे जहन्नुम में प्रवेश करेंगे तो कहेंगे कि हमें क्या हो गया है कि हमें यहाँ वे लोग नज़र नहीं आते जिन्हें हम उपद्रवियों की कोटि में सम्मिलित करते थे तब मामले की वास्तविकता उन पर पूर्णत: खोल दी जाएगी।

फिर हम पहली बात की ओर लौटते और कहते हैं कि इल्यास के उतरने का किस्सा और ईसा (अलैहिस्सलाम) का लोगों के सामने उसका स्पष्टीकरण

عیسٰی عند الناس، أمر قد اشتہر بین فِرَقِ الیہود کلّھم والنصارٰی، وما نازع فیہ أحدٌ منھم وما بارٰی، بل لکلّھم فیھا اتّفاق، من غیر اختلافٍ وشقاق، وما من عالم منھم یجھل ھذہ القصّۃ، أو یخفٰی فی قلبہ الشکّ والشبھۃ، فانظروا أن الیھود مع أنّھم کانوا عُلّموا من الانبیاءٍ، ما جاء علیھم زمن إلّا کان معھم نبیّ من حضرۃ الکبریاء، ثم مع ذالك جھلوا حقیقۃ ھذہ القصّۃ، وما فھموا السرّ وحملوھا علی الحقیقۃ۔

ولمّا جاءھم عیسی لم یجدوا فیہ علامۃ ممّا کان منقوشًا فی أذھانھم، ومُنقّشًا فی جَنانھم، فکفروا بہ وظنّوا أنہ من الکاذبین وفعلوا بہ ما فعلوا وأدخلوہ فی المفترین۔

فلو کان معنی النزول ھو النزول فی نفس الامر و فی الحقیقۃ،

करना एक ऐसा मामला है जो यहूदियों और ईसाइयों के समस्त फ़िर्क़ों के मध्य प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका है और इस बारे में उनमे से किसी ने भी कोई झगडा और मतभेद नहीं किया बल्कि उन सब का बिना किसी मतभेद के इस पर पूर्ण सहमति है और उनका कोई आलिम ऐसा नहीं है जिसे इस क़िस्से का ज्ञान न हो या उसके दिल में कोई संदेह हो। अत: विचार करो कि यहूदी बावजूद इसके कि उन्होंने नबियों से शिक्षा ग्रहण की थी और उन पर कोई ऐसा युग नहीं आया कि उनमे अल्लाह तआला की ओर से नबी मौजूद न हो फिर भी वे इस क़िस्से कि वास्तविकता से अनभिज्ञ रहे और इस भेद को न समझ सके तथा उसे वास्तविक कल्पना कर लिया।

और जब ईसा उनके पास आया तो उन्होंने उसमें ऐसी निशानी न पाई जो उनके दिमागों में जमी हुई थी और उनके दिलों पर मुद्रित थी परिणामस्वरूप उन्होंने उसका इन्कार कर दिया और उसे झूठों में से समझा तथा उसके साथ जो बर्ताव किया सो किया और उसे झूठ गढ़ने वालों में सम्मिलित कर दिया।

अत: यदि अवतरण से व्यवहारिक और वास्तविक अवतरण अभिप्राय होता तो इस आधार पर ईसा सच्चे नबी नहीं हैं और इससे अनिवार्य है कि सच्चाई

فعلٰی ذالك ليس عيسٰى صادقا و يلزم منه أن الحقّ مع اليهود الذين ذكرهم الله باللّعنة. هذا بال قومٍ أصرّوا على نصّ الكتاب والقول الصريح الواضح من ربّ الإناس، فما بالكم في عقيدة نزول عيسٰى وليس عندكم إلا أخبار ظنية مختلطة بالادناس، ومخالفة لقول ربّ الناس؟

ما لكم تتّبعون اليهود وتُشبهون فطرتكم بفطرتهم؟

أتبغون نصيبا من لعنتهم؟ توبوا ثم توبوا وإلى الله ارجعوا، وعلى ما سبق تندّموا، فإنّ الموت قريب، والله حسيب. أيها الناس قد أخذكم بلاء عظيم فقوموا في الحجرات، وتضرّعوا في حضرة ربّ الكائنات، والله رحيم كريم، وسبق رحمته غضبه لمن جاء بقلب سليم.

وإن شئتم فاسألوا يهود هذا الزمان، أوِ أتُونى بقدم التقوٰى

उन यहूदियों के साथ है जिनका अल्लाह ने लानत के साथ वर्णन किया। यह उन लोगों का हाल है जिन्होंने पुस्तक की आयत और लोगों के रब्ब के स्पष्ट आदेश पर हठ किया, तुम्हारा ईसा के अवतरण की आस्था के विषय में क्या विचार है जबकि तुम्हारे पास केवल ऐसी रिवायतें हैं जो केवल ख्याली, मैल कुचैल से लथपथ और लोगों के रब्ब के कथन (पवित्र क़ुरआन) की विरोधी हैं।

तुम्हें क्या हो गया है कि तुम यहूदियों का अनुसरण कर रहे हो और अपनी फ़ितरत को उनकी फ़ितरत के समान बना रहे हो।

क्या तुम उनकी लानत में भागीदार बनना चाहते हो। तौबा करो, फिर तौबा करो और अल्लाह की ओर लौट आओ तथा जो हो चुका उस पर लज्जित हो, क्योंकि मौत निकट है और अल्लाह हिसाब लेने वाला है। हे लोगो! तुम पर बहुत बड़ी परीक्षा आ पड़ी है। अत: घरों में खड़े हो जाओ और सृष्टि के रब्ब के दरबार में गिड़गिड़ाओ। अल्लाह उस व्यक्ति के लिए रहीम व करीम है जो सच्चे दिल के साथ आए, उसकी रहमत (कृपा) उसके प्रकोप से आगे बढ़ गई है।

यदि चाहो तो इस समय के यहूदियों से पूछ कर देखो या संयम के क़दमों पर चलते हुए मेरे पास आओ और जो संशय तुम्हारे दिल में बसा हुआ

واعرضوا علىّ شبهة يأخذ الجنان، ما لكم لا تخافون هذا الابتلاء، وتتركون سُنّة الله من غير برهان من حضرة الكبرياء؟ وتصرّون على أقوال ما نزل معها من برهان، وما وجدتموها فى القرآن۔ اعلموا أنكم لا تتّبعون إلّا ظنونا، وإنّ الظنّ لا يُغنى من الحق شيئا ولا يحصل به اطمئنان۔ أ۔تريدون أن يتّبع حَكَمُ الله ظنونكم بعد ما أُوتى علمًا من الله؟ ما لكم جاوزتم الحدّ من العدوان؟ وقد تر۔كتم اليقين للشكّ، أ هٰذا هو الإيمان؟ وإنّما الدّنيا لهو ولعب فلا تغرّنكم عيشة الصحة والامن والامان، ويتقضّى الموتُ مُفاجئًا ولو كنتم فى بروج مشيّدة، وما يُنجيكم نصير من أيدى الديّان۔

أ تقدّمون الشكوك على القرآن؟ بئسما أخذتم سبيلا، وعُمّيت

है उसे मेरे समक्ष प्रस्तुत करो तुम्हें क्या हो गया है कि तुम इस परीक्षा से भयभीत नहीं होते और अल्लाह तआला की ओर से मिलने वाली किसी स्पष्ट दलील के बिना अल्लाह की सुन्नत को छोड़ रहे हो और ऐसे कथनों पर हठ कर रहे हो जिनके साथ कोई स्पष्ट दलील नहीं उतरी और जिन्हें तुम क़ुरआन में भी नहीं पाते। जान लो कि तुम केवल ख़यालों का अनुसरण कर रहे हो हालांकि सत्य के मुक़ाबले पर ख़याल कोई लाभ नहीं देता और न इससे संतुष्टि प्राप्त होती है। क्या तुम चाहते हो कि अल्लाह का (नियुक्त किया हुआ) हकम (निर्णायक) तुम्हारे ख़यालों का अनुसरण करे बाद इसके कि उसे अल्लाह की ओर से ज्ञान प्रदान किया गया है। तुम्हें क्या हो गया है कि तुम शत्रुता में हद से बढ़ गए हो और तुमने संदेह के लिए सत्य को छोड़ दिया है। क्या यही ईमान है? और दुनिया तो केवल खेल कूद है इसलिए चाहिए कि स्वस्थ और शान्ति का जीवन तुम्हें धोखे में न डाले। मौत अचानक झपट लेगी चाहे तुम मज़बूत क़िलों में रह रहे हो और महाप्रकोपी ख़ुदा के हाथों से कोई सहायक तुम्हें बचा न सकेगा।

क्या तुम संदेहों को क़ुरआन पर प्राथमिकता देते हो। बहुत बुरा मार्ग है जो तुमने अपनाया हुआ है। तुम्हारी आँखें अंधी हो गई हैं, इसलिए रहमान की

أَبْصَارُكم فما ترون ما جاء من الرحمان۔ و إنّی جُعلتُ مسیحًا منذ نحو عشرین أعوام من ربّ علّام، وما کنتُ أرید أن أُجتبٰی لذالك، و کنتُ أکرہ من الشھرۃ فی العوام، فأخرجنی ربّی من حجرتی کرھًا، فأطعتُ أمر ربّی العلّام، وھذا کلّہ من ربّی الوھّاب، و إنّی أُجرّد نفسی من أنواع الخطاب۔ و ما لی و للشھرۃ و کفانی ربّی، و یعلم ربّی ما فی عیبتی و ھو جُنّتی و جَنّتی فی ھذہ و فی یوم الحساب۔ و إنی کتبتُ قصّۃ نزول إلیاس لقوم یوجد فیھم العقل و القیاس، وقد اجتمعتُ ببعض العلماء المخالفین، و عرضتُ علیھم ما عرضتُ علیکم فی ھذا الحین، فوجموا کلّ الوجوم ،وما تفوّھوا بکلمۃ من العلوم، و بُھِتوا و فرّوا کالمتندّم الملوم۔

ओर से आने वाले निशानों को तुम देख नहीं रहे हो। सर्वज्ञानी ख़ुदा की ओर से मुझे लगभग बीस वर्ष से मसीह बनाया गया है। मेरी कोई इच्छा न थी कि मैं इस मुक़ाम के लिए चयनित किया जाऊं, मैं लोगों में प्रसिद्धि को पसंद नहीं करता। फिर मेरे रब्ब ने ज़बरदस्ती मुझे मेरे घर से बाहर निकाला जिस पर मैंने अपने सर्वज्ञानी ख़ुदा के आदेश का पालन किया और यह सब कुछ मेरे प्रदाता रब्ब का दिया हुआ है। मैं स्वयं को हर प्रकार के उपाधियों से अलग थलग करता हूँ और मुझे प्रसिद्धि से क्या मतलब, मेरा रब्ब मेरे लिए पर्याप्त है वह जानता है जो मेरे दिल में है, वह इस दुनिया में भी और हिसाब किताब के दिन भी मेरी ढाल और जन्नत है। मैंने इल्यास के अवतरण का किस्सा बुद्धि और समझ रखने वालों के लिए लिखा है। मैं कुछ विरोधी उलमा से मिला और यह बात जो इस समय मैंने तुम्हारे समक्ष प्रस्तुत की है उनके समक्ष भी राखी थी तो वे बिल्कुल मौन हो गए और कोई ज्ञानपूर्ण बात मुँह पर न ले, वे स्तब्ध रह गए तथा एक लज्जित और अपमानित व्यक्ति की भांति भाग गए।

ذکر حقیقة الوحی
و
ذرائع حصوله

الآن نختم ھذہ الرسالة علی ذکر سُبُحات الوحی و فضائله۔ و نقاب حصوله و وسائله۔ فاعلم ھداك اللّٰہ انّ الوحی شمس من کلم الحضرة تطلع من اُفق قلوب الابدال۔ لیزیل اللّٰہ بھا ظلمة خزعبیل الضلال۔ و ھو عین لا تنفد سواعدھا۔ولا تنقطع انشاجھا۔ و منارة لا ینطفی من عدوٍّ سراجھا۔ و قلعة متسلّحة لا تعد افواجھا و ارض مقدسة لا تعرف فجاجھا۔ وروضة یزیدبھا قرة العین وابتھاجھا۔

वह्यी की हकीक़त
और
उसकी प्राप्ति के माध्यमों का वर्णन

अब हम इस पुस्तक को वह्यी के प्रकाशों और फ़ज़्लों और उसकी प्राप्ति के माध्यमों के वर्णन पर समाप्त करते हैं। अल्लाह आपको हिदायत दे। आपको यह जानना चाहिए कि वह्यी, अल्लाह के कलाम का वह सूर्य है जो वलियों के दिलों के उफ़ुक़ (क्षितिज) से इस उद्देश्य के साथ उदय होता है कि उसके द्वारा अल्लाह गुमराही के व्यर्थ कामों के अन्धकार को दूर करे। यह वह स्रोत है जो जिसके सोते कभी सूखते नहीं और जिसकी धाराएँ कभी रुकती नहीं और वह्यी वह मिनार है जिसके दीपक किसी शत्रु से बुझते नहीं। यह एक ऐसा हथियारबंद क़िला है जिसकी सेनाओं की कोई गणना नहीं। यह ऐसी पवित्र भूमि है जिसकी सड़कें किसी परिचय की मोहताज नहीं और एक ऐसा बाग़ है जिससे आँखों की ठंडक शीतलता में वृद्धि होती है और इसको

و لا ينـالہ الّا الذيـن طهّـروا مـن الادنـاس البشـريّة۔ ورزقـوا مـن الاخـلاق الالٰهيـة۔ والّذيـن اَثّلـوا التقـوىٰ و مـا مزقوهـا۔

وضَفّـروا اشـعار التقـاة و مـا شـعثوها۔ و الذيـن نـوّروا و اثمـروا كالشـجرة الطيبـة۔ وسـارعوا الىٰ ربّـهم كالعيهـلة۔ و الذيـن مـا فرّطـوا و مااَفرطـوا فى سـبل الرَّحمـان۔ وتخشـعوا خوفـا منه و جعلوا لہ حلم اللسـان وقايـة مـا فى الجنان۔ والذين تشـمّروا فى سـبل الله بالهمّة القويـّة۔ و تـكأكأوا عـلى الحق بجميـع القـوى الانسـية۔ و قصموا ظهـر وسـاوس و قصـدوا فلاةً عـوراء للمياه السّـماوية۔ والّذين لا يتثائبـون فى الله و لا يتردّدون۔ و يمشـون فى الارض هونـا و لا يتبخـترون۔ والّذيـن مـا يقنعـون على الحتامـة و يطلبون۔ و يُقدمـون فى موطـن الديـن و لا يحجمـون۔ و الذيـن لا تحتـدم صدورهـم و

केवल वही लोग प्राप्त कर सकते हैं जो मानवीय दोषों से पवित्र किए गए हैं तथा उन्हें ख़ुदा के स्वभाव प्रदान किए गए हैं और जिन्होंने संयम को बढ़ाया है उसे खण्ड-खण्ड नहीं किया।

और संयम के केशों को संवारा है उन्हें बिखेरा नहीं और वे एक पवित्र वृक्ष की भांति फूले-फले हैं, जो एक तेज़ रफ़्तार ऊंटनी की भांति अपने रब्ब की ओर तेज़ी से गए और जिन्होंने रहमान (ख़ुदा) के मार्गों में न्यूनाधिकता से काम नहीं लिया और उससे डरते हुए विनम्रता को अपनाया, और जिन्होंने उसके लिए ज़बान की नर्मी को अपने दिल की भावनाओं की ढाल बनाया और दृढ़ हिम्मत के साथ अल्लाह के मार्गों पर हर समय तैयार रहे और सत्य पर समस्त मानवीय शक्तियों के साथ एकत्र हो गए और उन्होंने भ्रमों की कमर तोड़ दी और आसमानी पानी को प्राप्त करने के लिए मरूस्थल की ओर मुड़े, और जो अल्लाह के मार्ग में आलस्य नहीं दिखाते और न चिंता करते हैं ओए धरती पर विनम्रता से चलते हैं अकड़ कर नहीं चलते। और जो बचे हुए पर संतुष्टि नहीं करते और (प्रति क्षण) इच्छुक रहते हैं। वे धर्म की भूमि में बढ़ते चले जाते हैं रुकते नहीं और उनके सीने क्रोध से भड़कते नहीं, तू उनमें ठहराव

تجد فیھم تؤدۃ و ھم لا یستعجلون۔ و لیس نطقھم کآجنٍ و اذا نطقوا یجدّون۔ و الّذین تبتّلوا الی اللّٰہ

و صمتوا و لا ینطقون الا بعد ما یُستنطقون۔ و لیسوا کَبَسِیّلٍ بل ھم یتلألأون۔ و الذین لا یختأھم قارعٌ عن حبّ اللّٰہ و کل لمح الی اللّٰہ یجلوذون و خذیء لہ قلبھم و عینھم و اذنھم ففی اثرہ یدأدء ون۔ و اَدفأھم اللّٰہ ما یدفع البرد فھم فی کل آن یُسخّنون و الذین یُدا کِأُوْن ابلیس و یردء ون بالحق و لہ ینتصرون۔ و ما رطأوا الدنیا و ما نشفوا من ماء ھا و حسبوھا کَقَمِیْءٍ و ما کانوا الیھا ینظرون۔ و الذین ما رمأوا نفوسھم بما کانت علیھا بل کلّ آن الی اللّٰہ یحفدون و یتزازء ون من اللّٰہ و لہ یتصاغرون۔ و الذین زنّأوا علی نفوسھم حَبْلھا و ضیّقوا باب عیشتھا

पाएगा और वे जल्दबाज़ी नहीं करते और उनकी वार्तालाप दुर्गन्ध वाले पानी के सामान नहीं होती और जब भी वार्तालाप करते हैं बड़ी गंभीरता से करते हैं और अल्लाह की ओर तबत्तुल नहीं करते और मौन रहते हैं और उस समय तक नहीं बोलते जब तक उन्हें वार्तालाप करने के लिए न कहा जाए और वे कुरूप नहीं बल्कि वे चमकदार एवं तेजस्वी हैं और उन्हें कोई मुसीबत अल्लाह की मुहब्बत से रोक नहीं सकती और वे पतिक्षण अल्लाह की ओर तीव्र गति से जाते हैं और उनके दिल, आँखें और कान उसके समक्ष झुकते ओए उसके पदचिन्हों पर चलते हैं और अल्लाह उन्हें (अपनी मुहब्बत की गर्मी से) ऐसा गरमाता है जो उनकी सर्दी को दूर कर दे। अत: वे प्रतिक्षण (अल्लाह की मुहब्बत की गर्मी से) गरमाए जाते हैं और जो इब्लीस को धुत्कारते हैं और सत्य को मज़बूती देते हैं और उसके लिए बदला लेते हैं। वे दुनिया में मगन नहीं होते और वे उसे तुच्छ समझते हैं और उसकी ओर आँख उठा कर भी नहीं देखते। वे एक अवस्था में नहीं ठहरते बल्कि प्रतिक्षण अल्लाह कि ओर दौड़ते हैं। वे अल्लाह से डरते और उसके लिए विनम्रता अपनाते हैं और जो अपने अस्तित्वों की बागें खींच कर रखते हैं तथा विश्राम के द्वार अपने ऊपर तंग कर लेते हैं और

ولا یُوسّعون۔ والذین اذا دُعوا الی شواظٍ من ربّھم فھم لا یبعلون۔ و ما اجبأوا زرعھم بل ھم یحرسون۔

و الذین یجاھدون فی اللہ و یبتھلون۔ ولا یخافون الثکل ولو جفأتھم البلیۃ و للہ یجسأون۔ والّذین عندھم غمرٌ و لیس علمھم کثمیلۃ و اوتوا معارف و فیھا یتزایدون۔ و غلبوا الدنیا و جعفلوھا و جمأوا علیھا و قصموھا بکرتیم فھم عن زھزمتھا مبعدون۔ و الّذین تری ھممھم کجنعدلٍ یجوبون موامی ولا یلغبون۔ لا یَتَجَأّلون عن امر ربّھم و ھم لہ مسلمون۔ والّذین حنأت ارضھم و التفت نبتھا باللہ فھم علی شجرۃ القدس یداومون۔ و خبأت رداء اللہ صورھم فھم تحت رداء ہ

उन्हें खुला नहीं छोड़ते और जब वे अपने रब्ब की आग की ओर बुलाए जाते हैं तो वे भयभीत नहीं होते और वे अपनी कच्ची फसल नहीं बेचते बल्कि उसकी रखवाली करते हैं।

और जो अल्लाह के मार्ग में तपस्या करते और गिड़गिड़ाते हैं तथा औलाद के मर जाने से नहीं डरते चाहे मुसीबत उन्हें पछाड़ दे और अल्लाह के लिए कठिनाई सहन कर लेते हैं और जिन लोगों के यहाँ (ज्ञान के) पानी की अधिकता है और उनका ज्ञान तिलछट जैसा नहीं। उन्हें मआरिफ प्रदान किए जाते हैं और वे उनमें बढ़ते चले जाते हैं और वे दुनिया पर विजय प्राप्त करते हैं और उसे पछाड़ देते हैं। उन्हें इस पर क्रोध आता है और बड़े कुल्हाड़े से उसकी कमर तोड़ देते हैं। अत: वे इस (दुनिया) के शोर-शराबे से दूर रखे जाते हैं और तू उनके साहसों को शक्तिशाली ऊंटों के समान पाएगा वे बड़े बड़े मरूस्थलों को पार करते हैं और थकते नहीं। वे अपने रब्ब के आदेश की अवहेलना नहीं करते ओर उसी के आगे अपना सर झुकाते हैं और जिनकी भूमि हरी भरी होती है और उसकी हरियाली अल्लाह के नाम के साथ संबंधित है इसी कारण वे पवित्र वृक्ष पर शाश्वत बसेरा किए हुए हैं और अल्लाह की चादर ने उनकी सूरतों को छुपाया हुआ है। अत:

متستـرون۔ والّذیـن یبـذء ون الدنیـا و مـا فیهـا و یبدّلـون کصبی ابـدء و لا یترکـون۔

لا یوجـد فیـهم غشـمٌ ولاسـخفٌ و لا غیهقـة و عنـد کل کـرب الی اللّٰہ یرجعـون۔ و الذیـن لا یمغثـون عرضًـا بغیر حـق ولا باَحَـدٍ یهجـرون۔ ولا یخافـون عقبـة نطّـائَ و لا فـلاةً عـوراءَ۔ ولاهـم یحزنـون۔ والذیـن یعلهضـون قـارورة الفطـرة لیسـتخرجوا مـا یخزنـون استوکثوا مـن الدنیـا فلا یبالـون قریحَ زمـن و جابـر زمـن و یتخـذون اللّٰہ عضـدا و علیه یتوکلـون۔ والذیـن جاحـوا مـن بواطنـهم اصـول النفسـانیة و تجد فیهم شـعوذة و الی اللّٰہ یسـارعون۔ مُلئـوا مـن أرج اللّٰہ و محبّتـه الذّاتیة۔ تحسـبهم ایقاظًـا و هـم ینامـون۔ والذیـن عُصمـوا مـن شـصاص العفـة الرسـمیة

वे उसकी चादर के नीचे छुपे होते हैं और जो दुनिया और दुनिया की चीज़ों को तुच्छ समझते हैं और उनकी हालत एक नए पैदा हुए मासूम बच्चे के समान बदल दी जाती है और उन्हें छोड़ा नहीं जाता।

उन में अत्याचार, बौद्धिक कमज़ोरी और अहंकार नहीं पाया जाता और हर मुसीबत के समय अल्लाह की ओर लौटते हैं और जो किसी के सम्मान को अकारण दूषित नहीं करते और न ही किसी से अपशब्द बोलते हैं। वे किसी ऊंची चोटी और शुष्क मरूस्थल से न तो भयभीत होते हैं और न ही दुखी होते हैं। वे फ़ितरत की छुपी हुई शक्तियों को उजागर करने के लिए फ़ितरत की बोतल को खोलते हैं। वे दुनिया से परलोक के लिए सामग्री लेते हैं। वे युग के शातिरों और युग के अत्याचारियों की परवाह नहीं करते। वे ख़ुदा को ही अपना सहायक बनाते हैं और उसी पर भरोसा करते हैं। यही वे लोग हैं जिन्होंने अपने अन्तर्मन से भौतिकता की जड़ों को उखाड़ फेंका है और तू उनमें उत्साह पाएगा, और वे अल्लाह की ओर क़दम बढ़ाते हैं। वे अल्लाह की सुगंध और उसकी निजी मुहब्बत से भरे हुए हैं। वे सोए हुए भी हों तो भी उन्हें तू जागता पाएगा। यही वे लोग हैं जो दिखावटी पवित्रता के जाल से बचाए गए हैं और वास्तविक संयम

و صُبّغوا بالتّقاة الحقیقیّة و أفنتھم نار المحبّة و لیسوا کالذین یضبحون۔ و الذین لیس مِقولھم کَشَفرة أذوذٍ

و اذا نزل بھم اُفُرَّةٌ فھم یصبرون۔ و یُحسنون اِلٰی من آذی من الفجرة۔ و لوکان من زمر القرافصة۔ و یمکتون بحضرة اللّٰہ و لا یبرحون بل ھم یمکدون۔ و الذین علٰی ایمانھم یخافون و یحسبون انہ اخف طیرورةً من العصفور۔ و الخوف أبلغ اِنقاءً من الیَسْتعور فلا یقنعون علی رُذاذٍ و یعبّدون عَرُوْنَةً بجرآء لیجعلوھا بُھْرَةً۔ و کذالک یجرذون۔ و الّذین یخافون ثائب الابتلاء اذا ادلجوا و حین یدّلجون و یبکون بعین سُھُدٍ و قلبٍ حِجْزٍ حین یُمسون و حین یُصبحون۔ و الذین یؤاسون و لا یقترون و یخلصون غریمھم و

के रंग में रंगे गए हैं। (अल्लाह की) मुहब्बत की अग्नि ने उन्हें फ़ना कर दिया है और वे उन लोगों की भांति नहीं जो हांफने लग जाते हैं और उनके कथन काटने वाली तलवार की भांति नहीं।

और जब उन पर कोई संकट आए तो वे सब्र करते हैं वे कष्ट देने वाले अभद्र (लोगों) के साथ उपकार का व्यवहार करते हैं चाहे वे डाकुओं के गिरोह में से हों। वे अल्लाह की सेवा में रहते हैं और उससे जुदा नहीं होते और उसी के द्वार पर धोनी रमाए रहते हैं और जिन्हें अपने ईमान के बारे में सदा भय लगा रहता है और वे समझते हैं कि ईमान उड़ जाने में चिड़िया से भी अधिक तेज़ है और भय सफ़ाई करने में मिस्वाक से बढ़ कर है। अत: वे हलकी वर्षा से संतुष्ट नहीं होते वे (अस्तित्व) की पथरीली भूमि को लताड़ते हैं ताकि उसे नर्म और समतल कर दें और वे इसी प्रकार इस मैदान में अनुभवी हैं। और जब रात के आरम्भ और अंत में चलते हैं तो वे परीक्षा की तेज़ आँधी से डरते हैं। वे सुबह-शाम बे-ख़्वाब आँख और पवित्र दिल से रोते हैं। वे दूसरों की पीड़ा हरते हैं और उसमें कंजूसी से काम नहीं लेते। अपने कर्ज़दार को छूट देते हैं और उनका माल नहीं छीनते, वे कंजूस और अभद्र नहीं होते और न ही वे डींगें मारते हैं।

لا يخلسون۔ و الذين ليسوا كَضَبُّسٍ ولا كهقلس و لاهم يتفجّسون۔ والذين يجتنبون اللطث۔ و النكث ولا تجد فيهم وثوثة فى الدين ولاهم يداهنون۔ والذين سلكوا و فى السلوك اجر۔هدّوا و الرحال للحبيب شدّوا۔ وقطعوا عُلَق الدّنيا و فى الله يرغبون۔ و ما يقعدون كالذين يئسوا من الآخرة و الى الله يهرولون۔ و الذين لايحطّون الرحال و لايريحون الجمال و يجتنبون الوبد ولا يركدون۔

ويبيتون لربهم سُجّدًا وَّقيامًا و لايتنعّمون۔ و الذين يضجرون لكشف الحجب و رؤية الحق و يسعون كل السعى لعلّهم يُرحمون۔ و مايحجأون فى الله بالنفس و لو يُسّفكون۔ و حضأوا فى نفوسهم نارا فكلّ آنٍ يوقدون۔ واحكأوا عُقدة الوفاء

वे दंगे फसाद और तोड़ फोड़ से बचते हैं और तू उनमें धार्मिक कमज़ोरी नहीं पाएगा और न ही वे चापलूसी करते हैं। वे सुलूक (अल्लाह की खोज) के मार्गों पर चलते हैं और उन पर चलते चले जा रहे हैं। उन्होंने अपने महबूब (ख़ुदा) के लिए अपनी सवारियों क कुजावे कस लिए हैं और संसार से संबंध तोड़ लिया है और केवल अल्लाह में रुचि रखते हैं। वे उन लोगों की भांति बैठे नहीं रहते जो परलोक से निराश हो चुके हों बल्कि वे अल्लाह की ओर दौड़ते चले जाते हैं। वे अपनी सवारियों से उतरते नहीं और न ही अपने ऊंटों को विश्राम करने देते हैं। वे लोगों की मोहताजी से बचते हैं और कहीं नहीं ठहरते।

वे अपने रब्ब की प्रसन्नता के लिए सजदा करते हुए और खड़े होकर रात गुज़ारते हैं और सुख सुविधा का जीवन व्यतीत नहीं करते और वे जो समस्त पर्दे दूर होने और अल्लाह तआला का दीदार करने के लिए बेक़रार रहते हैं वे पूरी कोशिश करते हैं कि उन पर रहम किया जाए। वे अल्लाह के विषय में स्वयं को रोकते नहीं चाहे उनका खून बहा दिया जाए। वे अपने अंदर अल्लाह की मुहब्बत की आग को रौशन करते हैं और प्रतिक्षण उसे रौशन रखते हैं। वे वफ़ा की गाँठ को मज़बूती से बाँधते हैं और उस पर क़ायम रहते हैं चाहे वे

فهم علیه ولو یقتّلون۔ اولٰئك الذین رحمهم اللّٰه و أراهم وجهه من کل باب و رزقهم من حیث لا یحتسبون۔

بما کانوا یحبّون اللّٰه و یتّقونه حق تقاته و بما کانوا یفرقون۔ إنّ الذین تجانأوا علی حُذّة الدنیا وصراها و یئسوا من جَزِّح اللّٰه۔ اولئك الذین لا یکلّمهم اللّٰه و یلقون فی فلاةٍ بدیدٍ و یموتون و هم عمون۔ انهم لا یفتحون العیون مع أیَاةٍ اجبأ علیهم و لا هم یصأصأون کأنّ الشّمس ما صمأت علیهم و کأنّهم لا یعلمون۔ و کذالك جرت عادة اللّٰه لا یستوی عنده من جاء ه یبغی الرضا۔ و من عَصَا وغَوٰی انّه لا یبالی الغافلین۔ و اِنّه یهرول إلٰی من یمشی الیه و انه یحب المتقین۔ وله سنة لا

टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाएं। यही लोग हैं जिन पर अल्लाह रहम करता है और प्रत्येक द्वार से उनको अपना चहरा दिखाता है और उन्हें वह से प्रदान करता है जो उनकी कल्पना में भी नहीं होता।

क्योंकि वे अल्लाह से प्यार करते, उसका पूर्ण तक्वा इख़्तियार करते और उसी से डरते हैं। निस्संदेह वे लोग जो दुनिया के मांस के टुकड़े और उसके पानी की तिलछट पर गिरते हैं और अल्लाह के उत्तम दान से मायूस होते हैं यही वे लोग हैं जिनसे अल्लाह वार्तालाप नहीं करता और वे किसी वीरान जंगल में फेंक दिए जाते हैं और वे अंधे होने की हालत में ही मर जाते हैं। वे सूरज की रौशनी के बावजूद जो उन पर उदय हुई आँखें नहीं खोलते और न ही वे आँखों को हरकत देते हैं मानो उन पर सूर्य उदय ही नहीं हुआ और मानो वे जानते ही नहीं और अल्लाह तआला की सुन्नत इसी प्रकार जारी है कि वह व्यक्ति जो उसके समक्ष उसकी प्रसन्नता के उद्देश्य से आया वह उस व्यक्ति की भांति नहीं हो सकता जिसने अवहेलना की और गुमराह हो गया। निस्संदेह वह (अल्लाह) लापरवाहों की परवाह नहीं करता। वह उसकी ओर दौड़ कर जाता है जो उसकी ओर चल कर आता है और वह संयमियों से मुहब्बत करता है। उसकी ऐसी

تُخبأ کَخُثّ مخلّف۔ الا ان السنة لَیَاحٌ یُرٰی فی کل حین۔ الکاذب تبّ۔ و الصادق صعد و ثبّ۔ فطوبٰی لـلذی الیه باء و ابّ۔

و تناء بعتبته و ایّاه احبّ۔ انه یحبّ من دق له ولایحبّ الببّ۔ فویل للذین قعدوا کجلذٍ و کثرت وساوسهم کَاِمْرَأَةٍ اَضنأت۔ مابقی لهم ظمأ فی طلب اللّٰه و انواع بَغْر الدنیا علی القلب طسأت۔ ضعفت نفوسهم فشقّ عبأ الایمان و هم مثقلون۔ و لایزالون یذکرون الدنیا و هم لها یقلقون۔ یکادون اَنْ یفسّأوا ثوب الدّین و یزهفون الی اللّٰه احادیث و هم یتعمدون فقأوا عیونهم بمکرٍ آثروه ثم یقولون نحن قومٌ مُبصرون۔

सुन्नत है जो छुपी हुई नहीं जैसे बाढ़ के बाद रह जाने वाली झाग। सुनो सुनो! उसकी सुन्नत प्रकाशमान सुबह की भांति स्पष्ट है जो हर समय देखी जा सकती है। झूठा तबाह हो गया और सच्चा सर बुलंद और मंसबे आली पर विराजमान हो गया। अत: खुशखबरी है उसके लिए जो ख़ुदा की ओर लौटा और उसको पाने का इच्छुक हुआ और उसकी चौखट पर बैठ गया।

और केवल उसी से मुहब्बत करने लगा। निस्संदेह वह (ख़ुदा) मुहब्बत करता है उस व्यक्ति से जो उसकी खातिर पिस जाता है और वह मोटे व्यक्ति को पसंद नहीं करता। अत: तबाही है उनके लिए जो अंधे चूहे सांस रोके बैठे रहते हैं। उनके भ्रम बहुत से बच्चों वाली औरत के बच्चों की तरह बहुत अधिक हैं। अल्लाह को प्राप्त करने के लिए तो उन्हें प्यास नहीं है और दुनिया के विभिन्न लाभ उनके दिलों पर छाए हुए हैं। उनकी जानें कमज़ोर हो गईं। अत: ईमान का भार (उन पर) बोझल हो गया और वे बोझ तले दब गए। वे हमेशा दुनिया की याद में लगे रहते हैं और उनकी सारी बेक़रारी दुनिया के लिए होती है। निकट है कि वे धर्म का पहनावा फाड़ दें। और वे जानते बूझते हुए अल्लाह की ओर गलत बातें सम्बद्ध करते हैं। और जिस धोखे को उन्होंने अपनाया उससे उन्होंने अपनी आँखें फोड़ दीं इसके बावजूद कहते

و قد سطحوا الفطنة ثم ذبحوها و يُصفدهم القرآن فهم عنه معرضون۔ إِنَّمَا مثلهم كمثل أرضٍ قفأت۔ او كنبتٍ كَدَّء و اراد الله ان يزيدهم علمًا فنسوا ما يدرسون۔ او مثلهم كمثل رجل قعد فى مقنوئةٍ فطلعت الشمس حتّٰى جاءت علٰى رأسه و هو من الذين يغتهبون۔ و قوم آخرون رضوا بالحماذى۔ وقع بعضهم لبعض كالمحاذى۔ و انى انا الاحوذى كذى القرنين۔ وجدتُ قومًا فى اُوارٍ و قومًا آخرين فى زمهريرٍ و عين كدرةٍ لفقد العين۔ و اِنّى انا الغيذان و من الله أرٰى۔ و اعلم أنّ القدر اخرج سهمه وقذا۔ فاذكروا الله بعينٍ ثرة يا اولى النهٰى لعلكم تجدوا

हैं कि हम देखने वाली क़ौम हैं। उन्होंने अपने विवेक (की ऊंटनी) को लिटाया और उसका वध कर डाला। क़ुरआन उन्हें पाबंद कर रहा है और वे हैं कि उससे मुंह मोड़ रहे हैं। उनकी हालत उस खेती जैसी है जिसे वर्षा की अधिकता ने ख़राब कर दिया हो। या उस हरियाली जैसी है जिसे सर्दी की अधिकता या पानी की कमी ने नुकसान पहुँचाया हो। अल्लाह की तो यही इच्छा थी कि वह उनके ज्ञान को बढ़ाए लेकिन वे अपना पाठ भूल गए। या उनकी हालत उस व्यक्ति जैसी है जो एक ऐसे स्थान पर बैठा हो जहाँ कभी भी धूप नहीं पड़ती, अत: सूर्य उदय हुआ यहाँ तक कि उसके सर पर आ गया और वह अँधेरे में ही रहा, और कुछ दूसरे लोग हैं जो गर्मी की अधिकता पर राज़ी हैं और उनमें से एक दूसरे के मुकाबले पर है। निस्संदेह मैं ज़ुल-क़र्नैन (दो शताब्दियों वाले) की भांति तीव्रगति हूँ। मैंने एक क़ौम को अत्यंत गर्मी में और दूसरी क़ौम को आँखें न होने के कारण अत्यंत सर्दी और गंदे चश्मे (श्रोत) पर पाया। मैं सही परामर्श देने वाला हूँ और मैं अल्लाह (के दिखाने) से देखता हूँ और मुझे भली भांति ज्ञात है कि भाग्य ने अपना तीर निकाला और चलाया, अत: हे बुद्धिमानो! आंसू बहाने वाली आँख से अल्लाह को याद करो ताकि दयाशीलता और कृपा

حِتًّـــرًا و كَثِـيْرًا مـن النـدیٰ۔ و السّــلام عـلیٰ مـن اتّبــع الهـدٰی
و انـــا العبــد المفتقــر الی اللّٰه الاحــد۔

غلام احمدؐ القادیانی المسیح الربّانی

में से थोड़ा या अधिक हिस्सा पाओ। सलामती हो उस पर जिसने हिदायत की पैरवी की। मैं हूँ अद्वितीय ख़ुदा का फ़क़ीर बंदा-

ग़ुलाम अहमद क़ादियानी,
ख़ुदा का मसीह

علامات المقربين

بسم اللّٰہ الرحمٰن الرحیم

نحمدہ و نصلی علی رسولہ الکریم

أیها الناس احشدوا فإنی سأقرأ علیکم علامات المقرّبین.إنهم قوم حفظ اللّٰہ غضوضة روحهم ولیسوا کجامس ولا کأَفِین، تجدهم حسن الحِبر والسِبر وکشابٍ بهکن ولاتجدهم کمن نُخِسَ وصارکالمدقوقین. قوم شُرِحَتْ صدورهم۔ وأُزِّرت ظهورهم، ونُضّر نورهم، فأسلموا وجوههم لله وما بَالوا أذًی فی اللّٰہ ولو قُطِعَ حبل المتین، ولا یحائصون الموت إلّا لِرَبِّ العالمین۔ یُربَّی الخلقُ من ألبانهم،وتُقوّی القلوب من فیضانهم،ولیسوا کشاةٍ مُمغرٍ،ولا کرجل

अलामातुल मुक़र्रबीन

(सानिध्य प्राप्त लोगों के लक्षण)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

हे लोगो! एकत्र हो जाओ। मैं तुम्हारे लिए सानिध्य प्राप्त लोगों के लक्षण वर्णन करूंगा। ये ऐसे लोग हैं कि जिनकी रूह की प्रफुल्लता की सुरक्षा अल्लाह ने फरमाई है। वे शुष्क और कम बुद्धि वाले व्यक्ति के समान नहीं होते। तू उन्हें अच्छी शक्ल वाले, सुन्दर और पूर्ण व्यस्क के समान पाएगा और उस व्यक्ति की भाँति नहीं पाएगा जो क्षयरोगी की भांति दुबला-पतला हो गया हो। ये वे लोग हैं जिनके सीने (हृदय) खोल दिए गए और उनकी कमरें मज़बूत की गईं और उनके तेज को आभा प्रदान की गई। उन्होंने स्वयं को ख़ुदा के सुपुर्द कर दिया। वे अल्लाह के मार्ग में किसी भी कष्ट की परवाह नहीं करते चाहे उनकी मुख्य रग ही काट दी जाए। वे केवल समस्त संसार के रब्ब के लिए मृत्यु से बचते हैं। सृष्टि उनके दूध से पोषण पाती है और हृदय उनके (फैज़) वरदान से मज़बूत कर दिए जाते हैं। वे उस बीमार बकरी के समान नहीं जिसका दूध बीमारी के कारण लाली समान हो गया हो। और न उस व्यक्ति के सामान है जिसकी आँखों के पपोटे (ढक्कन) बीमारी के कारण सदा के लिए उलट गए हों।

مُشَتّرٍ، و يُبعثون فی أرضٍ مزبرةٍ و معقرةٍ وَ مَثْعَلة و عند كثرة الباغزين۔ تجدهم أكثر قزازةً ولا تجد فيهم كزازةً ولاتراهم كضنين۔ وتجدهم يبيعون أنفسهم لِلّٰهِ ولمصافاته، ويواسون خلقه لمرضاته، ولا تجد أنفسهم كالْمُبَرْطِسِين، يحسبهم الرَوْشُ العِنْقَاشُ من المخترصين، وإن هم إلا نور السماء وأمان الارض وائمة الصادقين۔ تعافُ الارض لُقْيانهم وتُنير السماء برهانهم، وإنهم حجة الله على من عصٰى من المخلوقين۔ وإنهم عاهدوا الله بحلفةٍ أن لا يُحبّوا ولا يُعادوا بأمر أنفسهم، وانصلتوا منها انصلات الفارين۔ وأحضروا ربهم ظاهره باطنهم وجاء وه منقطعين. وأفنوا أنفسهم لاستثمار السعادة وماتوا

वे भिड़ों, बिच्छुओं और लोमड़ियों की भूमि में अवतरित किए जाते हैं और ऐसे समय में अवतरित किए जाते हैं जब दुराचारियों कि अधिकता होती है। तू उन्हें गन्दगी से बहुत अधिक बचने वाला पाएगा। उनमें कोई रूखापन नहीं पाएगा और न तू उन्हें कंजूस के समान पाएगा। तू उन्हें पाएगा कि वे अल्लाह के लिए और उससे विशुद्ध प्रेम के लिए अपनी जानों को बेचते हैं। और उसकी प्रसन्नता के लिए उसकी सृष्टि से सहानुभूति करते हैं और तू उन्हें दल्लालों के सामान नहीं पाएगा। कमीना स्वभाव उन्हें झूठ गढ़ने वाला समझता है। हालांकि वे आकाश का नूर, धरती की सुरक्षा और सच्चों के इमाम (पेश्वा) होते हैं। धरती उनकी मुलाक़ात से नफरत करती है और आकाश उनकी दलीलों को प्रकाश प्रदान करता है। और वे अवज्ञाकारी लोगों पर अल्लाह का तर्क होते हैं। उन्होंने क़सम खा कर अल्लाह से यह वादा कर रखा है कि वे अपने व्यक्तित्व के अधीन होकर न किसी से मुहब्बत करेंगे और न शत्रुता और वे इस बात से भगोड़ों के सामान भागते हैं और उन्होंने अपने बाह्य और आंतरिक को अपने पालनहार के समक्ष प्रस्तुत कर दिया है और संसार से संबंध तोड़ कर उसके दरबार में आ गए हैं। उन्होंने सौभाग्य का फल प्राप्त करने के लिए स्वयं को फ़ना कर दिया।

और एक नए जन्म के लिए मृत्यु स्वीकार कर ली है। उन्होंने भाग्य के अधीन समस्त आने वालों खतरों में घुस कर और उन पर सब्र करके अपने रब्ब को

لتجدید الولادة، وأرضوا ربهم باقتحام الاخطار والصبر تحت مجاری الاقدار، وأدّوا کلما یقتضی الخلوص وما هو من شروط المخلصین۔ إنهم قوم أخفاهم الله کما أخفٰی ذاته، وذرّ علیهم لمعاته، ومع ذالك یُعرفون من سَمتهم ومن جباههم ومن سیماهم، ونور الله یتلألأ علی وجوههم ویُری من روائهم ولهم بصیص یخزی الخاطلین. ومن شِقوة أعدائهم أنهم یظنون فیهم ظن السَّوْء ولا یحقّون ما ظنّوا وما کانوا متقین۔ إن هم إلا کأخْوَص أو أعْمَی ولیسوا من المبصرین۔ لهم جبهَةٌ خشباء ونفس کعوجاء وقلوبهم مُسودّة ولو ابیضّ إزارهم کخرجاء، ولیسوا إلا کتنّین۔ یُعادون أهل الله ولا یظلمون إلا أنفسهم، فلو لم یتولّدوا کان خیرا لهم، لم یعرفوا إمام زمانهم،

प्रसन्न कर लिया है। उन्होंने सच्चों और सच्चाई की समस्त शर्तों को उनकी समस्त मांगों के अनुसार पूर्ण कर दिया है। ये (मुक़र्रबीन) निस्संदेह ऐसे लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने स्वयं की भांति छुपा कर रखा हुआ है और उसने अपने नूर उन पर बरसाए हैं। इसके साथ साथ वे अपने रंग-रूप, अपने मस्तकों और निशानियों से पहचाने जाते हैं और अल्लाह का नूर उनके चेहरों पर चमकता है और उनके चेहरों की चमक-दमक से नज़र आता है। और उनमें ऐसी चमक होती है जो अनर्गलवादी लोगों को बदनाम कर देती है। उनके शत्रुओं का एक दुर्भाग्य यह है कि वह उन (मुक़र्रबीन) के बारे में कुधारणा करते हैं लेकिन अपनी इस कुधारणा को सिद्ध नहीं कर सकते और वे संयमी नहीं होते। वे केवल भैंगे, धंसी हुई आँखों वाले या अंधे के समान हैं और सुजखे लोगों में से नहीं। उनका मस्तक अत्यंत खुर्दरा है। और नफ़्स (अंतरात्मा)मरियल ऊंटनी के समान है और उनके दिल काले हैं यद्यपि उनके तहबंद खर्जा★ के समान सफेद हों। और वे अजगर के समान हैं। वे अल्लाह वालों से शत्रुता रखते हैं और वे स्वयं पर ही अत्याचार कर रहे हैं। यदि वे पैदा न होते तो यह उनके लिए अच्छा होता। उन्होंने अपने युग के इमाम (अवतार) को पहचाना नहीं और जाहिलियत की मौत पर सहमत हो गए। अत: उस अंधी क़ौम पर तबाही! सुविधामय जीवन के संतोष ने उन्हें धोखे में डाल दिया है। अत: वे

★ खर्जा: ऐसी ऊंटनी जिसकी केवल पिछली दोनों टाँगें कोखों तक सफेद होती हैं- अनुवादक

ورضوا بميتة الجاهلية فتعسًا لقوم عمين۔ غرّتهم رضاضة التنعّم فنسوا عَلَزَ القلقِ وغصص الجَرَضِ، ولم يصبهم داهية من حَبَضِ الدهر فلذالك يمشون فى الارض فرحين، ويمرّون بعباد الرحمن مختالين متكبّرين۔

إن أولياء الله لا يُريدون مُخَرَّفَجًا فى الحياة الدنيا ويؤثرون لله خصاصة ويُطهّرون نفوسهم ويشوصُون، ويقبلون دواهى هذه ويتقون نهابر الآخرة ولها يجاهدون، ولا يأتى عليهم أُبُضٌ إلا وهم فى العرفان يتزايدون۔ ولا تطلع عليهم شمس إلا وتجد يومهم أمثل من أمسهم، ولا ينكصون وفى كل آنٍ يُقدِمون۔ ويزيدهم الله نورًا على نورٍ حتى لا يُعرفون۔ ويحسبهم الجاهل بشرًا متلطخا وهم عن أنفسهم يُبعدون۔ وإذا مسّهم طائف من الشيطان أقبلوا على الله مُتضرّعين، وسعوا إلى كهفهٖ فإذا هم مبصرون۔ ولا يقومون

व्याकुलता के ख़तरों और कड़वे घूंटों को भूल गए हैं। उन्हें संसार के धक्कों से कोई मुसीबत नहीं पहुंची। यही कारण है कि वे धरती पर इतरा कर चलते हैं और रहमान (ख़ुदा) के भक्तों के पास से अकड़ते हुए और अहंकार पूर्वक गुज़र जाते हैं।

अल्लाह के भक्त सांसारिक जीवन की सुख सुविधाओं से कोई मोह नहीं रखते और अल्लाह ही के लिए ग़रीबी को प्राथमिकता देते हैं और अपने नफ्सों पवित्र रखते हैं। वे इस संसार की कठिनाइयों को स्वीकार कर लेते हैं और परलोक के नर्क से बचते हैं और उस (परलोक) के लिए प्रयत्न करते रहते हैं। उन पर जब भी कोई मुसीबत आ पड़े तो वे अल्लाह की मारिफत में और अधिक उन्नति करते हैं। हर सूर्य जो उन पर उगता है उसमें तू उन्हें इस अवस्था में पाएगा कि उनका आज उनके बीते हुए कल से कहीं अधिक अच्छा होता है। वे पीछे नहीं हटते बल्कि वे हर दम आगे ही आगे बढ़ते हैं और अल्लाह उनके तेज में और इतने अधिक तेज की वृद्धि करता है कि वे पहचाने नहीं जाते। मूर्ख उन्हें ऐसे इन्सान समझता है जो पापों से लिप्त हैं हालांकि वे अपने नफ्सों से दूर किए गए हैं। जब उन्हें किसी शैतानी चक्कर की तनिक भी अनुभूति हो तो वे विनम्रता पूर्वक अपना मुख अल्लाह की ओर कर लेते हैं। और उस अल्लाह की सुरक्षा की ओर दौड़ते हैं तो यकायक वे विवेकवान हो जाते हैं। वे सुस्त होने की अवस्था में दुआ के लिए खड़े नहीं होते बल्कि निकट है कि वे दुआ करते-करते ही जान दे दें और उनके इस संयम के कारण उनकी (दुआ) सुनी जाती

إلى الدعاء كسالٰى بل كادوا أن يموتوا فى دعائهم فيُسمع لتقواهم و يُدركون۔ و كذالك يُعطَون قوةً بعد ضعفٍ عند الدعاء و تنزل عليهم السكينة و تقوّيهم الملائكة فيُعصمون من كل خطيئة و يُحفظون، و يصعدون إلى الله و يغيبون فى مرضاته فلا يعلمهم غير الله وهم من أعينهم يُسترون۔ قومٌ أخفياء فلذالك هلك فى أمرهم الهالكون۔

ينظر إليهم عُميُ هذه الدنيا وهم يستهزءون۔ أهذا الذى بعثه الله بل هم قومٌ عمون. ولهم علامات يُعرفون بها ولا يعرفهم إلا المتفرّسون المتطهّرون.

فمن علاماتهم أنهم يُبعدون عن الدنيا، و يُضرب على الصماخ، لا تبقى الدنيا فى قلوبهم مثقال ذرّة و يكونون كالسحاب المنضاخ، و فى الله ينفقون. ولا يمسّهم وَسَخٌ ولا درنٌ منها و كل آنٍ من النور يُغسلون.

है और वे सहायता प्राप्त हो जाते हैं। इसी प्रकार दुआ के समय उन्हें कमज़ोरी के बाद शक्ति दी जाती है और उन पर संतोष प्रदान किया जाता है और फ़रिश्ते उन्हें सांत्वना देते हैं अत: वे हर दोष से सुरक्षित हो जाते हैं और अल्लाह की ओर बढ़ते हैं और उसकी प्रसन्नता में खो जाते हैं। अत: अल्लाह के अतिरिक्त उन्हें कोई नहीं जनता और वे लोगों कि निगाह से छुपा लिए जाते हैं। ये एक छुपी हुई क़ौम हैं। यही कारण है कि उनके मामले में नष्ट होने वाले नष्ट हो गए।

इस संसार के अंधे उन्हें देख कर उनसे हंसी ठट्ठा करते हैं (और कहते हैं कि) क्या इसको अल्लाह ने अवतरित किया है? असल बात यह है कि वे (हंसी ठट्ठा करने वाले) अंधे हैं। उन (अल्लाह का सानिध्य प्राप्त लोगों) के कुछ लक्षण होते हैं जिनसे वे पहचाने जाते हैं परन्तु उन्हें विवेकी और पवित्र लोग ही पहचानते हैं।

और उनका एक लक्षण यह है कि वे सांसारिक मोह-माया से दूर रखे जाते हैं और उन्हें सांसारिक विषयों के सुनने से वंचित कर दिया जाता है कि उनके दिलों में सांसारिक मोह-माया कण के बराबर भी नहीं रहती। वे बहुत अधिक बरसने वाले मेघ के समान होते हैं और अल्लाह की खातिर नि:संकोच ख़र्च करते हैं और उन्हें हर पल नूर (तेज) से स्नान कराया जाता है।

और उनका एक लक्षण यह है कि अल्लाह उनके दिलों में ऐसा आकर्षण रख देता है कि सृष्टि उनकी ओर खिंची चली आती है। उनकी अवस्था उस तेज़ श्रोत के

ومن علاماتهم أن الله يُودع قلوبهم الجذب، فالخلق إليهم يُجذبون، ويكونون كعينٍ نَضّاخةٍ باردٌ ماؤها فالخلق إليهم يُهرولُون. وينتضخ عليهم ماء وحى الرحمان فالناس من ماء هم يشربون.

ومن علاماتهم أنهم لا يعيشون كَهَبِيَّخٍ بل فى بحار البلاء يسبحون. ويتهيأ للنحر وريدهم وبه تُفْضخ عناقيدهم فالخلق منها يعصرون. ومن علاماتهم أنهم يُسَبِّحون لله ويسبحون فى ذكره كحوت رضراض، ويُقبلون عليه كل الاقبال ويصرخون كصرخة الحبلى عند المخاض، وبه يتلذّذون. ومن علاماتهم تزجية عيشة الدنيا ببذاذةٍ وتصالخٍ على الاغيار وصارخة المستصرخين، والذكر كغادرات الاو۔كار و به يَتضمّخُون.

ومن علاماتهم تنزّههم من كل صَنْخَةٍ وصلاخٍ، و كونهم فتيان

समान होती है जिसका पानी शीतल हो। अत: सृष्टि उनकी ओर भागती चली आती है। उन पर रहमान (ख़ुदा) की वह्यी का पानी छिड़का जाता है और लोग उनके उस पानी से पीते हैं।

और उनका एक लक्षण यह भी है कि वे ऐशो इशरत में पले हुए व्यक्ति जैसा जीवन व्यतीत नहीं करते बल्कि वे परीक्षा के समुद्रों में तैरते हैं। उनके हृदय की मुख्य रग कटने और निचोड़े जाने के लिए तैयार है और लोग उन्हें निचोड़ते हैं। उनका एक लक्षण यह है कि वे अल्लाह की प्रसंशा करते और उसकी याद में एक सर्वदा गतिशील मछली के समान तैरते हैं और पूर्णत: उसकी ओर ध्यान रखते हैं। वे (अल्लाह के समक्ष) इस प्रकार चिल्लाते हैं जिस प्रकार एक गर्भवती स्त्री प्रसव पीड़ा के समय चिल्लाती है और वे उसी में आनंद पाते हैं। और उनके लक्षणों में से सांसारिक जीवन को सादगी से और अल्लाह के अतिरिक्त अन्यों की बातों से अपने कानों को बंद करके और सहायता मांगने वालों के समान (ख़ुदा को) पुकार कर व्यतीत करना है और घोंसलों तक न पहुँच पाने वाले पक्षियों के समान (अल्लाह को) याद करना है और वे इस (याद) की सुगंध में बसे रहते हैं।

उनका एक लक्षण उनका हर प्रकार के मैल-कुचैल और खुजली से पवित्र होना है और वे मर्द-ए-मैदान होते हैं न कि चूड़ियाँ पहनने वालियों के समान क्योंकि वे अपने अस्तित्व से बुज़दिली के वस्त्र उतार देते हैं और वे सत्य का प्रचार करते हैं

المواطن لا كلابسات الفتاخ، بما يفسخون عنهم ثوب الجُبن ويُبلّغون الحق ولا يخافون.

ومن علاماتهم أنّهم يُربّون من بايعهم مخلصا تربية الإفراخ، ويُنجّونهم من الفخاخ، ويقومون ويسجدون لهم فى ليلةٍ قاخ، فيدركهم غيث الرحمة ويُرحَمون. ومن علاماتهم أنهم لا يُتَوَفَّوْن إلّا بعد ما أَفْرخ أمرهم واجتمعت زُمرهم وتبيّن الحق كالفَرُّوْخ، ومُلِئَ دلوهم ولم يبق ماؤه كالوَضُوخ، فظهروا بالجسد الممضوخ، وكَمَّلوا زينتهم كعتيدة العرائس لينظر الخلق إليهم فَيُحْمَدُون.

ومن علاماتهم أن الدنيا لا تُفَنِّخهُم بأفكارها، بَلْ هم يَفْفَخُونَها ويزيلون شفرة أوزارها وعلى الله يتوكّلون.

और डरते नहीं।

उनका एक लक्षण यह है कि जो लोग श्रद्धापूर्वक उनकी बैत (दीक्षा) में आते हैं वे उनकी परवरिश इस प्रकार करते हैं जिस प्रकार मुर्गी के बच्चों की परवरिश की जाती है और वे उन्हें शैतानी फन्दों से रिहा करते हैं और उनकी खातिर अँधेरी रातों में अल्लाह के सामने खड़े होते और सजदे करते हैं। इसके परिणामस्वरूप उन पर रहमत (कृपा) की वर्षा होती है और उन पर रहम किया जाता है। उनका एक लक्षण यह भी है कि उनकी उस समय तक मृत्यु नहीं होती जब तक उनका काम पूरा और परिणाम युक्त न हो जाए और उनकी जमाअतें एकत्र न हो जाएँ सत्य पूर्ण रूप से स्पष्ट न हो जाए और उनका डोल पूर्णत: भर दिया जाता है और उसके पानी में कोई कमी नहीं रहने दी जाती। अत: वे सुगन्धित शरीर के साथ प्रकट होते हैं और वे अपनी शोभा यों पूर्ण करते हैं जिस प्रकार दुल्हनों के श्रृंगारदान में सज्जा का हर सामान पूरा होता है ताकि सृष्टि उन्हें देखे जिसके परिणामस्वरूप उनकी प्रशंसा की जाती है।

उनका एक लक्षण यह है कि संसार उनको अपने तर्कों से पराजित नहीं कर सकता बल्कि वे उनका दमन करते हैं और उनके हथियारों की धार मंद कर देते हैं और अल्लाह पर भरोसा करते हैं।

और उनका एक लक्षण यह भी है कि वे अल्लाह तआला की प्रसन्नता पाने के लिए अँधेरी रातों में उपासना के लिए खड़े होते हैं और वे नेकियों (अच्छाइयों)

ومن علاماتهم أنّهم يقومون فی ليالٍ كاخٍ ابتغاء رضا الحضرة، ويزرعون بذر الحسنات ويتخذون تقواهم كوخًا لحفاظة تلك الزراعة، فيحصدون فی هذه وبعدها ما يزرعون.

ومن علاماتهم أنّهم لا يُقطّبون ولا يتشزّنون ولا يُصَعّرون للناس۔ ولايُخرّجون مرعى الهُدٰى ولا يكونون كأرضٍ مخرّجةٍ ، ولا يوَلّون الدُّبر عند العماس ولو مشوا فی العماس، ولا يفرّون ولو يُقتّلون۔ ومن علاماتهم أنّهم لايمطخون عِرضًا بغير الحق، ويُغمِدون اللسان ولا يمتلخون، ولا يُمّلخون بالباطل ويميخ غضبهم ولو يوقدون، وإذا بلغهم قول يؤذيهم لا يَنْبَخُونَ نَبُوخ العجين، ولا ينتخون الاستقامة بل عليها يُحافظون۔ ولا تجدهم كمُنَدّخٍ بل هم قوم غيَارٰی وعن أخلاق الله يستنسخون۔ و يستنسخون عن أخلاق نبيهم

का बीजारोपण करते और अपनी इस फसल की सुरक्षा के लिए अपने संयम को झोंपड़ा बनाते हैं और फिर इस संसार और परलोक में अपनी फसलों को काटते हैं।

उनका एक लक्षण यह भी है कि वे न तो अप्रसन्न होते हैं और न ही अभद्र व्यवहार करते हैं और न ही लोगों की उपेक्षा करते हैं और वे मार्ग दर्शन की चरागाह में सर्वत्र विचरण करते हैं और वे ऐसी भूमि के समान नहीं होते जिसमें कहीं पर हरियाली हो और कहीं न हो। वे कठिनाइयों का सामना करने पर पीठ नहीं फेरते चाहे उन्हें अंधेरों में चलना पड़े। वे भागते नहीं चाहे उनका वध ही कर दिया जाए। उनका एक लक्षण यह है कि वे अकारण किसी के सम्मान को गन्दा नहीं करते और वे अपनी ज़बान को मियान में रखते हैं और सोंतते नहीं। और वे व्यर्थ मामलों में नहीं पड़ते और उन्हें कितना भी भड़काया जाए फिर भी उनकी क्रोध अग्नि ठंडी ही रहती है और जब कोई कष्ट उन्हें पहुंचे तो वे ख़मीरे आटे के समान गुस्से से नहीं फूलते।

वे धैर्य का त्याग नहीं करते बल्कि वे इस पर आजीवन क़ायम रहते हैं और तू उन्हें अपमानित के समान नहीं पाएगा बल्कि वे एक स्वाभिमानी क़ौम हैं। वे अल्लाह के व्यवहार की नक़ल करते हैं। और वे अपने अवतार (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के व्यवहार की भी नक़ल करते हैं जैसे तुम एक लेख से दूसरा लेख नक़ल करते हो और वे इसी प्रकार ही करते हैं।

كَاِ كُتِتَابِكُمْ كتابا عن كتاب و كذالك يفعلون.

ومن علاماتهم أنّهم يشابهون عامّة الناس من جهة ظاهر الصورة، ويغايرونهم فى الجواهر المستورة، ويجعل الله لهم فرقانا كنفخاء رابية، فى بلادٍ خاوية، ويُخضّرون ويُثمرون. و كشجرة النهداء يرتفعون. ومن علاماتهم أنّهم يُعطون نُقاخ الاخلاق كلها من غير مزاج الرياء، ويُنوّخ الله ارض قلوبهم طروقةً لذالك الماء ويُعرفون بالرواءٍ ويُطيّبون ويُعطّرون.

ومن علاماتهم أنّهم يكونون كُمَشَائ الموطن ولا يكونون كرجل وَخْوَاخ، وتجذبهم القوة السماوية فيُزَكّون من الاوساخ، وَيَنْقَخُ أهواء هم ضربٌ من الله فيودّعُوْنها من النُّقاخ، فلا يمسّهم لوثٌ من الدنيا ولا يتألّمون بترـ كها ولا هم يتخزّبون.

इन (अल्लाह का सानिध्य प्राप्त लोगों) का एक लक्षण यह भी होता है कि वे ज़ाहिरी सूरत की दृष्टि से सामान्य मनुष्यों जैसे होते हैं परन्तु छुपी हुई प्रतिभाओं की दृष्टि से उनसे भिन्न होते हैं। अल्लाह उनके लिए एक विशिष्ट अंतर रख देता है जैसे उजड़े हुए घर में उठी हुई सतह स्पष्ट दिखाई पड़ती है। उन्हें हरा भरा और फलदार बना दिया जाता है और वे एक टीले पर उगे हुए वृक्ष के समान ऊँचे होते हैं। उनका एक लक्षण यह भी है कि उन्हें दिखावे की मिलावट के बिना विशुद्ध आचरण प्रदान किए जाते हैं। अल्लाह उनके हृदयों की भूमि को उस (आध्यात्मिक) जल को अपने अंदर समोने के लिए तैयार फरमाता है और वे चेहरे की प्रफुल्लता से पहचाने जाते हैं और उन्हें स्वच्छ, पवित्र और सुगन्धित किया जाता है।

उनका एक लक्षण यह भी है कि वे हर मैदान के धनी होते हैं और ढीले-ढाले भारी भरकम व्यक्ति के समान नहीं होते। आकाशीय शक्ति उन्हें खींचती है और वे हर प्रकार के मेल कुचैल से पाक व पवित्र किए जाते हैं। अल्लाह का एक ही वार उनके सांसारिक इच्छाओं का अंत कर देता है। अत: वे शुद्धता के कारण सांसारिक इच्छाओं को त्याग देते हैं। उन्हें संसार की कोई अपवित्रता नहीं छूती और वे उनका त्याग करने में किसी कष्ट और दु:ख का अनुभव नहीं करते।

उनका एक लक्षण यह भी है कि कठिनाइयों के आने के समय उनकी संगति धरती

ومن علاماتهم أنّ صحبتهم حرزٌ حافظ لاهل الارض من السماء عند نزول البلاء، ودواء لقساوةٍ تتولّد من أمانى الدنيا والاهواء، و كما يعلو الجلد درنٌ من قلّة التعهّد بالماء، كذالك تتّسخ القلوب من قلّة صحبة الاولياء، ويعلمها العالمون.

ومن علاماتهم أنّ صحبتهم تُحى القلوب، وتقلّل الذنوب، وتُقوّى الوَشَخَ اللغوب، فيثبت الناس بهم على المنهاج ولا يتقدّدون.

ومن علاماتهم أنّهم لا يناضلون أعداء هم كإبلٍ تواضَخَتْ، ولايكون وَضاخَهم إلا إذا الحرب عند ربّهم حُتِمت، ولا يجادلون إلا إذا الحقيقة ائتَلَخَتْ، ولا يؤذون ظالمًا بغير الإذن و إنْ يُمَوَّتُوا كشاةٍ عُبِطَتْ، وبأخلاق الله يتخلّقون. ومن علاماتهم أنّهم يتّقون الكذب والشحناء ،

पर रहने वालों के लिए आसमान से सुरक्षा कवच होता है और उस संगदिली की दवा बन जाती है जो सांसारिक तमन्नाओं और इच्छाओं के परिणामस्वरूप पैदा होती है और जिस प्रकार जल के कम प्रयोग से शरीर पर मैल जम जाती है उसी प्रकार ईश्वरीय लोगों की संगति की कमी हृदयों को मैला कर देती है और जानने वाले इस बात को ख़ूब जानते हैं।

उनके एक लक्षणों में से एक यह है कि उनकी संगत हृदयों को जीवन प्रदान करती, गुनाहों को कम करती, और कमज़ोर थके हुए लोगों को शक्ति देती है। इनकी संगति से लोग अपने मार्ग पर दृढ़ हो जाते हैं और वे आपसी मतभेद में नहीं पड़ते।

उनका एक लक्षण यह है कि उनका शत्रुओं से मुकाबला ऊंटों के आपस के मुक़ाबला के समान नहीं होता। वे (अल्लाह का सानिध्य प्राप्त लोग) केवल उस समय मुक़ाबला करते हैं जब उनके रब्ब के अनुसार लड़ाई करना निश्चित हो जाए और वे केवल उस समय मुक़ाबला करते हैं जब सच्चाई खलत-मल्त हो जाए। वे ख़ुदा की इच्छा के बिना किसी अत्याचारी को भी कष्ट नहीं पहुंचाते चाहे वे हृष्ट-पुष्ट जवान बकरी ज़िबह करने के समान मार दिए जाएँ। वे अल्लाह का व्यवहार अपनाते हैं। उनका एक लक्षण यह भी है कि वे झूठ, शत्रुता, सांसारिक इच्छाओं, दिखावे, गाली-गलौज और किसी को कष्ट देने से बचते हैं और वे अपने हाथ और पैरों को

والاهواء والرياء، والسبّ والإيذاء، ولا يُحرّكون يدًا ولا رِجْلًا إلا بأمر ربهم ولا يجترء ون. لا يُبالون لعنة الدنيا ويتّقون افتضاحًا هو عند ربهم، ويستغفرونه حين يُمسون وحين يُصبحون، وإذا اتّسخوا بغفلة فبذكره يَبْتَرِدُون. لباسهم التقوى فإيّاه يُبَيّضون، ويعافون أثوابًا جُرودًا وفى التُّقٰى يُجَرْهِدُون. ويتأبّدون من صحبة الاغيار ولايبرحون حضرة العزّة ولا يُفارقون، وما شجّعهم على ترك الدنيا وأهلها إلّا الوجه الذى له يَسْهدُون.

ومن علاماتهم أنّهم لا ينطقون بآبدةٍ ولا يَهْذَرُون، ويتّقون الهزل ولايستهزءون. ويزجّون عيشتهم محزونين، ويخافون حبط أعمالهم بقول يتفوّهون، أو بفعلٍ يفعلون. ولا يكون نطقهم إلّا

केवल और केवल अल्लाह के आदेशानुसार हरकत देते हैं और उसके विपरीत हिम्मत नहीं करते। वे सांसारिक लानत (धिक्कार) की कुछ भी परवाह नहीं करते और हर वह वस्तु जो अल्लाह की दृष्टि में निंदा और अपमान का कारण हो वे उससे घृणा करते हैं और सुबह व शाम अल्लाह से क्षमा याचना करते हैं और जब उन पर आलस्य की मैल चढ़ जाए तो अल्लाह की याद (के पानी से) धोते हैं। उनका वस्त्र संयम है और इसी को वे सफेद रखते हैं। वे मैले वस्त्रों से बचते हैं और संयम में तेज़ हैं। वे ग़ैरों (अल्लाह के अतिरिक्त) की संगति में भय का अनुभव करते हैं। वे अल्लाह तआला की दरबार में धुनी रमाए रहते हैं और उससे जुदा नहीं होते। संसार और संसार वालों को त्याग देने पर जो बात उनको दिलेर करती है वह केवल और केवल उस हस्ती को प्रसन्न करने की इच्छा है जिसके लिए वे सर्वदा जागते रहते हैं।

उनका एक लक्षण यह है कि वे झूठ और व्यर्थ की बात नहीं करते, मस्खरेपन से परहेज़ करते हैं और हंसी-ठट्ठा नहीं करते। वे उदासीन जीवन व्यतीत करते हैं और इस बात से डरते रहते हैं कि कहीं उनके मुंह से निकली हुई कोई बात और उनका कोई कर्म उनके अच्छे कर्मों को बर्बाद न कर दे। उनका वार्तालाप केवल दृढ़ (बुनियाद) पर आधारित होता है और वे व्यर्थ की बातें नहीं करते। उनका एक लक्षण यह भी है कि तू उन्हें देखता है कि अल्लाह उन्हें असमर्थता के पश्चात् सामर्थ्य और धनहीनता

كبناءٍ مؤجّد ولا يَخطلون. ومن علاماتهم أنّك تراهم آجدهم الله بعد ضعفٍ وأوجدهم بعد فقر وهم لا يُترَكون. ومن علاماتهم أنّهم يرون إدَدًا و اَوَدًا من أيدى الناس ويتراء ى الياس من كل طرفٍ ثم يُدركهم الله ويُعصمون، وإذا نزلت بهم آفة رزقوا من عند الله صبرًا يُعجب الملا ئكة ثم ينزل الفضل فيُخلَّصون.

ومن علاماتهم أنّهم لا يتّكئون على طِرفٍ ولا تالد ولا ابن ولا والدٍ وعلى الله ربهم يتّكئون. ولا يسرّهم إلّا مستودعاته من المعارف وكل آنٍ منها يُرزَقون. ويسأمون تكاليف فى سبل الله مُتَنَشِّطِين ولا يَتَجَشَّمون. ويشكرون لله ولو لم يُعطوا ثَعدًا ولا مَعْدًا وبحب الله يَفْرحُون. ذالك بأنهم يُعطون معارف كَثَفَافِيدَ، ويُرزَقُون لها مقاليدَ،

के पश्चात् धन-दौलत प्रदान करता है और वे लोग असहाय नहीं छोड़े जाते। उनका एक लक्षण यह भी है कि वे लोगों के हाथों से हर प्रकार का कष्ट और अत्याचार पाते हैं और हर ओर से उन्हें निराशा दिखाई देती है फिर अल्लाह तआला उन्हें थाम लेता है और वे बचाए जाते हैं। जब उन पर कोई संकट आता है तो अल्लाह की ओर से उन्हें ऐसा धेर्य प्रदान किया जाता है जो फरिश्तों को हैरान कर देता है फिर फज़्ल उतरता है तो वे संकटों से मुक्त किए जाते हैं।

उनका एक लक्षण यह है कि वे स्वयं कमाए हुए माल और विरासत में मिले हुए माल और औलाद एवं बाप पर भरोसा नहीं करते बल्कि अपने रब्ब अल्लाह का ही सहारा लेते हैं और जो मा'रिफ (आध्यात्मिक ज्ञान) उन्हें दिए गए हैं उनके अतिरिक्त उन्हें अन्य कोई चीज़ आनन्द नहीं देती और ये उनको प्रति पल प्रदान किए जाते हैं। वे अल्लाह के मार्गों में कष्ट को प्रसन्नता पूर्वक सहन करते हैं और उसमें वे किसी कष्ट का अनुभव नहीं करते और यदि उनको कुछ भी न दिया जाए तो फिर भी अल्लाह का धन्यवाद करते हैं। वे अल्लाह की मुहब्बत में सुख पाते हैं और यह इसलिए कि उन्हें ऐसे मा'रिफ प्रदान किए जाते हैं जैसे कि वे एक दूसरे के ऊपर रखी हुई सफेद बालियाँ हैं और उन्हें मा;रिफ के ख़ज़ाने दिए जाते हैं। अत: वे मा'रिफ के हर द्वार से प्रवेश करते हैं। अल्लाह उन्हें बहती नदियों जैसे हृदय प्रदान करता है न कि उस

فمن کل باب یدخلون۔ و یُعطیهم الله قلوبًا کأنهارٍ تتفَجَّر، لا کثَمَدٍ یرکد فی الرکایا و یتکدّر ولا ینقطع المدد و فی کل آنٍ یُنصرون.

ومن علاماتهم أنّهم یُعطون رُعْبًا من ربهم فتفرّ العِدا من مباراتهم، ویخفون وینکرون أنفسهم عند ملاقاتهم ویهربون۔ ویتستّرون کمثل رجل جُدِعَت ثندؤته للجریمة فیعاف اللُّقیان لوصمة الروثة، هٰذا رعب من الله لقومٍ له یکونون۔ ومن علاماتهم أنّهم قومٌ یسعون فی سُبل الله کثوهدٍ فَوْهَدٍ وإذا قاموا لأوامره فهم ینشطون، ولا ترٰی فیهم کسلًا ولا وهنًا ولا هم یتردّدُون، وتُشرق الأرض بنورهم ولا یجهل مقامهم إلاالمتجاهلون، ولا ینکرونهم أعداؤهم بل هم

थोड़े से जल के समान जो कुँए में ठहरा रहता है और मैला हो जाता है। अल्लाह की सहायता इन (सानिध्य प्राप्त लोगों) से दूर नहीं होती और उनकी हर समय सहायता की जाती है।

उनका एक लक्षण यह है कि उन्हें उनके रब्ब की ओर से रौब दिया जाता है अतः शत्रु उनका मुक़ाबला करने से भागते हैं और छुपते फिरते हैं और उनसे मिलने के समय स्वयं को अजनबी बना लेते हैं और भाग खड़े होते हैं वे इस प्रकार छुपते हैं जिस तरह वह व्यक्ति छुपता है जिसकी नाक किसी जुर्म के कारण काट दी गई हो और वह लज्जा को छुपाने के लिए लोगों से मिलने से बचे, यह वह रौब है जो अल्लाह की ओर से उन लोगों को मिलता है जो उसी के हो जाते हैं। उनका एक लक्षण यह है कि वे ऐसे लोग हैं कि जो अल्लाह के मार्ग में इस प्रकार प्रयत्न करते हैं जैसे एक उठती जवानी वाला गठीले शरीर का नौजवान प्रयत्न करता है और जब वे अल्लाह के आदेशों का पालन करने के लिए खड़े होते हैं तो फुर्ती और प्रसन्नता पूर्वक करते हैं और तू उनमें किसी प्रकार की सुस्ती और कमज़ोरी नहीं पाएगा और न ही वे असमंजस में पड़ते हैं। धरती उनके नूर से प्रकाशमान हो जाती है और उनके व्यक्तित्व से सिवाए ऐसे लोगों के जो जानबूझ कर अनजान बनते हैं कोई अपरिचित नहीं होता और उनके शत्रु उन्हें पहचानते हैं परन्तु जानबूझ कर इन्कार करते हैं।

يجحدو ن.

ومن علاماتهم أنّهم قوم يقربهم جُدّة فيوض الله فكل ساعة منها يغترفون، ويسارعون إليه كأجاليد ولا يمسّهم من لغوب ولا يضعفون، و إذا أخذهم قَبْضٌ تألّموا ولا كجلدات المخاض، وترٰى قلوبهم كَأَرْضٍ مَجْلُودَةٍ من علومٍ يُفَاض، ومن علاماتهم أنهم إذا مرّوا برجلٍ جَلَنْدَدٍ يمرّون وهم يستغفرون، ولا تزدرى أعينهم أحدًا من التقوٰى ولاهم يستكبرون. يعيشون كغريبٍ ويرضون بنَكَدٍ ويقنعون علٰى جُهدٍ وجَندٍ، أولئك قومٌ آثروا ربّهم ورجالٌ مُسَدِّدُون.

ومن علاماتهم أنّهم قوم لا يجهد عيشهم ولا يُعذّبون بمعيشةٍ

उनका एक लक्षण यह भी है कि वे ऐसे लोग हैं जिनके निकट अल्लाह के फैज़ (दानशीलता) की नदी होती है और वे उस से हर क्षण चुल्लू भर-भर कर पीते हैं और वे हृष्ट-पुष्ट मनुष्यों की भांति उसकी ओर तेज़ गति से दौड़ते हैं और उन्हें कोई थकान नहीं होती और न वे कमज़ोर होते हैं और जब उन पर कब्ज़ की हालत (रूहानियत में कमी) आती है तो हृष्ट-पुष्ट ऊंटनी के प्रसव के समान नहीं बल्कि उससे बहुत अधिक कष्ट का अनुभव करते हैं, तू उनके दिलों को बर्फ से ढकी हुई भूमि के समान देखता है जो ज्ञान से बह पड़ते हैं। उनका एक लक्षण यह भी है कि जब वे किसी दुराचारी व्यक्ति के पास से गुज़रते हैं तो वे क्षमा मांगते हुए गुज़रते हैं और संयम के कारण उनकी आँखें किसी को घृणा योग्य नहीं देखतीं और न वे अहंकार से काम लेते हैं। वे एक परदेसी के समान जीवन व्यतीत करते हैं और कम पर संतुष्ट हो जाते हैं और संघर्ष और कठिनाइयों पर स्थितप्रज्ञ रहते हैं। यही वे लोग हैं जिन्होंने ने अपने रब्ब को प्राथमिकता दी है और ऐसे मर्द जो (मियानारव) मध्यम मार्गी हैं।

उनका एक लक्षण यह भी है कि ये ऐसे लोग हैं जिनका जीवन परिश्रम युक्त नहीं होता और न ही उन्हें रोज़गार की कठिनाइयों के अज़ाब में डाला जाता है और उन्हें वहां से दिया जाता हैं जहाँ से उनकी कल्पनाओं में भी नहीं होता। अल्लाह उन्हें मा'रिफ (आध्यात्मिक ज्ञान) प्रदान करता है जिनसे वे प्रसन्न हो जाते हैं। उनका एक

ضَنْكٍ و يُرزقون من حيث لا يحتسبون، و يجيدهم الله معارف فهم بها يفرحون. ومن علاماتهم أنّهم لا يرضون ببضاعةٍ مُزجاةٍ وقليل مما يعملون، وإذا ركبوا أجْوَدُوا وإذا عملوا كمّلوا، ويتَجَنّبون ثَعْط العمل وخداجه، ولكشف الحجب يخبطون، وإذا عادوا أو أحبّوا أجهدوا ولا ينافقون. ومن علاماتهم أنّ قلوبهم أرضٌ جِيدَتْ، ولهم فراسةٌ زيدَت، يُعصمون من ضلالٍ وفسادٍ، وما وقعوا في أبي جَاد، ويُبعدون من كُلّ دَجْوٍ و يُنَوّرون.

ومن علاماتهم أنّ رقابهم تحمل أعباءَ أمانات الله أكثر من كل حامل أمانةٍ، ثم لا تتأوّدُ رقابهم بل تجعلهم كامرأةٍ جَيِّدانةٍ، ويتراءى منه حسن الاستقامة، ويُرَى كالكرامة، فعند الله والناس يُكرَمُون. ومن علاماتهم أنّهم يُوفّقون لارتداعهم عن كل أمرٍ حَدَدٍ، ويُعْطَوْنَ أَسِدَّةً لدفع الوساوس ويردف

लक्षण यह भी है कि वे थोड़ी पूँजी (मा'रिफ) और थोड़े कर्म से संतुष्ट नहीं होते। जब वे सवारी करें तो अच्छी सवारी करते हैं और जब काम करें तो पूरा करते हैं। वे बुरे और अपूर्ण काम से बचते हैं। वे पर्दे हटाने के लिए प्रयत्न करते हैं और जब किसी से शत्रुता करें या मित्रता करें तो पूर्ण गंभीरता से करते हैं और मुनाफ़िक़त नहीं करते। उनका एक लक्षण यह भी है कि उनके हृदय ऐसी भूमि हैं जिस पर रहमत की बारिश ख़ूब बरसी और उनका विवेक ऐसा है जो अधिक से भी बहुत अधिक है। वे हर प्रकार के कुमार्ग और फसाद से बचाए जाते हैं। वे व्यर्थ की बातों में नहीं पड़ते। वे अन्धकार से दूर रखे जाते हैं और (ईश्वरीय प्रकाश से) प्रकाशमान किए जाते हैं।

उनका एक लक्षण यह भी है कि उनकी गर्दनें अमानत का बोझ उठाने वाले हर व्यक्ति से अधिक अल्लाह की अमानतों का बोझ उठाए हुए हैं और उनकी गर्दनें इस बोझ से झुकती नहीं बल्कि वह (अमानत का बोझ) उन्हें एक सुन्दर लम्बी गर्दन वाली स्त्री के समान शोभायमान कर देता है और उससे सौन्दर्य का ठहराव झलकता है जो एक करामत ही दिखाई देता है और वे अल्लाह के समक्ष अन्य लोगों में भी सम्मान दिए जाते हैं। उनका एक लक्षण यह भी है कि प्रत्येक वर्जित कार्य से दूर रहने के कारण उन्हें अच्छाई का सामर्थ्य दिया जाता है और उन्हें बुरे विचारों के दूर करने के लिए दृढ़ता प्रदान की जाती है और उनके लिए एक के बाद एक सहायता आती है इसलिए कि वे अद्वितीय लोग होते हैं और वे अल्लाह के लिए

لهم مددٌ خلف مَدَدٍ، ذالك بأنهم قومٌ مُنْحرِدون، و إلى الله مُنْقَطِعون. يُجَرّدون أنفسهم ويَسْعون إلى الله وُحْدانا، ولا ترٰى مثلهم حَرْدانًا، وتسفت حَرافدهُم إلٰى حِبِّهم ويُقدّمون على كل شيء لُقيانًا، ومن خوف الهجر يذوبون. الحكمة تنبت من حَرْقدتهم، والفراسة تتلالأ من جَبهتهم، و كَالْقُلَيْذَمِ يفيضون.

ومن علاماتهم أنّهم يتدهكمون لله ولا يُحْجِمُون، ولا يوجد لهم حَتْنٌ فى ذالك وهم فيه يتفرّدون. ولا يُضاهيهم فردٌ من المحجوبين ولو يحرصون، ولولا حتامتهم لهلكت الناس، ولولا احتدامهم لبردت محبّة الله من قلوب الاناس، ولحفدوا إلى الخنّاس، ولقطع الله عَسْب العارفين ولهُدِمِ الإيمان من الاساس، فذالك فضل الله على خلقه أنهم يُبْعَثون. و إنّ

सब कुछ त्याग देते और स्वयं को (संसार से) अलग-थलग करते हैं और अल्लाह की ओर अकेले-अकेले दौड़ पड़ते हैं। तू उन जैसा कोई एकांतवासी नहीं पाएगा। उनके (दिलों के) उत्तम प्रजाति के ऊँट अपने प्रियतम की ओर तेज़ तेज़ दौड़े जाते हैं और वे (अल्लाह से) मिलने को हर चीज़ पर प्राथमिकता देते हैं। वे जुदाई के अनुमान से पिघल रहे रहे हैं। बुद्धिमत्ता उनकी ज़बान की जड़ से फूटती और विवेक उनके मस्तक पर चमकता है और वे अधिक पानी वाले कुएँ के समान लाभ पहुंचाते हैं।

उनका एक लक्षण यह भी है कि वे अल्लाह की खातिर ख़तरों में घुस जाते हैं और रुकते नहीं। इस मामले में उनका कोई उदाहरण नहीं और वे इसमें पूर्णत: अद्वितीय हैं और महजूब लोगों में से कोई एक व्यक्ति भी उनसे समरूपता नहीं रखता चाहे वे इसके लोभी हों। यदि उनका अवशेष न होता तो लोग नष्ट हो जाते और यदि उनका उत्साह न होता तो लोगों के दिलों से अल्लाह की मुहब्बत ठण्डी पड़ जाती और वे शैतान की ओर दौड़ पड़ते और अल्लाह अवश्य ब्रह्मज्ञानियों की वंश परंपरा को समाप्त कर देता और ईमान को उसकी बुनियाद से गिरा देता। अत: यह अल्लाह का अपनी सृष्टि पर महान उपकार है कि ये (सानिध्य प्राप्त लोग) अवतरित किए जाते हैं। और निस्संदेह समस्त लोग पथरीली भूमि के समान हैं और ये उनका सुधार करते हैं और जिसने उन्हें खो दिया वह अनाथ के समान है और जिसने प्राकृतिक स्वभाव

الناس كُلّهم كَعِلّبٍ و يُصلحهم هؤلاء، و من فقدهم فهو كَيَتِيمٍ، و من فقد الفطرة فهو كعَجِيّ، و من فقدهما فهو كلطيم و من الاشقياء ، فطوبٰى للذين يُعطون الكلّ و يجمعون.

ومن علاماتهم أنّهم يجتنبون الحسد الذى يشابه الحَسْدَل، ذالك بأنهم يتمصّخون من روحٍ من ربهم فتُشرَحُ صدُورُهم و يرفَعون إلى العُلٰى فلا يهوون، و يعصمون من أَسفل و يُحفَظون. و من علاماتهم أنّهم يُبعَثون فى وقت يكون الناس كاليتامى ولا يُواسِيُّهم أحدٌ لاحتباكهم، و يهلك الناس بموت الكفر والفسق و يُغَبّبُ علماء السوء عن هلاكهم ولا يبالون، و كل ذالك يظهر على عدّانهم و به يُعرفون. فإذا رأيتم أن الناس يَغتهبون و يكذبون و يشركون بالله

को खो दिया वह ऐसे बच्चे के समान है जिसकी माँ न हो और जिसने उन दोनों को खो दिया वह ऐसे व्यक्ति के समान है जिसके माँ बाप (दोनों) मर गए हों और वह दुर्भाग्यशालियों में से है। अत: बधाई हो उन्हें जिन्हें समस्त सौभाग्य दिए जाएं और वे (उनको) एकत्रित कर लेते हैं।

उनका एक लक्षण यह भी है कि वे चिच्ड़ियों के समान ईर्ष्या नहीं करते क्योंकि वे अपने रब्ब की ओर से रूह (पवित्र आत्मा) से हिस्सा लेते हैं जिसके परिणामस्वरुप उन्हें आत्मसंतुष्टि प्राप्त हो जाती है और उन्हें आध्यात्मिक उन्नति प्रदान की जाती है। अत: वे अवनति की ओर नहीं गिरते और वे अवनति से बचाए जाते हैं और सुरक्षित किए जाते हैं। उनका एक लक्षण यह भी है कि वे उस समय अवतरित किए जाते हैं जब लोगों की हालत अनाथों जैसी हो जाती है और कोई उनकी हालतों के सुधार के लिए उनसे सहानुभूति नहीं करता और लोग पाप और गुनाहों की मौत मर रहे होते हैं और आचरणहीन उलेमा उन लोगों की तबाही से अनभिज्ञ रहते हैं और कोई परवाह नहीं करते और यह सब कुछ उनकी उपस्थिति में प्रकट होता है और इसी से वे पहचाने जाते हैं। अत: जब तुम यह देखो कि लोग अन्धकार में पड़े हुए हैं, झूठ बोलते हैं, अल्लाह का भागी ठहराते हैं, पापों में लिप्त हैं, व्यभिचार करते हैं और इस्लाम धर्म (धर्म के मार्ग) का त्याग कर रहे हैं तथा कुमार्ग को नहीं छोड़ते तो समझ लो

ويفسقون ويزنون ويخرجون من الدين ولا ينتهون، فاعلموا أن وقت بعث رسولٍ أتٰى، وجاء وقت التذكير لمن نسى الهدٰى، فطوبٰى لقوم يسمعون.

ومن علاماتهم أنّ القوم إذا اتخذوا سُبُلهم شَذَرَ مَذَرَ فهناك هم يُرسلون، والذين يمئرون عليهم يُعاديهم الله فينخرون ويُطردون من الحضرة ويُمترون، وإن لم ينتهوا فيُدمّرون ويُهلكون. ويجعل الله جذبًا فى قلوب أوليائه فيَكْفَتُونَ الناس وإلى أنفسهم يجلبون، ولو لم يتبعهم الناس لتبعتهم الحجارة والمدارة، وجُعلت أناسًا فللحق يشهدون.

ومن علاماتهم أنّهم قومٌ لهم عُلقٌ شديدة بالله لا تُثقّب فيها مدريّةٌ ولا سمهريةٌ، ولا سيف جائبٌ ولا سهمٌ صائبٌ، ولا يموتون إلا وهم مسلمون.

कि अवतार के आने का समय आ गया और हिदायत (सत्य के पथ) को भूल जाने वाले व्यक्ति को उपदेश करने का समय आ गया। अत: बधाई हो उन लोगों को जो (अल्लाह की बातों को) सावधानी पूर्वक सुनते हैं।

उनका एक लक्षण यह भी है कि जब लोग अपने मार्ग अलग अलग कर लेते हैं तब वे भेजे जाते हैं और जो उनसे शत्रुता और द्वेष रखते हैं अल्लाह उनका दुश्मन बन जाता है और उनको धक्के दिए जाते और अल्लाह के दरबार से उनका बहिष्कार कर दिया जाता है और वे काटे जाते हैं और यदि वे फिर भी सुधार न करें तो उनको पूर्णत: नष्ट कर दिया जाता है। अल्लाह अपने विशेष भक्तों के हृदयों में आकर्षण रख देता है जिससे वे लोगों को स्वयं में बसा लेते और अपनी ओर खींच लेते हैं और यदि लोग उनका अनुकरण न करें तो पत्थर और ढेले उनका अनुकरण करेंगे और उनको इन्सान बना दिया जाएगा अत: वे सत्य के लिए गवाही देंगे।

उनका एक लक्षण यह है कि ऐसे लोग हैं जिनके अल्लाह के साथ ऐसे घनिष्ठ सबंध होते हैं जिन में कोई बरछी, भाला, तलवार चलाने वाला और कोई निशाने पर लगने वाला तीर कोई बाधा नहीं डाल सकता। इन सानिध्य प्राप्त लोगों पर आज्ञाकारी होने की अवस्था में मृत्यु आती है। उनका एक लक्षण यह है कि वे हर उस वस्तु से जो उन्हें दोषी करने वाली हो अपने दिल की शराफत के कारण बचते हैं और वे

ومن علاماتهم أنّهم يتكرّمون عمّا يشينهم، ويُكْرَمون بكل ما يزينهم، ويُبعَدون عن الشائنات، ويُؤَيّدون بالآيات، وتقوم لهم السماء والارض للشهادات، وتبكيان عليهم عند الوفاة، و كذالك يُبّجَلون. ومن علاماتهم أنّ اللّٰه يجعل بركاتٍ فى بيوتهم وثيابهم وفى عمائمهم وقُمصهم وجلبابهم وفى شفاههم وأيديهم واصلابهم، و كذالك فى جميع آرابهم وفى حتامتهم والثمد الذى يبقى بعد تشرابهم، ويكون معهم عند هَوْنهم و عند اجلعبابهم، ويُجيبُ دعواتهم فلا يخطيئُ ما يُرمٰى من جعابهم، ولا يمسّهم فقرٌ ويُدخل بأيديه مالًا فى جرابهم، ويُكرمهم عند مَشِيبِهِم أَزيَدَ مما كان يُكرم فى عدّانِ شبابهم، ويخلق فيهم جذبًا قويًّا ويُرجِع خلقًا كثيرًا إلى جنابهم، وإذا سألوا قام لجوابهم،

हर उस वस्तु का जो उन्हें सौन्दर्य प्रदान करे, सम्मान करते हैं और समस्त दागदार करने वाले कर्मों से दूर रहते हैं। उनकी चमत्कारों के द्वारा सहायता की जाती है तथा आकाश और धरती उनकी गवाहियों के लिए सीधे खड़े हो जाते हैं और उनकी मृत्यु पर रोते हैं और इस प्रकार उनकी महानता और सम्मान किया जाता है। उनका एक लक्षण यह है कि अल्लाह उनके घरों, वस्त्रों, पगड़ियों, कमीज़ों, चादरों होठों, हाथों और पीठों में और इसी प्रकार उनके समस्त शारीरिक अंगों में, उनके बचे हुए टुकड़ों और उस पानी में जो उनके पीने के पश्चात् शेष रह जाता है, बरकत रख देता है और उनकी कमज़ोरी के समय और उस समय जब वे गिरे पड़े हों वह उनके साथ होता है और वह उनकी दुआएँ स्वीकार करता है। उनके तरकश से चलाया हुआ बाण कभी नहीं चूकता। दरिद्रता कभी उनके पास नहीं आती। स्वयं ख़ुदा अपने हाथों से उनकी थैली में माल डालता है और बुढ़ापे में उनकी भरपूर जवानी के सम्मान को बढ़ा कर उनको सम्मानित करता है। उनमे एक शक्तिशाली आकर्षण उत्पन्न कर देता है और वह बहुत से लोगों को उनके समक्ष लाता है और जब उनसे कोई प्रश्न किया जाए तो वह उसका उत्तर देने के लिए खड़ा हो जाता है और वह उनकी सहायता करता है ताकि वे उसकी मुहब्बत के द्वारा पहचाने जाएँ और ताकि (लोगों के) हृदय उनकी मुहब्बत पाने के लिए खोल दिए जाएँ। उनका क्रोध ख़ुदा के क्रोध को भड़कता है

ويُعينهم ليُعرفوا بتحابه ولتنشرح الصدور لاستحبابهم، ويوغره تحريبهم، ويُهيّج رُحمه اضطرابهم، فسبحان الذى يرفع عباده الذين إليه يَتَبَتَّلُوْن.

ومن علاماتهم أنّهم يحسبون ربهم خزينةً لا تنفد، وعينًا لا تركد، وحفيظًا لا يرقد، وخفيرًا لا يَعْنُدُ، ومِلِكًا لا يُفْرِدُ، وحبيبًا لا يُفقَدُ، ومَخْدومًا لا يَكْنَد، وعَليًّا لا يَلبُدُ، ومحيطًا لا يمكد، وحيًّا لاينكد، وقويًّا لا يُهوِّد، وديَّانًا يرسل الرسل ويُوفِد، ويرون أن الخلق خُلقوا من كلمه وإليه يَرجعون. ومن علاماتهم أنّهم يبتلون ذات المرار، ثم يُنجّيهم ربّهم ويُنصرون، وما كان ابتلاؤهم إلّا ليظهر فضل الله عليهم وليعلم الجاهلون.

और उनकी व्याकुलता उसकी रहमत को जोश में लाती है। अत: पवित्र है वह जो अपने उन बन्दों को बुलंदी प्रदान करता है जो उसी के हो जाते हैं।

उनका एक लक्षण यह है कि वे अपने रब्ब को ऐसा ख़ज़ाना समझते हैं जो कभी समाप्त नहीं होता और ऐसा श्रोत जो नहीं रुकता और ऐसा संरक्षक जो नहीं सोता और ऐसा निगरान जो कर्तव्य के निर्वाह से पीछे नहीं हटता और वह ऐसा बादशाह है जो अकेला नहीं छोड़ता, ऐसा प्रियतम है जो खोया नहीं जाता और ऐसा स्वामी जो नाक़द्री (अपमान) नहीं करता और ऐसा ऊंची शान वाला जिसका कोई पतन नहीं, और ऐसा समुद्र जिसका पानी कम नहीं होता और ऐसा जीवित है कि उसे कोई दु:ख नहीं और ऐसा शक्तिशाली है जिसमें कोई कमज़ोरी नहीं और ऐसा स्वामी है जो रसूल (अवतार) भेजता और प्रतिनिधित्व का सौभाग्य प्रदान करता है। वे यह विश्वास रखते हैं कि यह समस्त सृष्टि उसके कलिमात (आदेश) से पैदा की गई है और वह उसी की ओर लौट कर जाएगी। उनका एक लक्षण यह है कि उनकी कई बार परीक्षा ली जाती है फिर उनका रब्ब उन्हें बचा लेता है और उनकी सहायता की जाती है। उनकी इस परीक्षा का उद्देश्य केवल यह होता है कि ताकि उन पर अल्लाह की कृपा प्रकट हो और मूर्ख लोग जान लें। उनका एक लक्षण यह है कि वे पवित्र शरबत को चुस्कियां ले ले कर पीते हैं। उनके दिल नूर (आध्यात्मिक प्रकाश) से भर दिए जाते हैं। तू उनके

ومن علاماتهم أنّهم يتمزّزُون من شرابٍ طهور، وتُمْلَأُ قلوبهم من نور، وترٰى فى وجههم أثر إكرام الله وحُبورٍ، ومن أيدى الله يُنَعّمون.

ومن علاماتهم أنّهم بَيِّن المَزْأَرَة يقتحمون موامى لا يقتحمها إلا رجل مزير، وينحرون نفوسهم ابتغاء مرضات الله القدير، ولا تجدهم على ما فعلوا كحسير، بل يوقنون أنهم يكنزون أموالهم فى السماء، وهناك لا يسرق سارق ولا يُنْهبون. ومن علاماتهم أنّهم قوم كالمستفشار، المعتصر بأيدى الغفّار، يتلقّون من ربهم من غير وساطة الاغيار، ويُعطَون ما يشتهون. أو كالمشيرة التى يمتشرها الراعى بمحجنه لا كَتَفَرَاتٍ تتساقط من غير تضمّنه وينظرون إلٰى ربّهم ولا يُحْجَبون.

ومن علاماتهم أنّهم يسعون حق السعى فى الله ولا زمام ولا

चहरों पर अल्लाह के सम्मान और प्रसन्नता के लक्षण देखेगा और अल्लाह की ओर से उन्हें हर प्रकार समृद्धि प्रदान की जाती है।

उनका एक लक्षण यह है कि वे अत्यंत साहसी होते हैं जो जंगलों में घुस जाते हैं जहाँ केवल बहादुर ही घुस सकता है। वे अपनी प्राणों को सर्व शक्तिमान ख़ुदा की रज़ा (ख़ुशी) प्राप्त करने के लिए क़ुरबान कर देते हैं। तू उन्हें अपने किए पर हसरत का इज़हार करने वाला नहीं पाएगा बल्कि वे विश्वास रखते हैं कि वे अपने माल आसमान पर जमा कर रहे हैं और वहां न तो कोई चोर चोरी कर सकता है और न ही उनसे कोई छीन सकता है। उनका एक लक्षण यह है कि ये लोग अत्यंत क्षमावान ख़ुदा के हाथ से निचोड़े हुए शहद के समान हैं और वे दूसरों के माध्यम के बिना केवल अपने रब्ब से ज्ञान प्राप्त करते हैं और जो चाहते हैं वह उन्हें दिया जाता है या वे शाखों वाले वृक्ष के समान होते हैं जिसे गड़रिया अपनी लग्घी से झुकाता है न कि वृक्ष के उन पत्तों के समान जो गड़रिया के प्रयत्न के बिना स्वयं ही गिरते हैं और उनकी दृष्टि अपने रब्ब पर लगी रहती है और वे पर्दे में नहीं रखे जाते।

उनका एक लक्षण यह है कि वे अल्लाह को पाने के लिए बाग दौड़ के बग़ैर (बिना रोक-टोक) पूर्ण प्रयत्न करते हैं। उनके दिलों में (अल्लाह की मुहब्बत की) आग भड़कती रहती है और वे इस आग को भड़काए रखते हैं और इस (मुहब्बत

خزام، وتحتدم نار فی قلوبھم فیَقْتَدون الضرام، ویکابدون بھا الامور العظام، ویفعلون بقوة نارھم أفعالًا تخرق العادة وتعجب الانام، وتُحیّر العقول والافھام، وتری الحَذْم فی أعمالھم ولا کسل ولا اِلْحام، فإن غَرَوْتَ أیھا السامع فلستَ من الذین یُبصرون. ومن علاماتھم أنّھم لا یُعَذّبون، ویُجعَلُ لھم الإیلام کالإنعام فلا یتألّمون. وتُفتح لھم أبواب الرحمة ویرزقون من حیث لَا یحتسبون، ذالك بأنّ لھم زُلفٰی ومقام فی حرم الجلیل الجبّار، فکیف یُلقی الحِرمیّ فی النار، و کیف یُعذّبون۔ ولا یُعذّب أولادھم بل أولاد أولادھم و کل واحد منھم یُرحمون، ویجعل اللّٰه برکةً فی نسلھم فکل یومٍ یزیدون۔ ونحن نُخْبرُ بالعلّة التی أوجب اللّٰه من أجلھا ھذه المراعات، وأراد أن

की आग) से कठिनाई में पड़ कर अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य करते हैं और इस आग की शक्ति से ऐसे विलक्षण कार्य करते हैं जो सृष्टि को आश्चर्य चकित करते हैं और बुद्धि तथा समझ हैरान रह जाती है और तू उनके कार्यों में फुर्ती देखेगा न कि सुस्ती और अड़ियलपन। हे सुनने वाले! यदि तू आश्चर्य करे तो (इसका अर्थ यह होगा कि) तू विवेकवानों में से नहीं। उनका एक लक्षण यह है कि उन्हें दण्ड नहीं दिया जाता और उनके दु:ख दर्द पुरस्कार के समान बना दिया जाता है। उनके लिए रहमत के द्वार खोल दिए जाते हैं और उनको ऐसे स्थानों से आवश्यक सामग्री प्रदान की जाती है जो उनकी कल्पना से भी परे होता है और यह इसलिए होता है कि उन्हें महान प्रतापी और जब्बार ख़ुदा की दरगाह में सामीप्य और (प्रतिष्ठित) स्थान प्राप्त होता है। अत: (ख़ुदा के) दरबार से जुड़े हुए को आग में कैसे डाला जा सकता है और कैसे उनको दण्ड दिया जा सकता है और उनकी संतान बल्कि उनकी संतान की संतान को भी दण्ड नहीं दिया जाता और उन में से प्रत्येक पर दया की जाती है और अल्लाह उनके वंश में बरकत रख देता है अत: वे बरकतों में प्रति दिन बढ़ते हैं और हम वह कारण बताते हैं जिसके होते हुए अल्लाह उनके लिए ये समस्त सुविधाएँ अनिवार्य कर देता है और वह चाहता है कि उनके पुत्रों और पुत्रों के पुत्रों को बढ़ोतरी प्रदान करे और उन्हें विश्राम दे और समस्त कष्ट उनसे दूर रहें और कारण यह है कि वे

يُكثر أبناء هم وأبناء أبنائهم ويريحهم ويجتنب الإعنات فكان ذالك بأنّهُمْ يبذلون نفوسهم لوجه الله ويحبّون أن يموتوا فى سبيله ولا يريدون الحياة، فاقتضى كرم الله أن يردّ إليهم ما آتوا مع زيادة من عنده، ويوصل ما كانوا يحسمون. وكذالك جرت سُنّته فى عباده أنه لا يضيع أجر قومٍ يحسنون، ولا يضرب الذلّة على الذين يتذللون له بل هم يُكرمون. ومن صافا ربّه ووفّٰى، وستر أمره وأخفٰى، ما كان الله ليتركه فى زوايا الكتمان، بل يكرمه ويُعزّه ويفور لطفه لإكرامه بين الناس والإخوان. ويحب رفع ذكره إلى أقاصى البلدان كما ينهم الجوعان، وإنّ العبد المقرّب يقنع على بُلسَنٍ ويعاف التنَعّم والادّمان، فيخالفه ربه ويُعطيه العناقيد والرُّمّان، وإنه يختار حجرة

अल्लाह की ख़ुशी के लिए स्वयं का बलिदान कर देते हैं और चाहते हैं कि उसके मार्ग में प्राण न्योछावर कर दें और वे जीवन के लालायित नहीं होते। अत: यह अल्लाह की कृपा इस बात की मांग करती है कि उन्होंने जो प्रस्तुत किया है वह उसे अपनी ओर से बढ़ा कर लौटाए और जो संबंध वे तोड़ रहे थे उसे जोड़ दे और इसी प्रकार उसकी सुन्नत अपने बन्दों में प्रचलित है कि वह उपकार करने वालों के बदले को कभी व्यर्थ नहीं करता और वे जो उसके लिए विनम्रता अपनाते हैं वह उन्हें अपमान की मार नहीं मारता बल्कि उनको सम्मान दिया जाता है और वह (व्यक्ति) जिसने अपने रब्ब के साथ श्रद्धाभाव का संबंध रखा और वचन पूर्ण किया और अपना हाल गोपनीय रखा तो फिर अल्लाह भी ऐसे व्यक्ति को गुमनामी में पड़ा नहीं रहने देता बल्कि उसे मान-सम्मान देता और सामान्य लोगों तथा अपने भाइयों में उसके सम्मान को बढ़ाने के लिए उसका दया एवं कृपा जोश में आती है। वह (ख़ुदा) पसंद करता है कि जिस प्रकार भूखा व्यक्ति भोजन की अत्यंत इच्छा रखता है ऐसे ही वह उस व्यक्ति की चर्चा को दूर दूर के देशों में पहुँचाना चाहता है। अल्लाह का सानिध्यप्राप्त व्यक्ति मसूर की दाल पर (ही) संतोष कर लेता है और सुख-चैन तथा मौज मस्ती से घृणा करता है तो उसका रब्ब (उससे) उसके विपरीत मामला करता है और उसे फलों के गुच्छे और अनार प्रदान करता है। वह एकांतवास अपनाता है ताकि वह मरने

الاختفاء ليعيش مستورًا إلى يوم الفناء، فيخرجه الله من حجرته بالإيحاء ، ويرجع مخلوقه إلى حضرته فيأتونه بالهدايا والنعماء ويخدمون. ويوضع له القبول فى الارض ويُنَادٰى فى أهل السماء إنه من الذين يُحبّهم الله ويحبونه وله يخلصون. ويكون الله عينه التى يبصر بها وأذنه التى يسمع بها ويده التى يبطش بها، هذا أجر قوم يكونون لله بجميع وجودهم ولا يشركون، ويقضون الامر انهم له ثم بعد ذالك لا يبدّلون القول حتى يموتوا وإليه يرجعون.

ومن علاماتهم أنّهم ينسلخون من نفوسهم كما تنسلخ الحَيواتُ من جلودها، وتَنْطَفِيءُ نيرانها بعد وقودها، ثم تجدّد فيهم الامانى المطهّرة، وتُعدّ لهم ما تشتهيها نفوسهم

तक गुमनाम जीवन व्यतीत करे परन्तु अल्लाह वह्यी (ईशवाणी) के द्वारा उसे उसकी कोठरी से बाहर निकालता है फिर वह अपनी सृष्टि को उसकी ओर लौटाता है और वे उसके पास उपहार तथा ने'मतें लेकर आते हैं और सेवा करते हैं और संसार में उसके लिए स्वीकृति रख दी जाती है और आसमान के निवासियों में यह घोषणा कर दी जाती है कि यह उन लोगों में से है जिनसे अल्लाह मुहब्बत करता है और वे उससे मुहब्बत करते हैं और उससे श्रद्धाभाव रखते हैं। अल्लाह ऐसे सानिध्यप्राप्त की आँख हो जाता है जिससे वह देखता है और उसका कान हो जाता है जिससे वह सुनता है और उसका हाथ हो जाता है जिससे वह पकड़ता है। यह है बदला उन लोगों का, जो पूर्णत: अल्लाह के हो जाते हैं और शिर्क (बहुदेव उपासना) नहीं करते। वे इस बात का निर्णय कर लेते हैं कि वे उसी के हैं फिर मरते दम तक अपने कथन और निर्णय को बदलते नहीं और वे उसकी ओर लौट जाते हैं।

उनका एक लक्षण यह है कि वे अपने सांसारिक मोह माया से ऐसे बाहर निकल आते हैं जैसे सांप अपनी केंचुली से निकलते हैं। उनकी (इच्छाओं की) आग भड़कने के बाद बुझ जाती है उसके बाद उनके अन्दर नवीन एवं पवित्र इच्छाएँ जन्म लेती हैं और उनके सत्वगुण युक्त अस्तित्व जिस वस्तु की भी इच्छा करें वह उनके लिए तैयार कर दी जाती है साथ ही अकाल के दिनों में उनके लिए रूहानी दावतों का

المطمئنة، وتُهَيّأُ لهم فى زمَنٍ ماحِلٍ المآدب الروحانية، فيأكلون كلّما وُضِع لهم بل يتحطّمون، ويجمعون الخير كامرأة مُمْغِلٍ ويجتنبون الغيث ولايقربون، يبدء ون من أرض إلى أرض أخرى ولا يتركون النفس كَأَدْلَمَ بل يبيّضون.

ومن علاماتهم أنّهم لا ينكرون كلمة الحق وإمام الزمان ولو يُلقَون فى النّيران، ولا يُضيّعون إيمانهم ولويُقتّلون بالسيوف المصقولة أو يُرجمون، يُعجب الملا ئكة صدقهم وفى السماءِ يُحمدون. أولئك قوم سبقوا كل هُدٍّ وليسوا كَهِدٍّ، ودعثروا قصر وجودهم لِحِبٍّ يؤثرون. إن الله وملائكته يصلّون عليهم والصلحاء والإبدال أجمعون. صدقوا فيما عاهدوا، وقضوا نحبهم لوجه الله،

प्रबंध किया जाता है तो वे उसे न केवल खाते बल्कि ख़ूब चबा-चबा कर खाते हैं। वे नेकियों (पुण्यों) को ऐसे जमा करते हैं जैसे प्रति वर्ष बच्चे जनने वाली स्त्री। और वे व्यर्थ की बातों से बचते रहते हैं और (उनके) निकट भी नहीं जाते। वे एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर जाते हैं और वे अपनी नफ़्स को अपवित्र नहीं रहने देते बल्कि उन्हें पवित्र करते हैं।

उनका एक लक्षण यह है कि वे सत्य बात और अपने युग के इमाम (अवतार) का इन्कार नहीं करते चाहे उन्हें आग में डाल दिया जाए। वे अपना ईमान व्यर्थ नहीं करते चाहे उन्हें तेज़ धारदार तलवारों से क़त्ल कर दिया जाए या संगसार कर दिया जाए और उनकी सच्चाई फरिश्तों को आश्चर्य चकित करती है और आसमान पर उनकी प्रशंसा की जाती है। वे ऐसे लोग हैं जो प्रत्येक बहादुर को पीछे छोड़ जाते हैं तथा निर्बल और बुज़दिल के समान नहीं। उन्होंने अपने अस्तित्व के महल को उस महबूब के लिए जिसे वे प्राथमिकता देते हैं, गिरा दिया है। अल्लाह और उसके फ़रिश्ते और समस्त नेक लोग उन पर दरूद भेजते हैं। उन्होंने जो भी वादा किया उसे सच कर दिखाया और उन्होंने ख़ुदा की प्रशंसा हेतु अपनी जानें क़ुर्बान कर दीं। अत: ईमान तो यह ईमान है। अत: बधाई हो उन लोगों को जो इस ईमान से युक्त हों।

فالإيمان ذالك الإيمان، فطوبیٰ لقوم به يتّصفون.

إن مثلهم كمثل عبد اللطيف الذى كان من حزبى و كان من أرض بلدة كابل، و كان زعيم القوم وسيّدهم وأمثلهم وأعلمهم وأتقاهم وأشجعهم وبَدُؤهم فى السؤدد وأبهاهم، إنه أرَى هذا الإيمان۔ وهدّدُوه بوعيد الرّجم ليترك الحق فآثر الموت وأرضى الرحمان، ورُجِم بحكم الامير فرفعه الله إليه، إن فى ذالك لنموذجًا لقوم يُغبطون.

إنّ الذين يُقتلون فى سبيل الله لا تحسبوهم أمواتا بل أحياء عند الله يُرزقون، ومن قتل مؤمنًا متعمّدًا فجزاؤه جهنّم خالدًا فيها وغضب الله عليه ولعنه وأعدّ له عذابًا أليما، وسيعلم الذين

इन (सानिध्य प्राप्त) लोगों का उदाहरण अब्दुल लतीफ़ के उदाहरण के समान है वह मेरी जमाअत के व्यक्ति थे। उनका सम्बन्ध काबुल (अफ़्ग़ानिस्तान) की धरती से था वह अपनी क़ौम के लीडर, सरदार, उन सबसे श्रेष्ठ, सबसे अधिक विद्वान्, संयमी और दिलेर थे और वह प्रतिष्ठा में उन सबसे प्रथम दर्जा पर थे और वह उन सब में चमकता हुआ वजूद थे। उसने यह ईमान दिखाया जबकि उन्होंने उसे संगसार करने की धमकी दी ताकि वह सत्य को त्याग दे परन्तु उसने मृत्यु को प्राथमिकता दी और रहमान (ख़ुदा) को राज़ी कर लिया। वह अमीर (गवर्नर) के आदेशानुसार संगसार कर दिया गया और अल्लाह ने उसे अपनी ओर उठा लिया। निस्संदेह इसमें रश्क (किसी को हानि पहुंचाए बिना उस जैसा बनने की इच्छा) करने वालों के लिए एक अत्यंत श्रेष्ठ आदर्श है।

वे लोग जो अल्लाह के मार्ग में मारे जाते हैं तुम उन्हें मुर्दा मत कहो बल्कि वे जीवित हैं अल्लाह के पास उनको जीविका प्रदान की जाती है और जो किसी मोमिन का जान बूझ कर वध करता है तो उसका बदला नर्क है जिसमे वह एक लम्बे समय तक रहेगा। अल्लाह उस पर क्रोधित होगा और उस पर लानत करेगा और उसने उसके लिए पीड़ाजनक अज़ाब तैयार किया है और अत्याचारियों को यह शीघ्र ही ज्ञात हो जाएगा कि किस प्रकार उन्हें तहस-नहस कर दिया जाएगा। आसमान इस शहीद

ظلموا أیّ منقلب ینقلبون. إن السّماء بکت لذالک الشھید وأبدت لہ الآیات، وکان قدرًا مفعولًا من اللّٰہ خالق السمٰوات، وقد أنبأنی ربی فی أمرہ قبل ھذا بِوَحْیِہِ المبین، کما أنتم تقرء ونہ فی البراھین أو تسمعون، وعسٰی أن تکرھوا شیئا وھو خیر لکم واللّٰہ یعلم وأنتم لا تعلمون. ولمّا رحل الشھید المرحوم من دار الفناء، وسلّم روحہ إلی ربّہ بطیب النفس والرضاء، فما أصبح الظالمون إلا وابتُلوا برجزٍ من السماء وھم نائمون، وجعلوا یفرّون من ارض بلدۃ کابل فأُخِذوا أینما ثقفوا وأین تفرّ الفاسقون. إنّ فی ذالک لعبرۃ لقوم یحذرون.

ومن علاماتھم أنّ الملائکۃ تنزل علیھم بالبرکات، ویُکرمھم اللّٰہ بالمکالمات والمخاطبات، ویوحی إلیھم أنھم من سُراۃ الجنّات

की शहादत पर रोया और इसके लिए उसने निशान प्रकट किए और आसमानों के स्रष्टा अल्लाह के अधीन यही मुक़द्दर था कि ऐसा ही हो जैसा कि आप बारहीन-ए-अहमदिया में पढ़ते हैं या सुनते हैं कि मेरे रब्ब ने इस मामले के बारे में अपनी स्पष्ट वह्यी में मुझे पहले ही से बता दिया था। संभव है कि तुम किसी चीज़ को नापसंद करो और वह तुम्हारे लिए बेहतर हो क्योंकि अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते। जब स्वर्गीय शहीद इस मृत्युलोक से गुज़र गया और उसने अपनी रूह दिल की ख़ुशी और स्वीकृति के साथ अपने रब्ब के सुपुर्द कर दी तो अभी अत्याचारियों ने सुबह भी नहीं की थी और वह अभी सो ही रहे थे कि आसमानी अज़ाब में गिरफ्तार हो गए और वे काबुल की धरती से भागने लगे। फिर वे जहाँ भी थे अल्लाह की गिरफ्त में आ गए। भला ये पापी भाग कर कहाँ जा सकते थे। निस्संदेह इस घटना में ख़ुदा से डरने वालों के लिए शिक्षा है।

इन (सानिध्यप्राप्त लोगों) का एक लक्षण यह है कि फ़रिश्ते उन पर बरकतें लेकर उतरते हैं और अल्लाह वार्तालाप और संबोधन के द्वारा उन्हें सम्मान प्रदान करता है और उनकी ओर यह वह्यी करता है कि वे स्वर्ग के सरदारों में से हैं और सानिध्यप्राप्त हैं और उनके दिल जो चाहेंगे वह उन्हें उसमें मिल जाएगा और वे जिस चीज़ की इच्छा करेंगे वह उस (स्वर्ग) में उनकी हो जाएगी।

وأنهم مقرّبون۔ ولهم فيها ما تدّعى أنفسهم ولهم فيها ما يشتهون. ويُنزل عليهم كلام لذيذ من الحضرة و كلم أُفصِحت مِن لدن ربّ العزّة، ويُنَبّأون بكل نبأٍ عظيم، وانباء الغيب من القدير الكريم، ويُغاث الناس بهم عند اسناتهم ويُنجّون من آفاتهم، ويُغَيَّرُ ما بقومٍ بتضرّعاتهم، وتُستجاب كثير من دعواتهم، وتظهر الخوارق لإنجاح حاجاتهم، مع إعلامٍ من الله وبشارةٍ بتعذيب قومٍ لا يألتون أنفسهم من فأتهم و كذالك يُؤَيّدون، ويُبَشّرون ويُنصرون، ويُنَوّرون ويثمرون، ويُهلَكون مرارًا ثم يُذرء ون حتى يروا ربّهم وهم يستيقنون، ولا تطلع عليهم شمس ولا تجنّ عليهم ليلةٌ إلّا ويُقرّبون إلى الله ويزيدون فى علمهم أكثر ممّا كانوا يعلمون. وإذا بلغوا الشيب يكمل شبابهم

अल्लाह तआला से उन पर आनंददायक वाणी और अल्लाह तआला की ओर से उन पर सरस-सुबोध शब्द उतरते हैं। उन्हें सर्वशक्तिमान और दयावान ख़ुदा की ओर से हर बड़ी ख़बर और परोक्ष की ख़बरों से सूचित किया जाता है। अकाल के दिनों में उनकी ख़ातिर लोगों की फ़रियाद को सुना जाता है। उन्हें उनके कष्टों से मुक्ति दी जाती है और उनकी रो-रो कर की गई दुआओं के परिणामस्वरुप क़ौम की काया पलट दी जाती है और उनकी अधिकतर दुआएँ स्वीकार होती हैं और उनकी आवश्यकता की पूर्ति के लिए विलक्षण निशान प्रकट होते हैं और उसके साथ साथ अल्लाह तआला की ओर से उन्हें ऐसी क़ौम को दण्ड देने के बारे में सूचना और ख़बर दी जाती है जो अपनी राय दूसरों पर थोपने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ती। इस प्रकार सानिध्यप्राप्त लोगों की सहायता की जाती है उन्हें शुभ समाचार दिए जाते हैं उनकी मदद की जाती है और उन्हें प्रकाशमान और सफल किया जाता है। वे कई बार तबाह किए जाते हैं परन्तु फिर उन्हें पुनः जन्म दे दिया जाता है यहाँ तक कि वे अपने रब्ब का दीदार कर लेते हैं और उन्हें विश्वास होता है। उन पर कोई सूर्य उदय नहीं होता और न कोई रात उन पर छाती है परन्तु वे अल्लाह के और निकट होते जाते हैं और उनके ज्ञान में उनके पहले ज्ञान से कहीं अधिक वृद्धि होती है और जब वे बुढ़ापे की आयु को पहुंचें तो ईमान में

فی الإیمان، فیتراء ون کرجلٍ مُطهّمٍ کأنّهم فتیان مراهقون، و کذالك یزید إیمانهم وعرفانهم بزیادۃ أعمارهم، ویزیدون فی التقوٰی حتی لا یبقی منهم شیء ولا من آثارهم، و یبدّلون کل آن، ویُنقَلون من عرفان إلٰی عرفانٍ آخر۔ هو أقوی من الاوّل فی اللمعان، و کذالك یُربّیهم ربّهم بفضل وإحسان، ولا یترکهم کسَهْمٍ نِضْوٍ بل یُجدّدهم بتجدید نور الجنان، ویُقلّبهم ذات الیمین وذات الشمال، وتجری علیهم شهوات النفس وهم تتزاوروں عنها بمشاهدۃ الجمال، وتحسبهم أیقاظًا وهم رقودٌ فی مهد الوصال، ولا یُترکون سُدًی بل یجعلون عناقید من القُعال، ویُبدّلون ویُغیّرون ویُبعَدون عن الدنیا ویبلغون من مقامات إلٰی أرفع منها بحکم اللّٰہ الفعّال،

उनका यौवन चरमोत्कर्ष पर होता है, वे सुन्दर मर्द की तरह दिखाई देते हैं मानो वे नौजवान हों और इसी प्रकार आयु के बढ़ने के साथ साथ उनका ईमान और आध्यात्म ज्ञान भी बढ़ता रहता है वे संयम में इतनी उन्नति करते हैं कि उनका कुछ भी शेष नहीं रहता और न उसका कोई निशान और उनको हर पल परिवर्तित किया जाता है और वे एक ज्ञान से अगले ज्ञान की ओर स्थानांतरित किए जाते हैं जो अपनी चमक दमक में पहले से अधिक मज़बूत होता है और इस प्रकार उनका रब्ब अपनी कृपा और उपकार से उनका पालन पोषण करता है और उन्हें एक पुराने तीर की तरह रहने नहीं देता बल्कि नए तौर से उनके हार्दिक प्रकाश का नवीनीकरण करता है और वह उन्हें दायें बायें फिराता रहता है और उन पर सांसारिक इच्छाएँ अपना प्रभाव डालती हैं और वे अल्लाह के सौन्दर्य का दर्शन करने के कारण उनसे बच जाते हैं। तू उन्हें जागता हुआ विचार करेगा हालाँकि वे अल्लाह के सानिध्य के पंगोड़े में स्वप्न में खोए होते हैं और उन्हें रद्दी के समान नहीं छोड़ा जाता बल्कि कलि से गुच्छा बना दिया जाता है और उनमें बदलाव पैदा कर दिया जाता है और वे संसार से दूर रखे जाते हैं और सामर्थ्यवान ख़ुदा के आदेशानुसार वे अपने पहले मर्तबों से कहीं अधिक बुलंदियों पर पहुंचाए जाते हैं। उनके मामले की पराकाष्ठा यह होती है कि वे मृत्यु के पश्चात् जीवित किए

وآخر ما ينتهى إليه أمرهم أنهم يُحيَون بعد مماتهم ويوصلون بعد انفتاتهم، ويَرِدُ عليهم موتٌ بعد موتٍ ثم يُعطَون حياةً سرمدًا لمصافاتهم، ويُحفَظون من عُواء إبليس وممن يعشو عن ذكر الله ومن معاداتهم، وإذا بلغوا غاياتهم يُعطَون مقامًا لا يعلمه الخلق وينأون عن عَرَصاتهم، ويكونون نورًا تخسأ منه العيون، وفى نور الله يُغَيّبون۔ ولا يعرفهم إلا الذى يُعرّفه الله ويكونون غيب الغيب وروح الروح وأخفى من كل أخفى، يرجع البصر منهم خاسئًا ولا يرى۔ وإذا تمّ اسمهم الذى فى السماء وعند ربهم الاعلى، وكمل أمرهم الذى أراد الله وقضٰى، نُودِى فى السّماء لرجوعهم إلى

जाते हैं और टूटने के बाद जोड़े जाते हैं और उन पर मृत्यु के बाद मृत्यु आती है फिर उनकी श्रद्धा के परिणामस्वरुप उन्हें शाश्वत जीवन प्रदान किया जाता है और वे इब्लीस की गुमराह करने वाली पुकार और अल्लाह को याद करने से विमुखता बरतने वालों तथा इस प्रकार के लोगों की शत्रुता से बचाए जाते हैं। जब वे अपना उद्देश्य प्राप्त कर लेते हैं तो फिर उन्हें एक ऐसा मक़ाम प्रदान किया जाता है जिसे सृष्टि नहीं जानती और वे उनके प्रांगणों से दूर रहते हैं और वे ऐसा नूर बन जाते हैं जिससे आँखें चुंधिया जाएं। वे अल्लाह के नूर में खो जाते हैं। उनकी वास्तविकता को सिवाए उस व्यक्ति को जिसको अल्लाह ने उनके बारे में अध्यात्मिक ज्ञान दिया हो कोई और दूसरा नहीं जान सकता। वे अत्यंत गोपनीय रूह की रूह और अत्यंत गोपनीय वजूद हो जाते हैं कि उन पर पड़ने वाली नज़र थक कर लौट आती है और देख नहीं पाती। जब उनका नाम जो आसमान में है अपने महान रब्ब के समक्ष अपनी पूर्णत: को पहुँच जाता है और जब उनका वह काम पूर्ण हो जाता है जिसका अल्लाह ने इरादा और फ़ैसला किया होता है तो आसमान में उनकी आसमान की ओर वापसी का ऐलान कर दिया जाता है तो वे अपने रब्ब की ओर लौट जाते हैं। और उनकी जानें ऐसी हालत में निकल कर अल्लाह की ओर जाती हैं कि वे अल्लाह से राज़ी और अल्लाह उनसे राज़ी

السّماء ، فإلى ربهم يبوء ون. وتخرج نفوسهم إلى الله راضيةً مرضيّةً فتندلق من أجسامها كما يندلق السيف من جفنه، ويتركون الدنيا وهم لا يشجبون. يرون الدنيا كشاةٍ بكيئةٍ أو ميّتةٍ تعفّن لحمها، فلا تُمَدّ عينهم إليها ولا هم يتأسّفون، ويتبوّء ون دار حِبّهم فبالمرهفات لا يتركون، ولا يلومهم إلّا مجهبٌ ولا ينكرهم إلا قوم عمون.

ويلٌ للعضابين فإنهم يُهلكون. ويلٌ للمغتهبين فإنهم يُنهبون. ويلٌ للمفترين فإنهم يُسألون. ويلٌ للذين تَبْذء عينهم عباد الرحمن فإنهم يموتون وهم عمون. ويلٌ للذين يَتْفَأُوْن إذا سمعوا الحق فإنهم بنارهم يُحرقون.

होता है। उनके प्राण उनके शरीरों से इस प्रकार निकलते हैं जैसे तलवार अपनी मियान से। वे संसार को इस प्रकार छोड़ते हैं कि उन्हें इस पर कोई दु:ख और मलाल नहीं होता। वे संसार को एक कम दूध वाली बकरी के समान और ऐसे मुर्दे के समान देखते हैं जिसका मांस बदबूदार हो गया हो और संसार की ओर उनकी नज़र नहीं उठती और न ही उन्हें इस संसार को छोड़ने पर कोई अफ़सोस होता है और वे अपने महबूब के घर में डेरे डाले रहते हैं और तेज़धार तलवारों के बावजूद भी (महबूब के घर को) नहीं छोड़ते और निर्लज व्यक्ति के अतिरिक्त उन्हें कोई बुरा-भला नहीं कहता और अंधी कौम के अतिरिक्त कोई उनका इन्कार नहीं करता।

अत्याचार करने वालों पर अफ़सोस! वे निस्संदेह तबाह किए जाएँगे। अन्धकार में भटकने वालों का अशुभ हो कि वे लुटे जाएँगे। और झूठ गढ़ने वालों पर अफ़सोस कि उनसे पूछा जाएगा और उन लोगों पर अफ़सोस जिनकी आँखें रहमान (ख़ुदा) के बन्दों को तिरस्कार की दृष्टि से देखती हैं कि वे अवश्य अंधे होकर मरेंगे। बुरा हो उन लोगों का कि जब सच्चाई की बात सुनते हैं तो क्रोधित हो जाते हैं। अत: वे अपनी ही आग में जलाए जाएँगे।

उनका एक लक्षण यह है कि उन्हें अपने रब्ब की ओर से स्पष्ट कलाम प्रदान

ومن علاماتهم أنّهم يُعطَون كلماتٍ تُفصَحُ من عند ربهم، فما كان لبشر أن يقول كمثلها ولا يُبارزون. وإن عباد الرحمن قد يتمنَّون كَلِمًا فصيحةً كما يتمنون معارف مليحة فيُرزقون كُلّمَا يطلبون. وكذالك جرت عادة الله فى أوليائه أنهم يُعطَو ن لسانًا كما يُعطَون جنانًا، ويُنطقهم الله فبإنطاقه ينطقون. وكما أن المرأة إذا وحمت يُعدِّ لها بعلها مااشتهت، فكذالك إذا نُفخ الروح فيهم خُلِقَتْ فيهم أمانى من الله لا من النفس الإمّارة، فتُعطَى أمانيّهم ولا يُخيّبون. وكذالك أُعطِيتُ كلامًا من الله فأتوا بمثل كتابنا هذا إن كنتم ترتابون.

ومن علاماتهم أنّهم ينزلون من السماء كغيثٍ يساق إلىٰ أرضٍ

किया जाता है किसी मनुष्य के लिए यह संभव नहीं होता कि वैसा कलाम कर सके और न ही उनका मुक़ाबला किया जा सकता है। रहमान के बन्दे स्पष्ट कलाम की ऐसी ही इच्छा रखते हैं जैसे वे अच्छे आध्यात्मिक ज्ञान की तमन्ना रखते हैं। अत: वे जो भी मांगते हैं उन्हें दिया जाता है। अपने औलिया के बारे में अल्लाह कि यह आदत जारी है पवित्र दिल की भांति (स्पष्ट) ज़बान भी प्रदान की जाती है। अल्लाह ही उनसे बुलवाता है और वे उसके बुलवाने से बोलते हैं और जिस प्रकार एक स्त्री को गर्भ की अवस्था में किसी भोजन की अत्यंत लालसा होती है तो उसका पति उसके लिए उसकी इच्छा के अनुसार वह भोजन उपलब्ध करता है बिल्कुल इसी तरह उन अल्लाह का सानिध्यप्राप्त लोगों के अंदर जब रूह फूंकी जाती है तो अल्लाह की ओर से उनके अन्दर इच्छाएँ पैदा की जाती हैं न कि नफ्से अम्मार: (तमो वृत्ति) की ओर से और उनकी इच्छित वस्तुएं उन्हें प्रदान की जाती हैं और वे वंचित नहीं किए जाते। इसी प्रकार मुझे अल्लाह की ओर से कलाम प्रदान किया गया है यदि तुम संदेह करते हो तो लाओ हमारी इस पुस्तक का उदहारण प्रस्तुत करो।

उनका एक लक्षण यह है कि वे आसमान से रहमत के बादलों के समान उतरते हैं जिसे बंजर भूमि की ओर ले जाया जाता है और वे (सानिध्यप्राप्त) लोगों को

جُرُزٍ فيدعون الناس إلى ماء هم وهم يُثوّبون. وينتزعون القلوب من الصدور جذبا من عندهم فيهرول الناس إليهم وهم يُغَسْلَبون. ومن علاماتهم أنّهم ليسوا كضنين فى إفاضة النور، ولا كالنّاقة الْمَصُور ولا هم يبخلون. قومٌ لَا يَشقٰى جليسهم ولا يخزى أنيسهم مباركون من أنفسهم و يُبَارِكُون الناس ويُسعدون. يُخَضِّرون أرضا أَمْعَرَت، ويحيون قلوبًا ماتت، ويعيدون دُوَلًا ذهبت، و يُردّون بلايا أقبلت، ويوصلون عُلَقًا قُطِعَت، ويسجرون أنهارًا نزف ماؤها وتخلّت، و كلّما خرب من الدين يعمرون. لهم صدورٌ مُلِئت من النور و قلوب مُلِئَت من السرور ، وإنهم نجوم السماء ، وبحار الغبراء ، وأرواح الاجساد، وللارض كالاوتاد، لا يُبدّلون عهدًا عقدوا مع الله

अपने पानी की ओर कपड़े से इशारा करके बुलाते हैं। और वे अपने आकर्षण की शक्ति से लोगों के दिलों को उनके सीनों से खींच लेते हैं और वे लोग उनकी ओर दौड़ पड़ते हैं और उनको हाथों हाथ लिया जाता है। उनका एक लक्षण यह है कि वे दूसरों तक नूर पहुँचाने में कंजूस व्यक्ति की भांति नहीं होते और न ही कम दूध देने वाली ऊंटनी की भांति होते हैं और वे कंजूसी नहीं करते। ये ऐसे लोग हैं जिनका साथी भी वंचित नहीं रखा जाता और न ही उनसे मुहब्बत रखने वाला कभी रुसवा (निन्दित) होता है वे स्वयं मुबारक होते हैं और दूसरों को लाभ देते और उन्हें सौभाग्य प्रदान करते हैं। वे बंजर भूमि को हरियाली युक्त कर देते हैं और मुर्दा दिलों को जीवित और पूर्व खज़ानों को पुनः प्राप्त करते और आने वाली आपदाओं को रद्द करते हैं। टूटे हुए संबंधों को जोड़ते हैं और जिन दरियाओं का पानी खींच लिया जाता है और वे ख़ाली हो जाते हैं उन्हें भर देते हैं। धर्म का जो भाग वीरान हो उसे आबाद करते हैं। उनके सीने प्रकाश से भरे हुए और दिल आनंद से पूर्ण होते हैं और वे आसमान के सितारे, शुष्क भूमि के समुद्र और शरीरों की आत्मा होते हैं और ज़मीन के लिए कीलों की सी हैसियत रखते हैं। उन्होंने अल्लाह को जो वफादारी का वचन दिया होता है वे उसे बदलते नहीं और वे बदल दिए जाते हैं और वे अब्दाल होते हैं जिनके अन्दर अल्लाह स्वयं

وهم يُبَدّلون. وإنهم أبدالٌ يُبَدّلهم الله وإنهم أقطابٌ لا يتزلزلون. وإنهم مصطخمون لِلّٰهِ صلموا الامّارة من أصلها وعلى أمر الله قائمون. يزجّون الحياة فى هموم، ولا يعيشون كَعَيْصُومٍ، ولا يقنعون بظاهر الغسل كَعَيْشُومٍ، بل يسابقون إلى معين يُطهّر نفوسهم ولا يتضيّحون.

وإنهم حفظة الله على الناس عند البأس، ولوجود الخلق كالرأس، وفى بحر خلق الله كالدرّ المكنون، يفتحون الملحمة العظمى التى هى بالنفس الامّارة، فيفتحون القلوب بعده بإذن الله ذى العزّة ويغلبون. ويُحيون بعد الموت ويعافهم الناس فهم يمضخون. لا تجد بوصيًا كمثلهم إذا طما الماء واشتد البلاء، وارتفع الزفير والبكاء،

परिवर्तन पैदा करता हैं क़ुतुब होते हैं जो लड़खड़ाते नहीं वे अल्लाह के लिए सीधे हो जाते हैं और नफ्से अम्मार: (तमोवृत्ति) को उसकी जड़ से काट देते हैं और वे अल्लाह के प्रत्येक आदेश का पालन करते हैं। वे दुखों में जीवन व्यतीत करते हैं। वे बहुभोजी व्यक्ति जैसा जीवन व्यतीत नहीं करते हैं। वे अत्यंत बूढ़े व्यक्ति के समान केवल सामान्य स्नान पर ही संतुष्ट नहीं रहते बल्कि वे एक दूसरे से आगे बढ़ते हुए ऐसे बहते हुए श्रोत (चश्मे) की ओर दौड़ते हैं जो उनकी आत्मा को पवित्र और स्वच्छ कर दे और वे गंदे पानी की की ओर नहीं जाते।

वे युद्ध के अवसर पर लोगों के लिए अल्लाह की ओर से संरक्षक हैं। वे सृष्टि के लिए सिर के समान हैं और अल्लाह की सृष्टि के समुद्र में मूल्यवान मोती। वे नफ्से अम्मार: के साथ बड़ी जंग में विजयी होते हैं फिर उसके बाद वे अल्लाह रब्बुल इज्ज़त के आदेशानुसार दिलों को जीत लेते हैं और विजयी होते हैं और वे मौत के बाद नया जीवन पाते हैं और जब लोग उनसे नफरत करते हैं तो वे मुहब्बत की सुगंध बिखेरते हैं और तुम उन जैसा कोई नाख़ुदा (कर्णधार, मल्लाह) नहीं पाओगे जब पानी अपने उफान पर हो और घोर संकट आ पड़े और चीख व पुकार होने लगे तो तो ऐसे अवसर पर वे उस ख़ुदा के आदेश से जिसने उन्हें अवतार बना कर भेजा है शफ़ाअत (सिफ़ारिश) करने वाले होते हैं और जब दिल

وعند ذالك هم الشفعاء بإذن الله الذى منه يُرسَلون. وإذا بلغت القلوب
الحناجر قاموا وهم يتضرّعون وخرّوا وهم يسجدون. هناك تملأ
السمائَ دعاؤهم، ويبكى الملا ئكة بكاؤهم، ويُسمع لهم لتقواهم،
فيُنَجَّى الناس من بلاءٍ به يَقْلقون. وإنهم قومٌ يضمجون بالأرض
ويضبجُون بتوالى السجدات عند توالى الآفات، ويبلونها بالعبرات،
ويقومون أمام الله دافع البليّات فى الليالى المظلمات، ويقبلون إلى
ربّهم بصدق يُرضى خالق الكائنات، ويموتون لإحياء قومٍ كانوا على
شفا الممات، فيبدّلون القدر وبالموت يشفعون، وبالنَّصَبِ يُريحون،
وبالتّألّم يبسئون.
يواسون خلق الله ويتخونونهم عند الداهيات، ويعملون عملًا

हलक़ तक पहुँच जाएँ तो वे रोने-गिड़गिड़ाने की हालत में खड़े हो जाते हैं और सज्दों में गिर जाते हैं तब उनकी दुआ आसमान को भर देती है और उनका रोना फरिश्तों को रुला देता है उनके संयम के कारण उनकी दुआ सुनी जाती है। अत: लोग उस परीक्षा से मुक्त किए जाते हैं जिससे वे बेचैन होते हैं। ये ऐसे लोग हैं जो ज़मीन से लिपट जाते हैं और एक के बाद एक आने वाली आपदाओं के समय वे अपने निरन्तर सजदों में ज़मीन पर पड़े रहते हैं और आंसुओं से ज़मीन को भिगो देते हैं और समस्त कठिनाइयों को दूर करने वाले अल्लाह के समक्ष अँधेरी रातों में खड़े हो जाते हैं और ऐसे सच्चे दिल के साथ वे अपने पालनहार की ओर ध्यान करते हैं जो ब्रह्माण्ड के स्रष्टा को राज़ी कर दे और वे उन लोगों को जीवित करने के लिए जो मौत के किनारे पर खड़े स्वयं मृत्यु को स्वीकार कर लेते हैं। अत: वे भाग्य को परिवर्तित कर देते हैं और मृत्यु को अपना कर सिफारिश करते हैं और कठिनाई बर्दाश्त करके आराम पहुंचाते हैं और कष्ट उठा कर परस्पर मित्रता और नरमी करते हैं।

वे सृष्टि से सहानुभूति करते हैं और मुश्किलों के समय में उनका ख़याल रखते हिं और ऐसा काम करते हैं जो आसमानों में फरिश्तों को भी हैरान कर देता है और नेकियों में आगे निकल जाते हैं। उनके दिलों में बहादुरी पैदा की जाती है।

يعجب الملا ئكة فى السماوات، ويسبقون فى الصالحات، وتُشجّع قلوبهم فيمشون فى المائرات، ولو جعلت سرمدًا إلٰى يوم المكافات، ولا يتخوّفون. ولا ينتتمون على أحدٍ بقولٍ سوءٍ وعند فُحش النّاس يجمون و يكظمون.

ولا يتمايلون على جيفة الدُّنيا و يتر-كونها للكلاب، و يحسبونها حَفْنَةً من عظامٍ بل وَنِيّم الذباب، فلا يرتد طَرْفهم إليها ولا يلتفتون. و يجعلون أنفسهم كشجرة شَعْوَاءَ، فيأكل الجوعان ثمارهم من كل طرف جاء ، نعم الاضياف ونعم المضيّفون. قومٌ مُطَهّمون، ويدفعون بالحسنة السيّئة و يخدمون الورى ولا يؤذون من آذىٰ، ومن تمحّٰى إليهم فيقبلون. و إذا لقوا من أعدائهم الازابى دفعوه بالمنّ و يجتنبون

अत: वे उन कठिनाइयों में भी जिनका सिलसिला क़यामत तक लम्बा हो हमेशा आगे बढ़ते जाते हैं और वे भयभीत नहीं होते और न ही मुंहफट होकर किसी से अभद्रता करते हैं बल्कि लोगों की गाली गलौज पर शांत रहते और अपने गुस्सा पी जाते हैं वे संसार के मुर्दों की ओर आकर्षित नहीं होते और उसे कुत्तों के लिए छोड़ देते हैं और उसे केवल हड्डियों की एक मुट्ठी बल्कि मक्खियों की गन्दगी समझते हैं उनकी निगाह उस ओर नहीं उठती और न ही वे उसकी ओर कोई ध्यान देते हैं। वे स्वयं को ऐसा बना लेते हैं जैसे कोई तनादार वृक्ष हो कि हर ओर से आने वाला भूखा व्यक्ति उनके फल खाता है। क्या ही अच्छे मेहमान और क्या ही अच्छे मेहमानी करने वाले हैं। ये लोग सम्पूर्ण सौन्दर्य के मालिक हैं और बुराई को अच्छाई से दूर करते हैं और सृष्टि की सेवा करते हैं और जो उन्हें कष्ट पहुंचाए वे उसे कष्ट नहीं पहुंचाते और क्षमा मांगने वाले को क्षमा करते हैं और जब कमीने शत्रुओं की ओर से उन पर अत्याचार किए जाएँ तो उसके उत्तर में वे उन पर उपकार करते हैं और वे गाली के उत्तर में गाली देने से बचते हैं और उसका प्रयत्न भी नहीं करते। और वे अपने शत्रुओं के लिए अल्लाह कि ओर से भलाई, सलामती स्वास्थ्य और हिदायत की दुआ करते हैं और वे अपने दिलों में किसी के लिए तनिक भी द्वेष नहीं रखते और वे उनके लिए भी दुआ करते हैं जो

التّساب و لا يعسمون. يدعون لاعدائهم دعاء الخير و السلامة و الصحة و العافية و الهداية من الله، و لا يتركون لاحدٍ فى صدورهم مثقال ذرّة من الغلّ و يدعون لمن قفاهم و ازدرىٰ، و يُؤوُون إلى عصاهم من عصىٰ، فيتجلى الله عليهم بما كانوا آثروه ورحموا عباده، وبما كانوا يخلصون. أولئك هم الابدال و أولياء الله حقًّا۔ و أولئك هم المفلحون.

تُبارك الارض بقدومهم، و يُنجّى الناس عند همومهم، فطوبىٰ لقومٍ بهم يرتبطون. رب اجعلنى منهم و كن لى و معى إلى يوم يُحشر الناس و يُحضرون۔ ربّ لا تؤاخذ من عادانى فإنهم لا يعرفوننى و لا يبصرون. ربّ فارحمهم من عندك و اجعلهم من الذين يهتدون. و ما يفعل الله بعذابكم ان شكرتم و آمنتم أيّها المنكرون. ألا تشكرون لله و قد أدرككم فى

उन पर गंदे आरोप लगाते और नीच समझते हैं। और अवज्ञा करने वाले को भी अपनी जमाअत में शरण देते हैं अत: अल्लाह उन पर प्रकट हो जाता है क्योंकि वे उसे प्राथमिकता देते हैं और उसके बन्दों पर दया करते हैं और इस कारण से कि वे उसके प्रति श्रद्धा रखते हैं वास्तव में यही लोग नेक और औलिया-उल्लाह (अल्लाह के मित्र) हैं और यही लोग सफल होने वाले हैं।

उनके आने से ज़मीन को बरकत दी जाती है और लोगों को उनके ग़मों से नजात (मुक्ति) दी जाती है। अत: बधाई हो उन लोगों को जो उनसे सम्बंध रखते हैं। हे मेरे रब्ब! तू मुझे उन में सम्मिलित कर दे और मेरा हो जा और मेरे साथ हो जा उस दिन तक कि जब लोग उठाए जाएँगे और प्रस्तुत किए जाएँगे। हे मेरे रब्ब! उन लोगों पर जो मुझसे शत्रुता कर रहे हैं उनकी गिरफ्त न कर क्योंकि वे मुझे नहीं पहचानते और न उन्हें विवेक प्राप्त है। अत: हे मेरे रब्ब! मेरी ओर से उन पर रहम कर और उन्हें सन्मार्ग प्राप्त लोगों में सम्मिलित कर दे। हे इंकार करने वालो! यदि तुम शुक्र करो और ईमान ले आओ तो अल्लाह को क्या आवश्यकता है कि वह तुम्हें अज़ाब (दण्ड) दे।क्या तुम अल्लाह का शुक्र नहीं करोगे? जबकि वह तुम्हारे पास आया उस समय जब कि तुम तबाह किए जा रहे थे और उचके जाते थे। और यदि तुमने शुक्र किया तो वह तुम्हें अधिक देगा और जो तुम इच्छा और आरज़ू

وقتٍ تُهلَكون فيه وتُخطفون؟ وإن شكرتم لیزيدنّكم، وتُعطَون كلّمَا تتمنّون وتشتهون.وإن تكفروا فإن جهنم حصير لقوم يكفرون.

ومن علاماتهم أنّهم لا يؤذون ذرّة ولا نملة وعلى الضعفاء يترحّمون. ولا يقطعون كل القطع ولو عاداهم الاشرار الذين يؤذون من كل نوع ويعتدون، بل يدعون لأعدائهم لعلّهم يهتدون، ولا تجدهم كَفَظٍّ غليظ القلب ولا تجد كمثلهم ارحم وأنصح للنّاس ولو شَرّقت أو كنت من الذين يُغرّبون. يدعون للذين اصابتهم مصيبة حتى يلقون أنفسهم إلى التهلكة، فإذا وقع الامر على أنفسهم يُسمع دعاؤهم فى الحضرة وبها ينبّئون، ذالك بأنهم يُبلّغون دعواتهم إلى منتهاها ويُتمّون حق المواساة ولا يألتون. يُذيبون أنفسهم ويلقونها إلى الدمار، فينجّون بها نفوسًا كثيرة من التبار،

करोगे तुम्हें प्रदान किया जाएगा और यदि तुम नाशुक्री करोगे तो नर्क नाशुक्रे लोगों को घेरने वाला है।

उनका एक लक्षण यह है कि वे किसी छोटी से छोटी चीज़ ओर किसी चींटी तक को कष्ट नहीं पहुँचाते और निर्बलों पर दया करते हैं। वे किसी से पूर्णत: संबंध नहीं तोड़ते। यद्यपि दुष्ट उनसे शत्रुता करें जो उन्हें हर प्रकार का कष्ट देते हैं और अत्याचार करते हैं जबकि वे अपने शत्रुओं के लिए दुआ करते हैं ताकि वे हिदायत प्राप्त कर लें। तू उन्हें अभद्र और सख़्त दिल के समान नहीं पाएगा और न ही तू किसी और को उन जैसा रहमदिल और लोगों का शुभ चिंतक पाएगा चाहे तू पूरब और पश्चिम में ढूंडे। वे मुसीबत में फंसे लोगों के लिए दुआ करते हैं यहाँ तक कि उसके लिए अपनी जानों को तबाही में डाल देते हैं। अत: जब उनकी यह हालत हो जाए तो उनकी दुआ अल्लाह तआला के दरबार में सुनी जाती है और फिर उन्हें इस के बारे में ख़बर दी जाती है क्योंकि वे अपनी दुआओं को पराकाष्ठा तक पहुंचा देते हैं और (मानवजाति का) कष्ट दूर करने का पूर्ण कर्तव्य निभाते हैं और इस में बिल्कुल कोई लापरवाही नहीं करते। वे अपने आप को पिघला देते हैं और अपनी जानों को तबाही में डाल देते हैं। अत: वे इस प्रकार बहुत सी जानों को तबाह होने से बचा लेते हैं। इसी प्रकार उन्हें महान (श्रेष्ठ) फितरत प्रदान की जाती है और वे उसके अनुसार काम करते हैं, वे अंधेरी रातों में इबादत करते हैं जबकि

و كذالك تُعطٰى لهم فطرةٌ و كذالك يفعلون. يقومون فى ليل دامسٍ و الناس ينامون، و يرون نور أعمالهم فى هذه الدنيا و كل يوم فى نورهم يزيدون، و يرون نضارة ماقدّموا لأنفسهم و لا يكونون كمهلوسين، و يجتنبون كل معصيةٍ و لو كانت صغيرة فلا يقربونها و لا يغتمصون، و يُمزّزون العمل الصالح و لا يزدرون.

و إنى بفضل الله من أوليائه أفلا تعرفون؟ و قد جئتكم مع آياتٍ بيّناتٍ أفلا تنظرون؟ أما خُسف القمران؟ أما تُرِكَ القلاص فى جميع البلدان، ما لكم لا تتفكّرون؟ و قد جاءت بيّنات من الرحمان، و نزل منه السلطان، فأى شكّ بعد ذالك يختلج فى الجنان، أو أى عذر بقى عندكم أيها المعرضون؟ أما أُشيع الطاعون و كثر المنون؟ و شاع الكذب و الفسق و غلب قوم مشركون، و بدٰى

लोग सो रहे होते हैं। वे अपने (नेक) कर्मों का प्रकाश इसी संसार में देख लेते हैं। और प्रतिदिन अपने प्रकाश में बढ़ते चले जाते हैं और जो (अच्छे कर्म) उन्होंने अपनी जानों के लिए आगे भेजे होते हैं वे उनको हरा-भरा देख लेते हैं और वे नशेबाजों की भांति नहीं होते और वे प्रत्येक पाप से बचे रहते हैं चाहे कितना ही छोटा हो। अत: वे उसके निकट नहीं फटकते और न ही वे उसको तुच्छ समझते हैं और वे अच्छे कर्म का सम्मान करते हैं अपमान नहीं करते।

और मैं अल्लाह की कृपा से उसके औलिया में से हूँ। क्या तुम पहचानते नहीं? और मैं तुम्हारे पास स्पष्ट निशान लेकर आया हूँ क्या तुम देखते नहीं? क्या सूर्य और चंद्र को ग्रहण नहीं लग चुका? क्या समस्त देशों में ऊंटनियां बेकार नहीं हो चुकीं? तुम्हें क्या हुआ है कि तुम सोच विचार नहीं करते? रहमान ख़ुदा की ओर से स्पष्ट निशान आ चुके हैं और उसकी ओर से स्पष्ट दलील उतर चुकी है, उसके बाद तुम्हारे दिलों में कौन सा संदेह दुविधा उत्पन्न कर रहा है? हे मुंह फेरने वालो! तुम्हारे पास अब कौन सा बहाना शेष रह गया है? क्या प्लेग नहीं फैली और अत्यधिक मौतें नहीं हुईं? झूठ और पाप सामान्यत: हर ओर नहीं हो गए? मुश्रिक क़ौम विजयी नहीं हो चुकी? संसार में एक महान परिवर्तन का आरंभ नहीं हो चुका? जिनकी तुम प्रतीक्षा कर रहे थे उनमें से अधिकतर (निशानियाँ) प्रकट नहीं हो चुकीं? अत: तुम्हें क्या हो गया है कि तुम सुविचार से काम नहीं लेते और

انقلاب عظیم فی العالم و ظهر أكثر ما تنتظرون، فما لكم لا تحسنون الظنون و تعتدون؟

أيّها الناس لِمَ قدمتم بين يدى الله و حَكَمِه إن كنتم تتّقون؟ أهٰذه تقاتكم أنّكم كفّرتمونی و ما علمتم حق العلم و ما تسألون بقلوبٍ سليمة و إن سُئِلَ عنكم تتوقّدون؟ أ شق عليكم أنّ الله بعثنی علی رأس المائة و اختارنی لإجدّد دين الله صَلَاحًا و أُفْحِم قومًا زاد غُلوّهم فی اتّخاذ عيسٰی إلٰهًا، و أكسر صليبا يعلونه و يعبدون؟ أو أغضبكم ما خالفكم ربی فی وحيه؟ و كذالك غضب اليهود من قبل فما لكم لا تعتبرون؟

أيها الناس إنی أنا المسيح الذی جاء فی أوانه، و نزل من السماء مع برهانه، و اراكم آيات الله فيكم و فی نفسه و فی اعوانه و شهد الزمان

हद से बढ़ रहे हो।

हे लोगो! अगर तुम संयमी हो तो अल्लाह और उसके हकम (निर्णयकर्ता) से आगे क्यों बढ़ रहे हो, क्या तुम्हारा संयम यह है कि तुम ने इन्कार किया जबकि तुम्हें पूर्ण ज्ञान नहीं था और तुम साफ दिलों के साथ प्रश्न नहीं करते और अगर तुमसे प्रश्न किया जाए तो भड़क उठते हो, क्या तुम को यह बर्दाश्त नहीं हुआ कि अल्लाह ने मुझे इस शताब्दी के आरंभ में अवतरित फरमाया है और अल्लाह के धर्म के बेहतर नवीनीकरण के लिए मेरा चयन किया ताकि मैं उस क़ौम को जो ईसा को उपास्य बनाने में हद से बढ़ गई है, रोकूँ और उस सलीब को तोड़ूँ जिसे वे बुलंद करते हैं और (जिसकी) वे उपासना करते हैं। या क्या तुम्हें इस बात ने क्रोधित किया है कि मेरे रब्ब ने अपनी वह्यी में तुम्हारा विरोध किया है। इसी प्रकार इससे पहले यहूदी भी क्रोधित हुए थे। तुम्हें क्या हो गया है कि तुम शिक्षा ग्रहण नहीं करते?

हे लोगो! मैं वही मसीह हूँ जो अपने समय पर आया और आसमान से प्रकाशमान दलील के साथ उतरा। और तुम्हें उसने अल्लाह के निशान दिखाए हैं, तुम में, अपने अस्तित्व में और अपने सहायकों में और ज़माने ने उसके लिए अपनी हालत से गवाही दी और अल्लाह ने उसके लिए अपने क़ुरआन में गवाही दी है। अत: अल्लाह की गवाही और उसके बयान के विरुद्ध तुम किस बात पर ईमान लाओगे?

له بلسانه و شهد الله له فی قرآنه، فبأی حدیث تؤمنون بعد شهادة الله
وبیانه؟ ألم یأن أن تتقوا الله ویوم لُقیانه؟ وان تتّقوا یومًا یُذیب الجلُود
بنیرانه؟ ألا تتفکّرون فی آیات الله؟ وأی شهادة أکبر من فرقانه؟ ألا ترون
إن کنتُ من الله وتنکروننی فکیف یصیبکم حظّ من أمانه؟ ألا تقرء
ون قصص الیهود۔ کیف جُعلوا من القرود۔ ألم تکن عندهم معاذیر کما
أنتم تعتذرون؟ فارحموا أنفسکم إلیٰ ما تجترء ون؟ ولا تحاربوا الله أیها
الجاهلون. ما لکم لا تذکرون موتکم ولا تتقون؟ إن الغیور الذی ارسلنی
وعصیتموه إنه هو الصاعقة ولا یُردّ بأسه عن قومٍ یجرمون۔ إنه یسمع ما
تتفوّهون به ویریٰ نجواکم ویری کلّما تمکرون. وسیعلم الذین ظلموا
أی منقلب ینقلبون. ویلٌ للذین لا یُفرّقون بین الصادق والکاذب ولا یَفْرُقون.

क्या समय नहीं आ गया कि तुम अल्लाह और उसकी मुलाक़ात के दिन से डरो और उस दिन से डरो जो चमड़ियों को अपनी आग से पिघला देगा। तुम अल्लाह की आयतों के बारे में क्यों विचार नहीं करते। उसके फ़ुर्क़ान से बढ़ कर और कौन सी गवाही हो सकती है। क्या तुम इस बात पर विचार नहीं करते कि अगर मैं अल्लाह की ओर से हुआ और तुमने मेरा इन्कार कर दिया तो तुम्हें कैसे उसकी सुरक्षा से हिस्सा मिलेगा? क्या तुम यहूद की घटनाओं को नहीं पढ़ते। वे किस प्रकार बंदर बना दिए गए, क्या उनके पास बिल्कुल इसी प्रकार के बहाने न थे जैसे तुम प्रस्तुत कर रहे हो, अत: अपनी जानों पर दया करो। कब तक मूर्खता करोगे? हे नादानो! अल्लाह से युद्ध न करो तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अपनी मौत को याद नहीं करते और डरते नहीं। वह स्वाभिमानी (ख़ुदा) जिसने मुझे अवतरित किया और जिसकी तुमने अवज्ञा की निस्संदेह वह एक चमकदार बिजली है और उसका अज़ाब मुजरिम क़ौम से टाला नहीं जाएगा। निस्संदेह वह तुम्हारे मुंह से निकली हुई बात को सुनता और तुम्हारे गुप्त परामर्शों और समस्त चालाकियों को देखता है। और अत्याचारी लोग अवश्य जान लेंगे कि किस स्थान की ओर उनको लौट कर जाना होगा। तबाही हो उन लोगों पर जो सच्चे और झूठे के मध्य अंतर नहीं करते और डरते नहीं? और न वे सच्चों को उनके चेहरों से पहचानते हैं और न विवेक से काम लेते हैं, न वे सानिध्यप्राप्त लोगों

ولا یعرفون الصادقین من وجوھھم ولا یتفرّسون۔ ولا یذوقون الکلمات ولا ینتفعون من الآیات، ختم اللّٰہ علی قلوبھم فھم لا یتفقّھون.

أیھا الناس لِمَ تستعجلون فی تکذیبی فما لکم لا تسلکون کالمتّقین، وتھذون ولا تتزمّتون؟ ما لکم لا تُمعِنُون فی قولہ عزّوجل حکایۃً عن عیسٰی: ﴿فلمّا توفّیتنی﴾ أو لا تتوفّون وتخلدون؟ أم رأیتم عیسٰی إذ صعد إلی السماء فقلتم کیف نترك ما رأینا وإنّا مشاھدون۔ تعسًا لکم لم تضلّون زُمع الناس بغیر علم ولا تتقون الذی إلیہ تُرجعون. تصرّون علی الکذب وتعلمون أنکم تکذبون، ثم علی الزور تجترء ون. ولو کنت لا أُبعث فیکم لکنتم معذورین، ولکن ما بقی عندکم عذر بعد ما بعثنی اللّٰہ فما لکم لا تخافون؟ بئسما فعلتم بِحَکَمٍ مِّن اللّٰہ وبئسما تفتعلون.

के शब्दों से दिलचस्पी रखते हैं और न निशानों से लाभ उठाते हैं। अल्लाह ने उनके दिलों पर मुहर कर दी है और वे समझबूझ से काम नहीं लेते।

हे लोगो! तुम मेरा इन्कार करने में क्यों जल्दी करते हो, तुम्हें क्या हो गया है कि तुम संयमी लोगों की भांति नहीं चलते और अभद्र बकते हो और सभ्य स्वभाव धारण नहीं करते, तुम्हें क्या हो गया है कि तुम ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में अल्लाह तआला के कथन فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ पर विचार नहीं करते, क्या तुम मरोगे नहीं और सदा जीवित रहोगे? क्या तुमने ईसा अलैहिस्सलाम को देखा जब वह आसमान पर चढ़े जिस पर तुमने कहा कि जो हमने देखा और अनुभव किया उसे हम कैसे छोड़ दें, तुम्हारे लिए तबाही हो! क्यों तुम सामान्य लोगों को बिना ज्ञान के गुमराह करते हो और उस हस्ती से नहीं डरते जिसकी ओर तुम लौटाए जाओगे। तुम झूठ पर अड़े हो, यह जानते हुए भी कि तुम झूठ बोल रहे हो फिर उस झूठ पर दिलेरी दिखा रहे हो। और यदि मैं तुम में अवतरित न किया जाता तो तुम निर्दोष थे परंतु अल्लाह के मुझे अवतरित करने के पश्चात अब तुम्हारे पास कोई बहाना शेष नहीं रहा, अत: तुम्हें क्या हो गया है कि तुम डरते नहीं। अल्लाह के हकम (निर्णयकर्ता) से जो तुमने किया वह बहुत बुरा है और बुरा है जो तुम झूठ गढ़ते हो।

हाय अफसोस! तुम पर तुमने ज़माने को न पहचाना और नबियों (अवतारों) की बातों

يا حسراتٍ عليكم ما عرفتم الزمان وما تذكرتم ما قال النبيّون، وقد منّ الله عليكم بآيات من عنده فما نظرتم إليها وتصاممتم وتعاميتم، وصرتم من الذين يموتون۔ وما تركتم ذرّة من ضلالاتكم بل عليها تُصرّون۔ إنّ الله قد صرّح لكم وقت مسيحه وما ترك من أدلّة، ولقد نصركم الله ببدرٍ وأنتم أذلّة، فما لكم لا تفهمون هذا السرّ ولا تتوجّهون؟ أليست هذه المائة مائة البدر فما لكم لا تقدرون آى الله حقّ القدر ولا بها تنتفعون؟ وقالت السفهاء كيف نتّبع الذى شذّ وكيف نترك سوادًا أعظم؟ وما جاء نبى إلا كان من الشاذّين وكان عن الضلال تكرّم، انظر كيف نزيل وساوسهم ثم انظر كيف يتعامون. إنهم نسوا يومًا يرجعون إليه فُرادٰى ثم يُسألون عما كانوا يعملون۔ مالهم لا يوانسون موسٰى وعيسٰى

को याद न रखा। अल्लाह ने अपनी ओर से निशानों के द्वारा तुम पर उपकार किया लेकिन तुमने उन पर निगाह तक न डाली और स्वयं को बहरा और अंधा बना लिया और उन लोगों में सम्मिलित हो गए जो मर जाते हैं। तुमने अपनी गुमराहियों में से एक कण को भी न छोड़ा बल्कि तुम उन पर हठ करते रहे। अल्लाह ने तुम पर अपने मसीह के आगमन के समय को पूर्णत: स्पष्ट कर दिया था और किसी दलील को न छोड़ा। अल्लाह ने बद्र में तुम्हारी सहायता इस अवस्था में की जब तुम निर्बल थे। तुम्हें क्या हुआ है कि उस भेद को नहीं समझते और न ही ध्यान देते हो। क्या यह शताब्दी बद्र की (चौदहवीं) शताब्दी नहीं? फिर तुम अल्लाह की आयतों की सच्ची क़द्र क्यों नहीं करते और न उनसे लाभ उठाते हो। नादान कहते हैं कि हम इस व्यक्ति की कैसे पैरवी (अनुसरण) करें जो अलग हो गया है और हम कैसे बड़े नगर को छोड़ दें। कोई नबी नहीं आया परंतु वह बड़े नगर से अलग और गुमराही से पवित्र होता था। देख हम उनकी शंकाओं का किस प्रकार निवारण कर रहे हैं फिर देख कि वे कैसे अंधे बन रहे हैं। वे उस दिन को भूल गए हैं जिस दिन वे एक-एक करके उसके समक्ष लौटाए जाएंगे फिर उनसे उनके कर्मों के बारे में पूछा जाएगा। उन्हें क्या हो गया है कि वे मूसा, ईसा और हमारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर नज़र नहीं डालते कि वे कैसे अपने आरंभ में (बड़े नगर से) अलग थलग अवतरित किए गए, फिर नेक लोगों का एक समूह उनके इर्द गिर्द एकत्र हो गया और सब ने सत्यापन किया

ونبيّنا الاکرم، کيف بُعِثوا شاذّين فی أوائلهم ثم اجتمع عليهم فوج من الصلحاء، و کل صدّق وسلّم وأمنوا بمن شذّ وتر۔کوا سوادهم الاعظم، إلّا الذی ذُرِئَ لجهنم. فَوَيْلٌ لِلذين تر۔کوا مبعوث وقتهم أولٰئك هم الذين شذّوا وسمّاهم نبيّنا فيّجًا أعوج وأشأم. وقال إنهم ليسوا منّی ولستُ منهم، فهم الشاذون كما تقدم. إذا جاء هم حَكَمٌ من ربّهم فقأوا عيونهم وأصمّوا آذانهم وما سألوا عنه وصاروا كأبكم.

وإن الله بعثنی علٰی رأس هٰذه المائة، بما رأی الإسلام فی وهاد الغربة، ورآه كأرضٍ حشاةٍ سوداء أو كَحشيٍّ مِمّا يُنْبِتُون۔أو كلحمٍ نتنٍ و كاد أن يكون كَنَيِّتُون۔ ورأی النصارٰی أنهم يُضلّون أهل الحق ويُنَصّرون، ويسبّون نبيّنا ظلما و زورا ولا ينتهون۔

और आज्ञापालन हेतु सर झुका दिया और उस पर ईमान लाए जो अलग थलग था और अपने सवादे आजम को छोड़ दिया सिवाए उसके जो नर्क के लिए पैदा किया गया। अत: तबाही हो उनके लिए जिन्होंने अपने समय के अवतार को छोड़ दिया। यही तो वे लोग हैं जो जमाअत (समूह) से अलग हो गए और जिनका नाम हमारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फैजे आवज (गुमराह) और मनहूस रखा और फरमाया कि वे मुझसे नहीं और न मैं उनसे हूँ। अत: ये हैं अलग थलग जैसा कि पहले वर्णन हुआ है। जब उनके पास उनके रब्ब की ओर से हकम (सही गलत का निर्णय करने वाला) आया तो उन्होंने अपनी आंखेँ फोड़ लीं और अपने कानों को बहरा कर लिया और उसके बारे में तहक़ीक़ न की और गूंगे के समान हो गए।

निस्संदेह अल्लाह ने मुझे इस शताब्दी के आरंभ में अवतरित किया है क्योंकि उसने इस्लाम को कमज़ोरी के गढ़े में पड़े हुए देखा और उसे एक निकम्मी काली ज़मीन या सड़े-गले सब्ज़ियों या बदबूदार गोश्त के समान पाया जो निकट था कि ऐसे वृक्ष की तरह हो जो बिलकुल गल-सड़ कर अत्यंत दुर्गंधयुक्त हो चुका हो और उसने ईसाइयों को देखा कि वे अल्लाह वालों को गुमराह कर रहे हैं और ईसाई बना रहे हैं और हमारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को अत्याचार और झूठ का सहारा लेते हुए गालियां देते हैं और रुकते नहीं। और उसने उलेमा को देखा कि उनमें निरुत्तर करने का सामर्थ्य शेष नहीं

ورأى العلماء ما بقيت فيهم قوة الإفحام ولا فصاحة الكلام ولا يحتكأُ نطقهم فى نفس بمالا ينطقون بروحٍ من الله ولا هم يُفصِحون، بل يوجد فيهم تكنّع ويفطفطون. ذالك بما عصوا ربّهم بقولٍ لا يُقارنه فعل وبما كانوا يُراء ون، ولما جئتهم من ربّى أعرضوا وقالوا كاذب أو مجنون، وما جئتُهم إلّا وهم يَسْهون فى الصالحات وعن الصالحات، وينبذون السُّعْدة وبالنَّيْتُونِ يفرحون. وأمليتُ لهم رسائل فيها آيات بيّنات لعلهم يتفكّرون، فما كان جوابهم إلا الهُزء والسُّخر و كذّبوا بآى الله وهم يعلمون. وقالوا إن هو إلّا افترى وأعانه عليه قوم آخرون.
وقال بعضهم دهرىّ لا يؤمن بالله فاقرأ أيها النّاظر ما كتبنا وأشعنا ثم انظر كيف يهذرون، وإن السمع والبصر والفؤاد كل

रहा और न वार्तालाप की सुगमता। और उनकी बात किसी दिल में नहीं उतरती क्योंकि वे अल्लाह की रूह से नहीं बोलते और न ही वे वार्तालाप की महारथ रखते हैं बल्कि उनमें अकड़न पाई जाती है और वे अस्पष्ट वार्तालाप करते हैं। इसका कारण यह होता है कि वे अपने रब्ब की अवज्ञा उस कथन से करते हैं जिसकी समानता उनके कर्म से नहीं होती और इसलिए कि वे दिखावा करते हैं और जब मैं अपने रब्ब की ओर से उनके पास आया था तो उन्होंने विमुखता दिखाई और कहा कि यह तो झूठा या पागल है और जब मैं उनकी ओर आया तो उनकी हालत यह थी कि वे नेकियों (पुण्यों) को भूल चुके थे और नेकियों से दूर थे, सुगंधयुक्त वृक्ष को पीछे फेंक रहे थे और सड़े-गले दुर्गंधयुक्त वृक्ष पर प्रसन्न। और उनके लिए मैंने कुछ पुस्तकें जिनमें स्पष्ट निशान हैं इस उद्देश्य से लिखीं कि वे सोच विचार करें। परंतु उनका उत्तर हंसी और ठट्ठे के सिवा कुछ न था और उन्होंने जानते-बूझते हुए अल्लाह की निशानियों को झुठलाया और कहा कि यह सब कुछ केवल झूठ गढ़ा गया है और इसमें दूसरे लोगों ने उसकी सहायता की है।

कुछ कहते हैं कि यह नास्तिक है, अल्लाह पर ईमान नहीं रखता। इसलिए हे देखने वाले! जो हम ने लिखा है और प्रकाशित किया है उसे पढ़ और फिर विचार कर कि ये लोग कैसी व्यर्थ बातें कर रहे हैं। निस्संदेह कान, आँख और दिल इनमें से प्रत्येक से पूछ ताछ होगी। अत: तबाही हो उनके लिए जिस दिन वे अल्लाह से मिलेंगे और पूछे जाएंगे।

أولٰئك كان عنه مسئولا، فويلٌ لهم يوم يلقون الله ويُسألون۔ ومن أظلم ممن افترى على الله كذبا أو كذّب بآياته إنه لا يُفلح الظالمون. وقالوا ما جئتَ بسلطانٍ من عند الله بل لهم أعين لا يبصرون بها، وقلوب لا يفقهون بها وآذان لا يسمعون بها وإن هم إلّا كسارحة يتيهون خليع الرسن ويرتعون، وتبيّن الحق وهم يعرضون۔ يكتبون رسائل ليستروا الحق، وإنّا اقتتبنا أيديهم فما يكتبون۔ وإنى اَقتَبْتُهُم يمينًا وقلتُ بارزونى إن كنتم تصدقون، فلكأوا بمكانهم وما خرجوا، كأنّ الارض تلمّأت بهم وكأنّهم من الذين يَعدمون۔ ثمّ إنّى قمتُ لهم فى ليالٍى مباركةٍ ودعوتُ لهم فى أسعائها لعلهم يرحمون۔ وما كان الله ليتوب على أحدٍ إلا علىٰ قومٍ يتوبون. منهم قومٌ اعتدوا ومنهم كشيئٍ مقارب وليسوا على طريق ناهجةٍ، ولا يستنهجون. ومن تقرّب

और उस व्यक्ति से अधिक अत्याचारी कौन हो सकता है जो अल्लाह के बारे में झूठ गढ़े या उसकी आयतों को झुठलाए। सत्य तो यह है कि अत्याचारी कभी सफल न होंगे और उन्होंने कहा कि तू अल्लाह की ओर से कोई ज़बरदस्त दलील लेकर नहीं आया, बात यह है कि उनकी आँखें तो हैं लेकिन वे उनसे देखते नहीं और दिल तो हैं लेकिन उनसे समझते नहीं और कान हैं लेकिन उनसे सुनते नहीं। उनकी हालत पशुओं जैसी है। वे बेलगाम भटक रहे हैं और चरते फिरते हैं। सच्चाई प्रकट हो चुकी है और वे सच्चाई से मुँह फेर रहे हैं। वे सच्चाई को छुपाने के उद्देश्य से पुस्तकें लिख रहे हैं। हम ने उनके हाथों को बांध दिया, अत: वे लिख नहीं सकते। मैंने उन्हें हमेशा कसम दी अगर सच्चे हो तो मुक़ाबले के लिए निकलो इस पर वे अपने स्थान पर चिपक कर रह गए और न निकले मानो ज़मीन ने उन्हें अपने अंदर छुपा लिया है और वे गायब हो गए हैं। फिर मैंने उनकी खातिर मुबारक रातों में इस विचार से नमाज़ें पढ़ीं ओर उनके लिए रातों की घड़ियों में दुआएँ कीं ताकि उन पर रहम किया जाए। और अल्लाह सिवाए तौबा करने वाले लोगों के किसी की ओर रहम के साथ नहीं लौटता और उनमें से कुछ लोग हद से बढ़ गए और कुछ ऐसे थे जो उन हद से बढ़ने वालों के निकट थे और उनका रास्ता सही न था और न ही वे उस पर चलने के इच्छुक थे और जो व्यक्ति एक बालिश्त अल्लाह के निकट आता है तो अल्लाह हाथ भर उसके निकट आता है लेकिन अत्याचारी ध्यान नहीं देते। उन्होंने अल्लाह से संबंध

إلى الله شبرًا يتقرّب إليه ذراعًا و لكن الظالمين لا يتوجّهُون. قرضبوا عُلقَ الله وهم على الدُّنيا يتمايلون،وأصابهم زمهرير الغفلة فاقرعبّوا وهم منه كل آنٍ يُقَرْطَبون. قَشّبوا صالحًا بما فسد وقضَّبوا كَرَمَ الإيمان ولا يُبالون. وإذا قيل لهم إن الله قد اصطخم لكم وأرسل الطاعون،قالوا مرض يأتي ويذهب ولا يأخذنا المنون،انظر كيف يُنبّهون ثم انظر كيف يتناعسون. يرءون الموت ولا يتّعظون،تراهم يلهجون بزخارف الدنيا ولا يشبعون.

وإذا قُرء عليهم ما أنزل الله ازوّروا مُهرولين وهم يشتمون.تراهم جيفة ليلهم وقُطرب نهارهم، يهيمون لدنياهم وعن الآخرة يغفلون،ولا تتركهم صوا كم الدهر ثم مع ذالك لا يتنبّهون. وإذا عُرضت عليهم كلم الحق سمعوها وهم يتأقّون،ويعافون ما يسمعون ويبذؤُوْن ما يُقرءُون.

तोड़ लिए हैं और संसार की ओर झुक गए हैं और उन्हें लापरवाही की बहुत सर्दी लगी है। अत: वे सिकुड़ गए हैं और इसी कारण प्रति क्षण गिराए जा रहे हैं। उन्होंने अच्छाई और बुराई को ख़लत-मलत कर दिया और ईमान की बेल को काट कर रख दिया और वे पूर्णत: लापरवाह हो चुके हैं। और जब उनसे यह कहा जाए कि अल्लाह तुमसे क्रोधित है और उसने ताऊन (प्लेग) भेजी है तो वे कहते हैं यह तो बीमारी है जो आने जाने वाली है और हमें मौत नहीं आएगी। विचार कर, कि उन्हें किस प्रकार जगाया जा रहा है। फिर देखो कि वे किस तरह आँखें मूँद रहे हैं। वे मौत को देखते हैं परन्तु शिक्षा ग्रहण नहीं करते। तू उन्हें देखता है कि वे दुनिया की मौज मस्ती के दीवाने हैं और संतुष्ट नहीं होते।

और जब अल्लाह का उतारा हुआ कलाम उन के सामने पढ़ा जाए तो वे भागते हुए और गालियाँ देते हुए मुँह फेर लेते हैं और तू उन्हें उनकी रात में मुर्दा और उनके दिन में ऐसे कीड़े के समान पाएगा जो हर समय काम में लगा रहता है। वे अपनी दुनिया के लिए भाग दौड़ करते हैं और परलोक की परवाह नहीं करते। संसार की घटनाएँ उनका पीछा नहीं छोडतीं फिर भी वे समझते नहीं और जब उनके सामने सच्चाई की बातें प्रस्तुत की जाएँ तो वे उसे आग बगोला होकर सुनते हैं और जो सुनते हैं उसे पसंद नहीं करते और जो उनके समक्ष पढ़ा जाए उसे तुच्छ समझते हैं। वे जानते हैं

يعلمون أنهم ميّتون ثم يتعامشون. يبكون للدّنيا كالاعمش، وهم عن الآخرة غافلون. زيّن الشيطان لهم أهواء هم فعُنّشوا اليها فأحبط الله أعمالهم، وأفسل عليهم متاعهم، ولُعِنوا وهم لا يعلمون. يختارون ثَمَدًا حَمِأً وَصَرِىَ ويتركون غَمْرًا غير غَشَشٍ ذالك بأنهم أفشال فعلى الادنٰى يقنعون. يتركون لونًا لا شِيَةَ فيها ويختارون الرقش ويقعدون بين الضِّحّ والظِّلّ ولا يتركون مقاعد إبليس ولا ينتهون. وحَبابُهم أن تُفتَح عليهم أبواب الدُّنيا ويُعطوا فيها كلّ ثمرة من ثمارها ويُسَمَّغُون. يُكفّرونني ولا أَدرى علٰى ما يكفّرونني، وآلتناهم بيمين أن يقولوا ما يسترون، فما تفوّهوا بقول وشُدَّ وكاء قربتهم فلا يترشحون.

يحسبون وقت نزول المسيح كناقةٍ مُمْجِرٍ ويرون أن الاشراط

कि वे मरने वाले हैं फिर भी जान बूझ कर लापरवाही करते हैं। वे दुनिया के लिए एक अंधे की भांति रोते हैं और वे परलोक से लापरवाह हैं। शैतान ने उनके समक्ष उनकी सांसरिक इच्छाओं को सुंदर रूप में प्रस्तुत किया है और वे उन इच्छाओं की ओर खिंचे जाते हैं। अत: अल्लाह ने उनका कर्मफल व्यर्थ कर दिया और उनके सामान को खोटा और निकम्मा कर दिया। उन पर लानत की गई परंतु वे नहीं जानते और घड़े के गंदे और बदबूदार थोड़े पानी को अपनाते हैं और गहरे साफ स्वच्छ पानी को छोड़ते हैं, इसका यह कारण है कि वे बुज़दिल और आलसी हैं और घटिया वस्तु पर संतुष्टि करते हैं। वे बेदाग़ रंग को त्यागते औए धब्बों को अपनाते हैं और वे धूप और छांव के मध्य-मध्य बैठे हैं (अर्थात स्पष्ट विचारधारा को धारण नहीं करते) और शैतानी सभाओं को नहीं छोड़ते और सुधरते नहीं। उनकी हार्दिक इच्छा यह होती है कि उन पर संसार के द्वार खोल दिए जाएँ और उन्हें इस संसार के समस्त फलों में से फल दिया जाए। हालांकि वे खूब खिलाए पिलाए जाते हैं। वे मेरा इन्कार करते हैं लेकिन मुझे मालूम नहीं कि वे किस आधार पर मेरा इन्कार कर रहे हैं। हमने उन्हें क़सम दी कि वे इस बात को व्यक्त करें जिसे वे छुपा रहे हैं लेकिन वे कुछ न बोले और उनके मुश्कीज़े को ऐसी मज़बूत रस्सी से बाँधा गया है कि उससे एक बूंद भी न टपके।

वे मसीह के अवतरित होने के समय को उस ऊंटनी के समान कल्पना करते हैं जिसके प्रसूति का समय बीत चुका हो और अभी तक प्रसव न हुआ हो। हालांकि वे

قد ظهرت ثم لا يتيقّظون۔ أما كُسف القمران، و كان الكسف فی رمضان؟ ألا ينظرون كيف تظهر أثقال الأرض وتجری الوابورة وتمخر السفائن، وتُزَوّج النفوس وتُترك القلاص وتُبدّل الظعائن، وظهر كلّما يأمتون.

وإن مرهم عيسٰى آيةٌ بيّنة علٰى موته، فما لهم لا يفكرون فی هٰذه الآية ولا به ينتفعون؟ وإنما مثل المسيح الموعود كمثل ذی القرنين، وإليه أشار القرآن يا أولى العينين، فكفاكم هذا المثل إن كنتم تتأمّلون. وإنی أنا الأحْوَذِیّ كَذِی القرنين، وجُمعت لی الأرض كلها بتزويج النفوس، فكمّلتُ أمر سياحتی وما برحتُ موضع هاتين القدمين. ولا سياحة فی الإسلام ولا شدّ الرحال من غير الحرمين. فرُزِق لی السَّيّحانُ بهذا الطريق من ربّ الكونين۔ ووجدتُ فی سياحتی قومين متضادين۔ قومٌ صمخت عليه

देख रहे हैं कि (मसीह के अवतरण) के समस्त (लक्षण) प्रकट हो चुके हैं फिर भी वे नहीं जागते। क्या सूर्य और चंद्र को ग्रहण नहीं लग चुका, जो रमज़ान के महीने में घटित हुआ। क्या वे नहीं देखते कि ज़मीन के बोझ (ख़ज़ाने) किस प्रकार प्रकट हो रहे हैं, रेल गाड़ी चल रही है और जहाज़ समुद्र का सीना चीर रहे हैं और लोगों को इकट्ठा किया जा रहा है और जवान ऊंटनियाँ त्याग दी गईं हैं और सवारियाँ बदल गई हैं और जितने भी उनके अनुमान थे वे सब प्रकट हो चुके हैं।

मरहम-ए-ईसा हज़रत ईसा की मृत्यु पर एक स्पष्ट दलील है फिर इस दलील पर वे क्यों विचार नहीं करते और न उससे लाभ उठाते हैं। मसीह मौऊद का उदाहरण ज़ुलक़रनैन के समरूप है। और हे आँखें रखने वालो! इसी की ओर क़ुरआन ने इशारा किया है। यदि तुम विचार करते तो उदाहरण तुम्हारे लिए पर्याप्त था। वास्तविकता यह है कि मैं ज़ुलक़रनैन के समान कुशल और कम उम्र हूँ और मेरे लिए समस्त भू मण्डल को उसमें रहने वालों के साथ इकट्ठा कर दिया गया है। मैंने इसी स्थान पर रहते हुए भी अपने भ्रमण का काम पूर्ण कर लिया है ओर इस्लाम में हरमैन शरीफ़ैन (मक्का और मदीना) के अतिरिक्त किसी स्थान का भ्रमण और उसके लिए यात्रा का इरादा करना अनिवार्य नहीं। अत: दोनों जहानों के रब्ब ने इस प्रकार मेरे लिए भ्रमण का कारण उत्पन्न कर दिया और मैंने अपने इस भ्रमण के दौरान दो परस्पर विपरीत क़ौमें पाईं। एक क़ौम तो वह थी

الشمس ولفحت وجوهھم نار أُوارٍ فرجعوا بِخُفَّی حُنین. وقومٌ آخرون فی زمهریر وعینٍ حَمِئَةٍ لفقد العین. ذالك مثل الذین یقولون إنّا نحن مسلمون ولیس لهم حظّ من شمس الإسلام، یحرقون أبدانهم من غیر نفعٍ ویلفحون، ومثل الذین ما بقی عندهم من ضوء شمس التوحید واتخذوا عیسٰی إلٰهًا واستبدلوا المیت بالذی هو حیّ، ویظنون أنهم إلیه یتحوّجون.

هٰذان مثلان لقومٍ جعلوا أنفسهم كعبادید ما نفعهم ضوء الشمس من غیر أن تُلفح وجوههم حرّها فهم یهلكون. ومثل لقومٍ فرّوا من ضوئها فنُهبوا وهم یغتهبون. وإنی أدركتُ القرنین من السنوات الهجریّة وكذالك من سنی عیسٰی ومن كل سَنةٍ بها یُحاسبون. فلذالك سُمّیتُ ذاالقرنین فی كتاب الله، إن فی ذالك لآیة لقومٍ یتدبّرون.

जिन पर सूर्य चमका और उसकी तपती हुई आग ने उनके चहरे झुलसा दिए और वे असफल और निराश लौटे और दूसरी क़ौम अत्यंत ठंड में है और साफ सुथरे स्रोत के खो जाने के कारण गंदे पानी के स्रोत पर है। यह पहला उदाहरण उन लोगों का है जो कहते हैं कि हम ही मुसलमान हैं हालांकि उन्हें इस्लाम के सूर्य से कुछ भी हिस्सा नहीं मिला। वे अपने शरीरों को लाभ उठाने के स्थान पर जलाते और झुलसाते हैं और (दूसरा) उदाहरण उन लोगों का है जिन में एकेश्वरवाद के सूर्य का कोई प्रकाश शेष नहीं और उन्होंने ईसा को उपास्य बना लिया है और ज़िंदा (ख़ुदा) के बजाए मुर्दा को बदले में ले लिया है और वे समझते हैं कि उनको उसकी आवश्यकता है।

ये दो उदाहरण उस क़ौम के हैं जिन्होंने स्वयं को बहुत से बिखरे हुए फिरकों (समुदायों) में विभाजित कर लिया और सूर्य के प्रकाश ने उन्हें कोई लाभ न पहुँचाया सिवाए इसके कि उसकी गर्माहट ने उनके चेहरों को झुलसा दिया। अत: वे तबाह हो रहे हैं और उन लोगों का उदहारण जो सूर्य के प्रकाश से भाग गए और वे अँधेरे में लौट गए. मैंने हिजरी, ईस्वी और प्रत्येक प्रचलित कैलेंडर की दृष्टि से दो शताब्दियाँ पाई हैं। इसी कारण से अल्लाह की किताब में मेरा नाम ज़ुलक़रनैन रखा गया है। इसमें चिंतन करने वालों के लिए एक बहुत बड़ा निशान है।

وما جئت إلّا فى وقت فُتحت يأجوج ومأجوج فيه وهم من كلّ حَدَبٍ يَنْسلون، فبُعثتُ لاصون المسلمين من صولهم بآياتٍ بيّناتٍ وأدعية تجذب الملائكة إلى الارض من السماوات، ولاجعل سدًّا لقومٍ يُسلمون.

الحمد لله الذى أرسل عبدهٗ على أوانه، وأنزله من السّماء عند فساد الزمان وخُذلانه، فهل منكم من يردّ قضاءه ويهدّ بناءه؟ سبحانه وتعالٰى عمّا تزعمون.

و كفّرتمونى وما ظلمتم إلّا أنفسكم، وإنّى أفوّض أمرى إلى اللّٰه فسوف تعلمون.

تَمَّ الْكِتَابُ بِعَوْنِ اللّٰهِ الوَهَّاب

मैं ठीक ऐसे समय पर आया हूँ जब याजूज माजूज को खुला छोड़ दिया गया है और वे प्रत्येक ऊंचाई और समुद्र की लहर पर से फलांगते हुए फैल रहे हैं। अत: मुझे अवतरित किया गया ताकि मैं खुले-खुले निशान दिखा कर और ऐसी दुआओं के द्वारा जो फरिश्तों को आसमान से खींचकर ज़मीन पर ले आयें, मुसलमानों को उनकी यलग़ार से बचाऊँ और मुसलमानों के लिए एक मज़बूत सुरक्षा घेरा बनाऊँ।

वास्तविक प्रशंसा के योग्य केवल अल्लाह की हस्ती है जिसने अपने बंदे को बिल्कुल समय पर भेजा और उसे ज़माने के फसाद और असहाय होने की हालत में आसमान से उतारा। अत: क्या तुम में से कोई है जो उसकी तक़दीर को रद्द और उसकी बुनियाद को गिरा सके। अल्लाह की हस्ती सबसे पवित्र है और तुम्हारी कल्पनाओं और अनुमान से कहीं अधिक बुलन्द।

तुमने मेरा इन्कार किया और तुमने केवल स्वयं पर अत्याचार किया और मैं अपना मामला अल्लाह के सुपुर्द करता हूँ। तुम्हें अति शीघ्र वास्तविकता का ज्ञान हो जाएगा।

संसार के पालनहार अल्लाह की सहायता से यह पुस्तक पूर्ण हुई।

हज़रत साहिबज़ादा मौलवी अब्दुल लतीफ साहिब मरहूम के शेष हालात

मियां अहमद नूर जो हज़रत साहिबज़ादा मौलवी अब्दुल लतीफ साहिब के विशेष शिष्य हैं। आज 8 नवंबर 1903 ई० को सपरिवार खोस्त से क़ादियान में पहुंचे। उनका बयान है कि मौलवी साहिब की लाश 40 दिन तक उन पत्थरों में पड़ी रही जिनमें वह संगसार किए गए थे। उसके बाद मैंने कुछ दोस्तों के साथ मिलकर रात के समय उनकी पवित्र लाश निकाली और हम गुप्त रूप से शहर में लाए और यह भय था कि अमीर और उसके कर्मचारी कुछ रुकावट डालेंगे परंतु शहर में हैज़ा की मरी इस प्रकार फैली हुई थी कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी मुसीबत में गिरफ्तार था। इसलिए हम शान्ति पूर्वक मौलवी साहिब मरहूम का कब्रिस्तान में जनाज़ा ले गए और (नमाज़) जनाज़ा पढ़कर वहां दफन कर दिया। यह विचित्र बात है कि मौलवी साहिब जब पत्थरों में से निकाले गए तो कस्तूरी के समान उनके शरीर से सुगंध आती थी इससे लोग बहुत प्रभावित हुए।

इस घटना से पहले काबुल के उलमा अमीर के आदेश से मौलवी साहिब के साथ शास्त्रार्थ करने के लिए एकत्र हुए थे। मौलवी साहिब ने उनको फरमाया कि तुम्हारे दो ख़ुदा है क्योंकि तुम अमीर से ऐसा डरते हो जैसा कि ख़ुदा से डरना चाहिए परन्तु मेरा एक ख़ुदा है इसलिए मैं अमीर से नहीं डरता। और जब घर में थे और अभी गिरफ्तार नहीं हुए थे और न इस घटना की कुछ सूचना थी, अपने दोनों हाथों को संबोधित करके फरमाया कि मेरे हाथो! क्या तुम हथकड़ियों को बर्दाश्त कर लोगे। उनके घर के लोगों ने पूछा कि यह क्या बात आपके मुंह से निकली है? तब फरमाया कि नमाज़ असर के बाद तुम्हें मालूम होगा कि यह क्या बात है। तब नमाज़ असर के बाद हाकिम के सिपाही आए और गिरफ्तार कर लिया और घर के लोगों को उन्होंने उपदेश किया कि मैं जाता हूं और देखो ऐसा न हो कि तुम कोई दूसरा मार्ग अपना लो, जिस ईमान और आस्था पर मैं

हूँ चाहिए कि वही तुम्हारा ईमान और आस्था हो और गिरफ्तारी के बाद मार्ग में चलते समय कहा कि मैं इस भीड़ का दूल्हा हूँ। शास्त्रार्थ के समय उलमा ने पूछा कि तू उस क़ादियानी व्यक्ति के बारे में क्या कहता है जो मसीह मौऊद होने का दावा करता है। तो मौलवी साहिब ने उत्तर दिया कि हमने उस व्यक्ति को देखा है और उसके विषय में बहुत विचार किया है उसके जैसा धरती पर कोई मौजूद नहीं और **बेशक और निस्संदेह वह मसीह मौऊद है और वह मुर्दों को जीवित कर रहा है।** तब मुल्लाओं ने शोर करके कहा कि वह काफिर और तू भी काफिर है और उनको अमीर की ओर से तोबा न करने की अवस्था में संगसार करने के लिए धमकी दी गई और उन्होंने समझ लिया कि अब मैं मरूंगा तब यह आयत पढ़ी-

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ

(आले इमरान - 9)

अर्थात हे हमारे रब्ब हमारे दिल को ठोकर से बचा और इसके बाद कि तूने हिदायत दी हमें फिसलने से सुरक्षित रख और अपने पास से हमें रहमत प्रदान कर क्योंकि प्रत्येक रहमत को तू ही प्रदान करता है।

फिर जब उनको संगसार करने लगे तो यह आयत पढ़ी-

اَنْتَ وَلِيّٖ فِی الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ تَوَفَّنِیْ مُسْلِمًا وَّاَلْحِقْنِیْ بِالصّٰلِحِيْنَ

(यूसुफ़ - 102)

अर्थात हे मेरे ख़ुदा! तू संसार में और परलोक में मेरा संरक्षक है, मुझे इस्लाम पर मृत्यु दे और अपने नेक बंदों के साथ मिला दे। फिर उसके बाद पत्थर चलाए गए और हज़रत मरहूम को शहीद किया गया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। और सुबह होते ही काबुल में हैज़ा फूट पड़ा और नसरुल्लाह खान, अमीर हबीबुल्लाह खान का सगा भाई जो इस ख़ून बहाने का वास्तविक कारण था, उसके घर में हैज़ा फूटा और उसकी पत्नी और बच्चा मर गया। और 400 के लगभग लोग प्रतिदिन मरते थे और शहादत की रात आसमान सुर्ख़ हो गया

और उससे पहले मौलवी साहिब फरमाते थे कि मुझे बार-बार इल्हाम होता है-

اِذْهَبْ اِلیٰ فِرْعَون اِنّی مَعکَ أسمعُ و اَریٰ و أنْتَ محمّد معنبر معطّر

और फरमाया कि मुझे इल्हाम होता है कि आसमान शोर कर रहा है और ज़मीन उस व्यक्ति की भांति काँप रही है जो कपकपी वाले बुख़ार में ग्रस्त हो। दुनिया इसको नहीं जानती, यह बात होने वाली है। और फरमाया कि मुझे हर समय इल्हाम होता है कि इस मार्ग में अपना सिर दे दे और अफ़सोस न कर कि ख़ुदा ने काबुल की धरती की भलाई के लिए यही चाहा है।

और मियां अहमद नूर कहते हैं कि मौलवी साहिब डेढ़ महीने तक क़ैद में रहे और पहले हम लिख चुके हैं कि 4 महीने तक क़ैद में रहे, यह रिवायत का मतभेद है, असल घटना में सब सहमत हैं।